हैं कैरै त्रिभ्रार ॥ काया मांहैं उपजै ज्ञान ॥ काया मांहैं त्यागी ध्यान ॥ काया मां
1-128 हैं महमूस्थान ॥ काया मांहैं आतमराम ॥ काया मांहैं कंवला मैं दोके ॥ का
1-129 या मांहैं करता ये क ॥ काया मांहैं लांभैरंगा ॥ काया मांहैं साइं संगा ॥ काया
1-130 मांहैं सरवर तीर ॥ काया मांहैं कोकिल कीर ॥ काया मांहैं कंछ वैनै ॥
काया मांहैं कंजी वैन ॥ काया मांहैं कवल प्रकास ॥ काया मांहैं मधकर
वास ॥ काया मांहैं नाद कुरंग ॥ काया मांहैं जोति पतंग ॥ काया मांहैं
त्रिगमोर ॥ काया मांहैं चंद चकोर ॥ काया मांहैं श्रीनिकरि ॥ काया मां
हैं सनेह ॥ काया मांहैं प्रेम रस ॥ दादू गुर मुष पोह ॥ ६१ ॥ काया मांहैं तारै न
हारा ॥ काया मांहैं उतरै पारि ॥ काया मांहैं दुसतर तारै ॥ काया मांहैं आप
उबारै ॥ काया मांहैं [illegible] विरे ॥ काया मांहैं [illegible] धरै ॥ काया मांहैं नि

करतार है मैं निधि जाणौं नाहिं ॥ दादू गुर मुष पाईये ॥ सब कुछ काया
माहिं ॥ ॥ काया मांहैं ष्वंड ब्रह्मंड खांणि ॥ काया मांहैं नेंक पिंड प्राणि ॥ का
या मांहैं बहो बिसतार ॥ काया मांहैं अनंत अपार ॥ काया मांहैं आप अ
गाध ॥ काया मांहैं निपजै साध ॥ काया मांहैं कंवल नंगाह ॥ काया मांहैं रहै
ल्यो लाइ ॥ काया मांहैं साधन सार ॥ काया मांहैं करै बिचार ॥ काया मांहैं अं
मृत बांणी ॥ काया मांहैं सारंग प्राणी ॥ काया मांहैं पीवै प्राण ॥ काया मांहैं
पद निरबाण ॥ काया मांहैं मूल गहि रहै ॥ काया मांहैं सब कुछ लहै ॥ का
या मांहैं निरंजन निरधार ॥ काया मांहैं अपरंपार ॥ काया मांहैं सेवा करै ॥ का
या मांहैं तीक्रर अरै ॥ काया मांहैं बास करि रहै ॥ निरंतर निरधार ॥ दादू पाया
आदि घर सतगुर दीया दिषाइ ॥ ॥ काया मांहैं [illegible] ॥ काया मां

ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं श्रीपाता ॥ ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चातामुखं । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चा[illegible]
६॥ ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चानाट । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चानेट । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चापुरा
ण । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चावेद ॥७॥ ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चीगुणति । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चा
ज्ञान । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चावैराग । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चानेग ॥८॥ ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं
चीजीवनि । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चाजप । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चासंध्य । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं
चातप ॥९॥ ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चासील । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चासंतोष । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं
चीमुकति । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चामोष ॥१०॥ ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चासिद्धं । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं
चीसकति ॥ ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चाआगमं । ॐ ह्रैं श्रं ह्रैं चीउकति । ह्रं सति ह्रैं श्र
वाति ॥ ह्रैं श्रपरंपारं ह्रैं निरंकार ॥ ॐ ह्रैं चाँप । वाह ॐ ह्रैं चा विश्राम नो
डेऊडेक श्रवणंवे [illegible] ॥११॥ वाहकहे गंमकरं ते जो डि वो ॥

राम कहूं तै साषि । राम कहूं तै गाइबा ।। राम कहूं तै राषि ११।। दादू
कुलह मारे के सबा ।। म गात मि जे न हार ।। जा तिं कमारा जै तू गुर
प्रभ सबर पुकार १३ दादू ये कस मांगा संसार मैं ।। जिनि है म सिर जे
सोइ ।। मंन सा बांचा क मनां । और न इज्या कोइ १४।। सांई सूं न अ
ष जीवता ।। मरतां मन मुष मोइ ।। दादू जीव णा जिनका सो च के
रे जिन कोइ १५ साहिब मिल्या तस ब मिलें ।। जेते ने टा होइ साहि
ब रह्या तस संवरहे ।। न ही तन नां ही कोइ १६।। सब सुष मेरे सांइयां
।। मंगल अति आनंद ।। दादू सजन सब मिले ।। जब भेटे प्रभ मोल
द १७।। दादू रीझै राम पर रिझंन न तन के मन । मीं गं ज्ञा तै ये कं रस
दादू सोई जे न १८।। दादू मेरे हिरदै हरि बसै ।। ना नां दो और । क

ाक साधु राषि यो ॥ नहीं आन कों ठौर ॥१९॥ दादू अंतरगति गाजै ॥ अंतर
मन ही मांहै मैं दादू ॥ हिरदा मांहैं हरि बसै आतम पंच सुं मांहि ॥२०॥ दादू
तन मन मेरा पीव सूं ॥ एक सेज सुष मांहि ॥ दिखा कोई मन जाणा दादू ॥
पचि पचि आपा मेटि ॥२१॥ दादू एक कहूं मारै अरि बसै ॥ इहु जामे क्या हरि ॥ इं
जारि घतं जाइ गा ॥ कै करता न रपूरि ॥२२॥ निहचल कौ निहचल
रहै ॥ चंचल कौ चलि जाइ ॥ दादू चंचल छाडि सब ॥ निहचल सं
लौ लाइ ॥२३॥ साहिब रहता मैं सब रहै ॥ साहिब जाता जाइ ॥ दादू
साहिब राषिये ॥ दूजा सहज सुभाइ ॥२४॥ मन चित मनसा पलक मैं
॥ साई दूरि न होइ ॥ निहकामी निरषै सदा ॥ दादू जीवनि सोइ ॥२५॥
जहां मैं तूं तहां मैं ॥ निहहि यो ॥ सदा राम के राज ॥ निरविकार रत न

...सै ...॥ दादू सो पीव को ...॥२६॥ जिसकी खूबी खूब सब सोई खूब
[सं]भारि॥ दादू सुंदरि खूब सं॥ नख सिख साज संवारि॥२७॥ दादू पंच अभूषण पी
...व करि॥ सो नख सब कहीं गंगे॥ सुंदरि यहु सिंगार करि॥ लै लै पीव का
नांउं॥२८॥ यहु अनूप सुंदरि लेरहै॥ तो सदा सुहागनि ... होइ॥ दादू जीवे
पीव कूं॥ तासमि और न कोइ॥२९॥ साहिब जी का नाव ता॥ कोई
करै कलि मांहिं॥ मन माया चा कमनां॥ दादू वांटि घटि नांहि॥३०॥ आ
पा मांहे है वे ...॥ आपा जाय आवे जाइ॥ आपा जांमा है ऐ वे लै वे॥ आपा जाप
... आपा जारहै मैं मांइ॥ आपा जांमा है वे
हरे मांइ॥ आपा मांमे है वाहरि जीत रि॥ आपा जार है मैं मांइ॥ आपा जामे है वे
... वाणि॥ कौ रे ये मम
न मन रा ये॥ दाइ र है वौ लाइ॥३१॥ ... विवना ... आपणों॥ कौ रे ये मम
...॥३२॥ दादू नीच कंचन
की सेव॥ जां रा ये ... है॥ आपा ... को री है वे

न सुंदरी ॥ ऐसा मारी होइ । साई सु हाथ निकी जीये । रूप नरपै अंधी
१३ ॥ दादू तब तन मन मैं प्यास पीव कै । तासैं निकट हाजिर चार द
२ जगी उसके मैं रहमत । पैगंबर नालि लै सार १४ ॥ पयुरि यास न दप्र
दरे ॥ सुरति दे षै उलगि । अपणां पीव पिछांणि करि ॥ दादू रहिये ला
गि १५ ॥ आन पुरिष कूं बदन कहीं । परम पुरिष भरतार । हूं अबला
सं मझूं नहीं ॥ तू जांणैं करतार १६ ॥ जिस का तिस कौं दीजिये । सा
ई सनमुष होइ । दादू नष सष सौंपि सब ॥ जिनि यूं जांणैं कोइ ॥
१७ ॥ मार दिल सांई सौं राषै । दादू सांई सयांन । जे दिल बंदै आ
प णी । सो सब मूं रहमान १८ ॥ दादू सारे सौं दिल तोरि करि सां
ई सौं जोरै । सांई सता जोरि करि काहे कौं तोरै १९ ॥ साहिब देवै

षशी॥ सेवग बिगरै लालच चोरै॥ दादू सब धन मांहि का॥ दूजा मैं न थ
नै ५०॥ दादू मनसा बाचा क्रमनां॥ अंतरि आवै येक॥ ताकौं प्रत
षि रांम जी॥ बातैं और अनेक ५१॥ दादू मनसा बाचा क्रमनां
॥ हिरदै हरि का भाव॥ अलष पुरिष आगै षड़ा ताकै त्रिभवन
राव ५२॥ दादू मनसा बाचा क्रमनां॥ हरि जी सौं हित होइ॥ सा
हिब संनमुष संगि है॥ आदि निरंजन सोइ ५३॥ दादू मनसा बा
चा क्रमनां॥ अंतरि करतार निरांम॥ संम्रथ सोई सब करै॥ प्रगट पू
रे कांम ५४॥ नारी पुरिषा देषि करि॥ पुरिषा नारी होइ॥ दादू सेवग
रांम का सीलवंत है सोइ ५५॥ पर पुरिषा रत बांझणी॥ जांणौ जे फ
ल होइ॥ जनम बिगोवै आपणां॥ दादू निरफल सोइ ५६॥ दादू

तजि नरतार कूं ॥ प्र पुरिष्यारत होइ । के सौ सेवा न करै ॥ [illegible]
जो सो सोइ ४७ ॥ दाहू नारी सेवा गत बजे गो । जब त गसांई पास
दाहू पू सेस्वामन कौं । ताकी के सौ स्वाम ४८ ॥ दाहू नारी पुरिष
कौं ॥ जो सौं जेष्ठ सै होइ । पीवे की सेवा ना करै ॥ कांम सिंगार
सोइ ४९ ॥ कीया मन का जो तै ता ॥ मेटी स्त्र जा कार । क्या ले मुख दि
षलोइ है गे ॥ दाहू उस लेनरतार ५० ॥ करामाति कहैं ते कहै । जाके
हिरदै एक । अति स्त्रांनंद बिभिचारनी ॥ जा [illegible] नेक
५१ ॥ दाहू पतिब्रता के एक है ॥ बिभचारणिं के दोइ ॥ पतिब्रता
बिभचारणी । [illegible] होइ ५२ ॥ पतिब्रता के एक है । दू
जानें सी स्वामि । बिभचारनि के दोइ है ॥ ए घर एक समांन

[illegible] दादू दुषि सहै न विष कै है ॥ हम मनोरी बकै अंग ॥ जे जे जे मी
ताहि सूं ॥ घट में ति सहार रंग ॥ ५४॥ दादू रहता राता पिव सूं ॥ बहु हता है
जब हाइ ॥ बहु रहते संगि न जाइ ये ॥ रहते सं ल्यौ लाइ ॥ ५५॥ जिनि
बांधे काहू कर्म सूं ॥ दूजे आरंभि जाइ ॥ दादू [illegible] के मूल ला [illegible]
ह जा के रह्या हाइ ॥ ५६॥ बांवें रे पिव न दौं दें गौं ॥ तन मन मन सन मुष
राषि ॥ दादू निमि जतन न गहि ॥ सति सबद [illegible] साषि ॥ ५७॥ दादू
ह जा नें न [illegible] ॥ सब रागु कै मुरौं न जाइ ॥ जिन्ह [illegible] न बो
लिये ॥ अगिन ओर मुहाइ ॥ चलौं अंतन तन जाइ ॥ सब ते ल
टा मांहि संमाइ ॥ ५८॥ दादू दूजे अंग [illegible] तें [illegible] ॥ जैन [illegible] गौं मन
मांहि ॥ नहां लेमन कूं राषिये ॥ जहां कुछ [illegible] नांहि ॥ ५९॥ [illegible]
[illegible] पूर [illegible] में ॥ दादू [illegible]

लेम सो जे नहीं ॥ रे जीय अंत्र न उपाइ ॥ दादू दायन्सु सोझि ले ॥७९॥ हे ने जी
हो सिबि जाइ ॥८०॥ दादू सो बेदन नहीं बावरे ॥ आन कीयें जे जाइ ॥
सब दुख भंजन साईयां ॥ ताही सौं ल्यौ लाइ ॥८१॥ औषद मूली कुछ नहीं दादू
हूं ॥ एक सब फर [illegible] त ॥ अंत्री पदि हो जीवियो ॥ तो का हे कूं मरि जात
॥८२॥ मूला [illegible] मो निहं चल बेगा ॥ सुख में रहे संमाइ ॥ मालपं न [illegible]
फिरै ॥ बेसीदी या बसाइ ॥८३॥ मौषका सुन [illegible] करे वै ॥ घर बा
हरि का है ॥ आइ से [illegible] राम का ॥ दरबार न छोंने ॥८४॥ माहि बका
दरबा [illegible] ॥ मेवा कहीं न जाइ ॥ दादू बैगम [illegible] ॥ मौसो फिरै
बेवाइ ॥८५॥ दादू जं [illegible] मन सौं चियें ॥ तब लग महल्या न हो
इ ॥ ले [illegible] ॥ फिरि पछितानां साइ ॥८६॥ दादू सी

च म्[illegible]जे | सब घट माहि बिस्तार || दादू सींचे मूल बिन | आदि गहै जा
रि ॥९७॥ सब आया उस एक मैं | डाल पान फल फूल | दादू पीछै क्या
रह्या | जब निज पकड्या मूल ॥९८॥ षेत न निपजै बीज बिन जल
सींचे क्या होइ | सब निरफल दादू राम बिन | जांनत है सब को
इ ॥९९॥ दादू जब मुष मांहे मेलिये | तब सबही त्रिपता होइ
मुष बिन मेल्ये आन दिस त्रिपति न मांनें कोइ ॥१००॥ जब देव
निरंजन पूजिये | तब सब आया उस मांहि | डाल पांन फल फूल
सब | दादू न्यारा नांहि ॥१०१॥ दादू टीका राम कूं दूसर पदी जैनां हि
ज्ञांन ध्यांन तप भेष पष | सब आया उस मांहि | साधो पंषेरी राम को १२
संसारी माया | संसारी पात वृगस्या | [illegible] ॥१०२॥ दादू जे

कु लकी जिये । अबताति बिंन आराध । कहि बीसु गोंवदे ॥ ७३ ॥ फल
करै बामबज्र अपराध ॥ ७४ ॥ सब चतुराई टेपिये । जे कुफकोजेवा
न । दोहा आपासौं पिसब । पीव कूं लेकुपिछांणि ॥ ७५ ॥ दोहा जां कु
छ नेहो । येक मतिकरि जांणि ॥ दोहा कहा करै । जिनि येक लीयापहि
चांणि ॥ ७६ ॥ दोहा कोई बांछै मुकति फल । कोई अंब्र पुरि बा
स । कोई बांछै परमगति । दोहा राम मिलन की प्यास ॥ ७७ ॥ उफह
रि हिरदै हेत सूं । पग टकु पमीं नेट । दोहा टेषै नैंन भरि तब केता
होइ अंनेट ॥ ७८ ॥ प्रेम पियाला रांम रस । हंम कूं ल्यावै येह ॥ रि
धि सिधि मांगे लोक तिनि हिंत ॥ चाहैं तिन को देह ॥ ७९ ॥ काटि बरस का
नीलणां ॥ अम ... क्योंहि ॥ ८० ॥ प्र पन्नगति रस रामबिन । काम हइ जी

...सो होइ ॥८०॥ कछु नकी जे कं मनमा । ॠ गुन गानि निगुन गा होइ ॥ पन्नारि
जीव तें छुट्यो जाति । सब सिवि लिमाने मो हि ॥ घट ज्ञान जरा वृंरछे रहै । बंध
न नाही कोइ ॥ मुक्ता चोरासी मिटै ॥ दाइ संसै मोइ ॥८१॥ निकट निनि
जैन त्यागि कृज्ञ बल त्याग ज्ञान षज्ञ नेव ॥ दाइ पी छै री मंरस ॥ मिष्ट कामी
निज सेव ॥८२॥ सालोक संग तिर है ॥ सामीप मं न मुष मो इ ॥ सारू
प सारी षा जोय ॥ सा जो जय के होइ ॥८३॥ रो म र सि कं बं छे नहीं ॥ प्र
म पदार थ चारे ॥ ज्ञ असि धि न वृ नि धि का करै । सत्ता मि जैन हार ॥८४
का त्रि ष तन नौ पडे ॥ जे बा है सो बार ॥ दाइ हां नैं ... का ॥ क्या
पच्छिम रे गंवार ॥८५॥ स्वार्थ से वा की जिये । ता मैं ... न होइ । दाइ
क सर वा हिं करि । को गा नै रैन को इ ॥८६॥ सुत बित मां मैं बक्षे

साहिब सांनिधि में हि ॥ दादू बैसिर फल गाये । जे मैं नां ओं बेलि ॥८८॥ फल
कारंणि सेवा करें ॥ जाचैं त्रिभवंन राव । दादू सो सेवक नहीं ॥ षेलैं अपणा
डाव ॥८९॥ सहकांमी सेवा करै । मांगैं मुगध गंवार । दादू ऐसे ब
हुत है ॥ फल के भूंचणहार ॥९०॥ तन मन लै लागा रहै । राता सि
रजनहार ॥ दादू कछू मांगै नहीं । ते बिरला संसार ॥९१॥ रांम नांम
गुर सब्द सौं ॥ रे मन पेलि भरंम । निहकरमी सौं मन मिल्या । दादू काटि क्रं
म ॥९२॥ सहजैं ही मन बसि होइगा ॥ गुण गांठडी का नास । दादू रांम संभाल
तां ॥ काटे क्रम के पास ॥९३॥ ऐके महूरति मन रहै । नांउ निरंजन पा
स ॥ दादू तब ही देषतां । सकल क्रम का नास ॥९४॥ दादू कहै सांई
कौं संभालतां । कोटि विघन टलि जांहिं । राई मांनि बसंदरा । केते का

र जे आणू ॥ ६४ ॥ सो करम के नांव बिन ॥ जीव की जनम सिरानि जा
इ ॥ दादू कैसे छूटै मुये ॥ करि करि बहुत क्रम पाइ ॥ ६५ ॥ क्रम मैं क्रम
काटै नहीं ॥ क्रम मैं क्रम न जाइ ॥ क्रम मैं क्रम छूटै नहीं ॥ क्रम मैं क्रम बं
धाइ ॥ ६६ ॥ इति निहकर्मी पतिव्रता को अंग संपूर्ण ॥ अंग
ठा साषी ॥ ७० ॥ अथ चितावणी को अंग ॥ दादू नमो नमो नि
रंजनं नमस्कार गुरदेवतः ॥ वंदनं सर्व साधवा ॥ प्रणामं पारंगतः ॥
॥ १ ॥ दादू जे साहिब कूं भावै नहीं ॥ सो हम थैं जिनि होइ ॥ सतगुर
लाजै आपणा ॥ साध न मानै कोइ ॥ २ ॥ दादू जे साहिब कूं भावै नहीं
सो सब परहरि प्राण ॥ मनसा वाचा क्रमना ॥ जे तूं चतुर सुजांण ॥ ३ ॥
दादू जे साहिब कूं भावै नहीं ॥ सो जीव न कीजी रे ॥ परहरि बिषै बि

कार मन। अंमृत रस पीजी रे ॥४॥ दादू जे साहिब कूं भावै नहीं ॥
सो बाट न बूझी रे। सांई सौं सनमुख रहौ। इस मन सौं झूझी रे ॥५॥
दादू रांम कहे सब रहत है। नख सख सकल सरीर। रांम कहे बिन
जात है। समझी मन बौरा बीर ॥६॥ दादू रांम कहे सब रहत है। लाहा
मूल सहेत। रांम कहे बिन जात है। मूरिख मन चेत ॥७॥ दादू रां
म कहे सब रहत है। आदि अंति लौ सोइ। रांम कहे बिन जात है। य
हु मन बहुरि न होइ ॥८॥ दादू रांम कहे सब रहत है। जीव ब्र
ह्म की लार। रांम कहे बिन जात है। रे मन हो हुसियार ॥९॥ दा
दू अचेत न होइये। चेतन सौं चित लाइ। मन वा सूता नींद भरि। सां
ई संगि जगाइ ॥१०॥ दादू अचेत न होइये। चेतनि सौं करि चित। ये

अनहदजहांकंपजे ॥ कजोजहांधांमित ॥११॥ दादूजनतें
चेतिकरि ॥ सोवनोजी मार निश्चरकमाहिंनखूटसां ॥ आपनेजीव
विचार ॥१२॥ दादूकरिसांईकी चाकरी ॥ येहरिनांवनछोडि ॥ जांणा
हे समटेसकूं प्रांनिपीयासजोडि ॥१३॥ आपापरसवहरिकहिं ॥ रांमना
मरसतागि ॥ दादूओसरजातहे ॥ जागिसकेतोजागि ॥१४॥ बारंबार
वकतननहें ॥ नरनांराइसादेह ॥ दादूबकुरिनपाइये ॥ जनमअमोलि
कयेह ॥१५॥ जिष्ठहरियासंसारहेसुषकासागररांम ॥ सुषसांमरच
लिजाइये ॥ दादूतजिवेकांम ॥१६॥ ऐकापेकीरांमकोकेसाधूका
संग ॥ दादूअनतनजोंप ॥ औरकालकाअंग ॥१७॥ दादूमनमनकेगु
राह्मासिसव ॥ जवहोइनिनारा ॥ तवकुआपनेनेनेंनऊंदेषिये ॥ प्रगट

पीव पिछांणे ॥११८॥ दादू कौ तौ पाये पसू पिरी हांणे लाइ मैं बेर । साथ स
मेरि हहि किया । दादू पस तैं केर ॥११९॥ दादू कौ मी पाये पसू पिरी ॥ अंद
रि सो आहे ॥ हांणी पांणी बिच में ॥ मिहरि लागा हे ॥१२०॥ इति बिरह को अं
ग संपूरण ॥ अंग ३ ॥ साखी ॥ १२० ॥ अथ परचा मन को अंग लि
ख्या ॥ दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेवतः । बंदनं सर्व
साधवा प्रणामं पारंगतः ॥१॥ दादू एक मन बरसै नीला ब्रे ॥ घट
मैं बारी घेरि । मन हस्ती माता बहै अंकुस दे दे फेरि ॥२॥ हस्ती
छूटा मन फिरै । क्यूं ही बंध्या न जाइ । बहुत महावत पचि गये
। दादू कछू न बसाइ ॥३॥ जहां थें मन उठि चलै । फेरि तहां ही रा
खि । तहां दादू लैलीन करि । साध कहैं गुर साखि ॥४॥ थोरै थोरै हट
किये रहैगा ल्यो लाइ । जे जब लागा उनमनि सौं तब मन कहां न जाइ

॥५॥ आन देव सौं मन कौं ॥ दादू [illegible] जे मन ॥ साषी दे आसपिर वैसे ॥ सोई प
धु जैन ॥६॥ सोई सूर जे मन गहै ॥ निमष न चलने देइ ॥ जब ही दादू प
ग भरै ॥ तब ही पाकडि लेइ ॥७॥ जेती लहरि समंद की ॥ तेते मनहि
मनोरथ मारि ॥ बैसे सब संतोष करि ॥ गहि आतम एक बिचारि ॥८॥
दादू जे मुष माहैं बोलता ॥ श्रवणहुं सुणता आइ ॥ नैनहुं माहैं दे
षता ॥ सो अंतरि उरझाइ ॥९॥ दादू चंचल कहै तिकि करि लै हा[illegible] गै
आइ ॥ यौं मन [illegible] रहै एक सौं ॥ दादू लीजे ल्याइ ॥१०॥ मन लागा आ[illegible]
जे जीव जु जोगि ॥ तो [illegible] रस सब सूकै ॥ पंच हूं आ[illegible] क [illegible] सबे
तब आगम निरंतर मसबं सूकै ॥ बैठे [illegible] ॥ नर षेराक
तन फै ॥ आतम रांम मिले जब दादू ॥ तन [illegible] जे ॥११॥
जब [illegible] ॥ [illegible] ॥ दादू मन [illegible]

रनया। मन... जिमिले गमोइ ॥१२॥ दोहा॥ विनु अवलंब न कोउ रहै। मन
चंचल चलि जाइ। अस थिर मन कोउ सदा रहै ॥ सुमन गाम मती जाइ ॥१३॥
मन अ... रक हि लीजै नाते। दोहा॥ कैसे ... ही राम ॥१४॥ हरि सुमति
मो... तन मन मानि है चलन है होइ॥ दोहा॥ बेधा प्रेमरस। बी घन चा
है सोइ ॥१५॥ जब अंतर अरज्या रोक सो। तब धाके सकल उपाइ॥
दोहा॥ मिंह चल थिर नया। तब चलि कहीं न जाइ ॥१६॥ दोहा॥ कन
क बो हि ... थि है लि किरि मं कि संम दो जाइ। उफिर दिखा ... ट बिलब
निंह ... बे गा आइ ॥१७॥ एक मन न कागद की गुमी। उनि च दो आ
काम। दोहा॥ ... तब आइ रहे हैं म पास ॥१८॥ दोहा॥ सी ता गारि
क निंह ... थिर नर साइ। दोहा॥ एगन नहीं साचके॥ ... हि सजाइ

॥१९॥ तब सुख स्नान करन कौं ॥ जे मन थिर मेरा होइ ॥ सोइ निर्मल
तरां मसौं ॥ जे करि ज्ञान कोइ ॥२०॥ मन निर्मल थिर होइ है ॥ राम
नाम स्नान ॥ दादू दरसे [illegible] ॥ पूरण प्रेम आनंद ॥२१॥ दादू यौं फूटे
थे सारा जग ॥ संधे संधि मिलाइ ॥ बाकडि बिछे न [illegible] चिये ॥ [illegible]
फूटि न जाइ ॥२२॥ दादू यह मन [illegible] ॥ नरक जगा के पा
ट ॥ [illegible] मन [illegible] नाथ सौं ॥ गुरु दिखाई बाट ॥२३॥ दादू मन
सुध साबति आपणां ॥ निहचल होवै हाथि ॥ तो इहां हीं [illegible] देखिहै ॥ प
[illegible] ज्ञान साथि ॥२४॥ जब मन लागै राम सौं ॥ तब [illegible] काहे के
जाइ ॥ दादू पाणी लूण ज्यों ॥ ऐसे रहै समाइ ॥[illegible]॥ ज्यों [illegible] से ह्ये
मे ॥ ज्यों पाणी मैं लूण ॥ ऐसे [illegible] राम सूं ॥ मन ही हद साधे [illegible] ॥२६

दादू मनकां मसक मूंदिये। कांम क्रोध के मूल। दादू बिषै बिकार सब
सत्गुर सबद उदूल ॥२७॥ सो कुछ हम थैं ना भया। जा परि रीझै रांम। दा
दू संसार थैं। हम आये बेकांम ॥२८॥ का मुहं लै हंसि बोलिये। दादू
दीजे रोइ। जनम अमोलिक आपणां। चले अकार्थ षोइ ॥२९॥
जा कारंणि जग ढूंढिया। सो पद दूरै नांहि। दादू हरि की जगति बिं
न। भ्रम आपनें कलि मांहि ॥३०॥ कीया मन का भावता। मेटी आ
ज्ञाकार। क्या ले मुष दिषलाइये। दादू उस भरतार ॥३१॥ इंद्री स्वा
रथि सब कीया। मन मांगे सो दीन्ह। जा कारंणि जग सिरजिया
सो दादू कछू न कीन्ह ॥३२॥ कीया था इस कांम कूं सेवा कारे
णि साज। दादू भूल्या बावरा मसखरा रचे को काज ॥३३॥ दादू बिषै

बिकार सं॥ जब लग मन के दोस है ॥ तब लग न्हा चा तिन कोई॥ तिन के
न पति दाता ॥ ५४ ॥ दादू काजी कोई॥ कब हो इत्या ॥ हरि सु नर सों कमत
र॥ काजी तौ कब ही मिलै ॥ ऐसे मन बिषै बिकार ॥ ५५ ॥ बाहिं हिं
जे न मन गंवाइया ॥ कीये अंत बिकार ॥ यूं अंतर मन स्नि रहे तो
मया ॥ तहां दादू निज सार ॥ ५६ ॥ दादू जिन बिष पीवै बावरे दिं
न दिन बाढै रोग ॥ देषत ही मरि जाहिगा ॥ तजि बिषिया रस भोग
॥ ५७ ॥ आपा पर सब दूरि करि ॥ राम नाम रस लागि ॥ दादू औसर
जात है ॥ जागि सकै तौ जागि ॥ ५८ ॥ दादू सब कछु बिलसता
खाता पीवता होइ ॥ दादू मन का भावता ॥ कहि समझावै कोई
॥ ५९ ॥ दादू मन का भावता ॥ मेरा कहै बलाइ ॥ साच राम का

गा वे ता ॥ दादू कहै सुणि आइ ॥ ५० ॥ जे मन का जाणा वे ता ॥ जे कु ब
की जे ज्ञान ॥ मन ताहि हि राषै एकसौं ॥ दादू साध सुजांण ॥ ५१ ॥ जे कु
छ जाणै राम कै ॥ सो तत कहि समझाइ ॥ दादू मन का जाणै ता ॥ सब
को कहै बणाइ ॥ ५२ ॥ पैहि परा चां लेन ती ॥ दादू रहा पालि पियार ॥ रा
म रथि तिनि बैठैन दे ॥ षा वे कंक सिपार ॥ ५३ ॥ दादू का प्रमो धै ज्ञा
न कें ॥ ज्ञा छंगा वडि हि या जांत ॥ औरे कौं ज्ञान तबे सै ॥ ज्ञा पंगा है
छि षयात ॥ ५४ ॥ दादू पंच गै प्रमो षि ते ॥ इनही कं उपदेस ॥ यूं कम
न ज्ञ कसा ही हाथ्य करि ॥ तै चेला सब देस ॥ ५५ ॥ दादू पंचे का मुष ज ब
है ॥ मुष का मन [illegible] ॥ यूं का मन राषै जतन करि ॥ साध कहावै सोइ
॥ ५६ ॥ दादू जब लग मन के दोइ गुण ॥ तब लग निपजै नांहि ॥ दो

[illegible]

अघा रा [illegible]र ॥ मैं है मोती नीपजै ॥ [illegible] बद सरीर ॥५४॥ दादू मन
पंगुल भया सब गुण गया बिलाइ ॥ है काया नौ जोबनी ॥ मन
बूढा है जाइ ॥५५॥ दादू के छिन [illegible] पलों के रिती ये ॥ मन नै
[illegible] जोर ना [illegible] निर जन नला [illegible] ॥ प्राणी [illegible] हरि [illegible] र ॥५६॥
॥ मन नै [illegible] धा की या ॥ घट मैं रह हरि [illegible] ॥ सांई सतगुर [illegible]
[illegible] ॥ दे [illegible] दिवा ना जाइ ॥५७॥ दादू कहै है राम बिना मन रंक है
[illegible] चेती ना [illegible] ॥ जब मन [illegible] राम सूं ॥ तब [illegible] ॥५८॥
[illegible] का [illegible] मन ॥ जीव [illegible] सब जाचै ॥ तिणों तिणों कै [illegible] दादू
[illegible] ॥५९॥ इंद्री [illegible] पलों बसि करै ॥ सो का है जा
[illegible] जाइ ॥ दादू [illegible] ॥ [illegible] बे मैं [illegible] जाइ ॥६०॥ मन

जनों
जनां

मनसातोनंमुमिलै तबजीवछलीयाजंफ पंचूंकाफेल्याविष्ठिरै ॥ माया
नचावैरांम ॥ ९१ ॥ नकटीस्याेगेनकटामंचै ॥ नकटीतात्नवैआवै
॥ नकटीस्याेगेनकटागावै नकटानकटाजावै ॥ ९२ ॥ पंचोइंद्री
मृतहैं ॥ मनतंगोछत्रपाल ॥ मनसाटेबीपुजिये ॥ स्रहतीनंमुकाल ॥ ९३
॥ जीवतत्मूटैंजानतसब ॥ मितकतूटैटैव ॥ टाहकहांपुकारियै ॥ स
रिकरिमूएसुंव ॥ ९४ ॥ स्यागंनिधोमजंमूनीकलै ॥ टेषतसबैबिला
इ ॥ त्यंमनबिछुटयारांमसौं ॥ दहदिसबीमरिजाइ ॥ ९५ ॥ घरसोम
उबकाजाया ॥ मनबकरितस्यायया ॥ टाहस्यंगंनिकेधोमजं ॥ घर
घोजेनपाया ॥ ९६ ॥ सबकाहूकेसेनहैतनपमरैजाइ ॥ स्येस
कोईयकहै ॥ उलटासमाहिसमाइ ॥ ९७ ॥ कंटककरिसनटास्यंगीगरै

पसरि। ...मन नेंकेरि ॥ दादू कांश महमानौ ॥ यौं क्रोसौं घरि घेरि ॥६८॥
॥ सांध मन सूं मेमिलि रहै ॥ मन राखे बिलंमाइ ॥ साध मन सूं बिन कंरे
है ॥ तब हूं बी घरि जाइ ॥६९॥ चंचल चंचल चंक दिस जात है ॥ गुरबा
इ क सो बंधि ॥ दादू संगति साध की ॥ पारब्रह्म सें संधि ॥ एक निरं
जनां के संग ॥ साधू संगति मांहिं ॥ दादू मन बिलमाइये ॥ दूजा कोई
नांहिं ॥७०॥ तन मैं मन आवै नहीं ॥ नसदिन बाहरि जाइ ॥ दादू
मेरा जीव दुखी ॥ रहै नहीं लौ लाइ ॥७१॥ तन मैं मन आवै नहीं ॥ चं
चल चंचल दिस जाइ ॥ दादू मेरा जीव दुखी ॥ रहै नरंतर समाइ ॥७२॥
कोटि जतन करि करि मुये ॥ यह मन दह दिसि जाइ ॥ राम नाम रो
क्यौ रहै ॥ नांही आन उपाइ ॥७३॥ यह मन बहु बकवाद सूं ॥ बा

इहु तके जाइ । दादू बकतमु बोलिये ॥ सहै जे रहे समोइ ॥७४॥
मूला मेहु फेरि मन ॥ मूरिष मुगध जे वार ॥ सुमरि सनेही आपणा
आतम का आधार ॥७५॥ मन माणिक मूरिष राखि रे । जण जण
हाथि न देइ ॥ दादू पारिष जौंहरी राम साध दोइ लेइ ॥७६॥ दादू मा
यो बिन मानै नहीं । यहु मन हरि की आंन ॥ ज्ञान षडग गुरदे
व का । ता संगि रहै सुजांण ॥७७॥ मन नम्र घा मोरे सदां । ता को मीग
मास । दादू षेवे कूं हिल्या । ता थें आं नं उदास ॥७८॥ कत्या है मोरे
मां न्य मन । पापी परहरि कांम ॥ बिषै या का सेतां क्या फिरे ॥ दादू कंहि
रे रांम ॥७९॥ केता कहि समझाइ ये मांनै नहीं निलज ॥ मूरिष
मन समझे नहीं ॥ कीये कांज अकाज ॥८०॥ मन नहीं मैं ततन को जि

ये ॥ दादू हूं पंजर देह । मांहें मन रतिं देखै ईडिहिं ज्यौं सरिक रिलेह ॥८१॥
तब लगि है का रा होत है । हरि बिन चितवत न ज्ञान । क्या कहि ये मनम
ठैन हीं । दादू सिष वूत ज्ञान ॥८२॥ दादू पांणी धोंवें बावरे । मन का मैं
लन जाइ । मन निर्मल तब होइगा । जब हरि के गुण गाइ ॥८३॥
दादू ध्यान न धरें का होत है । जे मन नहीं निर्मल होइ । तो बग सब ही
उधरैं । जे इहि बिधि सिधि कोइ ॥८४॥ दादू ध्यान न धरैं का होत है
जे मन का मैल न जाइ । बग मीनी का ध्यान धरि । पसु बिचारे याइ ॥८
५॥ दादू काले थैं धोला भया । दिल दरिया मैं धोइ । मांलिक सेती
मिलि रह्या । सहजैं निर्मल होइ ॥८६॥ दादू जिस का दरपन ऊ
ज्जला । सो दरसन देखै मांहि । जिस की मैली आरसी । सो मुख देखै

नांहिं ॥८०॥ दादू निरमल सुखसन न। हरि रिरागा राता होइ ॥ दादू कंचं
न करि लीया। काच कहै नहीं कोइ। यक मन अ पषा थिर रहा
॥ करि नहीं जांणैं कोइ ॥ दादू निरमल देव की। सेवा कूं करि होइ
॥८८॥ दादू यक मनतीं लोक मैं। अरस परस सब होइ। देही की
र ष्या करै। हंस जिन मीटे कोइ ॥८९॥ दादू देह जतन करि राषि
ये। मन राष्यां नहीं जाइ। उतिम मधिम वासना। भला बुरा सब
षाइ ॥९०॥ दादू हा मैं मुष नस्या। चाम रहा लपटाइ। मांहैं जि
न्या मास की। ताही सेती षाइ। न कं दा रैन कके। निस दिन ब
है बलाइ। मुचि कहां लौं कीजिये। रस मसु मसि मुं गागा। ह ॥९१
प्र संसनु मिलि रहा। ह रामक व बिकार। दादू ब हसुं दसी

रि । कहां रहै आचार ॥ ५१ ॥ दादू जौ दीपक न कै सैं । मरतां कलय बिसे
इ ॥ दादू पूछ मन मम करा । त्रिनि निं कौं ईंपति याइ ॥ ५२ ॥ दादू मूवा
मन हम मजीवत देष्या । जैसें मड हट न्हूल मर्वां पीछै हम हिला यौं । जैसे
मेरा पूत ॥ ५४ ॥ निहचल जक रतां जुग गये । चंचल न न बहीं होइ
दादू पल पल रे पलक कै मैं युकु मन न मारे मोहि ॥ ५५ ॥ दादू युकु मन न मीन
का । जल स नी वैं सोइ । दादू युकु मन न संपट है । जिनि सपती जे कोइ
॥ ५६ ॥ मो दें स लिम कै रे है । दादू हरि पसारै अंग । पवंन लागि यौ
गनया का आ नाग न वंग ॥ ५७ ॥ मन न वंगा युकु बिष न स्या । नि
र बिष कौं दीं न होइ ॥ दादू बिष्या गुर म रडी । निर बिष की या सो
इ ॥ ५८ ॥ सुषनां तन मन आरे विषे । जब लग चंचल ल होइ । जब ति

तहां

इचलत्पागानों तेसं ॥ तब सुष नां नांही कोइ ॥१००॥ जागत
जहां जहां मन रहै ॥ सो वृतत सौं जाइ ॥ दाइ जै जै मन निंब से ॥ सोइ सो
इदे वै आइ ॥१०१॥ दाइ जै जै चित बसे ॥ सोइ सोइ आवे चीति ॥ बा
हरि भीतरि देषिये ॥ जांही सेती प्रीति ॥१०२॥ सोकं रागि हरिया देषि
ये ॥ मन चित ध्यान लगाइ ॥ दाइ के तेगु गये ॥ सो जीहरस्यान जाइ
॥१०३॥ जिसकी सुरति तहां रहै ॥ तिसका तहां बिश्राम ॥ माचे
माया मोह मै ॥ जा चै ब्रह्म राम ॥१०४॥ जहां मन तहां षेजौं वृती
मरजाति सघोर जाइ ॥ दाइ बाम ब्रोगका ॥ तहां पहुंचा रस्ना
से मांइ ॥१०५॥ जहां सुरति तहां आवृहै ॥ जहां नांही तहां नांहि
गुरा निर्गुण जहां रसि ॥ दाइ परंत माहिं ॥१०६॥ जंहा सुरति

तहांजीवहै। आदिअंतिअस्थान। मायाब्रह्मजहांराषिये। दादूजहां
विश्राम॥१०७॥ जहांसुरतितहांजीवहै॥ जीवनमरणजिसठौर। वि
षअम्रतजहांराषिये। दादूनाहीऔर॥१०८॥ जहांसुरतितहांजी
वहै॥ जहांजानैंतहांजाइ॥ गमअगमजहांराषिये। दादूतहांसमा
इ॥१०९॥ मनमनसाकाभावहै। अंतिफलैगासोइ। जबदादूबा
णिकवणांनि॥ तबआसेअनमनहोइ॥११०॥ जेपहलींकरणीकरि
गये॥ सुरगिपहूंतेजाइ। दादूमनकीबासना। नरकिपडेफिरिआ
इ॥१११॥ पाकाकाचाव्हैगया॥ जीत्याहार्योनांव। अंतिकालिगा
फिलजाया। दादूफिसलैपांव॥११२॥ दादूएकमनअंगुलअंपचादि
नालअंगांगलाकादेहदादूतरिअवगांसषे। भरतीआयसंसा॥

॥१३॥ ऐसा कोई एक मन । मरै सु जीवै नांहि । दादू ऐसे मन सऊं तैं दै
फिरि आवै कलि मांहि ॥१४॥ देषा देषी सब चले । पारि न पहुंच्या
जाइ । दादू आसंण पहलि के । फिरि फिरि बैठे आइ ॥१५॥ बर
तनि येकै भांति सब दादू संत असंत । भिंनं भाव अंतरि घणा । मन
सा तहां गहंत ॥१६॥ दादू यहु मन मारै मोमनां । यहु मन मारै मी
र । यहु मन मारै साधिका । यहु मन मारै पीर ॥१७॥ दादू मन मारे
मुनियर मुये । ब्रह्म बिसंन महेस । सिध साधिक जोगी जती । दादू
देस बिदेस ॥१८॥ पूंजा मांनि बडाईयां । आदर मांगै मन । रांम गा
है सब परहरै । सोई साधू जंन ॥१९॥ जे सोज कहां आदि पाइये । तहां त
हां जीव जाइ । बिन आदर ... रांम रस ... जिहि वाह ... ॥

॥१२०॥ करणी किरका को नहीं । कथणी अनंत अपार । दादू यौं क्यूं
पाइये रे मन मेरे गंवार ॥१२१॥ दादू मन मनसा कर न्याया । इंद्री अपणी हा
थि । तो काहे कूं कष्ट न कीजिये । कनक कामनी साथि ॥१२२॥ जब म
न निरंजन घरि रह्यी । जैसै मैं बेगा आइ । निरंजन सौं छैं बीछुट्या । तब का
यर है जाइ ॥१२३॥ जब मन मनसा कहे रहै । इंद्री बल भागा । काया
के सब गुण तजे । निरंजन लागा । आदि अंति मधि एक रस । टूटै न
हीं धागा । दादू एकै रहि गया । तब जाणी जागा ॥१२४॥ दादू मन के
सीस मुख । हस्त पाव है जीव । श्रवण नेत्र रसना रटै । दादू पाया पी
व ॥१२५॥ जहां के नवायें सब नवैं सोई सिर करि जांण । जहां के
बुलायें बोलिये । सोई मुख परवांणि । जहां के सुणायें सब सुणे । सो

ईश्वर बंण सयाणा ॥१२६॥ जहां केटे घेर्टे छिपे ॥ सोई दैंन मुं औंन
॥१२७॥ दादू मन ही सौं मल ऊपजै ॥ मन ही सौं मल धोइ ॥ सीष च-
ली गुर साध की ॥ तौ तूं निर्मल होइ ॥१२८॥ दादू मन ही माया ऊप-
जै ॥ मन ही माया जाइ ॥ मन ही राता राम सौं ॥ मन ही रह्या समाइ ॥
१२९॥ मन ही मरणा ऊपजै ॥ मन ही मरणा षाइ ॥ मन अविना-
सी ह्वै रह्या ॥ साहिब सूं ल्यौ लाइ ॥१३०॥ मन ही सनमुष नूर है
मन ही सनमुष तेज ॥ मन ही सनमुष जोति है ॥ मन ही सनमुष से-
ज ॥१३१॥ मन ही सौं मन थिर भया ॥ मन ही सौं मन लाइ ॥ मन ही
सौं मन मिलि रह्या ॥ दादू अनत न जाइ ॥१३२॥ इति मन को अंग
संपूर्ण ॥ अंग ॥१०॥ साषी ॥१३२॥ अथ सूषिम जनम को अंग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं । नमस्कार गुरदेवतः । बंदनं सब साधवा ॥ प्रणा
मं पारंगतः ॥१॥ दादू चौरासी लष जीव की । प्रकीरति घट मांहि । अने
क जनम दिन के करै । कोई जांणै नांहि ॥२॥ दादू जेते गुण ब्यापै जी
व कै । तेते ही अवतार । आवागवन यहु हरि करि । समर्थ सिरजनहा
र ॥३॥ सब गुण सब ही जीव के । दादू ब्यापै आइ । घट मांहे जामै म
रै । कोइ न जांणै तांहि ॥४॥ जीव जनम जांणै नहीं । पलक पलक
मैं होइ । चौरासी के जोग मैं । दादू लषै न कोइ ॥५॥ अनेक रूप दि
न के करै । यहु मन आवै जाइ । आवागवन मन के मिटै । तब दा
दू रहै समाइ ॥६॥ निसबासुर यहु मन चलै । सूषिम जीव संघार
दादू मन थिर कीजियै । आतम लेहु उबारि ॥७॥ कछू कीयां वंकं कं

कूं पांणी ॥ धरत्यंबर गुंणा मांह ॥ कहु कहूं क्यौं जरक ब्रह्म केते डी ॥ नरप
मद्याकै जाइ ॥ सूकर स्वांन सियाल सप ब्रह्म पर है घट मांहि ॥ कुंज
२ रकीडी जीव सब ॥ पंफे जां पैं नांहि ॥ ८ ॥ इति श्री परब्रह्म जस का अं
ग संपूर्ण ॥ अंग ॥ ११ ॥ साखी ॥ ११४ ॥ अथ श्रम या का अंग ॥ दादू नमो
नमो निरंजनं ॥ नमस्कार गुरुदेवतः ॥ वंदनं सर्व साधवा ॥ प्रणांम
पारंगतः ॥ १ ॥ साहिब है है पूरब हम नहीं ॥ सब जग आप्रै जाइ ॥ दादू सु
पिनां टे विये ॥ जागत गया बिलाइ ॥ २ ॥ दादू माया का सुष पंच दि
न ॥ गल्यौ कहा गंवार ॥ सुपिनैं पाया रासधन ॥ जागत नहीं ज्यौं बार ॥
३ ॥ दादू सुपिनैं सूता प्राणियां कीयां आनंद भग्न बिलास ॥ जागत ह्योग
कै भया ॥ ताकी केसी आस ॥ ४ ॥ यो माया केती सुधमान करै ॥ ... ग्रामसु

८

देसिहुंस। सुतिकालिं आधणगया। दाइ होकुं उदास ॥५॥ कुंनां ही
सोदेषिये ॥ सुतासुपिनां मांहि। दाइ कुंठाकै गया। जागे तो कुंकंनां
हि ॥६॥ यां कुं सब भाषण गाजल कुंगा कि लिमि लिहोइ। दाइ चित
का देषि करि ॥ सति करि जां नां सोइ ॥७॥ कुंगा कि लिमि लिमग
उंस पां ॥ कारिनी [illegible] उगप्पा सामरै। पसु प्रां गां पीया ॥८॥
छलाघा छ वि जायइ गा ॥ सपिनां वाजी सोइ। दाइ देषिन स्रलि
ये ॥ पुकुंनि सरूप नहोइ ॥९॥ सपिनै सब कुंछ देषिये। जागे तो
कुंछ नां हि। ऐसा यह संसार है। पसक्कि देषि मन मांहि ॥१०॥ जं
कुं कुसुपिनै देषिये। ते माया जग संसार। ऐसे स्रापा जां णिये। पर
कासतो र ॥११॥ [illegible] जनत वा करि राषिये। दिढ गहि स्राम

मूल । इ जाहि छिन टेषि । सबही सें वलफल ॥१२॥ दादू ...
रि नहीं टेषि । सब माया का रूप । तहां जे मैं नारा षिय । दादू है लत
अनूप ॥१३॥ दादू हस्ती हैं व्रर मन टेषि करि । फूल्यो अंग न माइ
गेरि ट मेंता येक दिन । सब धोका में जाइ ॥१४॥ दादू माया बिहडे
दे षतां । काया संगि न जाइ ॥ कृत्म बिहड़ै वापुरे । अजरावर ल्यौ ला
इ ॥१५॥ दादू माया का बल टेषि करि । आपा अति अहंकार । अंध
भया सूझे नहीं । का करि है सिरजनहार ॥१६॥ मन मनसा माया
रती । पंच तत्त परकास । चौदह तीन्यू लोक सब । दादू ... उदास ॥१७॥
माया देषे मन षुसी । हिरदै हौंइ विगास । दादू यहु गति जीव की । अं
ति न पूगे आस ॥१८॥ मन की मूठि न मांडिए । माया के नाम ...

मैं [illegible] दादू सोई बाना ॥२१॥ कंचन षांडा कुछ पेलतां । कुछ
सोवतां [illegible] न आई ॥ कुछ बिषिया रस बिलसतां । दादू गये बिलाइ
॥ मां [illegible] मगन [illegible] माया रस पीया ॥ पांइ [illegible] मगन माया [illegible] या
राम रस लीया ॥२२॥ दादू माया संग मन बीगड्या । ज्यूं कांजी करि दूध
दैसाई संसार में । [illegible] सुध ॥२३॥ गंधी संग [illegible] या । [illegible] म
बकांइ ॥ दादू [illegible] गेहूं [illegible] री मा होइ ॥२४॥ दादू माया संग म
न [illegible] या ॥ [illegible] सिमाल ॥ दादू स [illegible] चा [illegible] कि करि । [illegible] न
॥ माया [illegible] जि गये [illegible] कि [illegible] न [illegible] ये ॥ दादू माया मांहि [illegible] गी ॥ इं
नि [illegible] ये ॥२५॥ दादू माया मोटी [illegible] कार की । कोई न सकै निवारि ॥ ब
हि [illegible] तपा [illegible] विकारि ॥२६॥ दादू रूप राग [illegible]

जेथा नापाक थे कोन कहा इ आगे क [illegible]
सागीर ८
गुण अग्या सेरे ॥ जहां माया तहां जाइ ॥ विषया अग्या घिर [illegible]
हे घर छाड ॥२७॥ साधन कोई पग जरै ॥ कब हूं राजा [illegible] वार ॥ दादू
टा आपमे ॥ वेगा ब्रह्म विचारि ॥२८॥ दादू [illegible]
पा अंगि विचारि ॥ सह कामी माया मिले ॥ निहकामी ब्रह्म बिचार
॥२९॥ दादू माया अंग नज घेरे है ॥ हम मे [illegible] दूर ॥ माया मैं [illegible]
रही ॥ ब्रह्म का लीधार ॥३०॥ दादू विषे के कारणें रूप राते रहै ॥ नैनां
पाक यूं कीन कंजाई ॥ बदी की बात सुनत सारा दिन ॥ [illegible] नापाक
यूं की क जाइ ॥ स्वाद के कारनें लुबधि लागि रहै ॥ [illegible] नापाक [illegible]
[illegible] जाइ ॥३१॥ दादू नारी चैन तब ॥ जब इक राजी होइ ॥ दादू
जीउ घडै मैं ॥ सुपीन वैसे कोइ ॥३२॥ [illegible]

रा[illegible]चं[illegible]बास ॥ राजा प्रजा सुष बसै ॥ दादू जोति प्रकास ॥ ३३ ॥
॥ जैसे कुंजर काम बस ॥ आप बंधाणों आइ ॥ ऐसैं दादू हम भये ॥ क्यूं
करि निकस्या जाइ ॥ ३४ ॥ जैसे मरकट जीभ रस ॥ आप बंधाणों अं-
ध ॥ ऐसैं दादू हम भये ॥ क्यूं करि छूटै फंध ॥ ज्यूं सूवा सुष कारणैं ॥ बं-
धाणा मूरिष माहि ॥ ऐसैं दादू हम भये ॥ क्यूं करि निकसैं नांहि ॥ ३६ ॥
जैसैं अंध अज्ञान ग्रह ॥ बंध्या मूरिष स्वादि ॥ ऐसे दादू हम भये ॥ ज-
ग्या नम गंवा बादि ॥ ३७ ॥ दादू बूडि र[illegible] रे बापुरे ॥ माया ग्रह के कूप ॥ मो-
ह्या कंनक र कामनी ॥ नाना बिधि के रूप ॥ ३८ ॥ दादू स्वाद ला-
गि संसार सब ॥ देषत परलै जाइ ॥ इंद्री स्वारथि साच तजि ॥ सबै बं-
धाणे आइ ॥ [illegible] ॥ [illegible] रहे ॥ माया हित चित लाइ ॥ सोई सं-

तजें न कबहू बैर ॥ स्वाद काम गिनु गागा है ॥ ४९ ॥ दोहा जिहि [illegible] धरि
ठ घर कहा युक्त संसार ॥ कहा माया हेतु पिकरि ॥ कहा [illegible] हाय
र ॥ ५० ॥ दोहा कहा संसार ॥ कहा परिवार ॥ कहा घर बार ॥ कहा नर
नारि ॥ तहां मन मोहैं ॥ कहा कुल जात ॥ कहा पितु मात ॥ कहा बं
धु भ्रात ॥ कहा तन गात ॥ संतति करि जोते ॥ [illegible] सब धन कहा सब
कथ ॥ कहा सब [illegible] ॥ कहा ज्ञान [illegible] ॥ कहा मे पुत्र नै ॥ दोहा जागि
कहा सब त्यागि ॥ जागि रे जागि [illegible] ॥ ५१ ॥ दोहा जैन सभा
[illegible] सब छूटे ॥ कहा [illegible] ॥ मा [illegible] मिले जागि
जि भक्ति तो [illegible] ॥ ५२ ॥ दोहा कहा [illegible] कारने ॥ [illegible] विकार ॥ ग
हदा [illegible] संपदा ॥ पुत्र कुटंब परिवार ॥ [illegible]

कंपं [illegible] कां रै सो माटी मिलि जाइगा ॥ बिसरया सिरजनहार ॥४३॥ दा
दू गतं [illegible] गतं धनं गतं दारा सुत जोबनं ॥ गतं माता पिता गतं बंधु
सजनं ॥ गतं आपा गतं परं ॥ गतं संसार कतरं जनं ॥ नजनमि नजनमि रम
न ॥ प्रबूहतनिजनं ॥४४॥ जीवो माँहें जीव रहै ॥ ऐसा माया मोह ॥ सांई
सधा सब गया ॥ दादू नहीं अंदोह ॥४५॥ माया मगन [illegible] रते पर ॥ सदा
ति कंद नहोइ ॥ जे बैचेतै रवेत ॥ रांसरीषे सोई ॥४६॥ का [illegible] रियेतन
नीपजे ॥ जे ब [illegible] बार ॥ द [illegible] न बीजे [illegible] क्या ग्रचि मरे गंवार ॥४७॥
दादू संसार सौं ॥ निमष न कीजे नेह ॥ जामण मरण न आवटणा ॥ छिं
न छिन न राफेट ह ॥४८॥ दादू मोह संसार कुं ॥ बिहरै तन मन प्राण ॥ दा
[illegible] ज्ञान [illegible] ॥ [illegible] माया हस्त

नी ॥ संधं न बंन संसार ॥ तो भी निरंजन केरं सा ॥ दादू मुझ में तो वा... ॥ ५० ॥
गुर उस के कुसमा में नैं नाहीं ॥ जहं मठ माला नृथ ॥ दादू मन चेतै न [illegible] ॥ काम
न टै यै फिध ॥ ५१ ॥ दादू काम कठिन घट चोर है ॥ घर फोडै दिन राति
सोवत साह न जागई ॥ तत बस्त लै जात ॥ ५२ ॥ दादू काम कठिन घ
ट चोर है ॥ मूंसै भरे भंडार ॥ सोवत ही लै जाइगा ॥ चेतनि पहरै चा
रि ॥ ५३ ॥ ज्यूं घुण लागै काठ कूं ॥ लोहै लागै काट ॥ कांम कीये
घट जाजरा ॥ दादू बारह बाट ॥ ५४ ॥ राहु गिलै ज्यूं चंद कूं ॥ ग
हण गिलै ज्यूं सूर ॥ क्रम गिलै यूं जीव कूं ॥ नख सिख लागै पूरव
॥ ५५ ॥ दादू चंद गिलै जब राहु कौं ॥ गहण गिलै जब सूर ॥ जीव
गिलै जब क्रम कूं ॥ राम रहा भरिपूरि ॥ ५६ ॥ क्रम कै [illegible]

गवैन॥ काटत है बार बार॥ आपने हाथ आप कुं॥ काटत है संसार॥
५३॥ आपो मारै आप कुं॥ एक जीव बिचारा॥ हिबरा बरसा हार
है॥ सो चिन्हूं थे मारा॥५४॥ आपो मारै आप कुं॥ आप आप कुं मारइ॥ आ
पै आपण का लै है॥ साहब कहि संसम कौ है॥५५॥ मरिबे की सब तन पद्वे
जीबे की तुम छनां हि॥ जीबे की जाणें नहीं॥ मरिबे की मन माहि
॥६०॥ बैध्या तुं कुन बिकार सं॥ कबीर पका मुहि॥ ठांठे है सब आका
रकै॥ साहब सुं कबीर मथुरा [illegible]॥६१॥ [illegible] कुरै तो तो जाय दे पिय॥ कां मन
धरै हंकार॥ रावण से बहु सगर नौ करै॥ आपा आप न ति ब्रकार॥६२॥
बिषै हलाहल खाइ करि॥ सब जग मरि मरि जाइ॥ साहब सुं खानौ
रहे॥ थिरै रावण सौ नांइ॥६३॥ जेता बिछियां बिलसियै॥ तेता ह
रामह॥ सब तां धिम मां रामस मां रिय॥ कैता मिरावा सोइ॥६४॥ बि

षियाकारसमद्रजलता ॥ नरनारीकाभास ॥ मायामातेमनुश्रीया
कीयाजनमकाभास ॥ ६५ ॥ दोहरुजादेसा कृजंगमकै ॥ बियहला
हलषाइ ॥ तहांजनतेरामझी ॥ मुपिंकेटनजाइ ॥ ६६ ॥ षामा
बूझीजगतिहै ॥ सोदरबुझामाहि ॥ पयरटपैडाहसबसै ॥ तहांसंत
काहेकूजाहि ॥ ६७ ॥ सपरांपेकसबजीवकुं ॥ आगैपीछेषा
इ ॥ दोहरू दिनपसारकरिचा ईजंनकबीरजाइ ॥ ६८ ॥ दोहरूषायेमा
नसीकंकरिजीवैलोग ॥ कबीरकैहै सारहीं ॥ जीमैंहिंसजीपि
॥ ६९ ॥ दोहरू मायाकारसीजगमेरे ॥ पीवकेदाग कोइटहैषोडेउ
नवूझजे ॥ निम्मलनन्याराहोइ ॥ ७० ॥ कालकबीरनककन्नरुकामसी ॥ प
हरिहंनकासंग ॥ दोहरू सबजगजलिमूवा ॥ दीपकजोतिपतंगा
दोहरू जहांकनककन्नरुकामसो ॥ तेहांडा ॥ वपतगेजाहि ॥ कन्नमी

अनत सु फेर नहीं । जाले जलि मन ऐसा हि ॥७१॥ छोटे मांहें माया घणी
बाहरि माया ही होइ ॥ फाटी कंथा पहरि करि चिह्न करै सब कोइ ॥
७२ ॥ कोया राखै नेटटे ॥ मन दरहरि रिसघैलै ॥ दादू कौन कर रोकै मसाँगी
माया नहीं मेल्है ॥७३॥ दौस्त मन नरसकंधा पुरुष मारी ॥ माया त्यागी
कहै हु ल्वाजीरी ॥७४॥ माया मदरमी चक्कं तीमै पैगघाह ॥ क्रंधजन
या सकै नहीं ॥ साधकै ऐसमकाह ॥७५॥ दादू कैंतें जलि मुये ॥ ह
सजो गी की कामा गी ॥ दादू दौलत जा गिहैं कौ गा कसं गि ना गि ॥७६॥
॥ दादू जोडू जबनै मैं पाग लौ ॥ तैसा यू जग मे सो र ॥ माया मातेवी बंध
ब ॥ दादू मन बार ॥७७॥ दादू माया फोडे नैनं नैं रामनसूं
का संसा धपुकार मेरे नहि [illegible] गनिकी काब ॥७८॥ किंनो

भुवंगम सव सम संध । बिन जल बूडे आइ ॥ बिंजरी पावक जंत्र जंते ॥
दोहा कुंदन वसमा ॥ ७९ ॥ दोहा अंब मल रूपी रंग ॥ औ रस सी बिसका
ल । रोध नाहि रान मेहे ॥ दोहा इजा का [illegible] ॥ ८० ॥ बाजी चित्र हरस्वाइ
करि । रहा आश्रय पर होन न है ॥ माया पट घट दीया ॥ ताथें ज्ञ थेन
कोइ ॥ ८१ ॥ दोहा बाहे देवता ॥ ठिग ही ठोरी न जाइ ॥ पीव पीव करते
सब गये ॥ श्रीं पादि न दिखाइ ॥ ८२ ॥ मैं चाह्यो सो ना मिले ॥ साहिब
का दीदार ॥ दोहा बाजी [illegible] है ॥ सो नारंग आया रे ॥ ८३ ॥ हम चा
हे सो ना मिले ॥ औरे बहुत राग आइ ॥ दोहा [illegible] लें नहीं केता
आवे जाइ ॥ ८४ ॥ बाजी मोहे जीव सब ॥ हम कुं अरु की बाति
दोहा के सी करि गया ॥ आपण [illegible] ध्याइ ॥ ८५ ॥ दोहा सांई र

तौ है ॥ इच्छा नर मैं बिकार ॥ ताथैं निरंजन निर्मल ध्या ॥ इच्छा घोरस्यूं धा
र ॥ ८६ ॥ दादू सो धन लीजिये ॥ जे तुम्ह सेती होइ ॥ आया के बांधे केइ
मुये ॥ पूरा पड्या न कोइ ॥ ८७ ॥ दादू कहै जे हम छाड़ी हाथथैं ॥ सो तु
म्ह लीया पसारि ॥ जे हम थैं प्रीति है ॥ सो तुम्ह दीया मारि ॥ ८८ ॥ दादू
हीरा पाया सूं गेलि करि ॥ कंकर कौं कूं खोन्हां ॥ पारब्रह्म कौं छा
डि करि ॥ जीवनि सूं हित कीन्हं ॥ ८९ ॥ सब कंको बगिजै पार ब्रहि
इ राको कोई न लेइ ॥ हीरा ले गया जौहरी ॥ सो आंगे गे संमाट ॥ ९० ॥ दा
डी रेवट क्यूं माधवे ॥ जिहीं लौं कमै फेरि ॥ फरि पकं चे संता पर
दादू चाहि ताकौं मेरि ॥ ९१ ॥ एक पंथ बिन्मांकौं ॥ माया मेरा लै धप
दादू अलट पंथ चलि ॥ दादू बिन बेडौं ॥ ९२ ॥ दादू माया मा

कास

गै जी कूं सब ॥ गहे रहे कर जोड़ि ॥ जिनि सिरजे जल बूंद सौं तासौं बै
ठे तोड़ि ॥ ८२ ॥ दादू सुर नर मुनियर बसि किया ॥ ब्रह्मा बिष्णु महे
स ॥ सकल लोक के सिर खड़ी ॥ साधू के पग हेठ ॥ ८३ ॥ दादू माया
चेरी संत की ॥ दासी उस दरबार ॥ ठकुराणी सब जगत की ॥ तीन्यूं लो
क मंझारि ॥ ८४ ॥ दादू माया दासी संत की ॥ साकत की सिरताज ॥ सा
कत सेती भांडणी ॥ संतौं सेती लाज ॥ ८५ ॥ दादू चारि पदारथ मुक्ति
बापुरी ॥ अठ सिधि नव निधि चेरी माया दासी ताकै आगै ॥ जहां
भगति निरंजन तेरी ॥ ८६ ॥ दादू कहै जु [illegible] देखै जोइ बिचारी
बिलसी बिलसी नै मा थे मारी ॥ ८७ ॥ दादू माया सब गहिले की
ये ॥ चौरासी लष जीव ॥ ताकी चेरी क्या करै ॥ जे रंग राते पीव ॥

॥९९॥ दादू माया बैरंणि जीव की ॥ जिनि को लावै प्रीति ॥ माया
देषै नरक करि ॥ यहु संतनि की रीति ॥१००॥ माया मत चकचाल
करि ॥ चेतन का कीया जाल ॥ माया मात सबै पीया ॥ दादू बिसर्या पी
व ॥१०१॥ जसो जसी को राम की ॥ घर घर की नारी ॥ पतिब्रता न
ही पाव की सो मांगी नारी ॥१०२॥ जरा काल के उदि पीछे लागे
घरि घरि नर मत हो तै ॥ ताथै दादू साहूनमां चे ॥ माद ले इके मुषि
बोलै ॥१०३॥ दादू जे नर कामिनि परहरैं ॥ ते छूटैं गर्भवास ॥ दादू
कंधे मुष मही रहै ॥ तिनि जे न पास ॥१०४॥ रोके न राषे कूबन जावै
दादू घर चे घाइ ॥ नदी पूर प्रवाह ज्यूं ॥ माया आवै जाइ ॥ सद का
सिरजनहार का ॥ को आवै जाइ ॥ दादू धन संचे नहीं ॥ बैठा

सुन्यो वै घाट ॥१०५॥ ज्यों गंगी लिंकै ज्यों गी गाहे । सो फल लोंकै कारि
से घ ॥ जगत लिंकै जग तागाहे । करि करि नाना भेष ॥१०६॥
बुधि बिमेक कौं छल हरै नि ॥ त्रिया नारि पंचू पंवं न्य । अधि का गानि
पजा लि । जीव घर बारि न चावै नि ॥ नाना बिधि के रूप धरि
सब बंधे नाम नि ॥ अंग बिटंब पखे की या । हरि माह चुला वै नि ॥
१०७॥ बाजी गर की पूतली ज्यूं मर्कट मोहौं । दादू माया राम की ॥
सब जगत बिंधो या ॥१०८॥ मोरा मोरी ह्वै षिकरि नाचे पंछ छमा
रि ॥ यूं दादू घर स्त्री गीली । हमनो चे कै बार ॥१०९॥ जिम घटि दी
पक रामका ॥ तिम घटि तिमर न होइ । अव गजि यारे ज्ञा तिके । सब
जग देखे मोह ॥११०॥ दादू लिखि लिखि घटि [illegible] न परगटे । तहां मोया मं

गलि जाइ । दादू जोगी जोति तन ब । जब माया मन जाति बिलाइ ॥११॥ दादू जो
ति चमके निरमे । दीपक देषै लोइ । चंद सूर का चांदिणां । पगार छे लो
वा होइ ॥१२॥ दादू दीपक देह का । माया प्रगट होइ । चौरासी लष पं
षिया । तहां परै सब कोइ ॥१३॥ एक घट दीपक साध का । ब्रह्म
जोति प्रकास । दादू पंषी संत जन । तहां परै निज दास ॥१४॥ घर ब
न मांहै राषि रे दीपक जोति जगाइ । दादू प्राण पतंग सब । जहां
दीपक तहां जाइ ॥१५॥ घर बन मांहै राषि रे । दीपक जलता हो
इ । दादू प्राण पतंग सब । जाइ मिलै सब कोइ ॥१६॥ घर बन मांहै
राषि रे । दीपक प्रगट प्रकास । दादू प्राण पतंग सब । आइ मिलै ते
स पास ॥१७॥ घर बन मांहै राषि रे । दीपक जोति सहेत । दादू प्रा

ण पतंगा सब । आइ मिलें उस हेत ॥११८॥ दादू मन मृतक कवै या
इंद्री अपणैं हाथि । तो भी कदे न कीजिये । कनक कामणी साथि
॥११९॥ जो पैंडे के जीव सब । त्रिया पुरिष का अंग । आपा पर भ
या न रहै । दादू कै सा संग ॥१२०॥ माया के घट साजि है । त्रिया पुरिष
धरि नांउं । दोन्यूं सुंदरि षेलैं दादू राषि लेइ बलि जाउं ॥१२१॥ बै
हण्यां वीर सब देखिये । नारी अरु भरतार । परमेसुर के पेट के । दा
दू सब परवार ॥१२२॥ पर घरि परहरि आपणीं । सब एकै उणहारि
पसु प्राणीं समझै नहीं । दादू मुगध गंवार ॥१२३॥ पुरिष पलटि
बेटा भया । नारी माता होइ । दादू को समझै नहीं । बडा अचंभा मो
हि ॥१२४॥ माता नारी पुरिष की । पुरिष नारि का पूत । दादू ज्ञा

नबिचारकारि ॥ छाडिगया अवधूत ॥ १२५ ॥ दादू माया का जल

पीवता ॥ व्याधी होइ बिकार ॥ सेके कों जल पीवता ॥ प्राण सुषी

सुध सार ॥ १२६ ॥ जो बूझे हिं जा जीव बावरा ॥ जा दादि वां नां होइ

दादू अमृत छाडि करि बिष पीवे सब कोइ ॥ १२७ ॥ माया मैं लीगु

णामई ॥ धरि धरि जल नाउ ॥ दादू मोहे सबनि कों ॥ सुरनर सब ही

ठांउं ॥ १२८ ॥ बिष का अमृत नाउ धरि ॥ सब कोई षावे ॥ दादू कडु

वा नां कहै ॥ पेअचिरज आवे ॥ १२९ ॥ दादू जे बिष जारे षाइ क

रि ॥ जिनि मुष में मेलै ॥ आदि अंति षले गए ॥ जे बिष सूं षेलै ॥ १३०

जिनि बिष षाया ते मुए ॥ क्या मेरा तेरा ॥ आगि पराई आपणी

सब करै नबेरा ॥ १३१ ॥ दादू कहै जिन बिष पीवे बावरे ॥ दिन

दिन बाढै रोग । देषत हीं मरि जाइगा । तजि बिषिया रस भोग ॥
१४२ ॥ आपणां पराया षाइ बिष । देषत हीं मरि जाइ दादू कौं जी
वै नहीं । इहि भोरै जिनि षाइ ॥ १४३ ॥ अध मरीया है इकरि । माया
सौं षेलै । दादू दिन दिन देषतां । आपण गुण मेलै ॥ १४४ ॥ दादू बू
ड्या बिष महै सब । सुर नर रक्षपा । बिष का अम्रत नांउं धरि
सब किनहूं षाया ॥ १४५ ॥ माया मारै लात सौं । हरि कूं घालै हा
थ । संग तजै सब झूठ का । गहै साच का साथ ॥ १४६ ॥ दादू घर के मा
रे बन के मारे । मारे स्रग पयाल । सूषिम मोटा गूंथि करि । मांड्या
माया जाल ॥ १४७ ॥ दादू भ्रमासार बेग बिचार । संसार जात
सूता । ती निभ्रव नंत तजाउ बिमार नूं । सहीं जाइगा पूता ॥ १४८

दादू मूये सरीषे फिर हैं । जीवण की क्या आस । दादू रांम बिसारि
करि बांछै भोग बिलास ॥ १३९ ॥ माया रूपी रांम कूं सब कोई
ध्यावै । अलष आदि अनादि है सो दादू गावै ॥ १४० ॥ ब्रह्मा बेद बि का
ध की मूरति ॥ पूजै सब संसार । महादेव की सेवा लागे । कहां है
सिरजनहारा ॥ १४१ ॥ माया का ठाकुर कीया । माया की महिमा
य । ऐसे देव अनंत करि । सब जग पूजण जाइ ॥ १४२ ॥ माया
बैठी रांम ह्वै कहै मैं ही मोहन राइ । ब्रह्मा बिस्न महेस लूं ॥ जो
नी आवै जाइ ॥ १४३ ॥ माया बैठी रांम ह्वै ता कौं लषै न कोइ । स
ब जग मानै सति करि । बडे अचंभा मोहि ॥ १४४ ॥ अंजन की
या निरंजना । गुण आकार गुण जाणे ॥ धरया दिषावै अधर करि । के

सैमनमांनै॥१४५॥निरंजनकीबातकहि।आवैअंजनमांहि
दादूमनमांनैंनहींअगरसांनलिजाहि॥१४६॥दादूकहणीं
औरकछु।करणींकरैंकछुऔर।तिनथैमेराजीडरै।जिन
कैठिकनठौर॥१४७॥कामधेनिकैपटंतरै।करैकाठकीगा
इ।दादूदूधदूझैनहीं।मूरिषदेहुबहाइ॥१४८॥चिंतामणिकं
करकीया।मांगैकछुनदेइ।दादूकंकरडारिदे।चिंतामणि
करलेह॥१४९॥पारसकीयापषांणका।कंचनकदेनहोइ
दादूआतमरामबिन।भूलिपड्यासबकोइ॥१५०॥सूरिजफटि
कपषांणका।तासूंतिमरनजाइ।सांचासूरिजपरगटै।दादूतिमि
रनसाइ॥१५१॥मूरतिघडीपषांणकी।कीयासिरजनहार।दा

स्वा च स्मृके न दी ॥ यों म्हं बासंसार ॥ १५२ ॥ पुरि सबद सकां मणि कीया ॥
उसही के न अधार ॥ कोरिज कोसी के न दी । दादू माथे मारि ॥ १५३ ॥
कागद का मारग सकीया ॥ छत्रपती सिरमोर ॥ राजपाट साधे न दी ॥ दा
दू हरि सिंघोर ॥ १५४ ॥ सकल भवन भानै घडे ॥ चतुर चलावण हार
दादू सो समृके न दी ॥ जिसका वार न पार ॥ १५५ ॥ दादू पहली आप उपाइ
करि ॥ न्यारा पद निरबाण ॥ ब्रह्मा बिस्न महेस मिलि ॥ बांध्या सकल
बंधाण ॥ १५६ ॥ नांनु नी ति अनी ति सब ॥ पहली बांधे बंध ॥ पसू न जा
णे पारधी ॥ दादू रोपे फंध ॥ १५७ ॥ दादू बांधे वेद बिधि ॥ भर्म करम उर
रकाइ ॥ मर्जाद्या माहे रहे ॥ सुमिरण कीया न जाइ ॥ १५८ ॥ दादू माया मी
ठा बोलणी ॥ नइ नइ लागे पाइ ॥ दादू पैसे पेट मैं ॥ काढि कलेजा षाइ

॥१५९॥ नारी नागणीं एक सेती न रसु रति निवारि ॥ दादू कोई जीवै क्यूं ही
पुरुष सबै सयांन ॥१६०॥ नारी नागणि गिरा कसी ॥ बाघणि इँब मीठी
लाइ ॥ दादू जे बरत न मये ॥ ति ति का अब सघाइ ॥१६१॥ आरी नैन न देषि
ये ॥ मुष सौं नांव न लेइ ॥ कांनौं का मग गिरि जिनि सुणै ॥ यहु मन जांण
न देइ ॥१६२॥ दादू पैसै पेट मैं ॥ नारी नागणि होइ ॥ दादू प्रांणी स
बनसै का टिन सक कोइ ॥१६३॥ माया सापणि सब बनसे ॥ कनक का
मणि होइ ॥ ब्रह्मा बिसंन महेस लौं ॥ दादू बचै न कोइ ॥१६४॥ माया
मारे जीव सब ॥ षंड षंड करि षाइ ॥ दादू घट का नास करि ॥ रोवै ज
गत पतियाइ ॥१६५॥ बाबा बाबा कहि गिले ॥ भाई कहि कहि षा
इ ॥ पूत पूत कहि पी गई ॥ पुरषा जिनि पतियाइ ॥१६६॥ बेटी ॥

ब्रह्मसहेसको ॥ भारीमाताहोइ ॥ दादूराखैजीवसब ॥ जिनरूपती
जेकोइ ॥ दस ॥ मायाबकरूपीनटंणी नाचे ॥ सुरनरमुनिकोमो
हे ॥ ब्रह्माविसनमहादेवबाहे ॥ दादूजुराकोव ॥१०५॥ मायापा
सीहाथिले ॥ बेदीगोपिछिपाइ ॥ जेकोधीजेज्ञांणीयां ॥ ताहीकेगलि
बाहि ॥१०६॥ पुरिषापासीहाथिकरि ॥ कांमिणकेगलिबाहि ॥ कां
मिणिकटारीकंरगदे ॥ मारिपुरिषकोंषाइ ॥१०७॥ नारीबैरणिपुरि
षकी ॥ पुरिषाबैरीनारि ॥ अंतिकालिदोनुंमुये ॥ दादूदेषिबिचा
रि ॥१०८॥ दादूनारिपुरिषकंतलसुइ ॥ पुरिषानारीसाथ ॥ दादूदो
न्यूंपचिगये ॥ कंचनआयाहाथि ॥१०९॥ नबरालुबधीबो
संकु ॥ कहीलिबधीमामाआइ ॥ दिनदसमाहेदेषता ॥ दोन्यं

गये बिलाइ ॥१३॥ नारी पीवै पुरिष कौ पुरिष नारि कै संग ॥
दादू गुर के ग्यान बिन दून्यूं गये बिलाइ ॥१४॥ ॥२॥ याकौ
अंग संपूर्ण ॥ अंग ॥११॥ साखी ॥१९५४॥ अथ साच कौ अंग लि
ष्यते ॥ दादू नमो नमो निरंजनं नमस्कार गुरदेवतः । बंदनं सर्व
साधवा प्रणामं पारंगतः ॥१॥ दादू दया जिन्हौं कै दिल नहीं बहुरि
कहावैं साध । जे मुष उनका देषिये तौ लागै बहु अपराध ॥२॥ दा
दू मिहर मुहबति मन नहीं दिल के बजर कठोर । काले काफि
र ते कहिये मोमिन मालिक और ॥३॥ दादू कोई काहू जीव
की करै आत्मा घात । साच कहूं संसै नहीं सो प्राणी दोजग जा
त ॥४॥ दादू नाहर सिंघ सियाल सब केते मुसलमांन मांसखा

इ॥ [illegible]नसो । व केथे घुपका ग्यान ॥५॥ दादू आसम अहारी जे नरा
ते नर सिधि ॥ सैमाल । बाग मंकार सु नहीं मदा ॥ ऐता प्रतषि काल ॥६॥
दादू मुई मार मंगास घर्या ॥ ते प्रतषि मन काल । मिहरि रंदया नहीं सि
घ हिल । क करका ग सियाल ॥७॥ मास अहारी मद पीवै ॥ विषै
विकारी सोइ । दादू आतमराम बिन । दया कहां थीं होइ ॥८॥ दादू
[illegible] गारलोगा भी मसलागे । बोलै सदाव जोकी जार । ओर जु लेम
बी चिवट पारे । आदि अंति नहीं सूसार । तन मन मारि रहे साँई सूं
तिन कूं देषि करतार ॥ जीर पे बनी बूझ कहां थें पाई । अैसी कजा अ
वलिया पीर ॥९॥ बे क्रि हरगुनराह गाफिल गोल मुरदनी । बे दि
लबुदकार आलं । हयात मुरदनी ॥१०॥ [illegible] निकरि बलि करि घा
[illegible] मों जिनि तिन [illegible] दादू हताहिल थाजिये । प्रतोसग पतेरि ११

दादू जे निरयां सूं दिल बांधि करि ॥ बैठे दीन गंवाइ ॥ नेकी नाम बिसा
रि करि । करद कमाया खाइ ॥ १३ ॥ दादू गल काटै कलमा भरै । आ
या बिचारा दीन । पंचौं बखत निमाज गुजारै ॥ साबति नहीं अकीन
॥ जे निरयां के पीछे पड्या । टैं ड्रग टेडा जाइ ॥ दादू जिन्हि पैदा कीया
ता साहिब कौं छिटकाइ ॥ १४ ॥ कुफर जाके मन मैं । मीयां मुसल
मान ॥ दादू पेया किंगमोंछि मारै रहिमान ॥ १५ ॥ आप सकै कौं मारै नहीं
पर कौं मारन जाइ ॥ दादू आपा मारे बिना कैसैं मिलै खुदाइ ॥ १६ ॥ जी
तरि इंदर जरिहे ॥ तिनकूं मारै नांहिं । साहिब की सर रखा हदकं ॥ ता
कौं मारन जाइ ॥ १७ ॥ दादू मुये कौं क्या मारिये । मीयां मुई मार ॥ आ
पसकूं मारै नहीं ॥ औरैं कौं हुसियार ॥ १८ ॥ जिसका था तिसका
हुवा ॥ तौ काहे का दोस । दादू बंदा बंदगी । मीयां न करि रोस ॥

वेगमिस[illegible]नहारका।साहिबकाबंदा।दादू संदा बंदगी।इज्याकया
धंधा २०॥ सोकाफरजे बांन्हेकाफ॥दिल आपणी नहीं राखै सा पक
[illegible] २१॥ साई केपहिचांणैनाही॥कहु कांटमबरनहीमांही॥
२२॥ साईकापुरमांननमांनै॥कहुंपीवकुंसैंकरिजांनै॥मनआपणेमै
साईकापुरमांननमांनै॥कहुंपीवकुंसैंकरिजांनै॥मनआपणेमें
संमकतनांही॥निरमलचलैआपणांकहांही॥२३॥जोरकरैम
सकांनसंतावै॥दिलउसकीमांदरदनआवै॥साईसेतीनांहीनेह
गबकरैअतिआपणीदेह॥२४॥इनबातनिकूंपाइपेपीव॥प
धनउपरिराखैजीव॥जोरजुलमकरिकुटंबसौंषाइ॥सोकाफि
रदोजगमैंजाइ॥२५॥दादूजाकोंमारणांजाईये॥सोईफिरमा
रैजाकोंतारणांजाईये॥सोईफिरितारै॥२६॥दादूब्रहमनांव

सो मारिये । गो सम्राव्रे रूपंट । कूड़ै है सो हरि करि । तन घर मैं क्रा
नेट ॥२७॥ मुसलमान कै रोषे मांस । सांई का मांनै फुरमांन । सा
रों कं सुष पाई होइ । मुसल मा[illegible] करि । जानों सोइ ॥२८॥ कुह मु
सल । मांन मिहरि गहि रहे । सब कों सुष कि महां न हीं दहै
मुल्लां न षाइ जीव तन नहीं मारै । करै बंदगी राह संभारै । सो मोम
न मन मैं करि जांणि । मत सबूरी बैम क्क्रां णि ॥ चलै साच संवा
रै बाट । तिन कों षुलै भिस्ति कै पाट ॥२९॥ सो मोमन मोम दिल
होइ ॥ सांई कों पहिचानै सोइ । जोर न करै हरांम न षाइ । सो मो
मन भिस्त मैं जाइ ॥३०॥ जो हम मन नहीं गुजारै । उन्ह कों
क्या जाई । सी रन हीं [illegible] बंदगी । कज्जा कि न फुरमाइ ॥३१

अपनौं अमलौं छूटिगे। काहू के नांहीं। सोई पीड पुकारिसी जाइ
बैमांही। कोई घाइ अघायकरि। नूंयेटजरिगे॥ छूटी पूगा आज
की। आपणा कौं भरिऐ॥२२॥ फरदानि गसमटमैं। सब कहू बाला
गे। आपणां अपणां जीवले। सब कोई जाग॥२३॥ दादू सिरसि
रलागी आपणैं। कहु ककवेणा बुझावै। आपणां आपणां सा चरैसां
ईकौं जावै॥२४॥ साचा नांव अलाह का। सोई सति करि जांणि
निहचल करि लेबंदगी। दादू सो परवांणि॥२५॥ आवटक
दाहोत है। ऐसैं सरबीता जाइ। दादू करिले बंदगी। रायगाहारसु
दादू॥२६॥ ...क लिकैतैछैगये हिंदू मुसलमान। दादू साची बंद
गी। कूआसन अभिमान॥२७॥ पोथी आपणां पढ करि। हरिज

समां हैं तेस ॥ पंडित अंग्रां पंथां का करि ॥ दादू कथै कंतेस ॥ ३८ ॥
दादू काया हम मारी कतेब बोलिये ॥ निपिराघौर हि मान ॥ मनदे
मारा मुखां बोलिये ॥ सुरतां हि सुख होन ॥ ३९ ॥ दादू अकलि फये
कभ्र गां हकाजे पढि जांणैं कोइ ॥ कुरांन कतेब बाहू सब ॥ पढि
करि पूरा होइ ॥ ४० ॥ दादू काया मध्य जमैं नियाज गुजारौं तहां
भौरे ननम्रा बुंग पड़े ॥ मनमणा केंकरि तसबी फेरौं ॥ तब साहिब
के मनि भावै ॥ ४१ ॥ दादू दिलदरिया मैं गुसल हमारा ॥ ऊजू क
रि चित लाऊं ॥ साहिब आगे करौं बांदगी ॥ बेर बेर बलि जाऊं ॥
४२ ॥ दादू पंच संगि संगिसैं नालौं सांई ॥ तनमन तौ सुख पाऊं ॥ प्रेमपि
याला पीव जी देवै ॥ कलमां येसे लाऊं ॥ ४३ ॥ सो मुल्ला [illegible] मब

करै।सोआंवगानिमाऊ॥मृदानगोकेंश्राहिसं॥जेत्रफसाहिबसे
तीकाज॥४४ दोहा हरोजदस्तूरहोइरज॥काहिकैरेकन्याप॥मु
सोतहांपुकारियो॥जहांश्रारमहलाहीश्राप॥४५॥हरदंमहा
जरिहुंरागाबाबा।जवलगाजोवैबंदा॥दोहा इमदिलमांईसोसा
बति।पंचववसतक्याधंधा॥४६॥दोहा हिइमारगाकहैंहमारा
तुरककहैरंहमेरी।कहांपंथहैकहोश्रलषका॥तुम्हतोत्रे
सीहेरी॥४७॥दोहा इईदरोगलोगाकंन्यावे॥मांईसाचपिया म
रा।कवरोपंथहैंचलैंकहोंधू॥साधोकरोंविचारा॥४८॥बंम
षमकरिवृचकों।पषिपषिलीयाबांटि।दोहा पूरंगाबसतजि
बंधेनरमनांगांगि॥४९॥जीवृतदासेरागिया।कहैंमृदांपाछे

जाइ ॥ दादू इहु के पास है ॥ ऐसी दादू नाइ ॥५०॥ सो दादू हि-
सकांम की ॥ जाथै दूर न जाइ ॥ दादू काटै रोग कौ ॥ सो दादू लेला-
इ ॥५१॥ दादू औंन मैं काटै रोग कै ॥ अंतन हृदय पैजै आइ ॥ से जे
का जल निर्मला ॥ पीवै रुचि लौ लाइ ॥५२॥ दादू सोई अन मै
सोई उपजी ॥ सोई सब दत्त सार ॥ सुगंमा ही साहिब मिलै ॥ म
न के जाहिं विकार ॥५३॥ औषधि खाइ न पछि रहै ॥ विषम व्या
धि क्यूं जाइ ॥ दादू रोगी बावरा ॥ दोस बैद कै लाइ ॥५४॥ एक सेर
का ठांमड़ा ॥ क्यूं ही भर्या न जाइ ॥ भूख न भागी जीव की ॥ दादू
केता खाइ ॥५५॥ पसुवा की नांई भरि भरि खाइ ॥ व्याधि घणी
री बधती जाइ ॥ पसुवां की नांई करै अहार ॥ दादू बाढै रोग अपार

पार। रांम रसाइन भरि भरि पीवै। दादू जोगी जुगि जुगि जीवै
॥५६॥ दादू चारे चित दीया। चिंतामणि कौं भूलि। जंनम अमो
लिक जात है। बैठे मांझी फूलि ॥५७॥ भरी हथोडी न्हावडी ॥
बैठा पेट फुलाइ। दादू सूकर स्वांन ज्यूं ॥ ज्यूं आवै त्यूं षाइ
॥५८॥ दादू षाटा मीठा षाइ करि। स्वादि चित दीया। इन मैं
जीव विलंबिया। हरि नांउं न लीया ॥५९॥ भगति न जांणै
रांम की। इंद्री का आधीन ॥ दादू बंध्या स्वाद सूं। ताथैं नांउं न
लीन्ह ॥६०॥ दादू अपणां नीका राषिये। मैं मैं दीया बहाइ
तुफ अपणै सेती कांज है। मैं मेरा न्यावै तो धरि जाइ ॥६१॥
दादू को है मांजा राणा रांक करि। तो का है नो कारि साइ। मेरा षा

सो मैं लीया। तो गौं का कयां जाइ ॥६२॥ दादू द्वै द्वै पद कीये ॥ सा
षी जा कहै चारि ॥ हम मकं भैमै ऐक पद्जी ॥ हम मजा नी समसारि ॥
६३॥ दादू सुणिं सुणिं पचे ज्ञान के । साषी मन की होइ
न बहौ क्रपा ऊपजे ॥ हम सांचे ओर न कोइ ६४॥ दादू सो
७ पजां कि सकौं म की ॥ जे जराज रां कै रैक लेस ॥ साषी
सुणिं समकै साधक की ॥ अूर सन रसेस ॥६५॥ दादू पद
जोडै साषी कहै ॥ विषै न त्रिपै जीव । पाणी घालि बिलौइ
ये । तो कूं करि निकसे घीव ॥६६॥ दादू पद जोडै का पाइ
ये । साषी कहैं का होइ । सति सिरोवणिं सांई सों तन मन दी
न्हा सोइ ॥६७॥ कहि कहि वे सुणि वे मन षुसी । कर लीया औरे षे

त । बांनौं तिमरंम न जाई ॥ दीवा बाती तेल ॥६७॥ दादू करिबे
वाले हम नहीं । कहिबे कूं हम सूर ॥ कहिबा हंम थें निकं
हि है ॥ करिबा हंम थें दूरि ॥६८॥ दादू कहैं कहैं का होत है
कहे न सीझै काम ॥ कहैं कहैं का पाइये ॥ जब लग रिदै न आ
वै रांम ॥६९॥ दादू कहै रांम कहीं ते जो छि बा । रांम कहूं ते सा
षि । रांम कहूं ते गाइबा । रांम कहूं ते राषि ॥७०॥ दादू सुरता
घरि नहीं । बक्ता लेकै सु बादि । बक्ता सुरता ऐक रस । कथा
कहावै आदि ॥७१॥ बक्ता सुरता घरि नहीं । कहै सुणौं को रांम
दादू यहु मन थिरि नहीं । बादि बकै बेकांमि ॥७२॥ देषा देषी
सब चले । पारि न पहूंचा जाइ ॥ दादू आसंणि पहलै कै । फि

रिफिरि बैठे आइ ॥१३॥ आतंन रिमुरकै संमझि करि फिरि
न आरूकै जाइ ॥ बाहरि सुरकै देषतां ॥ बहुरि न आरूकै आ
इ ॥१४॥ आतंन मिलावैं आपसूं ॥ साहिब सेती नांहिं ॥ दादू को
ई परकै नहीं ॥ इंन्ह ही निरफल जांहिं ॥१५॥ तूं मुफ कौं मोटा
कहै ॥ हूं तुफ बडा नाहिं मांन ॥ सांई कूं संमफैं नहीं ॥ दादू फूठा
ग्यांन ॥१६॥ सदा सभी परहै सांति सनमुष ॥ दादू अंधे नग
रु सुपिनैं हीं संमफैं नहीं ॥ कैं करि लहैं स्वरूफ ॥१७॥ दादू
जगति कहावैं आपकूं ॥ जगति न जांणी भेद ॥ सुपिनैं हीं स
मफै नहीं ॥ कहां बसै गुरदेव ॥१८॥ दादू सेवग सांई बूफा इ
रे ॥ सेवा सुपिनैं नांहिं ॥ नांउं धरावै का नयां ॥ जे रे कहीं मन
नै

मांहिं ॥७९॥ नांउं धरावै दास का दासातन थैं दूरि । दादू कारि
ज क्यूं सरै हरि सौं नहीं हजूरि ॥८०॥ भगत न होवै भगति बिन
दासातन बिन दास बिन सेवा सेवग नांहीं । दादू झूठी आस ।
॥८१॥ दादू रांम भगति भावै नहीं । अपणीं भगति का भावै । रां
म भगति मुख सूं कहै । खेलै अपणां भाव ॥८२॥ भगति निरा
ली रहि गई । हम भूलि पडे बन मांहिं । भगति निरंजन रां
म की । दादू पावै नांहिं ॥८३॥ सो दसा कत हूं रही । जिहिं दिसि
पहुंचे साध । मैं तैं मूरि षगाहि रहे । लो भव कमाई बाद ॥८४॥ दा
दू रांम बिसारि करि । कीये बहु अपराध । लाजौं मारे संत स
ब । नांउं हमारा साध ॥८५॥ मनसा के पकवान सौं । क्यूं पेट न भ

राखै। जं कहिये त्यूं कीजिये ॥ तब दीबनि ज्ञर है ॥८६॥ दा
दू मिसरी मिसरी कीजिये। मुख मीठा नाहीं। मीठा तब हीं होइगा
छिटका वै मांहीं ॥८७॥ दादू बातौं हीं पहुंचे नहीं ॥ घर रहि रिप
यांना। मारग पंथी उठि चलै। दादू सोइ सयांना ॥८८॥ दादू बा
तौं सब कुछ कीजिये। अंति कछू न होइ सै ॥ मन माया चाकं
मनो। तब लगि गोलै सै ॥८९॥ दादू कासूं कहि समझाई ये ॥ स
ब को चतुर सुजांण। कीडी कुंजर आदि दे। नांहिन कोई
अयांन ॥९०॥ दादू सूकर स्वांन सियाल सिंघ। अपर हैं घ
ट मांहि ॥ कुंजर कीडी जीव सब। पांडै जांणौ नांहि ॥९१॥
दादू सूनां घट सोधी नहीं। पंडित ब्रह्मा पूत। आगम निगम

मसब कथैं ॥ हरमैं नाचे मृत ॥५४॥ पढैं न पावै प्रम गति ॥ पढैं
नखंछै पार ॥ पढैं न पढैं चे प्राणियां ॥ दोहा पाखंड प्रकार ॥५५॥ दा
ह निंदा रैनाठं बिन ॥ कुग्यां कथैं ग्यांन ॥ बेद सिर षाली करै ॥ पंनि
त बेद पुरांण ॥५६॥ दोहा केते पुस्तक पढि मुये ॥ पंडित बेद पुरांन
केते ब्रह्म कथि गये ॥ नांहिं न रांम समांन ॥५७॥ दोहा सब कंमटे
ध्यासा छिकरि ॥ बेद कुरांनौं मांहि ॥ जहां निरंजंन पाईये ॥ सो टे
म है रिहत नांहिं ॥५८॥ पढि पढि थाके पंडिता ॥ किनहूं न पा
या पार ॥ कथि कथि थाके मुनि जनां ॥ दोहा नांह क्षधार ॥५९॥
दोहा काजी कजान जांणाहीं ॥ कागद हाथि कतेब ॥ पढतां पढतां
दिन गये ॥ भीतरि नांही भेद ॥६०॥ मसि कागद के आसिरे ॥ क्यूं

छूटे संसार । राम बिना छूटै नहीं ॥ दादू जम कि कारि ॥ ९९ ॥ का
गद कालेक रि मुये ॥ केते बेद पुरांन ॥ एकै आखिर पीव का । दा
दू पढे सुजांणां ॥ १०० ॥ दादू आखिर प्रेम का । कोई पढैगा एक । दादू
पुस्तक प्रेम बिन । केते पढै अनेक ॥ १०१ ॥ दादू पाती प्रेम की ॥ बि
रला बांचे कोइ ॥ बेद पुरांन पुस्तक पढै । प्रेम बिना क्या होइ
॥ १०२ ॥ दादू कहतां कहतां दिन गये । सुणतां सुणतां जाइ ॥ दादू
ऐसा कोई नहीं कहि सुणि राम समाइ ॥ १०३ ॥ मोनि गहै ते बा
वरे ॥ बोलैं षरे अयांन ॥ सहजै राते राम सूं । दादू सोई सयांन ॥
१०४ कहतां सुणतां दिन गये ॥ हैं कछू न आया । दादू हरि की
भगति बिन ॥ प्रांणी पछितावा ॥ १०५ ॥ दादू कथणी और कछू

करनी करै कुछ और ॥ तिनथैं मेरा जीव डरै ॥ जिनकै ठिक न
ठौर ॥१०६॥ अंतरि गति औरै कछू ॥ मुष रसना कुछ और ॥ दा
दू करनी और कछु ॥ तिनकौं नांहीं ठौर ॥१०७॥ दादू रांम मि
लन की कहत है ॥ करत कछु औरै ॥ ऐसैं पीव क्यूं पाइये ॥ सम
झि मन बौरे ॥१०८॥ दादू बगनी अंग पाइ करि ॥ मतिवाले मां
झी ॥ पैका नांहीं गांठड़ी ॥ पातिसाही षांडी ॥१०९॥ दादू टोटा दाल
द्री ॥ लाषौं का व्यौपार ॥ पैका नांहीं गांठड़ी ॥ सिरै साहूकार ॥११०
॥ दादू ये सब किसके पंथ मैं ॥ धरती अरु असमांन ॥ पांणी पवन
दिन राति का ॥ चंद सूर रहि मांन ॥१११॥ दादू ब्रह्मा बिसन महेस का
कौंण पंथ गुरदेव ॥ सांई सिरजनहार तूं ॥ कहिये अलष अभेव

॥११२॥ दादू मंहं मट किसके हौं नमें ॥ अब राम [illegible] किसे राहिं ॥ इन
के सुरि सद पीर की ॥ कहि ये ये कन्म लार ॥११३॥ दादू ये सब कि
सके और है ॥ यह मेरे मन मांहिं ॥ अलख इलाही जगतगुर ॥ दूजा
कोई नांहिं ॥११४॥ दादू तेरे हौं वोलातकें ॥ थी या सैं है बिंयं निं ॥
मोतूं मीयां नां धुरे ॥ जो मीयां मीहं निं ॥११५॥ अलाह कैरो जीतयांह है ॥ सा
हिब का दीदार ॥ गहिलालो गौंकार नैं ॥ देषे नहीं गंवार ॥११६॥
फलका रंणि सेवा करै ॥ जाचै त्रिभुवन राव ॥ दादू सो सेवग नहीं
षेलै अपणां भाव ॥११७॥ सह कांमी सेवा करै ॥ मांगै मुगधगंवा
र ॥ दादू ऐसे सेवक नहीं ॥ फलके मूंचे गमहार ॥११८॥ तन मन ले
लागा रहै ॥ राता सिरजनहार ॥ दादू कछ मांगै नहीं ॥ ते बिरला

संसार ॥१२१॥ दादू सोई सेवग रांम का । जिसे न दूजा चीत । दूजा को भा
वै नहीं । एक पियारा मीत ॥१२२॥ आपणी आपणी जाति सूं सब को
बैसे पांति । दादू सेवग रांम का ताके नहीं भरांति ॥१२३॥ चोर अंन्या
ई मसकरा । सब मिलि बैसे पांति । दादू सेवग रांम का । तिन सूं करै
भरांति ॥१२४॥ दादू सूप बजायां क्यूं टलै । घर मैं बड़ी बलाइ । काल झा
ल इस जीव का । बातनि ही क्यूं जाइ ॥१२५॥ सापणि या सहि नांगणि के
सब मिलि मारे लोक । दादू ऐसा ढीठ पिव । कुल का नगारा फोक ॥१२६॥
दादू हूं नर रमै हैं । हिरदै उर करतार । जे कूं थें रहित है मोह हि
तत बिचार ॥१२७॥ आपणां आपणां करि लीया । ते जन माहें
सौं हिं दादू ये के कूप जल । मन का नमैं ठग ह ॥१२८॥ दादू दाणी

केवलनांउंधरि ॥ नांनांबिधिकीजाति ॥ बोलणहाराकवणहै
कक्कथूकहांसमात ॥१२९॥ दादूजबपूर्णब्रह्मबिचारिये ॥
तबसकलआत्मांयेक ॥ कायाकेगुणदेषिये ॥ तौनांनांबरण
अनेक ॥१३०॥ दादूलीनाराजारांमकीषेलैंसबहीसंत ॥
आपापरकेनयां ॥ छूटेसबैतुरंत ॥१३१॥ आपापरांपरायाषा
इविष ॥ देषतहींमरिजाइ ॥ दादूकोजीवैनहीं ॥ इहिभोरैजि
निषाइ ॥१३२॥ दादूजावैसाकतनगातकै ॥ बिषैहलाहल
षाइ ॥ तहांजनतेरारांमजी ॥ सुपिनेंकदेनजाइ ॥१३३॥ दा
दूनावनगातिउपजैंनहीं ॥ साहिबकाप्रसंग ॥ बिषैबिकारर
हैनहीं ॥ सोकेसासतसंग ॥१३४॥ दादूबासंगाबिषैबिकार...

तिन के स्वारथ पंथ । संगी सिरजे न हार के । तिन संग तब गुमान
॥१३५॥ अंधे के दीपक दीया तो जी तिमर न जाइ । मोधन न हीम
रि रका । तासनि कासमन जाइ ॥१३६॥ दादू कहि ये कुछ उपमा
र के । मांनें श्री गुणदोष । अंधे कूप बताइया । सतिनमांनें लोक
॥१३७॥ काजरि धेवतनी पजे । जे बाहै सो बार । दादू हांनो बीजका
क्या पचिमरै गवार ॥१३८॥ दादू जिनि के करपथर से विया । सो
अपणा मूलगवाइ । अलष देव अंतरि बसे । क्या दूजी जागा
जाइ ॥१३९॥ पथर पीवै धोइ करि । पथर पूजें प्राण । अंतिका
लि पथर न्हये । बहु बूडे हिं अंजान ॥१४०॥ कंकर बंध्या गांठ
डी । हीरे के वेसास । अंतिकालि हरि जौंहरी । दादू सूत कपास

॥४५१॥ दहल्नी पूजे हूं ठसी ॥ अबजी हूं ठस बांधि ॥ आगे हे हूं ठसदो
इसा ॥ दोहा सतिकरि नांगि ॥४५२॥ दोहा पैंन पाप के करि हे न दी
जे पाव ॥ जिहिं पैन मेरा पाव मिले ॥ तिंहिं पैनेका चाव ॥४५३॥
दोहा मुकत मारग चालतां ॥ भुरा न कब हूं होइ ॥ जे मतवाला
प्रीति यां ॥ मूवा न सुणी कोइ ॥४५४॥ दोहा कुछ नाहीं का नां
व क्या ॥ जे धरियै सो कूठ ॥ सुरनर मुनिंजन बंधिया ॥ लोका ऋा
वूटकूट ॥४५५॥ दोहा कुछ नाहीं का नाव धरि ॥ जरम्या सब सं
सार ॥ साचकूठ समझै नहीं ॥ नां कुछ कीया बिचार ॥४५६॥ दो
हा केई थोडे धारिका ॥ केई कांसी जांहिं ॥ केई मथुरा कौं चले
साहिब घट ही मांहिं ॥४५७॥ पूजा या हारे पाखिहै ॥ देही मांहै बं

दादू ताकूं छोडि किन करि । बाहरि मांहि सेव ॥१४८॥ ऊपरि देखा लेम
सब कैरै । साधू जन घट मांहि ॥ दादू पेता अंतरा । तैथे बंधणा तीनां
हि ॥१४९॥ दादू सब थे ए कके । सो एकन जांनां । जेणां जेणां को है
गया । एकु जगत दिवांनां ॥१५०॥ दादू झूठा साचा करि लीया । वि
ष अमृत जांनां । दुष कौं सुष सब को कहै । ऐसा जगत दिवांनां
॥१५१॥ सूक्षमा सारा साचका । साचा होइ सु जाइ । झूठा को ईनां च
लै । दादू दीया दिषाइ ॥१५२॥ साहिब सूं साचा नहीं । एकु मन क्या
होइ । दादू झूठे लक ते हैं । साचा बिरला कोइ ॥१५३॥ दादू साचा
लेगा न ठेलिये । साहिब मांनै नांहिं । साचा सिर परि राखिये । मिलि
रहै पेला मांहिं ॥१५४॥ जे को ठेलै साच कूं । तो साचा रहै समाइ

कोमी बरकूं दीजिये । स्वत्रजें से लिक जाइ ॥ १५५ ॥ दादू साचे साहि
बकूं मिलै साचे मारगि जाइ । साचे संग साचा भया तब साचे लीया
बुलाइ ॥ १५६ ॥ दादू साचा साहिब सेविये साची सेवा होइ । साचा
दरसन पाइये साचा सेवग सोइ ॥ १५७ ॥ साचे का साहिब धणी
समरथ सिरजनहार । पाखंड की यहु प्रिथमी परपंच का संसार ॥ १
५८ ॥ झूठा परगट साचा छानै तिनकी दादू राम न मानै ॥ १५९ ॥
दादू कहां आसिक अलाह के मारे अपणे हाथि । कहां आ
लम औलिया जूद तसै कहैं जबां की बात ॥ १६० ॥ दादू पाखंड पीव न पा
इये जे अंतरि साच न होइ । ऊपर थैं क्यूं ही रहौ भीतर के मल
धोइ ॥ १६१ ॥ साच अमर जुगि जुगि रहै दादू छिजै ना कोइ । [illegible]

ब कृत संसार मैं । उतपति परलै होइ ॥ १६२ ॥ दादू करणहार लिये
साचे न बंदे ल्यो जाइ । साचा सिर परि राखिये ॥ साध कहै समझा
इ ॥ १६३ ॥ साचे न सूझै जब लगै । तब लग लोचन अंध ॥ दादू
मुकता छाडि करि । गल मैं घाल्या फंध ॥ १६४ ॥ साचें न सूझै ज
ब लगैं । तब लग लोचन नांहिं । दादू निरबंध छाडि करि । बंध्या
है पष मांहिं ॥ १६५ ॥ करम फिरावैं जीव कौं । करम मौं करता
र । करतार कूं को नहीं । दादू फेरणहार ॥ १६६ ॥ जे साहिब सि
रजै नहीं । तौ आपैं क्यूं करि होइ । जे आपै ही ऊपजै तो मरि क
रि जीवै कोइ ॥ १६७ ॥ जे यहु करता जीव था । संकट क्यूं आ
वत करमों के बसि क्यूं जाया । क्यूं आपा बंधाया । क्यूं सब जोनी ।

जगतमैंघरबारिनचाया। ज्यूंयऊकन्तीजावृकै॥ एरहांथिबिका
या॥१६८॥ दादूकृतमकालिबस्य। वधंगुरामांही। उपकैबिंन
मैदेषतां। यऊकरतानांही॥१६९॥ येकसाचसूगहरहि॥ जी:
वृणमरणनिबाहि॥ दादूअंषियांरांमबिंन। जांवैतीधरिजाइ१७०
॥ दादूजावैतहांछिपाईये। सांचेनछांनांहोइ। सेसरसातंलगा
नधू। प्रगटकहिएसोइ॥१७१॥ दादूकहांथानांदमुनिजनां
कहांभगतप्रहलाद। प्रगटतीनूंलोकमैं। सकलपुकारैसा
ध॥१७२॥ दादूकहांसिवबैठाध्यांनधरि। कहांकबीरानांम॥
सोकंछांनांहोइगा। जेरुकहैगारांम॥१७३॥ दादूकहांलीन
सुषदेवथा। कहांपीपारैदास। दादूसाचाकंछिपै। सकललोक

प्रकास ॥१७४॥ अगम अगोचर राखिये ॥ करि करि कोटि जतंन
दादू छाना क्यूं रहै ॥ जिस घटि रांम रतन ॥१७५॥ दादू स्रग पया
लमैं ॥ साचा लेवै नांउं । सकल लोक सिरि देखिये ॥ प्रगट सब
ही ठांउं ॥१७६॥ छांनै छांनै कीजिये । चौडै प्रगट होइ ॥ दादू पै
सि पयाल मैं ॥ बुरा करै जिन कोइ ॥१७७॥ अ्रणकी पावक लागै
नहीं । की पावक लागै आइ । साहिब के दरिबाव है । जे कुछ रांम
रजाइ ॥१७८॥ सोई जन साधू सिध सो ॥ सोई सत वादी सूर ॥ सोई
मुनियर दादू बडे ॥ सनमुख रहै हजूरि ॥१७९॥ दादू सोई
जन साचे सो सती ॥ सोई साधिक सुजांन । सोई ग्यांनी पंडिता
जे रते भगवांन ॥१८०॥ दादू सोई जोगी सोई जंगम । सोई सो

है सो फकी सोई सेष। सोई संन्यासी सेवड़े। दादू पैकंब्र लेष ॥९८१॥
दादू सोई काजी सोई मुल्लां। सोई मोमिन मुसलमान। सोई
सयांने सब भले। जे राते रहिमान ॥९८२॥ दादू रांम नांम कै
बणिंजणा बैठे। ता सूं मांग्या हाट। सांई सूं सौदा करैं। दादू षो
लि कपाट ॥९८३॥ बिच के सिर षाली करैं। पूरे सुष संतो
ष। दादू सुधबुध आत्मां। ता हि न दीजै दोष ॥९८४॥ सुधबुध
से सुषदाई ये। के साध भने की होइ। दादू ये बिच के बुरे। दाधे री
गे सोइ ॥९८५॥ जिनि कोई हरि नांउं मैं। हम कूं हांणी बाहि। ता नें
छैत्रु कथैं करत हैं। कुछ हीं ट लै बलाइ ॥९८६॥ दादू जे हम छाडि
हैं रांम कूं। तौ कवण गहैगा ॥ दादू हम मन हीं उचरै। सो कंवन कहै

येक रांम छाडै नहीं। छाडै सकल बिकार। दूजा सहजैं
गा॥१८७॥
होइ सब। दादू का मत सार॥१८८॥ जे तूं चाहे रांम कूं॥ तौ येक म
नां आराध। दादू दूजा दूरि करि॥ मंन इंद्री करि साध॥१८९॥
कबीर बिचारा कहि गया॥ बहुत भांति समझाइ। दादू दुनि
यां बावरी। ताकै संगि न जाइ॥१९०॥ पावैगे उस गैब कूं॥ लंघे
गे येक घाट। दादू क्या कहि बोलिये॥ अजहूं बिच ही बाट॥१९१॥
॥ साचा राता साच सूं॥ झूठा राता झूठ। दादू न्याव नबेरिये॥ स
ब साधूं कौं पूछि॥१९२॥ जे पहुंचे ते कहि गये॥ तिनकी येकै
बात। सबै सयानें येक मत। जिनकी येकै जात॥१९३॥ जे पहुंचे
ते पूछिये। तिनकी येकै बात। सब साधौं का येक मत। ये बिच के

बारहबाट ॥१५४॥ सबै सयांनें कहि गये । पहुचे का घर ऐ
क । दादू मारग मांहि के । तिन की बात अनेक ॥१५५॥ सूरिज
सनमुष आरसी । पावक कीया प्रकास । दादू सांई साध बिच
सहजैं निपजै दास ॥१५६॥ सूरिज साषी भूत है । साच करै प्र
कास । चोर डरै चोरी करै । रैंनि तिमर का नास ॥१५७॥ चोर न
भावै चांदिणां । जिन उजियारा होइ । सूते का सब धंन हरौं । मु
झे न देषै कोइ ॥१५८॥ घटि घटि दादू कहि समझावै । जैसा
करै सु तैसा पावै । को काहू का सीरी नांही । साहिब देषै सब
घट मांही ॥१५९॥ इति साच का अंग सपूरण ॥ अंग १२ ॥
साषी ॥१५९०॥ अथ भेष का अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं ॥

नमसकार गुरदेवतः। वंदनं सर्व साधवा। प्रणामं पारंगतः॥१॥
दादू सूं मैं ज्ञान न सब। चतुराई जलि जाइ। अंजन मंजन फूंकि
दे। रहै राम ल्यौ लाइ॥२॥ राम बिनां सब फीके लागैं। करणी
कथणी ग्यांन। सकल अविरथा कोटि करि। दादू जोग धियांन॥३॥
ग्यांनी पंडित बहुत हैं। दाता सूर अनेक। दादू भेष अनंत हैं। ला
गि रह्या सो एक॥४॥ कोरा कलस अवाह का। ऊपरि चित्र अ
नेक। क्या कीजै दादू बस्त बिन। ऐसे नांनां भेष॥५॥ बाहरि
दादू भेष बिन। भीतरि बस्त अगाध। सो ले हिरदै राषिये। दादू
सनमुष साध॥६॥ दादू नांनां नरि धरि बस्त सैं। ज्यूं मेंहदी मा
लि बिकाइ। षाली नांनां बस्त बिन। को मीवदले जाइ॥७॥

दादू कनक कलस बिष सौं भर्या। सो किस आवै कांम। सो
धन कूटा चांम का। जामैं अंम्रत रांम ॥८॥ दादू देषै वस्तकं।
बासण देषै नांहि। दादू भीतरि भरि धर्या। सो मेरे मन मांहि ॥९॥
दादू जे समझै तो कहौ [redacted] चा एक अलेष। डाल पांन तजि मूल
गहि। क्या दिषलावै भेष ॥१०॥ दादू सब दिषलावैं आपकैं।
नांनां भेष बणाइ। जहां आपा मेटणं हरि भजन। तिहिं दि
सि कोई न जाइ ॥११॥ सोइ साध कतहुं रहा। जिंहिं दिसि सब कोइ चलै
साध। मैं तैं मूरिष गावहि हिरदै। लोभ बंधन माइ बाट ॥१२॥ दादू भेष
बहुत संसार मैं। हरिजन बिरला कोइ। हरिजन राता रांम सूं।
दादू एकै सोइ ॥१३॥ हीरै रीझै जौंहरी। षलकि रीझै संसार। सा

सि साध बहु अंतरा । दादू मति बिचार ॥१४॥ स्वांगि साध बहु अं
तरा । जेता धरणि अकास । साधू राता राम सूं स्वांगि जगत की आ
स ॥१५॥ दादू स्वांगी सब संसार है । साधू बिरला कोइ । जैसें चंद
न बावना । बनि बनि कहीं न होइ ॥१६॥ दादू स्वांगी सब संसा
र है । साधू कोई एक । हीरा दूरि दिसंतरां । कंकर और अनेक
॥१७॥ दादू स्वांगी सब संसार है ॥ ॥ साध समंद का पार । अनल पं
षि कहां पाईये । पंषी कोटि हजार ॥१८॥ दादू स्वांगी सब संसा
र है । साधू सोधि सुजांन । पारस परदेसूं भया । दादू बहुत पषांण
॥१९॥ दादू चंदन बनि नहीं । सूरे निके दल मांहि । सकल समंद
हीरा नहीं । त्यूं साधू जग मांहि ॥२०॥ जे सांई का ह्वै रहै । सांई तिस

काहेकूं । दादू जीवात समझ ॥ जे यह निरपादे कोइ ॥२१॥ दादू खो
ग समाई कुछ नहीं राम समाइ साच । दादू नाता नांव का ॥ दू
जे अगिन राच ॥२२॥ दादू ये के आतमा ॥ साहिब है सब मांहि
साहिब के नाते मिले जे षष पंथ के मांहि ॥२३॥ दादू माला ति
लक सूं कुछ नहीं । काहू सेती काम अंतरि मेरे एक है ॥ अह नि
स उसका नाम ॥२४॥ दादू जगत जे षष रि मिथ्या बोले ॥ निंद्या
प्रश्न पवाद ॥ साचे कूं झूठा कहै ॥ लागे बकू अपराध ॥२५॥
दादू कबहूं कोई जिनि मिले । जगत जे षष संज्ञा । जीव ज
म का नास है । कहै अमृत बिष षात ॥२६॥ दादू पंचे पूत
बटाऊ के के करि नट जूं का छ्या जे षष । षब रिनपाइ षोजकी ॥

हमकूं मिल्या अलेष ॥२७॥ दादू माया कारनि मूड मुंडाया यहु
तौ जोग न होई ॥ पारब्रह्म सूं परचा नांही कपट न सीझै कोई
॥२८॥ पीव न पावै बावरी रचि रचि करै सिंगार दादू फिरि फिरि
रि जगत सूं करैगी बिभचार ॥२९॥ प्रेम प्रीति सनेह बिन ॥
सब झूठे संगार ॥ दादू आतम रत नहीं क्यूं मानैं भरतार ॥३०
दादू जग दिषलावै बावरी षोडस करै सिंगार ॥ तहां न संवारे
आप कूं ॥ जहां भीतरि भरतार ॥३१॥ सुध बुधि जीव धिजाइ
करि ॥ माला सकल बाहि ॥ दादू माया ज्ञान सूं ॥ स्वामी बैठा षाइ
॥३२॥ जोगी जंगम सेवड़े ॥ बौध संन्यासी सेष ॥ षट दरसन दा
दू रांम बिन ॥ सबै कपट के भेष ॥३३॥ दादू सेष मसाइक औलि

गे। एकं बरस बपीर। दरसैं नसं प्रसंन नहीं। अजहुं बैली
तीर॥७५॥ दादू नां नां जे घरबंमा दूकरि। आपा देषि दि
षाइ। दादू दूजा दूरि करि। साहिब सूं ल्यौ लाइ॥७६॥ स्रा
हूदे पाहे षालो कमब। केता आवै जाहिं। राम संनेही नां मि
ले। जे निज देषै मांहिं॥७७॥ दादू सब देषै अस्थूल कूं। एक
ऐसा आकार। सूषिम सहज न सूझही। निरांकार निरधा
र॥७८॥ दादू बाहर का सब देषिये। भीतरि लष्या न जाइ। बा
हरि दिषावा लोक का। भीतरि राम दिषाइ॥७९॥ दादू एक
परि षसराफी ऊपली। भीतर की एक नांहिं। अंतर की जो ऐं
नहीं। ता थैं षाटा मांहिं॥८०॥ दादू सचु बिन सांई नां मिलै। सां

वैजे सबै बनाइ ॥ ताथै करबू तनरष मुषि ॥ ताथै तीथै जाइ ॥४०॥
दादू साचा हरि का नांव है ॥ सो ले हृदै राषि ॥ पाषंड प्रपंच हरि क
रि ॥ सब साधूं की साषि ॥४१॥ दादू कूवा राता कूव सं ॥ साचा राता
साच ॥ ऐता अंतर धन जो नहीं ॥ कंहां कंचन कहां काच ॥४२॥ दि
रै है की हरि लेइगा ॥ अंतर जामी राइ ॥ साच पियारा राम कूं ॥ को
टि क करि दिषलाइ ॥४३॥ दादू मुष की नां गहै ॥ हृदै की हरि
लेइ ॥ अंतरि सूक्षम एक सूं ॥ तौ बोल्यां दोस न देइ ॥४४॥ सब चतु
राई देषिये ॥ जे कछु कीजे ग्यान ॥ मन गहि राषे एक सूं ॥ दादू साध
सुजांन ॥४५॥ सबद सुई सुरति धागा ॥ काया कंथा लाइ ॥ दादू जो
गी जुगि जुगि पहरै तन का मंग्या बिनसि न जाइ ॥४६॥ ग्यान गुरू का गु

दडी। सबै गुरु का भेष अतीत है मारै आतमा॥ दादू पंथ अनेक धे
॥४७॥ इस कलि अज अब अवटाल दे। दरवेस दरवेस॥ दादू सिका
सब रहे॥ अकल पार उपदेस॥४८॥ दादू सतगुरु माला मन दीया
पवन सुरति सूं पोइ॥ बिन हाथौं निस दिन जपै॥ परम जाप यूं हो
इ॥४९॥ इति भेष का अंग संपूर्ण॥ अंग २४॥ साषी॥ १५१
दादू॥ अथ साध का अंग॥ नमो नमो निरंजनं नमस्कार गुरदेव
तः। बंदनं सर्व साधवा प्रणामं पारंगतः॥१॥ दादू निराकार मन
सुरति सूं प्रेम प्रीति सूं सेव। जे पूजे आकार कूं तो साधू प्रतषि
देव॥२॥ दादू भोजन दीजे देह कूं लीया मनि बिश्राम। साधू के
मुखि मेलिये पाया आतमराम॥३॥ ज्यूं यहु काया जीव की॥

गुसांई के साध। दादू सब संतोषिये। मों हैं आप अगाध॥४॥ सा
धू जन संसार में। ज्यों जल बोहिथ अंग। दादू केते उधरे। जेते
बैठे संगि॥५॥ साधू जन संसार में। सीतल चंदन बास। दादू के
ते उधरे। जे आये उन पास॥६॥ साधू जन संसार में। हीरे जैसा हो
इ। दादू केते उधरे। संगति आये सो॥७॥ साधू जन संसार में। पार
स परगट गाइ। दादू केते उधरे। जेते प्रसे आइ॥ रूष बिरष बनरा
इ सब। चंदन पासे होइ। दादू बास लगाइ करि। कीये सुगंधे
सोइ॥८॥ जहां अरंड अरु आक थे। तहां चंदन ऊग्या मांहि
दादू चंदन करि लीया। आक कहे को नांहि॥९॥ साध नदी जल
राम रस। तहां पषाले अंग। दादू निरमल मल गया। साधू जं

नकेसंग ॥१०॥ साधू बरिषै रांमरस । अंमृत बांणी आइ ॥ दा
दू दरस नदेषतां । त्रिबिधि ताप तनि जाइ ॥११॥ संसार बि
चारा जात है । बहि या लहरि तरंग ॥ भेरै बैसा उबरै । सत सा
धू के संग ॥१२॥ दादू नेडा परमपद । साधू संगति मांहिं ॥ दादू
सहजै पाइये । कबहूं निरफल नांहिं ॥१३॥ दादू नेडा प
रमपद । करि साधू का संग ॥ दादू सहजै पाइये । तन मन लागा
रंग ॥१४॥ दादू नेडा परमपद । साधू संगति होइ ॥ दादू सहजै
पाइये साबित सनमुष सोइ ॥१५॥ दादू नेडा परमपद । साधू जं
नके साथि ॥ दादू सहजैं पाइये । परमपदारथ हाथि ॥१६॥ साध मिलै
तब ऊपजै । हिरदै हरि का भाव ॥ दादू संगति साध की । जब हरि

करै पसाव ॥१७॥ साध मिलै तब ऊपजै हिरदै हरि का हेत ॥
दादू संगति साध की ॥ कृपा करै तब देत ॥१८॥ साध मिलै तब
ऊपजै ॥ प्रेम भगति रुचि होइ ॥ दादू संगति साध की ॥ दया करि
देवै सोइ ॥१९॥ दादू साध मिलै तब ऊपजै ॥ हिरदै हरि की प्या
स ॥ दादू संगति साध की ॥ अविगति पुरवै आस ॥२०॥ साध मि
लै तब हरि मिलै ॥ सब सुष आनंद मूर ॥ दादू संगति साध की
राम रह्या भरपूर ॥२१॥ प्रेम कथा उस एक की ॥ हू जानं
ही आन ॥ दादू तन मन लाइ करि ॥ सदा सुरति रस पान
॥२२॥ प्रेम कथा हरि की कहै ॥ करै भगति ल्यौ लाइ ॥ पी
वै पिलावै राम रस ॥ सो जन मिलवौ आइ ॥२२॥ दादू पी

वै पिलावै रांमरस ॥ प्रेमसंजुगति गुराणी ॥ निंदप्रीतिकथा हरिकी
कहै ॥ हेतसहित बोलाइ ॥२४॥ ग्यानकथा संसारकी ॥ हं
महिं सुणावै आइ ॥ तिसका मुष दादू कहै ॥ दई नहि षाई ताहि
॥२५॥ दादू मुष दीयलाई साधका ॥ जे तुम्हहीं मिलवै आइ ॥
तुम्ह मांहीं अंतर करै ॥ दई नहि षाई ताहि ॥२६॥ जबलग नै
न बदा जियो ॥ तुम्ह पै मांगों येक ॥ दिंन प्रति दरसंन साधका ॥ प्रे
म नाम तिहि टेक ॥२७॥ साध सपीडा मन करै ॥ सतगुर सब
द सुंणाइ ॥ मीरा मेरा मिहरि करि ॥ अंतरि विरह उपाइ ॥२८॥
जे जे हैं वेतं कहै ॥ घरि बधिकै हैन आइ ॥ दादू सो सुष अ
मां ॥ साधू ९ मै समाइ ॥२९॥ साहिब संसंत मष छाहै ॥ सतसंग

तिमें आइ ॥ दादू साध सबै करै सो निरफल कंू जाइ ॥ बुद्ध
जाइ त्रिय लोक मैं ॥ साध अमर धन पान ॥ सुष मारग अंमृत फ
रै ॥ कं हटटै दादू आन ॥ २० ॥ दादू पाणी प्रेम रस साध संगति मा
हिं ॥ फिरि फिरि देषे लोक सब ॥ पकरि सकत कहू नाहिं ॥ २१
जिस रस कौं मुनि हर मरै ॥ सुर नर करैं कलाप ॥ सो रस सहजैं पा
इये ॥ साधू संगति आप ॥ २२ ॥ संगति बिन सीझै नहीं ॥ कोटि
करै जे कोइ ॥ दादू सतगुर साध बिन ॥ कबहुं सुध न होइ ॥ २
३ ॥ दादू नेडा हरि थें अबगति का आराध ॥ मनसा वाचा क्र
मनां ॥ दादू संगति साध ॥ २४ ॥ जगन सीतल होइ मन ॥ चं
दन नंदन पास ॥ सीतल संगति साध की कीजै दादू दास ॥ २५

दादू सीतल जल नहीं। हेम न सीतल होइ॥ दादू सीतल संत जे
न। राम सनेही सोइ॥ ३६॥ दादू चंदन कदि कह्या। अप
ना प्रेम प्रकास॥ दह दिसि प्रगट है रह्या। सीतल गंध सुबास॥ ३
७॥ दादू पारस किन कदि कह्या। मुझ थी कंचन होइ॥ पारस प्रगट
है रह्या। साच कहै सब कोइ॥ ३८॥ तन नहीं भूला मन न
हीं भूला। पंच न भूला प्राण॥ साध सबद क्यूं भूलिगे। रे मन
मूरष अजांण॥ ३९॥ रतन पदारथ मांणिक मोती। हीरों का दरि
या॥ चिंतामणि चित राम धन। घट अमृत भरिया॥ समरथ
सूरा साध सो। मन मस्तक धरिया॥ दादू दरसन देषतां। सब कारि
ज सरिया॥ ४०॥ धरती अंबर राति दिन। रवि ससि नांवें सीस॥

साहूकाल्हिबलिबारनैं । जे सुमरैं जगदीस ॥४२॥ चंदसूरसिज
दाकैं ॥ नांतरअमलहकालेह । दादूत्रिभी अमसमांनसब । तेन
पाऊं सिरदेह ॥४३॥ जेजन नहरिकेरगिरंगो ॥ सोरंगाकंटेनजा
इ ॥ सदासुरंगोसंतजन । रंगमेरहेसमाइ ॥४४॥ दादूरातारांम
का । अविनासीरंगमांहि । सबजगमेबीधेइमरै । तौजीछूटै
नांहिं ॥४५॥ मांहिंबकीयामुक्तिमिटै । सुंदरसोनारंगा । दादूमे
वेगावरेटिंनदिनहोइसुरंग ॥४६॥ पुरमार्थकं सबकोया
अपस्वर्थनांहिं ॥ पुरमेस्वरपुरमारथी ॥ केसाधूकलिमांहिं
॥४७॥ पुरउपगारीसंतसब । आयेइहिंकलिमांहिं । पीवेंपिला
वेरांमरस ॥ अ[illegible]नांहिं ॥४८॥ पुरउपगारीसंतजन

साहिबजीतेरे|जातीदेषीआतमां|रामकहिदेरे||४९||
चंदसूरपांचकंपवन|पांणीकामंतसार|धरतीअंबर
रविदिन|तरवरफलेअपार||भाजनजोजनघडमार|
थी||आतमदेवअपार|साधुसेवगरामको||दादूसेवपा
र|दादूसेवगसोजला||सिरिनहींलेवेंभार||५०||प्रम
रथपकंरांषियेकीजेपूजउपगार||दादूसेवगसोजला|नि
रंजननिरकार||५१||सेवामुक्तितसमाया|मैंमेरामन
मांहिं||दादूआपाजबलगै||साहिबमांनेनांहिं||५२||जि
सकेमसतक्किमणिबसे|सोसबकअमिरेरविसिंअंग|जि
नकेमसतक्किमणिनहीं||तेबिषभरेभुजंग||५३||दादू

दू संसार मैं ॥ ये द्वै रतन अमोल ॥ इक साँई अरु संत जन ॥ इन
का मोल न तोल ॥ ५४ ॥ दादू इस संसार मैं ॥ ये द्वै रहे लुकाइ ॥ राम स
नेही संत जन ॥ और बहुत तेरा आइ ॥ ५५ ॥ सगे हमारे साध हैं ॥ सि
र परि सिरजनहार ॥ दादू सतगुर सो सगा ॥ दूजा धंध बिकार ॥ ५६
जिनके हिरदै हरि बसै ॥ सदा निरंतर राम ॥ दादू साचे साध की
मैं बलिहारी जाँउं ॥ ५७ ॥ साँचा साध दयाल घट ॥ साहिब का प्या
रा ॥ राता माता राम का ॥ सो प्राण हमारा ॥ ५८ ॥ दादू फिरता चाक
कुम्हार का ॥ यौं दीसै संसार ॥ साधू जन निहचल रहै ॥ जिनके
राम अधार ॥ ५९ ॥ जलती बलती आत्मा ॥ साध सरोवर जाइ ॥ दा
दू पीवै राम रस ॥ सुख मैं रहै समाइ ॥ ६० ॥ काँजी मांहैं मेलि करि

पीवै सब संसार । करता केवल निरमला ॥ को साधू पीवणहार ॥
६१ ॥ दादू संगि साध मिलै संगि पडै । जाव न गति रस जाइ ॥ साध
मिलै सुष ऊपजै ॥ आनंद अंग न माइ ॥ ६२ ॥ दादू साधू संगति
पाइये । राम अमी फल होइ ॥ संसारी संगति पाइये ॥ बिष फल
देवै सोइ । दादू सन्ना संतन की ॥ सुमति ऊपजै आइ ॥ साकत की
सन्नाहि सतौ । ग्यान कायाथैं जाइ ॥ ६३ ॥ दादू सब जग दीसे ये
कला ॥ सेवग स्वामी होइ ॥ जगत कहावै राम बिन ॥ साध सुहा
गी सोइ ॥ ६४ ॥ दादू साधू जन सुष पाये जपे ॥ डुंनियां कौं बकरंदद
ड जीड षीह मटे षतो ॥ साध निसद्रा आनंद ॥ ६५ ॥ दादू टेषत
हं म सुषी ॥ सांई के मनि लागि ॥ यों सो सुषि सदा होइ गाजा तै

पूरे न्याग ॥ ६६ ॥ दादू सीगा पीवै रांम रस । सो जीमी गाहोइ । सह
जैं कुंडवा पिटि राया । दादू निरविष सोइ ॥ ६७ ॥ दादू अंतरि
पैक ऊनंत सूं । सदा निरंतर प्रीति । जिहि प्रांणी प्रांम बसे सो
बेगम तिन जीत ॥ ६८ ॥ दादू मैं दास तिहिं दास की । जिहिं सं
गि षेलै पीव । बहुत भांति करि वारनैं । तापरि दीजे जीव ॥ ६९ ॥
दादू लीला राजा रांम की । षेलैं सब ही संत । आपा पर एकै भया
छूटे सबै भरंत ॥ ७० ॥ दादू आनंद सदा अडोल सूं । रांम सनेही
साध ॥ प्रेमी प्रीतम कौं मिलै । एक सुष अगम अगाध ॥ ७१ ॥ स
हजानंद आनंद मैं । सहज रूप सब ठौर । दादू देषे एक कौं दूजा
नांहीं और ॥ ७२ ॥ एक घट दीपक साध का । ब्रह्म जोति प्रका
स ॥ दादू पंषी संत जन । तहां परैं निज दास ॥ ७३ ॥ घर बंन मांहैं

राषिये। दीपक जोति जगाइ। दादू प्राण पतंग सब। महो दीप
क तहं जाइ॥७४॥ घर बंन मांहैं राषिये। दीपक ज्योति लगा
इ। दादू प्राण पतंग सब। जाइ मिलै सब कोइ॥७५॥ घर बंन
मांहैं राषिये। दीपक प्रगट प्रकास। दादू प्राण पतंग सब। आ
इ मिलै उस पास॥७६॥ घर बंन मांहैं राषिये। दीपक जोति सहे
त। दादू प्राण पतंग सब। आइ मिलै उस हेत॥७७॥ जिंहि घ
टि प्रगट राम है। सो घट तजि आन जाइ। नैन कूं मांहैं राषिये। दादू
आपन साइ॥७८॥ दादू जिंहि घटि दीपक राम का। तिंहि घ
टि तिमिर न होइ। उस उजियारे जोति कै। सब जग देषै सोइ।
॥७९॥ कबहुं न बिछुडै सो रंग लागा। साध हि दै मत तेहं कहां। दादू
ही राषै कर्म सब। बाधिमा ठाढौ साइ॥८०॥ गुरु ग्यान बांधै गोवडो

नहीं नारि सं नेह । मन नहिं श्रीकृस्न रंग राचै । छांडि सकल गुन गेह ।। नि
राकार सं मिलि रहे । कृष्ण प्रेम न आनि तिकरि लेइ । दाइ कुं करि पाई
ये । कृन चरनों कौ षेह ।।८१।। साध सदा संजम रहै । मैत्रा करे
न होइ । दाइ पंकज सै नहीं । कृम न लागै कोइ ।।८२।। साध सदा
संजम रहै । मैना कूं देन दाइ । सुनि सरोवर हंस जा दाइ छबि रला
कोइ ।।८३।। साधि का उगाहार सब । मेरु गमी हैं होइ ।। दा हूं सेव
ग साधु मेला । इह जानां नहीं कोइ ।।८४।। जब लग नैन न देखिये । सा
धक है ते ष्यंग ।। तब लग कयं करि मानिये । साहिब का प्रसं
ग ।।८५।। सोई जन साधु सिद्ध सो ।। सोई सकल सिरमोर ।। जि
हिके हृदै देह रिवै से । इनां तांदी मोर ।।८६।। साध सिराव निसा

विलै न कोइ रिपु आइ ॥ सजीवन साधां चैदै ॥ इआ बहिया जा
इ ॥ ८७ ॥ दादू औगुण छाडै गुण गहै ॥ सोई सिरोवनि साध ॥
गुण औगुण सो रहत है ॥ सो निज ब्रह्म अगाध ॥ ८८ ॥ दा
दू सीधव फटक पषांण का ॥ ऊपरि एकै रंग ॥ पांणी मांहै देषि
ये ॥ न्यारा न्यारा अंग ॥ ८९ ॥ दादू सीधव के आपा नहीं ॥ नी
र षीर रस संग ॥ आपा फटक पषांण के ॥ मिलै न जल के स
ग ॥ ९० ॥ दादू सब जग फटक पषांण का ॥ साधू सीधव
होइ ॥ सीधव एकै है रह्या ॥ पांणी पथर दोइ ॥ ९१ ॥ आप
हरत्र रस मैं ॥ उ नोई आहे ॥ दादू समेति न के ॥ अलाग ल
ग ॥ ९२ ॥ आवे पहर अरस मैं ॥ वे गाफिरां पसनि ॥ दादू पस

तिनके ॥ जेदीदारलहहि ॥९३॥ अठपहरअरसमें ॥ जिन्ही
रहरहंनि ॥ दादूपसेतिनके ॥ गुफ्तंगालीकंनि ॥९४॥ अठ
पहरअरसमें ॥ लुडदाआहीन ॥ दादूपसेतिनके ॥ असा
षबरिहीन्ह ॥ ९५ ॥ अठपहरअरसके ॥ वंजीजेगाहीन ॥
दादूपसेतिनके ॥ केतेदीआंहीन ॥९६॥ दादूप्यालानूरदा
आसिकअरसपिवंनि ॥ अठपहरअलाहदा ॥ मुहंदिठेजीवंनि
॥९७॥ आत्माअसरारामका ॥ तहांबसैभगवांन ॥ दादू
दोन्यूंपरसपरि ॥ हरिआतमकाथांन ॥९८॥ जहांरामतहांस
तेजन ॥ जहांसाधूतहांराम ॥ दादूदोन्यूंएकठे ॥ अरसपरसबि
श्रांम ॥ ९९ ॥ हरिसाधूयोंपाईए ॥ अबगतिकेआराध ॥ साध

साधू संगति हरि मिले ॥ हरि संगति थैं साध ॥१००॥ राम नाम सौं मि
लि रहै ॥ मन के छाडि बिकार ॥ सो दिल ह्मां हे हैं लिये ॥ ले न्यू
को का दीदार ॥१०१॥ साधू जंन उस देस का ॥ आया इहि संसार ॥ दा
दू उसकौं पूछिये ॥ प्रीतम का समाचार ॥१०२॥ समाचार सति पी
व का ॥ को साधू कहेगा आइ ॥ दादू सीतल आत्मां ॥ सुष मैं रहै सं
माइ ॥१०३॥ साध सबद सुष बरिषि हैं ॥ सीतल होइ सरीर ॥ दा
दू अंतरि आतमां ॥ पीवै हरि जल नीर ॥१०४॥ दादू हरि दरबार का ॥
को साधू बांटे आइ ॥ तहां राम रस पाइये ॥ जहां साधू तहां जाइ ॥१०
कु ५॥ दादू सुरता संमे हीं राम का ॥ सो मुझ मिलवै आंणि ॥ तिस आ
गे हरि गुण कथौं ॥ सुणत न करई कांणि ॥१०६॥ दादू सब ही म

तकसमांनहीं। जीयालवहीजांणि॥ दादूछांनानाम्रमीका। कोसाधू
जाहेजांणि॥१०७॥ सबहीमृतकह्वैरहे। जीवेंकवंणउपाउ। दा
दूअंम्रतरांमरस। कोसाधूसींचेआइ॥१०८॥ सबहीमृतकमां
हिहैं। क्यूंकरिजीवेंसोइ। दादूसाधूप्रेमरस। आंणिपिलावेंको
इ॥१०९॥ सबहीमृतकदेखिये। किंहिविधिजीवेंजीव। साध
सुधारसआंणिंकरि। दादूबरिषेपीव॥११०॥ हरिजलबरिषे
बाहरा। सूकेकायाषेत। दादूहरियाहोइगा। सींचणहारसुचे
त॥१११॥ दादूरांमनछाडिये। गहिलातजिसंसार। साधूसंगति
सोधिलै। कुसंगतिसंगनिवार॥११२॥ गंगाजमुनांसुरसती। मि
लेंजबसागरमांहिं। षारापांणीह्वैगया। दादूमीठानांहिं॥११३॥
जातपतपदनीकरिगये। सुरतिपदकंचेजाइ। दादूमनकीबासनां

नूकि पडे फिरि मरि जाइ ॥११४॥ दादू कुसंगति सब परहरि । मात पि
ता कुल कोइ । सजन सनेही बंधवा । भावैं आपा होइ ॥११५॥
कुपात्र मन मूरिख हितकारी । संजम नेम सु मोरि पर हो । ग्यानवन्त
अंब्रत । निरमल इस मन को जित ह ॥११६॥ कुसंगति केते गये । ति
न का नांव न गांव । दादू ते क्यूं उधरैं । साध नहीं तिहिं ठांव ॥११७॥
भाव भगति का भंग करि । बटपारे मारैं बाट । दादू द्वारा मुक
ति का बोलैं जाइ कुपाट ॥११८॥ साधसंगति अंतर पडै । तौ भा
गेगा कित ही जाइ । प्रेम भगति भावै नहीं । यहु मन का मत आ
र ॥११९॥ बैरागी बन मैं बसै । घरबारी घर मांहिं । राम निराला
रहि गया । दादू इन मैं नांहिं ॥१२०॥ दादू राम मिलन के कारनैं
जे तूं घर तजि बास । साध संगति सौं विचरै । राम भजन कौ केवल सु ॥१२१॥

दादू रांम मिलन की कहत है ॥ करत कछू औरै ॥ ऐसैं पीव क्यूं
पाइये ॥ संमझि मन बौरे ॥१२२॥ दादू सोई सेवग रांम का ॥ जि
सै न दूजी चींत ॥ दूजा को भावै नहीं ॥ एक पियारा मीत ॥१२३॥
मोनि गहे ते बावरे ॥ बोलैं खरे अयांन ॥ सहजैं राते रांम सौं
दादू सोई सयांन ॥१२४॥ ब्रह्मा संकर सेस मुनि ॥ नारद ध्रूव सुष
देव ॥ सकल साध दादू सही ॥ जे लागे हरि सेव ॥१२५॥ साधक
वृछ हरि बांनै नांनां ॥ संत जन वर संग आइ ॥ दादू प्रेम लले चले
मिले रांम कूं जाइ ॥१२६॥ दादू सहजैं मेला होइगा ॥ हम तुम
हरि के साथ ॥ अंतर गति तौ मिलि रहे ॥ फुनि प्रगट परकास ॥
१२७॥ अंतर मन मैं रांम है ॥ प्रगट राता की होइ ॥ सेवा बंदन आ

नू कि पड़े फिरि [illegible] दादू ॥११४॥ दादू कुसंगति सब परहरै ॥ मात पि
ता कुल कोइ ॥ सजन सनेही बंधवा ॥ भावै आपा होइ ॥११५॥
ज्ञ ध्यान मूरि विष हितकारी ॥ संजीवनि सौं समरिये पद ॥ ज्ञान दान्ने त
जं बूते ॥ निरमई मनो जित रः ॥११६॥ कुसंगति केते गये ॥ ति
न का नांव न ठांव ॥ दादू ते क्यूं उधरै ॥ साधु नहीं तिहिं गांव ॥११७॥
भाव भगति का भंग करि ॥ बटपारे मारैं बाट ॥ दादू द्वारा मुक
ति का खोले जड़े कपाट ॥११८॥ साध संगति अंतर पड़े ॥ तौ भा
गैगा कित ज्यार ॥ प्रेम भगति भावै नहीं ॥ यहु मन का मत ज्यो
र ॥११९॥ बैरागी बन मैं बसै ॥ घरबारी घर मांहि ॥ राम न छाड़े
रहि गया ॥ दादू इनमैं नांहि ॥१२०॥ दादू राम मिलन के कारनै
जे तूं खरा उदास ॥ साधु संगति सो सोधि ले ॥ राम उन्हों के पास ॥१२१॥

दादू रांम मिलन की कहत है । करत करम कछु औरै । ऐसैं पावक क्यूं
लाइये । समझि मन बौरे ॥१२२॥ दादू सोई सेवग रांम का । जि
सैं न दूजी चींत । दूजा को भावै नहीं । एक पियारा मींत ॥१२३॥
मोनि गहैं ते बापुरे । बोलैं षरे अयांन । सहजैं राते रांम सौं
दादू सोई सयांन ॥१२४॥ ब्रह्मा संकर सेस मुनि । नारद ध्रू सुष
देव । सकल साध दादू सही । जे लागे हरि सेव ॥१२५॥ साध क
वल हरि बासनां । संत भवर संग आइ । दादू प्रमल ले चले
मिलै रांम कूं जाइ ॥१२६॥ दादू सहजैं मेला होइगा । हम तुम्ह
हरि के दास । अंतरगति तौ मिलि रहे । पुनि प्रगट प्रकास
॥१२७॥ आतम मधें रांम है । पूजा ता की होइ । सेवा बंदन आ

रती ॥ साध करैं सब कोइ ॥१२८॥ संतन तौ रैं आरती ॥ तन मन म
गल चार । दादू बलि बलि वारनैं । तुम परि सिर जे न हार ॥१२
९॥ दादू मन मसि रि मोटे जाग ॥ साधू का दरसन कीया । कहा क
रैं जम काल । रांम रस सांइंन जरि पीया ॥१३०॥ दादू येता अव ग
ति आप थैं । साधौं कूं अधिकार । चौरासी लष जीव का । तन म
न फेरि संवारि ॥१३१॥ विष का अंम्रत करि लीया । पावक
का पांणी ॥ बांका सूधा करि लीया । सो साध बिनांणी ॥१३२॥
दादू कारा पूरा करि लीया ॥ षारा मींठा होइ ॥ फूटा सारा क
रि लीया ॥ साध बमेकी सोइ ॥१३३॥ बंध्या मुकता करि ली
या ॥ उरझ्या सुरझि समांन । बैरी मींता करि लीया ॥ दादू उलि

म कोंन ॥१२४॥ कूडा साचा करि लीया । काचा कंचन सार । मै
ला निर्मल करि लीया । दादू ग्यान बिचार ॥१२५॥ कोटि बर
स लौं राषिये । बंसा चंदन पास । दादू गुण लीया रहैं । कदे न ला
गै बास ॥१२६॥ कोटि बरस लौं राषिये । पथर पांणी मांहि । दा
दू आपा न ब्रांणा है । भीतरि भेदै नाहिं ॥१२७॥ कोटि बरस लौं रा
षिये । लोहा पारस संगि । दादू रोम का अंतरा । पलटै नांही अं
ग ॥१२८॥ कोटि बरस लौं राषिये । जीव ब्रह्म संगि दोइ । दादू मा
है बास मैं । कदे न मेला होइ ॥१२९॥ सतगुर चंदन बांवना
लागे रहैं भवंग । दादू बिष छाडै नहीं । कहा करै सतसंग ॥१३०॥
सतगुर साध सुजांण है । सिष का गुण नहीं जाइ । दादू अंमृत छा

निकरि। बिषै हलाहल षाइ ॥१५१॥ काया कमल गाइ करि। ती
र्थ धोवै स्त्राइ। तीर्थ मांहैं कीजिये। सो कैसैं करि जाइ ॥१५२॥
जहां तिरिये तहां डूबिये। मन मैं मैला होइ। जहां छूटै तहां बंधि
ये। कपटि न सीझै कोइ ॥१५३॥ दादू जब लग जीविये। सुमि
रण संगति साध। दादू साधू रांम बिन। दूजा सब अपराध ॥१५४॥
इति साध कौ अंग संपूर्ण ॥ अंग ॥१५॥ साषी ॥१७०॥ अ
थ मधि कौ अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं। नमसकार गुरदेवतः।
वंदनं सर्व साधवा। प्रणामं पारंगतः ॥१॥ दादू द्वै पष रहता स
हज सो। सुष दुष एक समान। मरै न जीवै सहज मैं। पूरा पद
निरबांण ॥२॥ [illegible] [illegible]मां। नाहीं है मिटै तां

तातासौंतासेमिलिया।तबदादूयोंकेअंग॥३॥सुषदुषमनिंम
नैंनहीं।रामरंगिराता।दादूऊनंत्तनिसब।प्रेमरसमाता॥४
मतिमोटीउनसाधकी॥हैपहरहतसमान।दादूआपापमेटिक
रिसेवाकेसुजान॥५॥कहूनकहावैआवकूं।कांकूंसगिन
आह॥दादूनिरपषव्हैरहै।साहिबसूंल्योलाइ॥६॥सुषदुषम
निमंनैंनहीं।आपापूसमिलाइ॥सोमननमनकरिसेविये॥सब
मूंल्योलाइ॥७॥नांहैमनकाफेनांगदेंखे।सांजानविचार॥म
छिदाइसेवैसदा॥दादूमुक्तदुवार॥८॥सहजरूपमनकाभिये॥
नेजेकन्हैकेमांहि।लैसमाधिरसपीजिये।तहांकालभैनाहिं॥९
दादूज्यौंपानमेंपूनकौं।आपापधरेअकास।दादूतहांजहांछैन

हां। मधि निरंतर बास ॥१०॥ नहीं मृतक नहीं जीवता। नहीं
आवै नहीं जाइ। नहीं सूता नहीं जागता। नहीं भूषा नहीं
धाइ ॥११॥ ना तहां चुप ना बोलणां। मैं तैं नाहीं कोइ। दादू आ
पा पर नहीं। ना तहां एक न दोइ ॥१२॥ दादू इस आकार थैं
दूजा सूषिम लोक। तिस थैं आगैं और है। तहं वां हरिष न
सोक ॥१३॥ दादू हद छाडि बेहद मैं। निरभै निरपष होइ। दादू
लागि रहै उस एक सैं। जहां न दूजा कोइ ॥१४॥ दादू जे
वे होत है। जिनि आऐ मन मांहिं। तहां जे मन कूं राषिये। उ
हां कछू जानां नाहिं ॥१५॥ निराधार घर कीजिये। तहां नां
हां धरनि आकास। दादू निहचल मन रहै। निरगुण के वे

सास ॥१६॥ मन चित मनसा आतमा । सहज सुरति ता मांहि । दादू
पंचूं पूरि ले जहां धरती अंबर नांहि ॥१७॥ अधर चाल कबीर
की आसंघी नहीं जाइ । दादू मन के संग जूं ॥ लटि पडै चतुर
आइ ॥१८॥ दादू रहे लीक कबीर की । कठिन बिषम यहु चाल ॥
अधर एक सौं मिलि रह्या जहां न झंपै काल ॥१९॥ निराधार नि
ज भगति करि । निराधार निज सार । निराधार निज नांव ले ।
निराधार निरकार । निराधार निज रांम रस । को साधू पीवण
हार । निराधार निर्मल रहै । दादू ग्यान बिचार ॥२०॥ जब निरा
धार मन रहि गया । आतम के आनंद । दादू पीवै रांम रस । भे
टे परमानंद ॥२१॥ दहूं बिचि रांम अंग के लागी आवै । आवै राजो

गानदेई ॥ जहां के तहां लेराषे ॥ दा[illegible] यारि पहूंते सेई ॥२२॥ च
लुदाइ तहां जाइये ॥ माया मोह थें टरि ॥ सुष दुष को ब्यापै नहीं
ऋबिनासी घर पूरि ॥२३॥ चलु दाइ तहां जाइये ॥ जहां मरै न
जीवै कोइ ॥ आवागवन नै को नहीं ॥ सदा येक रस होइ ॥२४॥
चलु दाइ तहां जाइये ॥ जहां चंद सूर नहीं जाइ ॥ राति दिवस सं
गमि नहीं ॥ सहजैं रह्या समाइ ॥२५॥ चलु दाइ तहां जाइये ॥ ज
हां जम जोरा को नांहिं ॥ काल मीच लागै नहीं ॥ मिलि रहिये ता
मांहिं ॥२६॥ येक देस हम देषिया ॥ तहां रुति नहीं पा[illegible] को इ
हम दाइ उस देस के ॥ तहां सदा येक रस होइ ॥२७॥ [illegible] देस हं
मदेषिया ॥ तहां बसती कउ जंत नांहिं ॥ हम दाइ उस देस के ॥ गह र[illegible]

पताल मांहि ॥२८॥ येक देस हम देषिया नहीं नेड़े नहीं दूरि ॥ हं
म दादू इस देस के रहे निरंतर पूरि ॥२९॥ येक देस हम देषि
या तहां निस दिन नांहीं घांम ॥ हम दादू उस देस के ॥ जहां
निकटि निरंजन रांम ॥३०॥ बारह मासी नीपजे । तहां की
या प्रवेस ॥ दादू सूका नां पड़े । हम आये उस देस ॥३१॥ जहां बे
द कुरांन का गमि नहीं ॥ तहां कीया प्रवेस । तहां कुछ अच
रज देषिया ॥ यहु कुछ औरे देस ॥३२॥ दादू नां घरि रह्या न
उठि गया ॥ नां कुछ कीया कलेस । दादू मन हीं मन मिल्या
सतगुर के उपदेस ॥३३॥ काहे दादू घरि रहै ॥ काहे बनषं
डि जाइ ॥ घर बन रहिता रांम है । ताही सौं ल्यौ लाइ ॥३४

दादू जिनि प्राणी करि जांणियां । घर बन एक समान । घर
मांहैं बन ज्यूं रहै । सोई साध सुजान ॥ २५ ॥ सब जग मांहैं
एकला । देह निरंतर वास । दादू कारणि राम के । घर बन
मांहि उदास ॥ २६ ॥ घर बन मांहैं सुख नहीं । सुख है सांई
पास । दादू तासूं मन मिल्या । इन थैं भया उदास । ना घर भ-
ला न बन भला । जहां नहीं निज नांउं । दादू उनमन मन रहै । भ-
ला त सोई ठांउं ॥ २७ ॥ बैरागी बन मैं बसै । घरबा-
री घर मांहि । राम निराला रहि गया । दादू इनमैं नांहि ॥
॥ २८ ॥ दीन दुनी सदकै करौं । टुक देषण दे दीदार ।
तन मन भी छिन छिन करौं । भिस्त दोजग भी वार

ॐ

॥४९॥ दादू जीव साध लिका ॥ मूरष पछिता नाहिं ॥ मूरष

कि ताहु रांम का ॥ रहता नैन कुं मांहि ॥५०॥ आगन रक स

से भ ही ॥ जीव रांम मरण मे नांहि ॥ रांम बिमुष मोहिं न भाये ॥ सोसा

नें मन मांहि ॥५१॥ आगन सुषडषत जे ॥ जीव रांम मन सोइ ॥ दादू

जी रांम का कोइ आवै कोइ ॥५२॥ दादू हिंदू तुरक न होइबा

नाहि से ताकाम ॥ षटदरसन के संगि न जाइबा ॥ निरपषि क

हिबा रांम ॥५३॥ षटदरसन दोन्यूं नहीं ॥ निरालंब निज बाट

दादू एके आसिरे ॥ घाट ॥५४॥ दादू नां हम हिंदू

कै हिं ॥ नां हम मुसलमांन ॥ षटदरसन मे हम नहीं ॥ हम रांते

सो मां नांम मे वहे ॥ बोध मन्यासी सेष ॥ स

राह मांन ॥५५॥

टदरसंन दादू रांम बिंन। सबै कपट के भेष॥४६॥ माहूंन्नल
हरांम का। द्वै पष थैं न्यारा। रहिता गुण आकार का। सो गुरू हं
मारा॥४७॥ दादू मेरा तेरा बावरे। मैं तैं की तजि बांणि॥ जिनि यहु
सब कुछ सिरजिया। करता ही का जांणि॥४८॥ दादू
करणी हिंदू तुरक की। अपणी अपणी ठौर॥ दुहुं बिचि मा
रग साध का। यहु संतौं की रह और॥४९॥ दादू हिंदू तुरक के
द्वै पष पंथ निवारि॥ संगति साचे साध की॥ सांई कौं संम्हारि॥
दादू हिंदू लागे देहुरै॥ मुसलमांन मसीति॥ हम लागे एक अ
लेष सूं॥ सदा निरंतरि प्रीति॥५०॥ न तहां हिंदू देहुरा॥ न तहां
तुरक मसीति॥ दादू आपै आप है॥ नहीं तहां रह रीति

यूं कौ मनी लियू कै कउसा ॥ समसगुरि दीया बताइ ॥ जी तरि सेवा
बंदगी ॥ बाहरि का है जाइ ॥५२॥ दोनूं हाथी कैरे है मिलि रस
पांणी न जाइ ॥ दादू आपा मेटि करि दोनूं रदे समाइ ॥५३॥
मै न्नातन चयूंन कढैरे है ॥ देषा निरपष चंद्र गा ॥ दादू थके केर
जो हजा च दै नरंग ॥५४॥ जौं तौं बूकै साच है ॥ सब को देषता
षाइ ॥ चालन हीं संसार की ॥ दादू गहा न जाइ ॥५५॥ दादू पष
कोइ केता मिलि ॥ निरपष निरमल नांउ ॥ साईं सूं सनमुष सदा
लक्का मम हीं गंम ॥५६॥ दादू जब थें हम निरपष भये ॥ सबै रिसा
नें लोक ॥ सतगुर के प्रसाद थें ॥ मेरे हरष न सोक ॥५७॥ निरप
षह्वै करि न पाहै ॥ तकि पडे गामोइ ॥ हे मनि निरपष लागे मा

नेसुं ॥ कर्त्ता करै सु होइ ॥५८॥ दादू पष काहू के नांहि ॥ नि
हकामी निरपष साध ॥ ये कम्मरे सै राम के ॥ षेलै षेल अगाध
॥५९॥ दादू पषापषी संसार सब ॥ निरपष विरला कोइ ॥ सोई
निरपष होइगा ॥ जाकै नांव निरंजन होइ ॥६०॥ अपणों अपणे
पंथ की ॥ सब को कहै बढाइ ॥ तातैं दादू एक सूं ॥ अंतरगति ल्यौ
लाइ ॥६१॥ दादू दै पष दूरि करि ॥ निरपष निरमल नांव ॥ आ
पा मेटै हरि भजै ॥ ताकी मैं बलि जांव ॥६२॥ दादू तजि संसा
र सब रहै निराला होइ ॥ अविनासी के आसिरै ॥ काल न लागै
कोइ ॥६३॥ कलि जुग कूकर कलि मुहां ॥ उठि उठि लागै धा
इ ॥ दादू क्यूं करि छूटिये ॥ कलि जुग बडी बलाइ ॥६४॥ काल

मुंह सौं मारका ॥ नीले श्रीये पाव ॥ दादू तानितला कहै ॥ जो वेती
शरे जाइ ॥ ६५ ॥ दादू जो वे हीगा जे प्रिथमी ॥ दया बिहूंणा देस
जगति नहीं जगावूत की ॥ तहां कैसा प्रवेस ॥ ६६ ॥ जे बोले तो
चुप कहैं चुप सौ कहैं पुकार ॥ दादू क्यूं करि छूटिये ॥ ऐसा वे
संसार ॥ ६७ ॥ न जांणौ हां जी चुप गहि ॥ मेटि अगनि की झाल
सदा स जीवनि सुमरिये ॥ दादू बंचै काल ॥ ६८ ॥ पंथ चलैं ते प्रा
णीयां तेता कुल व्यौहार ॥ निर्पष साधू सो सही ॥ जिन के पी
व एक अधार ॥ ६९ ॥ दादू पंथों परि गये ॥ बपुड़े बारह बाट ॥ इन
के संग न जाइये ॥ उलटा अविगति घाट ॥ ७० ॥ दादू जा गो को
आया कहै ॥ मेटेकं कहै जाइ ॥ आदि निरंजन जांगे कहै ॥ तहा

का तहां सैं माहि ॥३०॥ इति मधि को अंग संपूर्ण ॥ अंग २६ ॥
साषी ॥१२८०॥ अथ सारग्राही को अंग ॥ दादू नमो नमो नि
रंजनं नमस्कार गुरदेवतः । वंदनं सर्व साधवा । प्रणामं पारंग
तः ॥१॥ दादू साधु गुण गहै । औगुण तजै विकार ॥ मांनसरोवर
हंस ज्यूं । छाड़ि नीर गहि सार ॥२॥ हंस गियांनी सो भला । अं
तरि राषै एक ॥ विष मैं अंमृत काढिलै । दादू बड़ा विवेक ॥३॥
पहली न्यारा मन करै । पीछै सहज सरीर ॥ दादू हंस विचा
रसूं । न्यारा कीया नीर ॥४॥ आपै आप प्रकासिया । निरमल
ग्यांन अनंत । षीर नीर न्यारा कीया । दादू जिन भगवंत ॥५॥ षी
र नीर का संत जन । न्याव नबेरै आइ ॥ दादू साधू हंस बिन

नैलेसैनेलेजाइ ॥६॥ दादू मनिहंस मोती चुगैं ॥ कंकर डाया
डारि ॥ सतगुरु कहि समझाइया पाया भेद बिचार ॥७॥ दादू हं
सा मोती चुगै ॥ मानसरोवरि जाइ ॥ बगुला छीलरि बापुड़ा ॥ चुणि
चुणि मंछला खाइ ॥८॥ दादू हंस मोती चुगै ॥ मानसरोवरि न्हा
इ ॥ फिरि फिरि बैसै बापुड़ा ॥ काग करंका आइ ॥९॥ दादू हंस परखि
ये ॥ उतिम करणी चुणि ले ॥ बगुला बैसे ध्यान धरि ॥ प्रतषि कहिये
काल ॥१०॥ उतिम करणी हंस है ॥ मैली करणी काग ॥ मधिम क
रणी जीव की सब ॥ दादू उतिम भाग ॥११॥ दादू निर्मल करणी साध
की ॥ मैली सब संसार ॥ मैली मधिम ह्वै गये ॥ निरमल सिरजन
हार ॥ ... की कारि जाति दे ॥ इजा सो च निवारि ॥ मे
हार ॥१२॥ दादू ...

लीमधिमकैगये॥ उजलकैचलिविचार॥१३॥ उजलकंमारा
मदै॥ दादूइजाधंध॥ काकाहिदेसमकैनही॥ चारसूलेचन
क्रंध॥१४॥ दादूगमकबकुकाजांनागाहि॥ इधरहैस्योलाइ
सीगयूंछपणापूहैरै॥ ऊसघेनिलागाधाइ॥१५॥ दादूकांमगा
इकेहधमैं॥ दादूचांमसेंनांहि॥ इहिविधिअंमनयांअयै
सधूकेमुखमांहि॥१६॥ दादूकांमधंरीकेनांकेसं॥ जागा
निसकुछनाहि॥ नांगनिसमनरणलगी॥ मनकौम
वहीमांहि॥१७॥ जाकेहिरदेजैसा दादूहगा॥ सोलेसी
लेजांइ॥ दादूइनिरदेषरकु॥ नांउनिरतरहिगा॥१
८॥ दादूसमधीसैवैकतिरहेउगा॥ समाधनरासेकोइ

२५

जिस कै हिरदै हरि नहीं । तिहिं तनि मेटो देहो इ ॥१९॥ ज
न साध संगति पाईये ॥ तब इं टरहि रिनसाइ ॥ दादू बोहिथ
बैसि करि कूंडे निकसिन जाइ ॥२०॥ जब प्रमपदारथ
पाईये ॥ तब कंकर रहीया मारि ॥ दादू साचा सो मिले ॥ तब कूडे
काच निवारि ॥२१॥ जब जीव निमूरी पाईये ॥ तब मरिबा को
गाढि साहि ॥ दादू ज्ञान तछाणि करि ॥ को गाहला हलषाइ ॥२२
जब मान सरोवर पाईये ॥ तब छीलर कौ छिटकाइ ॥ दादू हंसा
हरि मिले ॥ तब कागा गारे बिलाइ ॥२३॥ जहां दिनकर तहां
निस नहीं ॥ निस तहां दिनकर नाहिं ॥ दादू एकै द्वै नहीं ॥ साध
निके मत माहिं ॥२४॥ ... के घोडे चढि चले ॥ इ जाको तिल होइ

दुके घोडै चढि बैसता ॥ पाणि नपंकता कोइ ॥२५॥ इति सारग्राहि
को अंग सपूरण ॥ अंग ॥१८॥ साखी ॥१८०॥ अथ विचार
को अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं ॥ नमसकार गुरदेवतः ॥ वंदनं स्र
व साधवा ॥ प्रणामं पारंगतः ॥१॥ दादू जल मै गगन गगन मै जल
है पुनि वै गगन निरालं ॥ ब्रह्म जीव इहि बिधि रहै ॥ ऐसा भे
द बिचारं ॥२॥ ज्यूं दर्पन मैं मुष देषिये ॥ पांणी मै प्रतिबिंब ॥ ऐ
सैं आतम राम है ॥ दादू सब ही संग ॥३॥ जब दर्पण माहीं देषि
तब अपना सूझै आप ॥ दर्पन बिन सूझै नहीं ॥ दादू पुंनि रु पा
प ॥४॥ जी येते लहरि तरंग नभि मैं ॥ जी ये गंध फुलंन्य ॥ जी येम पंग
थी रमो ॥ ईरयेर तरंग तिं ॥५॥ ईरयेर कुक तंतिमे ॥ जी येकु हंपगानि

ज्यौं ये जेरौ सूर मांड्यौ चड बसंनि ॥६॥ दादू जिनि यहु दिल मंद-
र कीया ॥ दिल मंदर मैं सोइ ॥ दिल मांहैं दिलदार है ॥ और न दूजा
कोइ ॥७॥ मीत तुम्हारा तुम्ह कनैं ॥ तुम्ह हीं लेहु पिछांनि ॥ दा-
दू दूरि न देषियै ॥ प्रतिब्यंब ज्यूं जांणि ॥८॥ दादू नाल कवल के ज-
ल उपजै ॥ क्यूं जुदा जल मांहि ॥ चंद हि हित चित प्रीतडी ॥ यूं
जल सेती नांहि ॥९॥ दादू एक विचार सूं सब थैं न्यारा होइ ॥ मांहैं
है परि मन नहीं ॥ सहज निरंजन सोइ ॥१०॥ दादू गुण निरगुण मन मि
न मिलि रह्या ॥ क्यूं बेगर ह्वै जाइ ॥ जहां मन नांहीं सो नहीं ॥ जहां
मन चेतनि सो आइ ॥११॥ दादू सब ही ब्याधि का ॥ औषदि एक
विचार ॥ समझें थैं सुष पाइये ॥ कोई कुछ कहौ गंवार ॥१२॥ दा

दूइकनिकगुंणदूइकागुणामदि। सबघटियेदैज्ञांन। कांयाका
मायामिलै। आत्मब्रह्मसमांन॥१३॥ दादूकोटियेचारीनये
कबिचारी। तकनसरिजरिहोइ॥ आचारीसबजगजरया॥
बिचारीबिरलाकोइ॥१४॥ दादूघटमैंसुषआनंदहै। तबसब
गहरहोइ। घटमैंसुषआनंदबिन। सुषीनदेषाकोइ॥१५॥ का
यालोकअनंतसब। घटमैंन्यारीन्यारी। जहांजोइरतहांसंगिस
ब। दरियापैलीतीर॥१६॥ कायामायाफेरही। जोमनबंकबल
वंत। दादूइनरकंूतिरै। मायालोकअनंत॥१७॥ मोटीमाया
तजिगये। सूषिमलीयेंजाइ। दादूकोछूटैनहीं। मायाबडीबला
इ॥१८॥ दादूमुनियंणिपारिवहिंतें। तिनकाकीतेगाग। सबतजि

रातारांमसं ॥ दादूएकबैरागा ॥१९॥ गुणाअतीतमोदरसनी
आपाधरैउठाइ ॥ दादूनिरगुणरांममांहिं ॥ डोरीलागाजाइ ॥
२०॥ पंचमुकतिसबकोकरै ॥ पंचमुकतिनहीहोइ ॥ पंचमु
कतिसतगुरकरै ॥ दादूबिरलाकोइ ॥२१॥ दादूछुधात्रिषाकैं
रहिलिये ॥ सीततपतिकूंजाइ ॥ कंदूसबबंधूटेदेहगुण ॥ सत
गुरकहिसमझाइ ॥२२॥ मांहांथीमनकाढिकरि लेराषैनि
जठौर ॥ दादूभूलेदेहगुण ॥ बिसरिजाइसबऔर ॥२३॥ नां
वनुधावैदेहगुण ॥ जीवदसासबजाइ ॥ दादूछाडैनांवकूं ॥
तोफिरिलागैआइ ॥२४॥ दादूदिननदिनरातारांमसूं ॥ दिन
दिनअधिकसनेह ॥ दिनदिनपीवैरांमरस ॥ दिनदिनदरपं

न देह ॥२५॥ दादू दिन दिन नूं लैरे ह गुण ॥ दिन दिन छूटी
नास ॥ दिन दिन मन मन सामैरे ॥ दिन दिन होइ प्रकास ॥२
६॥ देह रहै संसार मैं ॥ जीव राम के पास ॥ दादू कछू न व्यापै न
ही ॥ काल झाल दुख त्रास ॥२७॥ काया की संगति तजै ॥ बैठा ह
रि पद मांहि ॥ दादू निरभै ह्वै रहै ॥ कोई गुण व्यापै नांहिं ॥
२८॥ काया मांहै भै घणा ॥ सब गुण व्यापै आइ ॥ दादू निर
भै घर कीया रहै नूर मैं जाइ ॥२९॥ षड गधार बिषतां मैरे
कोई गुण व्यापै नांहिं ॥ राम रहै तूं जन रहै ॥ काल झाल जं
ल मांहि ॥३०॥ सहज बिचार सुष मैं रहै ॥ दादू बडा बमेक
मन इंद्री पसरै नहीं ॥ अंतरि राषै एक ॥ मन इंद्री पसरै नही

क्र दनि सपेकै धांन ॥ प्रउपगारि द्रांपियां ॥ दोहू उतिम ज्ञांन ॥
॥१॥ दोहू आपा पारषे उरक्रिया ॥ दीसै सब संसार ॥ आपा सुरकें
सुरक्रिया ॥ यह गुर ज्ञांन बिचार ॥२॥ दोह मैं नां ही तब नां
उक्या ॥ कहा कहावे आपे ॥ साधो कहो बिचारि करि मेटकुं
तेन की ताप ॥३॥ जब समझ्या तब सुरक्रिया ॥ उनहि सें
मो नां सोइ ॥ कछू कहावे जब लोगो ॥ तब लग समझ न होइ
॥४॥ तब समझ्या तब सुरक्रिया ॥ गुरमुष ध्यान अलेष ॥ नर
धकपूजे मैं आरसी ॥ फिरि करि आपा देष ॥५॥ प्रेम लगाति
दिन दिन बधे ॥ सोई ज्ञांन बिचार दोह आत्म सोधि करि
मथि करि काढ्या सार ॥६॥ दोह जिहिं करिया पंक सब अ

छन्नया ॥ सो कछु करौ बिचार ॥ काजा ये नित बाद्रे कयां लिषि
बे धेन्नार ॥ ४७ ॥ दोहा जब यह मन नहीं मन मिल्यो ॥ तब कछु
पाया जेठ ॥ दोहा लेकरि लाई ये ॥ का पठि मरि पैबेद ॥ ४८ ॥ पा
व क पारी पारी पाव क ॥ जो पौन नहीं आजाणी ॥ आदि अंत निबि
चार करि ॥ दोहा जो गासु जाण ॥ ४९ ॥ सुष मांहै दुष ऋतु है दु
ष मांहै सुष होइ ॥ दोहा दे षि बिचार करि ॥ आदि अंत फल दे
ह ॥ ५० ॥ मांग षारा षारा मांगा ॥ जो पौन नहीं गंवार ॥ आदि अं
त गुरा देषि करि ॥ दोहा कीया बिचार ॥ ५१ ॥ कोमल कै विनं दे
कोमल मुरि बमरमन बूझे ॥ आदि अंत बिचार करि ॥ दोहा
सब कछु कमर कै ॥ ५२ ॥ पंच सी ग्रंथ गाथ बिचार करि ॥ पीछै पाग
कवित

दीजे । आदि अंति गुण देषि करि । दादू कछू कीजे ॥५३॥ पह
ली प्राण बिचारि करि । पीछे चलिये साथि । आदि अंति गु
ण देषि करि । दादू घाली हाथ ॥५४॥ पहली प्राण बिचार
करि । पीछे कछू कहिये । आदि अंति गुण देषि करि । दा
दू निकसा कहिये ॥५५॥ पहली प्राण बिचारि करि । पीछे आ
वै जाइ । आदि अंति गुण देषि करि । दादू रहै समाइ ॥५६॥
जे मति पीछे ऊपजे । सो मति पहली होइ । कबहू न होवै जी
व दुषी । दादू सुषिया सोइ ॥५७॥ आदि अंति गाहन की
या । माया ब्रह्म बिचार । जहां का तहां ले देधरया । दादू देत
न बार ॥५८॥ इति बिचार कौ अंग समपूरण ॥ अंग ॥१५

साषी ॥ १८ पद्य ॥ अथ बेसास का अंग मो ध्या ॥ दादू नमो
नमो निरंजनं । नमसकार गुरदेवतः । बंदनं सब साधवा ॥ प्र
णामं पारंगत ॥१॥ दादू सहजैं सहजैं होइगा ॥ जे कुछ रचिया
राम ॥ काहे कूं कलपै मरै । दुषी होत बेकाम ॥२॥ साईं की
या सुधि करै रह्या ॥ जे कुछ करै सु होइ ॥ करता करै सु होत है ॥
काहे कलपै कोइ ॥३॥ दादू कहै जे तैं कीया सुधि करै रह्या ॥ जे
तूं करै सु होइ ॥ करणं करावन ऐक तूं ॥ दूजा नांहीं कोइ ॥४॥
दादू साईं हमारा साईंयां जे सब का पूरणहार ॥ दादू जावे
णमरणा का ॥ जाके हाथि बिचार ॥५॥ दादू जन मन जन बनपा
तालि मधि ॥ ज्ञाति केति मन का नि प्रु ॥ सिर तिस संबंनि कोद

तहै ॥ सोई हं मारा हरष ॥६॥ दादू करनहार करता पुरि ॥ हम
कूं कैसी चींत ॥ सब काहू की करत है सो दादू का मीत ॥७॥ दा
दू मनसा बाचा क्रमना ॥ साहिब का बेसास ॥ सेवग सिरजन
हार का ॥ करै कवण की आस ॥८॥ सुर मनस्ब विजी व कूं
क्रेगाकीया सब होइ ॥ दादू मारग मिहर का बिरला बूझै कोइ
॥९॥ दादू उदिम औगुण को नहीं जे करि जाणै कोइ ॥ उदि
म मैं आनंद है जे साईं सेती होइ ॥१०॥ पूरण हारा पूरिसी जो
ति रहसी ठाम ॥ अंतरि थैं उमगिसी सकल निरंतरि नाम ॥
॥११॥ पूरिक पूरा पासि है ॥ नां हीं दूरि गंवार ॥ सब जांणत है बा
वरै ॥ देबे कूं हुसियार ॥१२॥ दादू चिंता राम कूं समर्थ सब जा

रोें॥ दादूरांमसंभालिले॥ चिंताजिनकछूओरौ॥१३॥ दादूचिं
ताकीयांकछूहूनहीं॥ चिंताजीवकूंषाइ॥ हूंणाथासोह्वैर
ह्या॥ जोंहोंणाहैसोजाइ॥१४॥ दादूजिनिपहूंचायाप्राणकौं
उदरउरधमुषषीर॥ जठरअगनिमेंराषिया॥ कोमलकाया
सरीर॥ सोसमरथसंगीसंगिरहै॥ बिकटघाटघटभीर॥ सोसांईं
सूंगहगहीं॥ जिनिभूलेमनबीर॥१५॥ गोबिंदकेगुणचींतिक
रि॥ नैंननैंबैंनपगसीस॥ जिंनिमुषदीयाकांनकरि॥ प्राणनाथजग
दीस॥ ततनमनसौंजसंवारिसब॥ राषेबिसवाबीस॥ सोसाहि
बसुमरेनहीं॥ दादूआनिंहदीस॥१६॥ दादूसोसाहिबजिनि
बीसरै॥ जिंनघटदीयाजीव॥ गरभवासमेंराषिया॥ पावैपोषै

पाव॥१७॥ दादू राजिक रिजक लीयें षडा॥ देवै हांथौं हाथि॥ पू
रिक पूरा पासि है॥ सदा हमारे साथि॥१८॥ हिरदै रांम संभालि
ले मन राषे वेसास॥ दादू समरथ सांईयां॥ सब की पूरै आस॥१
९॥ दादू सांई सबनि कूं॥ सेवग ह्वै सुष देइ॥ अया मूढ मति जी
व की॥ तौ भी नांउं न लेइ॥२०॥ दादू सिरजनहारा सबनि कां
ऐसा है समरथ॥ सोई सेवग ह्वै रह्या॥ जहां सकल पसारैं हथ
॥२१॥ धनि धनि साहिब तूं बडा॥ कौंन अनूपम रीति॥ सक
ल लोक सिरि सांईयां॥ ह्वै करि रह्या अतीत॥२२॥ दादू ब
लिहारी सुरति की॥ सब की करै संभाल॥ कीडी कुंजर पल
क मै॥ करता है प्रतिपाल॥२३॥ दादू छाजन भोजन सहज

मैं। सांईयां देह मुलेह। तोथें अधिका और कंत। सो तूं कांइं क
रेह ॥२४॥ दादू का सहज का संतोषी जे न षाइ। मृतक जो
जे न गुरमुषी। कां हे कलपै जाइ ॥२५॥ दादू नांउं काटे हका
ते ता सहज बिचार। जेता हरि बिचि अंतरा। ते ता सबै निवारि
॥२६॥ दादू जल दल रांम का। हंम लेवैं प्रसाद। संसार का संम
कै नहीं। अबगति नाव अगाध ॥२७॥ परमेस्वर के नाव का
ये कक कौं का षाइ। दादू जेता पाप था। नमें कर्म सब जाइ
॥२८॥ दादू कवंन पका वै कवंन पीसै। जहां तहां सीधा ही दी
सै ॥२९॥ दादू जे कछु [illegible] सहकी। होवै गा सोई पचि पचि
चि कोई किति मरै। सुमिरा तो नो कोई ॥३०॥ दादू कुटि छुद्धा

हकहांकोनांहीं॥ फिरिहूंप्रिथीसारी॥ हजीदहंसोंहरिकरि
बौरे॥ साधसबदबिचारी॥११॥ दादूबिनांरामकहींकोनां
हीं॥ फिरिहूंदेसबदेसा॥ हजीदहंसोंहरिकरिबौरे॥ सुणियं
हूसाधसंदेसा॥१२॥ दादूसिरटकसबुरीसाचगहि॥ साब
तिराषिमनकींन॥ साहिबसूंदिललाइरहू॥ मुरदाह्वैमसकी
न॥१३॥ दादूतैंतणाबंछ्यापापूकाघातहै॥ मरमंहिंलागामन
नांवंनिरंजनलेतहै॥ यूंनिरमलमनसाधजन॥१४॥ तैंतणा
बंछ्याआगेपडै॥ पीछैलेदंतगाइ॥ दादूकेसिरिदोसयूं॥
जेकुछरांमरजाइ॥१५॥ तैंतणाबंछ्याआगेपडै॥ विस्याबि
चारिरषाइ॥ दादूफिरैतबोडतनां॥ तरवरतणाकिनजाइ॥१६

मींठेकासबमींठालागे॥ज्योंवैलीविषभरिदेहइ॥दादूकडुवानां
कहै॥अंम्रततकरिकरिलेहइ॥४७॥विषकाअंम्रतनांवधरिनांने
सं॥कायाकसौटीदेष॥रामबिनांकिमकेसका॥दादूसं
पतिसुष॥४८॥दादूएकबिसासबिन॥जीवराफांवांफोले
बिकटनिविडषपाईरी॥चंतामणीअंमोल॥४९॥दादू
बिनबेसासीजीयरा॥चंचलनांहीठोर॥निहचेनिहचलना
नारहे॥कछुओररकीओर॥५०॥दादूहूंरांणीथासोछेहैरमा
जिनिबांछेसुषदुष॥सुषमांगेदुषआइहसा॥पैपीवनबिसा
रीमुष॥५१॥दादूहूंरांणीथासोकेरहमा॥फागनबाछीयाइ
नरककेकरेंपीनांफारी॥कवासुकैसीमाइ॥५२॥दादू

कुगांथासोछेरह्या।जेकुछकीयापीव।पलबंधैनछिन
घटै।औसीजांपीजीव॥५३॥दादूकुगांथासोछेरह्या
औरंनहोवैकूं।फ़।लेगांथासोलेरहे।औरनलीयाजाइ
॥५४॥जूरांचियातूंहोइगा।काहेकूंसिरिलेइ।सादि
बकपरिराषियेदूषितमांसापेह॥५५॥जूजंरोतेंतूराषियेो
उकंसिरिहांलीराइ।हजाकोदेषैंनहीं।दादूअंनतनजाइ
॥५६॥जूंउनकूमोवेतूंपुसी।हमराजोउसबात।दादूकेदि
लसिरकसूं।जावैदिनकोराति॥५७॥दादूकरंनहारजेकु
छकीया।सोबुरानकरहगांजोइ।साईसेवेंसंतजन।रहिबा
रांमरजाइ॥५८॥दादूकरंनहारजेकुछकीया।साईकिंक

रिजांणि । जेहूं चतुरसंयांनें जांनराइ । तोयांही प्रवांणि ॥
४९ ॥ दादू करता हम नहीं । करता औरे कोइ ॥ करता है
सो करैगा । तूं जिन करता होइ ॥ ५० ॥ कासी तजि मगह
र गया ॥ कबीर भरोसैं राम ॥ सौ वेही सांईं मिल्या दादू पूरे का
म ॥ ५१ ॥ दादू रोजी रांम है राजिक रिजक हमार । दादू उ
स प्रसाद सूं । पोष्या सब परिवार ॥ ५२ ॥ पंच संतोषे एक सूं
मन मतिवाला मांहि । दादू भागी भूष सब । दूजा नाहीं मां
हि ॥ ५३ ॥ एक सेर का ठांमडा ॥ क्यूं ही भर्‍या न जाइ ॥ भूष
न भागी जीव की ॥ दादू केता षाइ ॥ ५४ ॥ दादू साहिब मेरे
कपडे ॥ साहिब मेरा षांण ॥ साहिब सिर का ताज है ॥ साहि

बण्या संपरांन ॥५५॥ साईं सत संतोष दे भाव भगति बेसास
सिदक सबूरी सांच दे मांगै दादू दास ॥५६॥ इति बेसास को
अंग संपूर्ण ॥ अंग ॥ १९ ॥ साषी ॥ ९९० ॥ अथ पीव पिछांण
को अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेवतः बंद
नं सर्व साधवा प्रणामं पारंगतः ॥१॥ सारों के सिरि देषिये
उस परि कोई नांहि ॥ दादू ज्ञान बिचार करि सो राष्या मन
मांहि ॥२॥ सब लालों सिरि लाल है सब षूबों सिरि षूब स
ब पाकों सिरि पाक है दादू का महबूब ॥३॥ प्रब्रह्मं परापं
सो मम देव निरंजनं ॥ निराकारं निर्मलं तस्य दादू वंदनं
॥४॥ पेकत न ताजा यरि हन्तो ॥ नीति नितो कबहूं मंना ध

रती गगंन पवंन अरु पांणी ॥ सपत दीप नव खंड मेरा ॥ चंद सूर च
वरासी लष दिंन अरु रैंणी ॥ रचि लै सप्त समंद्रा ॥ सवा लाख
मेर पर्वत ॥ अठार हभार तीर्थ ब्रत ता कीया रिमैंना ॥ चवद
दह लोक रहै सब रचनां ॥ दादू दास तास घरि वंदा ॥ ५ ॥ दादू
जिनि यहु एता करि धरी ॥ थंभ बिन राषी सोइ ॥ हम कूं कूंणबी
सरै ॥ संत जन साषी ॥ ६ ॥ दादू जिनि प्रांण पिंड हम कूं दीया
अंतरि सेवैं ताहि ॥ जे आवै औसांण सिरि ॥ सोई नांव संभा
हि ॥ ७ ॥ दादू जिनि मुझ कौं पैदा कीया ॥ मेरा साहिब सोइ ॥
मैं बंदा उस रांम का ॥ जिनि सिरज्या सब कोइ ॥ ८ ॥ दादू एक
सगा संसार मैं ॥ जिनि हंम सिरजे सोइ ॥ मनसा बाचा क्रमनां ॥

और न दूजा कोइ ॥९॥ जे था कंत कबीर का ॥ सो ईश्वर ब
रि हूं ॥ मन माथा चा कूं मूं नां ॥ मै और न करि हूं ॥१०॥ दा
दू सब का साहिब एक है जाका प्रगट नांव ॥ दादू सांई सो
धि लेना ताकी मैं बलि जांव ॥११॥ साचा सांई सोधि करि ॥ साचा
राखी भाव ॥ दादू साचा नांव ले ॥ साचे मारगि आव ॥१२॥ सा
चा सतगुर सोधि ले ॥ साचे लीजी साध ॥ साचा साहिब सोधि क
रि ॥ दादू भगति अगाध ॥१३॥ जामैं मरै सु जीव है ॥ रमता रा
म न होइ ॥ जामण मरण थैं रहित है ॥ मेरा साहिब सोइ ॥१४
ऊठै न बैसै एक रस ॥ जागै सोवै नांहि ॥ मरै न जीवै जगत
गुर ॥ मन ब उपजि बिनसै नांहि ॥१५॥ नां वह जामै नां मरै ॥ नां

आवै गत न त्रास ॥ दादू कंधे मु षन हीं नूर कंकुं मद समास ॥
१६ ॥ कित्रम नहीं सो ब्रह्म है ॥ घटै बधै न कीं जाइ ॥ पूरण नि-
हचल एक रस ॥ जगत न नांचै आइ ॥ १७ ॥ उपजै बिनसै
गुण धरै ॥ यहु माया का रूप ॥ दादू देषत थिर नहीं ॥ षिण छां-
हां षिण धूप ॥ १८ ॥ जे नां हीं सो उपजे ॥ है सो उपजै नांहिं
अलष आदि अनादि है ॥ उपजै माया मांहिं ॥ १९ ॥ जे यहु
करता जीव था ॥ संकुटि क्यों आया ॥ कर्मों के बसि क्यों भया
क्यों आप बंधाया ॥ क्यों सब जोनी जगत मैं ॥ घर बारि नचा-
या ॥ क्यों यहु करता जीव है ॥ पर हाथि बिकाया ॥ २० ॥ दादू
क्रितम काल बसि ॥ बंध्या गुण मांही ॥ उपजै बिनसै देषतां ॥

यकुकंतीमांही ॥२१॥ जातीनूरअल्लाहका। सफातीअरवा
ह। सफातीसिजदाकरै। जातीबेपरवाह ॥२२॥ दादूथंभथंभनि
अनोनया। हकंलमपैकेनूर। जहूथातूंदीतेजहै। जोतिरही
भरपूरि ॥२३॥ निरसंधनूरअपारहै तेजपुंजसबमांहिं। दा
दूजोतिअनंतहै। आगोपीछोमांहिं ॥२४॥ वारपारनहींनू
रका। दादूतेजअनंत। कीमतिनहीकरतारकी। ऐसाहैभ
गवंत ॥२५॥ परमतेजप्रकासहै। परमनूरनिवास। परमजोति
आनंदमें। हंसादादूदास ॥२६॥ परमतेजपापंपरमजोतिप्र
मसुरं। सुपंबब्रह्मसहूईसदा। दादूअविचलअसथिरं ॥२७
आदिअंतिआगोरहै। येकअनूपमदेव। अविनासीआ

परंपरा ॥ वार पार नहीं छेव ॥ सो तूं दादू देषि ले ॥ उरि अंतरि क
रि सेव ॥ २८ ॥ अबिनासी साहिब सति है ॥ जे उपजै बिनसै नांहि
जेता कहिये काल मुष ॥ सो साहिब किस मांहि ॥ २९ ॥ सांई
मेरा सति है ॥ निरंजन निराकार ॥ दादू बिनसै देषतां ॥ झूठा
सब आकार ॥ ३० ॥ रांम रटंण छाडै नहीं ॥ हरि लै लागा जा
इ ॥ बीचै ही अटकै नहीं ॥ कला कोटि दिषलाइ ॥ ३१ ॥ उ
रै ही अटकै नहीं ॥ जहां रांम तहां जाइ ॥ दादू पावै प्रेम सुष
बिलसै वस्तु अघाइ ॥ ३२ ॥ दादू उरै ही उरझे घणें ॥ मूए गा
ल्हे पास ॥ ऐंन अंग जहां आप था ॥ तहां गए निज दास
॥ ३३ ॥ सेवा का सुष प्रेम रस ॥ सेज सुहाग न देइ ॥ दादू बा

देवा सकं कदेह जा सब लेह ॥२४॥ पर पुरिषा सब परहरै सु
दरि देषै जागि ॥ अपणां पीव पिछांणिं करि ॥ दादू रहिये ला
गि ॥२५॥ आंन पुरिष हूं बहंनडी ॥ पर पुरिष भरतार ॥ हूं
अबला समझूं नहीं ॥ तूं जांणैं करतार ॥२६॥ दादू मांही
किलि रह्या ॥ छिंन छिंन काई धाह ॥ दादू पारस रांम बिन ॥ क
त हूं गया बिलाइ ॥२७॥ दादू पारस परसि करि ॥ पलटै अ
पणां आप ॥ दादू कंचन ह्वै रहै ॥ अपणै सांई संगि ॥२८॥ जि
हिं परसें पलटै प्रांणियां ॥ सोई निज कर लेह ॥ दादू कंचन
ह्वै गया ॥ पारस का गुण येह ॥२९॥ आपा नांही बल मिटै ॥ त्रि
विधि तिमर नहीं हार ॥ दादू [illegible] का ॥ सुंनि समा

नो सोइ ॥४०॥ माया का गुण बल करै ॥ आपा उपजै आइ
राजस तामस सातगी ॥ मन चंचल ह्वै जाइ ॥४१॥ ह्वै ह्वै दि
फिरै सु मन है । आवै जाइ सु पवन । राम नाम हौ रा प्राण है
देंषण हारा ब्रह्म ॥४२॥ इति पीव पिछांणि को अंग ॥ १९
लीं अंग॥॥२०॥ साषी॥१५ पश॥ अथ समरथाई को अंग॥
दादू नमो नमो निरंजनं । नमसकार गुरदेवतः । बंदनं सर्व सा
धवा ॥ प्रणामं पारंगतः ॥१॥ दादू करता करै तो निमष मैं । की
डी कुंजर होइ । कुंजर थैं कीडी करै ॥ मेटि न सकै कोइ ॥२॥
दादू करता करै तो निमष मैं ॥ राई मेर समान ॥ मेर कूं राई क
रै तौ को मेटै फुरमान ॥३॥ दादू करता करै तो निमष मैं । ज

लमांहिं थल थाप ॥ थल मांहैं जल हर करै ॥ ऐसा समरथ आ
प ॥४॥ दादू करता करै तो निमष मैं ॥ गाली जरै जे मार ॥ जरिया
गहि गाली करै ॥ ऐसा सिरजनहार ॥५॥ दादू धरती कूं अंब
र करै ॥ अंबर धरती होइ ॥ निस अंधियारी दिन करै ॥ दिन
कौं रजनी सोइ ॥६॥ हलक काठि मैं सो गथैं ॥ कक कवंणाच
लावै ॥ अनंत गति गति नहीं जांणिये ॥ जगि अंगणि दिषावै ॥७॥
दादू गुप्त गुण प्रगट करै ॥ प्रगट गुप्त समाइ ॥ पलक मांहिं भं
जैं घडै ॥ ताकी लषी न जा ॥८॥ सोई सही सबति हुवा ॥ जाम
सतकि कर देह ॥ गरीब निवाजै देषतां ॥ हरि अपणो करि ले
ह ॥९॥ दादू सबही मारग मांहिं यां ॥ आगे एक मुकांम ॥ सोई

सेनमुषककरिलीया॥ जाहीसेतीकांम॥१०॥ मेरांमेराभि
हरिकरि॥ सिरपरिदीयाहाथ॥ दादूकलिजुगकाकरै॥ सां
ई मेरासाथ॥११॥ दादूसंमथसबबिधिसांईयां॥ ताकीमेंब
लिजांउं॥ अंतरिऐकसुसोबसै॥ औरांचितनलांउं॥ दादू
मारगमिहरिका॥ सुषीसहजसोंजाइ॥ भोसागरथैंकाढि
करि॥ अपणैंलीयेबुलाइ॥१२॥ दादूजेहंमाचितवैं॥ सोक
छूनहोवैआइ॥ सोईकरतामतिहै॥ कछूऔरकरिना
इ॥१३॥ ऐकोलेइबुलाइकरि॥ ऐकोंदेइपगाइ॥ दादूअ
द्भुतसाहिबी॥ क्यूंहीलषीनजाइ॥१४॥ ज्यूंराषेत्यूंरहे
गे॥ अपणैंबलिनांहीं॥ सबैतुम्हारैहाथिहैं॥ भाजिकतैं

जांहीं ॥१५॥ दादू मोती हरि के हाथि है ॥ गलि मांहीं मेरे ॥ बा
जीगर का बांदरा ॥ नावै तहां फेरे ॥१६॥ जूं राखै त्यूं रहै ॥
मेरा क्या सारा ॥ हुकमी सेवग राम का ॥ बंदा बेचारा ॥१७॥ सा
हिब राखै तौ रहै ॥ काया मांहैं जीव ॥ हुकमी बंदा उठि चलै
तब ही बुलावै पीव ॥१८॥ पंथ पंथ प्रकास है ॥ जहां तहां
भरपूरि ॥ दादू करता करि रह्या ॥ अनहद बाजै तूर ॥२०॥
दादू दादू कहत है ॥ आपै सब घट मांहि ॥ अपणी रुचि
आपै कहै ॥ दादू थैं कुछ नांहि ॥२१॥ हम थैं हुवा न हो
इगा ॥ ना हम करणे जोग ॥ ज्यूं हरि भावै त्यूं करै ॥ दादू क
है सब लोग ॥२२॥ दादू जाकौं कहै ॥ सिरि परि साहिब बपै

क ॥ सो हंम कूं कूं बीसरै ॥ जे तुम जांहि अनेक ॥२३॥ आप
अकेला सब करै ॥ औरों के सिरि देइ ॥ दादू सोभा दास कूं
अपणा नांव न लेइ ॥२४॥ आप अकेला सब करै ॥ घट
मैं लहरि उठाइ ॥ दादू सिरि दे जीव के ॥ यौं न्यारा ह्वै जाइ ॥
२५॥ जूं एक समझै तूं कहै ॥ एक जीव ब्रह्म अंनी ॥ जे तौ बा
बातें कहा ॥ हरि नि एक न मांनी ॥२६॥ दादू पंच्यां मांगी लै
ग सब ॥ कहै हंम कूं उकठि दिष लाइ ॥ समरथ मेरा सांई
यां ॥ जूं समझै तूं समझै काइ ॥२७॥ दादू तन मन लांइ करि
रि ॥ सेवा दिढ करि लेइ ॥ ऐसा समरथ रांम है ॥ जे मांगै
सो देइ ॥२८॥ [illegible] ॥ करि [illegible] क

रता होइ ॥ घटि घटि ब्यापक पूरि सब ॥ रहै निरंतरि सोइ ॥२९॥
रहै नियारा सब करै ॥ काहू लिपति न होइ ॥ आदि अंति भा
नै घडै ॥ ऐसा समर्थ सोइ ॥३०॥ सुरमनहीं सब कछु करै ॥ ये
कलि धरा बणाइ ॥ कोतिगहारा के रह्या ॥ सब कछु होता जाइ
॥३१॥ लिपै छिपै नहीं सब करै ॥ गुण नहीं ब्यापै कोइ ॥ दादू
निहचल एकरस सहजैं सब कछु होइ ॥३२॥ बिन गुण
ब्यापै सब कीया ॥ संमरथ आपै आप ॥ निराकार न्यारा रहै
दादू पुंनि न पाप ॥३३॥ समिता के घरि सहजि मैं ॥ दादू दुबि
धा नाहिं ॥ सांई समरथ सब कीया ॥ संमझि देषि मन माहिं
॥३४॥ पैदा कीया घाट घडि ॥ आपै आप उपाइ ॥ हिकमति

हूं नरककारी मारी । ताहू न षीन जाइ ॥३५॥ जे न बजाया साजि
करि । करी मरककरतार ॥ पंचों कारम नाद है । ताहू बोलैं नहा
र ॥३६॥ पंच तत्त पनां सब तूं थैं ॥ सब तत्त पंच सूं होइ ॥ सांई मेरे
सब कीया ॥ बूझै बिरला कोइ ॥३७॥ हे तौ रती नहीं तौ नां हिं
सब कछ उतपति होइ ॥ ऊकमें ताऊरि सब कीया ॥ बूझै बि
रला कोइ ॥३८॥ नहीं तहां थैं सब कीया ॥ आपै आप उपाइ
निजतत न्यारा नां कीया ॥ दूजा आवै जाइ ॥३९॥ नहीं त
हां थैं सब कीया ॥ फिरि नांही कै जाइ ॥ ताइ नांहां होइ रहै
षेले साहिब सं ल्यो लाइ ॥४०॥ या जिकं षेत न करि ॥ बूझै बरला
कोइ ॥ जे करि सुमिरां नां नग्या ॥ ते करि सुमिरया होइ ॥४१॥ ते

बेकी सब जम घेहे ले बेकी कुंछ नांहिं ॥ सांई मेरे सब कीया ॥ सम
झि देषि मन मांहिं ॥ ५२ ॥ दादू जे साहिब सिरजे नहीं तौ आप
कूं करि होइ ॥ जे आपैं ही ऊपजे तौ मरि करि जीवै कोइ
॥ ५३ ॥ करंम फिरावै जीव कूं ॥ क्रमौं कों करतार ॥ करतार
कूं कोनहीं ॥ दादू फेरणहार ॥ ५४ ॥ इति समरथाई का अं
ग संपूर्ण ॥ अंग ॥ २१ ॥ साषी ॥ [illegible] ॥ अथ सबद का अंग
॥ दादू नमो नमो निरंजनं ॥ नमसकार गुरदेवतः ॥ बंदनं सरब सा
धवा ॥ प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥ दादू सबदैं बंध्या सब रहै ॥ सबदैं
ही सब जाइ ॥ सबदैं ही सब ऊपजै ॥ सबदैं सबै समाइ ॥ २ ॥
दादू सबदैं ही सुधा पाइये ॥ सबदैं ही संतोष ॥ सबदैं ही अस

थिरन्रया ॥ सबदैंन्रागासोक ॥ ३ ॥ दोहा सबदैंहीं संषिंमन्रया

सबदैंसहजसंमान ॥ सबदैंही निगुणमिलै ॥ सबदैंनिरम

लज्ञान ॥ ४ ॥ दोहा सबदैंही मुकतान्रया ॥ सबदैंसंमकेंपु

ण ॥ सबदैंही सूकें सबै ॥ सबदैं सुरकें जोगि ॥ ५ ॥ दोहा वोंकं

कारथैंउपजे ॥ अरसप्रसंजोग ॥ अंकुरबीजथैंपापपु

नि ॥ इहिबिधिजेपारन्रोग ॥ ६ ॥ वोंकेंकारथैंकंपजे ॥ बि

नसेबकृतबिकार ॥ मावंन्रगतिसैथिररहै ॥ दोहा आत्मसा

र ॥ ७ ॥ दहस्नीकीयाआपथैं ॥ उतपतिकेंकार ॥ कें कारथैंउ

पजे ॥ पंचततआकार ॥ पंचूततथैंघटन्रया ॥ बहुबिधिसत

बिसतार ॥ [illegible] ॥ [illegible] बिचार ॥ ८ ॥ [illegible]

सबदसबकछुकीया ॥ ऐसासमरथसोइ ॥ आगैपीछैतौक
रै ॥ जेबलिहीणाहोइ ॥९॥ निरंजननिराकारहै ओंकारआ
कीदादूसबरंगरूपसब ॥ सबबिधिसबबिस्तार ॥१०॥
आदिसबदओंकारहै ॥ बोलैसबघटमांहिं ॥ दादूमा
याबिसतरी ॥ परमततयहनांहिं ॥११॥ पैदाकीयाघाटघ
ड़ि ॥ आपेआपउपाइ ॥ हिकमतिहुनरकारीगरी ॥ दादूल
षीनजाइ ॥१२॥ जंत्रबजायासाजिकरि ॥ कारीगरकरतार
पंचौंकारसनादहै ॥ दादूबोलणहार ॥१३॥ पंचऊपनास
बदतैं ॥ सबदपंचथैंहोइ ॥ सांईमेरेसबकीया ॥ बूझैबिर
लाकोइ ॥१४॥ दादूऐकसबदसैं ऊनवैं ॥ बरसणलागा

गोव्याद ॥ येक सबद सूं बीधै ॥ ब्याप ब्यापक ज्ञाइ ॥१५॥
दादू साध सबद सौं मिलि रहै ॥ मन राषै बिरमाइ
साध सबद बिन क्यूं रहै ॥ जब ही बाष रिज्ञाइ ॥१६॥
दादू सबद जे रै सौं मिलि रहै ॥ ऐकरस एता ॥ क्यूं इ
रव्यौ गौजा चूकै ॥ पणा मांके सूरा ॥१७॥ दादू सबद बिचारि
करि रांकै रै ॥ राम नाम निज हिरदै धरै ॥ काया मैं दि
सौधे सार ॥ दादू कहै तन है सो पार ॥१८॥ दादू का है को ड
पुर चित्रि ॥ जैपै के सो फेकांम ॥ सब रोका रिज्ञा सिध न्याया
तै सुर मनदी जैरांम ॥१९॥ दादू सबद बाण गुर साध के
दूरि दिसंतरि जाइ ॥ जिहिं लागा सो ऊबरै ॥ सूते लीये जगा

गाइ ॥२०॥ दादू रांम हरि रे रस मेलि करि ॥ को साधू सबद सु
णाइ ॥ जो गुरू कि कर दीपक दीया ॥ जमे तिमर सब जाइ
॥२१॥ दादू बांणी प्रेम की ॥ कवल विगासे होइ ॥ साध स
बद माता कहै ॥ तिन सबदौं मोह्या मोहि ॥२२॥ दादू हरि
गुर की बांणी साध की ॥ सो परीयो मेरे सीस ॥ छूटै माया मोह
थैं ॥ प्रेम भजन जगदीस ॥२३॥ दादू सतगुर की रांमदे ॥ सब
द कहै गुर ग्यांन ॥ तिन सबदौं मन मोहिया ॥ उनमन ला
गा ध्यांन ॥२४॥ दादू बांणी ब्रह्म की ॥ अनभै घटि प्रकास
रांम अकेला रहि गया ॥ सबद बिजैं न पास ॥२५॥ साचा
सबद जे ते मिलै ॥ सबद गुरू का ग्यांन ॥ दादू हंस कं लै चल्या

तहां प्रीतम का स्थांन ॥२६॥ दादू हंम कूं सुष भया
साध सबद गुर ग्यांन ॥ सुधि बुधि सोधी समझि करि ॥ पाया प
द निरबांण ॥२७॥ दादू सबद बिचारि करि ॥ लागि रहै म
न लाइ ॥ ग्यांन गहै गुरदेव का ॥ दादू सहजि समाइ ॥२८
॥ दादू दह धूंन रांम रस ॥ मांथि करि काढै कोइ ॥ दादू गुर गों
ब्यंद बिन ॥ घटि घटि समझि न होइ ॥२९॥ सब घट दह घृ
त रांम रस ॥ कोइ साध बिलोवणहार ॥ दादू स्रम तत काढि लै
गुरमुषि गहै बिचार ॥३०॥ घीव दूध मैं रमि रह्या ॥ व्यापक
सब ही ठौर ॥ दादू बकता बहुत है ॥ मथि काढै ते और ॥३
१॥ सब घट मांहैं रांम धंन ॥ ते कोई तेह बिचारि ॥ दादू

सारम ॥ कबहूं न आवै हारि ॥२२॥ दादू संमर
साहन सुरिष रूया ॥ साधनि सबद संभारि ॥ कोई पारिष
पावै प्राति सूं ॥ संमझै सबद बिचार ॥२३॥ सबद सरी
रु सूत न रसौं ॥ हरिजन तनि बेखनीर ॥ दादू पावै प्राति
सूं ॥ तिन कै आषिल सरीर ॥२४॥ सबदौं मांहे रांम रस ॥ सांधू भ
रि दीया ॥ आदि अंति सब संत मिलि यौं दादू पीया ॥२५॥
पाणी मांहें राषिये ॥ कनक कलंक न जाइ ॥ दादू साचा सत
टदै ॥ दादू अगनि मैं बाहि ॥२६॥ कारिज को सीझै नहीं ॥ मीठ
ा बोलैं बीर ॥ दादू साचे सबद बिन ॥ मिटै न तन की पीर ॥ दादू
॥२७॥ सह गुण तजि निरगुण बोलिये ॥ तेता बोल अबोल अज

गुंणगहिआपाबोलिये ॥ तेताकहि देवेउ ॥ ९० ॥ दादू इस
कलि आजसं ॥ ऐसैंकहै नकोइ ॥ दादू महबतिपाईये सा
हिबहामिलहोइ ॥ ९१ ॥ साचासबदकबीरका ॥ मीठा
लागैमोहि ॥ दादू सुणतांपरमसुष ॥ केताआंनंदहोइ ॥ ९२ ॥
॥ इतिसबदकाअंगसंपूर्ण ॥ अंग ॥ १४ ॥ साषी ॥ २०३ ॥
॥ अथजीवतमृतककाअंग ॥ ॥ दादू नमोनमोनिरंजं
नं ॥ नमसकारगुरदेवतः ॥ बंदनंसर्वसाधवा ॥ प्रणामंपा
रंगतः ॥ १ ॥ धरतीमतआकासका ॥ चंदसूरकालेइ
दादू पांणीपवनका ॥ राममतामकहिदेइ ॥ २ ॥ दादू धरतीं
कैरहै ॥ तजिकूडकपटअहंकार ॥ साईकारणिसिरिसहै

ताकोंप्रतषिसिरजंनहार ॥३॥ जीवतमांहीमिलिरहै सांई
संतमुषहोइ ॥ दादूपहलांमरिरहै पीछेतोसबकोइ ॥४॥
आपागरबगुमांनतजि ॥ मदमछरअहंकार ॥ गहैगरीबी
बंदगी ॥ सेवासिरजनहार ॥५॥ मदमछरआपानहीं ॥ कैसा
गरबगुमांन ॥ सुपिनैहीं समझैनहीं ॥ दादूक्याअभिमांन
॥६॥ झूठागरबगुमांनतजि ॥ तजिआपाअभिमांन
दादूदीनगरीबह्वै पायापदनिरबांण ॥७॥ दादूजावज
गतिहींनताअंग ॥ प्रेमप्रीतिसनातिहिंसंग ॥८॥ दादूमिट
रूसबूरीसाचगहि ॥ साबतिराषिअकीन ॥ सांहिबसूंदि
लसाबतकीन ॥९॥ ...बसाहिबकंसिज
...दादूरज ॥ ...

टाकीया। तब सिर धस्या जनारि॥ यौं दादू जीवत मरै॥ सिरसह
वा कौं मारि॥ १०॥ राव रंक सब मरैंगे। जीवै नांही कोइ। सो-
ई कहिये जीवता। जे मरजीवा होइ॥ ११॥ दादू मेरा बैरी मैं मुवा
मुझै न मारै कोइ। मैं ही मुझ कौं मारता। मैं मरजीवा होइ॥
१२॥ दादू आपा जब लगै। तब लग दूजा होइ। जब यहु आ-
पा मिटि गया। तब दूजा नांही कोइ॥ १३॥ बैरी मारे मरि ग-
ये। चित थैं बिसरे नांहि॥ दादू अजहूं साल है। समझि देखि
मन मांहि॥ १४॥ दादू तौ तूं पावै पीव कूं। जे जीवत मृतक होइ।
आप गवांये पीव मिलै। जांनत है सब कोइ॥ १५॥ दादू तौ तूं पा-
वै पीव कूं। आपा कछू न जांणि। आपा जिस थैं ऊपजै। सोई

सहजि पिछांणि ॥१६॥ दादू तौ तूं पावै पीव कूं मैं मेरा सब
खोइ ॥ मैं मेरा सहजै गया ॥ जब निरमल दरसन होइ ॥१
७॥ मैं ही मेरे मोट सिरि ॥ मरिये ताके भार ॥ दादू गुर प्रसाद
थैं सिर थैं धरी उतारि ॥१८॥ मेरे आगे मैं खड़ा ॥ ताथैं रह्या लुका
इ ॥ दादू प्रगट पीव है ॥ जे यहु आपा जाइ ॥१९॥ दादू जीवत
मृतक होइ करि ॥ मारग मांहै आव ॥ पहली सीस उतारि क
रि ॥ पीछै धरिये पाव ॥२०॥ दादू मारग साध का ॥ खरा दुहेला जा
णि ॥ जीवत मृतक ह्वै चलै राम नाम नीसांणि ॥२१॥ दादू मा
रग कठिन है ॥ जीवत चलै न कोइ ॥ सोई चलै है बापुरा ॥ जे
जीवत मृतक होइ ॥२२॥ मृतक होवै सो चलै ॥ निरंजन की

बाट। दादू पावै पीव कूं। लै घेरौ घट घाट ॥२३॥ दादू मन
क जब ही जागि ये। जब गुण इंद्री नांहिं। जब मन आपा मि
टि गया। तब ब्रह्म समाना मांहि ॥२४॥ दादू जीवत ही मरि जा
इये। मरि मांहैं मिलि जाइ। सांई का संग छाडि करि। कौण सम
है उपजाइ ॥२५॥ दादू कोटि यक आपा जाइगा। कोटि य
क बिसरै और। कोटि यक सुषि मरि होइगा। कोटि यक पावै ठौ
र ॥२६॥ दादू आपा कहा दिषाइये। जे कुछ आपा होइ। यक
तो जातो देषिये। रहितो चीन्हौं सोइ ॥२७॥ दादू आपा छिपा
ईये। जहां न देषै कोइ। पीव कूं देषि दिषाईये। त्यूं त्यूं आनं
द होइ ॥२८॥ दादू अंतरि गति निज आपा न दीसा। मुष सूं मेरै ता

इ। दादू दोस न दीजिये। यों मिलि लिये लैं दोइ ॥२९॥ दादू ऐके दू
सा आंमिन की इजी रू सा न जाइ। आपा भूले आंन सब। पे
के रहै संमाइ ॥३०॥ जे जन आपा मेटि करि। रहै राम ल्यौ ला
इ। दादू सब ही देषतां। साहिब सूं मिलि जाइ ॥३१॥ गरीब
गरीबी गहि रह्या। मसकीनी मसकीन। दादू आपा मेटि क
रि। होइ रह्या लैलीन ॥३२॥ मैं हूं मेरा जब लगैं। तब लगा
बिलसे षाइ॥ मैं नाहीं मेरी मिटै। तब दादू निकटि न जाइ
॥३३॥ दादू मन नां मनी सब ले रहे। मैं नां न मेरी जाइ। मन नां
मनी जब मिटि गई। तब ही मिलै खुदाइ ॥३४॥ दादू मैं मैं जा
लि दे। मैं रे आग लगाइ ज्ञाति। मैं मैं मेरा दूरि करि। साहिब के सं

गिलागि ॥ ५ ॥ दादू षोई आपणौं । लज्या कुल की कार
मांनि बडाई पति गई । तब सनमुष सिरजनहार ॥ ६ ॥
दादू मैं नांही तब एक है । मैं आई तब दोइ । मैं तैं पड-
दा मिटि गया । जब ज्यूं था त्यूं ही होइ ॥ ७ ॥ नूर सरी-
दा षा करि लीया । बंदे का बंदा इ इजा को नहीं । षुद षस-
री षांगदा ॥ ८ ॥ दादू सीषू प्रेम न पाइये । सीषूं प्री-
ति न होइ । सीषे दरद न ऊपजै । जब लग आप न-
षोइ ॥ ९ ॥ कहिबा सुणिबा गत भया । आपा पर-
का नास । दादू मैं तैं मिटि गया । पूरण ब्रह्म प्रकास
॥ १० ॥ दादू मन पिंड मांहि रिते । तिन का कीजै त्याग ।

सबतजिरातारांमसं ॥ दादूयकेबेराग ॥४१॥ गुणत्र
तीतसोदरसंनी ॥ आपाधरैउगाह दादूनिरगुणरांम
गहि ॥ फोरीलागाजाइ ॥४२॥ दादूसांईकारंनिमास
का ॥ लोहीपांणींहोइ ॥ सूकेआटाअमतका ॥ दादूपा
वैसोइ ॥४३॥ तनमनमैदापीसिकरि ॥ छांणिंछाणि
लेपालाइ ॥ येंबिनदादूजीवका । कबहूंसालैनजाइ ॥४
४॥ पीसेऊपरिपीसिये ॥ छांणेंऊपरिछाणि ॥ तोआमक
णाजबरै ॥ दादूऐसीजांणि ॥४५॥ पहलीतनमनमारि
ये ॥ इनकामरदैमान ॥ दादूकाटेजंत्रमैं ॥ पाछेसहजि
समान ॥४६॥ काटेऊपरिकाटिये ॥ दाधेंकोंदौलाइ

दादू नीर न सींचिये । तौ तरवर सब जाइ ॥४७॥ दादू सब
के संकट एक दिन । काल गहैगा आइ । जीवत मृत
क ह्वै रहै । ताके निकटि न जाइ ॥४८॥ दादू जीवत मृ
तक ह्वै रहै । सब को बिरकत होइ । । काढौ काढौ सब
कहैं । नांव न लेवै कोइ ॥४९॥ सारा गहिला ह्वै रहै । अं
तरजांमी जांणि । तौ छूटै संसार थैं । रस पीवै सारंगपांणि
गं । गगा गहिला बावरा । सांई कारणि होइ । दादू दिवांनां
होइ रहै । ताकौं लषै न कोइ ॥५०॥ मृतक कौं ठिमै सा
राथैं । कछू कवंण चलावै । अब गलि गति तिनहीं जांणि
यें । जगि आंणि ठिमावै ॥५१॥ जीवत मृतक साधकी । जं

ती का प्रका प्रकास ॥ दादू मोहे रांमजी लीन जे ऐसबदा
स ॥५३॥ दादू जेहूं मोटा मीर है सब जीवों मैं जीव आपा दे
षिन नूं लिषै ॥ घराऊ हे लापीव ॥ आपा मेटि समाइ रहु ॥ दू
जा धंधा बाधि ॥ दादू काहे पचि मरै ॥ सहजैं सु मंगी साधि
॥५४॥ दादू आपा मेटै ऐक रस ॥ मन न्यूं सथिर ह्वै लीन ॥
अ रस प्रसंन्न आंनंद करै ॥ सदा सुषी सो होइ ॥ नंदी तहां थें स
बकाया ॥ फिरि नांही षै जाइ ॥ दादू नांही होइ रहु ॥ साहि
ब सौं ल्यौ लाइ ॥५५॥ दादू है कूं भै घणां नांही कूं कछु नां
हिं ॥ दादू नांही होइ रहु ॥ आपण साहिब मांहिं ॥५६॥ दा
इ मैं नांही तहां मैं गया ॥ एकै दूसर नांहि ॥ नांही कूं ता हार

घरांणी। दादू निजघर मांहि ॥५७॥ जहां रांम तहां मैं नहीं
मैं तहां नांही रांम। दादू महल बारीक है ॥ द्वै कौं नांही ठांम
॥५८॥ बिरह अगिनि का दाग दे ॥ जीवत मृतक गोर ॥ दा
दू पहली घर कीया ॥ आदि अंत मारी गोर ॥५९॥ दादू मोहि मा
रा करि लीया। जीवत करणीं सार ॥ पीछै संसा को नहीं ॥
दादू अगम अपार ॥६०॥ मांटी मांहैं ठौर करि ॥ मांटी मांटी
मांहिं। दादू सम करि राखिये ॥ द्वै पष दुविध्या नांहिं ॥६१॥
॥ इति जीवत मृतक का अंग संपूर्ण ॥ अंग ॥ २३॥ सा
षी ॥ २०९ ॥ ॥ अथ सूरातन का अंग ॥ दादू नमो नमो नि
रंजनं ॥ नमसकार गुरदेवतः ॥ बंदनं सर्व साधवा ॥ प्रणांमं

पारंगत:॥१॥ साचा सिरसौं षेलत है। एक साधू जेनका कौं
म। दादू मरणा आसघै। सोई कहे गारांम॥२॥ रांम क
है ते मरि कहै। जीवत कह्या न जाइ॥ दादू ओ मैं रांम क
है॥ सती सूरमे मिन्नाइ॥३॥ जब दादू मरि बाग है। तब
है गोंकी क्या लाज॥ सती रांम साचा कहै॥ सबत जिप
ति सूं काज॥४॥ दादू हे मकाइ रकड़ बोकरि रहै॥ सूरनि
राला होइ॥ निकसि षडा मैं दान मैं। तो सम ओरन कोइ
॥५॥ षडा न जीवै तो सपीज लै॥ जीवै तो घर आणि॥ जी
वन मरना रांम सूं॥ सोई सती करि जांणि॥६॥ जन मल
गै बिन चारती नाम समतरी कलंक॥ पलक ऐकं सन

मुषजलौ ॥ दादू धोषै अंध क ॥ ७ ॥ स्वांग सती का पहरि क
रि करै कुटंब का सोच ॥ बाहरि सूरा देषिये ॥ दादू जीत
रि पोच ॥ ८ ॥ दादू सती तौ सिरजनहार सूं ॥ जलै विरह
की झाल ॥ नां वह मरै न जलि बुझै ॥ ऐसै संगि दयाल
॥ ९ ॥ दादू जे मुझ होते लष सिर ॥ तो लषे देती वारि ॥ सह
मुझ दीया एक सिर ॥ सोई सौंपे नारि ॥ १० ॥ सती जरै
कोइ लालन नहीं ॥ मूये मडे की लार ॥ यौं जे जलती राम सौं
ताचै संगि भरतार ॥ ११ ॥ मूये मडे सूं हेत क्या ॥ जे जीव की
जांणौ नांहिं ॥ हेत हरी सौं कीजिये ॥ जे अंतरजांमी मांहिं
॥ १२ ॥ सूरा चढि संग्रांम कूं ॥ पाछा पग क्यूं देह ॥ साहि

बलाजेसनजतं ॥ धिराजीवं मिंवाइ तेह ॥१३॥ सेवगस्
रारां मका ॥ सोई कहे गारांम ॥ दादू सरसें न मुमरहें ॥ नहीं
कायर का कांम ॥१४॥ कायर कांमि न आवई ॥ यह सूरे
का षेत ॥ तन मन सौंपे रांम कूं ॥ दादू सीस सहेत ॥१५॥ जे
जन राखें रांम जी चूका ॥ तब लग निरमै सेवा न जाइ
कायामाया मन तजे ॥ जब चौडे रहे बजाइ ॥१६॥ दादू
चौडे मैं आनंद है ॥ नांव धरया रणजीत ॥ साहिब अपणां
करि लीया ॥ अंतरगति की प्रीति ॥१७॥ दादू जे तूं कफ कों
मकरी मसूं ॥ तौ च ऊंचे चढि करि नाच ॥ फूटवांहे सो जा
श्या ॥ निहचै रहसी साच ॥१८॥ रांम कहे गांपेकेको

रांम कहै रे गा रे एक को ॥ जे जीवत मृतक है होइ दादू रहै
हे पाई रां ॥ कोटि मधे कोइ ॥१९॥ सूरा पूरा संत जन
सांई सूं सेवे ॥ दादू साहिब कारणे ॥ अपणा सिर देवे
॥२०॥ सूरा झूझै षेत मैं ॥ सांई सनमुष आइ ॥ सूरे कूं सां
ई मिलै ॥ तब दादू काल न षाइ ॥२१॥ मरिबे कूं पारिषे के
पग करता करै सु होइ दादू साहिब कारनै ॥ ता हूं नाहिं की
मोहि ॥२२॥ दादू आगा न षैं चिये ॥ कहि समझां जैं तो हि
मोहि मेरे सा रांम का बंका बाल न होइ ॥२३॥ बकत
गया थोडा रह्या अब जीव सोच निवारि दादू मरणा
मांडि रहु साहिब के दरबारि ॥२४॥ जीवें का संसा प

डघा॥ कोकाकूं तारे॥ दादू मोई सूरिवां आपण बारे॥२५
॥ जे निकसे मैं साथै॥ साई की दिस धाइ॥ जे कांबक्ष दादू
बाकूं दे॥ तौ पीछे मास्या जाइ॥२६॥ दादू कोई पीछे हे
लौजिन करो॥ आगे हेला आव॥ आगे एक अनूप है
नहीं पीछेका नाव॥२७॥ पीछे कूं पग नां भरै॥ आगे कों
पग देइ॥ दादू यहु मत सूर का॥ अगम ठौर कूं लेइ॥
२८॥ आगा चलि पीछा फिरै॥ ताका मुह मति दीठ॥ दा
दू देवै दोइ दल॥ भागे दे करि पीठि॥२९॥ दादू मरणा
मांडि करि॥ रहै नहीं ल्यो लाइ॥ काइर भाजे जीव ले
आरंन कांनि जाइ॥३०॥ सूरा होइ सु मेर उलंघै॥ सब

गुणां बंधा वै टै ॥ दादू इनि रंगै के रेहै ॥ काहू रति लागा
न छूटै ॥२४॥ आप के सरे का लकूं जरा ॥ बूझ ओ पमा
रग मांहि ॥ केटि मि कोई क अै सा ॥ मरन आसंगि
जाइ ॥२५॥ दादू जब जागे तब मारिये ॥ बैरी जीव के
साथ ॥ मनसा सांपनि काम रिपु ॥ क्रोध महाबलि काल
पंच चोर चितवत रहै ॥ माया मोह बिष झाल ॥ चेतनि
पहरे आपणै ॥ कर गहि षडग संभालि ॥२६॥ काया
कबज कबाण करि ॥ सार सबद करि तीर ॥ दादू इस सं
सार मांहि करि ॥ मारे मोटा मीर ॥२७॥ काया कठिन क
मांण है ॥ षांचै बिरला कोइ ॥ मारै पंच मिरगला ॥ दादू सू

गा साह ॥ ४५ ॥ ऊंच हरि की पकरै हैं नग पारि ॥ तौ कां मक्
व कछुन जो हि कहां ॥ ता हेचलौ नकोधकत नाजै
पूजा टि रहे हरि जहां तहां ॥ ४६ ॥ तब समा हि ब कू सिज
दे कीया ॥ ऊव सिर धस्यो उतारि ॥ यों दाहूजी वृतमरै ॥ हरि
सहैं वांकूं मारि ॥ ४७ ॥ दाहू तन मन कों म करी मके ॥ श्रा
वै तौं ना को ॥ जिसका तिस कों सौं पिये ॥ सोंच क्या जी व का
॥ ४८ ॥ जो सिर सौंप्या राम कूं ॥ सो सिर भया सनाथ ॥ दाहू
दे कूं रंन भया ॥ जिसका तिस के हाथि ॥ ४९ ॥ जिस का है
तिसकूं चढै ॥ दाहू ऊरंन होइ पहली है वे सो भला ॥ पीछै
तौ सब कोइ ॥ ५० ॥ सांई ते रेनां उपरि ॥ सिर जीव करौं क

रषांगा॥ तन मन तन कूं परिवार नैं॥ दादू पंथ परो न
॥४१॥ आपणों सांई कारनैं॥ क्या क्या नहीं कीजे॥ दादू
सब कछु आरें आतम जि आपणां सिर दीजैं॥४२॥ सिर के सा
टै लीजिये॥ साहिब जी का नांउं॥ षेलै सीस उतारि कि
रि॥ दादू मैं बलि जांउं॥४३॥ षेलै सीस उतारि करि
अधर एक सौं जाइ॥ दादू पावै प्रेम रस सुष मैं रहै समा
इ॥४४॥ दादू मरणें थैं तूं मति डरै॥ सब जग मरता जो
इ॥ मिलि करि मरणां राम सूं॥ तौ कलि अजरावर हो
इ॥४५॥ दादू मरणौं थैं तूं मति डरै॥ मरणां आंगिं निदा
नि॥ रे मन मरणां सिरजिया॥ कहि दे केवल राम॥४६

दादू मरणें पैली हूं जे मरै ॥ मरैं न पीछें आइ ॥ रे मन मेरा
रांम कहि बेगा बार न लाइ ॥ ४७ ॥ दादू मरणें पैली हूं मति
रे ॥ मरणां आज कि कालि ॥ मरणां मरणां क्या करै ॥ बे
गा रे मन संभालि ॥ ४८ ॥ दादू मरणां खूब है ॥ निपट बुरा
बिभचार ॥ दादू पति कूं छाडि करि ॥ आंन भजे भरतार
॥ ४९ ॥ दादू तन तैं कहा डराइ ॥ जे बिनसि जाइ पलक
बार ॥ कायर हूं वां न छूटिये ॥ रे मन सोच सियार ॥ ५० ॥ दा
दू मरणां खूब है ॥ मरि मांहे मिलि जाइ ॥ साहिब का संग
छाडि करि ॥ कौण सहै दुख आइ ॥ ५१ ॥ दादू मांहें मन सूं
झूझ करि ॥ ऐसा सूरा बीर ॥ इंद्री आरि दल भांनि सब

गौं कलि झूठा कबीर ॥५३॥ सांई केरे न सा मसेट्यां । तन
मन सकल न सगाहि ॥ दूहइ प्राणा पंच्ह दे । गो हरि मिल्या
कौ बार ॥५४॥ सैबेक सौदा सिरि सटे । सेवग सांई कं
ज । दूहइ जीवनि क्यूं तजे । म्हा जें हरि कूं लाज ॥५५॥ सां
ई का रनि संवृत जे । जन का झे सा मांव । दूहइ रांम छां
डि रा । मोवे तन मन जाव ॥५५॥ दूहइ सेवग सोझला । से
वे तन मन लाह । दूहइ साहिब छाडि करि । का हू संग
गिन जाह ॥५६॥ पति ब्रता पति पावकूं । सेवे छिन छिन हरी
त । दूहइ पति कूं छाडि करि । का हूं संगि न जात ॥५७॥
दूहइ मरि वै वे कहु मार । [illegible] केचु मा रिपा । तौ

ातरि ग्रुमसांम आतम कारिज सारि ॥५७॥ दादू प्यासा पे
मका ॥ तौ जीवणा की क्या आस सरिर के साटै हू ए ॥ तौ ज्ञरि
ज्ञरि पीवै दास ॥५८॥ मन मनसा जीते नहीं ॥ पंच न जी
ते प्राण ॥ दादू रिपु ज्ञाते नहीं ॥ कहै हम मरम सुजांण ॥
६०॥ मन मनसा मारे ॥ [illegible] ॥ नहीं ॥ काया मारंग जांहि ॥
दादू बांबी मारिये ॥ सूप मरै क्यूं मांहि ॥६१॥ दादू पाषरि प
हरि करि ॥ सब कोऊ कंणा जाइ ॥ सूगि ते घोडै सूरिवां ॥ चो
ट मुहें मुहि षाइ ॥६२॥ जब कूफै तब जांणिये ॥ काछिष
ड़ै क्या सोइ ॥ चोट मुहें मुहें षाइ ॥ दादू सूरा सोइ ॥६३
सरा तन न मरै [illegible] सा ॥ मा नमै तन पियार ॥ साहिब के बलि

कृकतो। केतेकी गुमार ॥६४॥ टाहु अबजनगा जीवृना
गेनेही। पेमपातिके सेल ॥ तबजनगापी वृकों पाइहै ये। न
हीबाजीगरका षेल ॥६५॥ टाहु जे तृष्णा सा प्रेम का। तो
किसकसे सेजीव॥ फिरकै साटैली फिरै। जेतृष्णारा
पीव ॥६६॥ टहमहा क्रोध मारा बली॥ सोसब दाहं मारी
मीर॥ सबजन हगा क्या करै। जहां न हो रिसाधीर ॥६
७॥ टाहु हते पहते रामजन॥ तिन ना मोम्याक फ सा
चामु हमोडे नहीं॥ अरथ ऐता ही जूफ ॥६८॥ टाहु
कोध सबलकै॥ निरबाहैगा बोर॥ श्रासंगताजन पर्गो दे
चल्यारा हू फिरं कं तन तोर ॥६९॥ टाहु कहा तन कहा

पतंगका ॥ जउ अब न लागो बार ॥ बलतो हरि बलवंत का
जीवैं जिंदिं आधार ॥७०॥ राघव महाराराम रे ॥ सिरका
परिमरे ॥ दाहके तेपचि गये वैरी बकै तेरे ॥७१॥ दाहब
लिउ तुम्हारे बापजी ॥ गिणत न राणा राव ॥ मारमलि
कपरखं न पति ॥ तुम्ह बिन सब ही बाव ॥७२॥ दाहरा
थी रां मपरि ॥ रूपणीं आपमं बाहिं ॥ कुब्जा कोट देषो नहीं
जंजोरों तू निरबाहि ॥७३॥ तुम्ह बिन मेरे को न हों
हमें कूरा षंगाहार ॥ जे तू राषै सांईंयां ॥ तो कोई न सके
मारि ॥७४॥ सब जग छामे हाथ हैं ॥ तो तुम्ह बिन छा
मोराम ॥ नहीं तुम्ह बाका रि न नगावतसं ॥ अगहीं सेती को

म ॥१५॥ दादू जाते जीव तैं तौ मरौं ॥ जीव मेरा होइ
जिनि यहु जीव उधाइया ॥ सार करैगा सोइ ॥१६॥
दादू जिन पहुँचाया प्रथम ॥ तिन्हूं बंका नांहीं कोइ ॥ सब अ
ग रू गाका करे ॥ रामंना हारा साइं ॥१७॥ दादू साचा सा
हिब सिर ऊपरैं ॥ तती न लागै बाव ॥ चरण कमल की
छाया रहै ॥ किया बहुत पसाव ॥१८॥ दादू कहै जे तूं
राखै सांइयां ॥ तौ मारि न सकै कोइ ॥ बाल न बंका क
रि सकै ॥ जे जग बैरी होइ ॥१९॥ दादू राखणहारा राखै
तिसे कौण मारै ॥ उसे कौंण मबावै ॥ तिसे सांई तारै
कहै ॥ दादू सो कबहूं ना मरै ॥ जे जंन सांई सम नारै ॥

निरजै बैरागी राम जपि॥ कबहूं काल न षाइ॥ जब दादू कें
जरि च्यंटे तत सुन्य तां कुं षिजाइ॥८१॥ काइर कें कर
कोटि मिलि॥ औ कें अरु जागै॥ दादू गरवा गुरमुषी॥ ह
स्ती न सही जागै॥८२॥ इति सूरातन का अंग संपूर्ण
अंग २४॥ साषी॥ २१८२॥ अथ काल का अंग॥ दादू नमो
नमो निरंजनं॥ नमसकार गुरदेवतं॥ बंदनं सब साधवा
प्रणामं पारंगत:॥१॥ काल न सूझै कंध परि॥ मन चितै
वै बहु आस॥ दादू जीव जांणै नहीं कठिन काल की पा
स॥२॥ दादू काल हमारे कंध चढि॥ सदा बजावै तूर॥ का
लहरण करता पुरिष॥ क्यूं न संभालै सूर॥३॥ जहां जे

हां दादू पग धरै तहां काल का फंध ॥ सिर ऊपरि सांधे खड़ा
अजहुं न चेतै अंध ॥४॥ दादू काल गिरासंनि का क
हिए ॥ काल रहित कहि सोइ ॥ काल रहित सुमरंन सदा
बिना गिरासंनि होइ ॥५॥ दादू मरिए राम बिन ॥ जीजे रा
म संभालि ॥ अंमृत पीवै आतमा ॥ यौं साधू बंचै काल ॥
६॥ दादू यहु घट काचा जल भर्‌या ॥ बिनसत नाहीं
बार ॥ यहु घट फूटा जल गया ॥ समझत नहीं गंवार
॥७॥ फूटी काया जाजरी ॥ नव ठाहर काणी ॥ तामैं दा
हू कूर है ॥ जीव सरीखा पाणी ॥८॥ बावरी इस षाल
का ॥ फ [illegible] [illegible] ॥ दादू बिनसै [illegible] ता ॥ तिस का

क्या अभिमांन ॥९॥ दादू हंमतौ मूऐ मांहि हैं जीवं
गा का रूप में ॥ कूडे का क्या गारिबा ॥ पाया मुके मरंम
॥१०॥ यूं कबें न हरि पांटे बिकरि ॥ फूलें [illegible] गै गा
वार ॥ दादू यूं कुमन मंगता ॥ काल अहेडी लारा
११ ॥ सब ही दीसे काल मुष ॥ आपैं [illegible] हि कीं रिदैं कूं ॥ बि
नसै घट आकार का ॥ दादू जे ऊंठें कीं क ॥१२॥ काल
कीटतन काल कं ॥ जु राज न मंकं षाइ ॥ दादू दिन दिं
नज्ञा वकी ॥ आव घटती जाइ ॥१३॥ काल गरासै जी
व कूं ॥ पल पल सासैं सास ॥ पग पग मांहीं दिन घडी ॥
दादू लषैन तास ॥१४॥ पार [illegible] कं कां षि नहीं ॥ सास

सबदक्याहोइ ।। करमुषमांहैमेल्हतां । दादूलेषैन
कोइ ।। १५ ।। दादूकायाकारंवी ।। देषतझीचषिजा
इ ।। जबलगसासमरीरमें रांमनांमलैबोलाइ ।। १६ ।।
दादूकायाकारंवी ।। मोहिजिरेमानांहीं । ब्रासंणाकुंज
रसिरछत्र । बिनसिजांहिंषिणमांहिं ।। १७ ।। दादूका
याकारंवी ।। घंडतनलागैबार ।। बोलंनहारा मदल
मैं ।। सोजीचालनहार ।। १८ ।। दादूकायाकारंवी ।। क
देनचालेसंग ।। कोटिबरमजेजीवंरंगां ।। तमहोइ
लांरंग ।। १९ ।। कहतासुणतादेषतां ।। लेतादेता
प्रांण ।। दादूमोकतहूंगया । मांटीधरीमसांण ।। २०

सींगी नांद न बाजरी॥ कत गये सु जोगी॥ दादू रहते मढी
मैं करते रस भोगी॥२१॥ दादू जीवरा जाइगा॥ पक्क तन
माटी होइ॥ जे उपज्या सो बिनसि है॥ अमर नहीं कलि
कोइ॥२२॥ दादू देही देषतां॥ सब किस ही की जाइ
जब लग सास सरीर मैं॥ गोब्यंद के गुण गाइ॥२३॥ दा
दू देही पांहुणीं॥ हंस बटाऊ मांहि॥ का जाणौं कब चा
लिसी॥ मोहि भरोसा नांहि॥२४॥ दादू सब को पांहुणां
दिवस चारि संसारि॥ औसरि औसरि सब चले॥ हम
भी इहै बिचार॥२५॥ सब को बैठे पंथि सिरि॥ रहे ब
टाऊ होइ॥ जे आये ते जांहिगे॥ इस मारगि सब कोइ

२६॥ बेगि बटाऊ पंथ सिध॥ अब बिलंब न कीजे
दाइ बेग काज करैं॥ राम जपि लीजे॥२७॥ संध्या चले
उतावला॥ बटाऊ बन षंड माहिं॥ बरियां नाहीं ठौ
र की॥ दाइ बेगि घर जांहिं॥२८॥ दाइ करइ पलो गि
करि॥ को चेत निचिंत जाइ॥ मिलि साहि बदि नटेष
तो॥ संक पडे जिन आइ॥२९॥ पंथ उडे लाइ रि घरि॥ सं
ग न साथी कोइ॥ उसमा रगाहे मंजो हिं गो॥ दाइ कंसुध
सोइ॥३०॥ लेघ णाके लक्क घेणां॥ ऊपर चाटू डें॥ भै अ
लापां क्षी पंध मैं॥ बिहंद आहीन॥३१॥ दाइ हसतां रे
वतां पांजणां॥ काइ का फिंनना इ॥ कांनसडो सिरजं

परै ॥ आंवणा हारा आव ॥ १२॥ दादू जौरा बैरी काल है
सो जीव न जाणौं ॥ सब जग सूता नींदडी ॥ इस ताणौं बां
णौं ॥ १३॥ दादू करणीं काल की ॥ सब जग परलै होइ ॥ राम
बिमुष सब मरि गए ॥ चेति न देषै कोइ ॥ १४॥ साहिब कौं
सुमरैं नहीं ॥ बहुत रसावैं भार ॥ दादू करणीं काल की स
ब परलै संसार ॥ १५॥ सूता काल जगाइ करि ॥ सब पैसे
मुष मांहि ॥ दादू अचरिज देषिया ॥ कोई चेतै नांहि ॥ १
६॥ सब जीव बिसांहै काल कूं ॥ करि करि कोटि उपा
इ ॥ १७॥ साहिब कूं समझै नहीं ॥ यौं परलै ह्वै जाइ ॥ १८
दादू कारणि काल कै ॥ सकल संवारै आप ॥ मींच बिसा

हैं मरंणा कों ॥ दाइ सो गम संताप ॥४९॥ दाइ ज्ञ सत ज्ञां मि
करि ॥ विषै हला हल षाइ ॥ जीव विमों हैं काल कूं ॥ मू
ठा मरि मरि जाइ ॥५०॥ निर्मल नांऊं बिसारि करि ॥ दाइ
जीव जे जाल ॥ नहीं तहां लैं करि लीया ॥ मन सों मोहैं का
ल ॥५१॥ सब जग छेली काल कसांई ॥ कर दली ये कें ग
काटै ॥ पंच तत की पंच पंषुरी ॥ षंम षंम करि बांटै ॥५२॥
सब जग सूता नींद भरि ॥ जागै नांहीं कोइ ॥ आगै पीछै
देषिये ॥ प्रत षि प्रलै होइ ॥५३॥ काल फाल मैं जग गज
है ॥ ज्ञांन जिनिक सै कोइ ॥ दाइ सरीर पांच के ॥ अं
मर ज्ञां नै पर वै सोइ ॥५४॥ ये मन नंत हरि हिं मन नामे ॥ अंति

कालकी बार ॥ दादू इन मैं को नहीं ॥ बिपति बंदा वंगा हा
र ॥ ५५ ॥ संगी सजण आपणां ॥ साथी सिरजनहार ॥ दा
दू दूजा को नहीं ॥ इहि कलि इहि संसार ॥ ५६ ॥ जे दिन
बीते चलि गये ॥ ते दिन आये धाइ ॥ राम नाम बिन जीव कूं
काल गरासै जाइ ॥ ५७ ॥ जे उपज्या सो बिनसि है ॥ कोई
थिर न रहाइ ॥ दादू बारी आपणीं जे दीसै सो जाइ ॥ ५८
सब जग मरि मरि जात है ॥ अमर उपावणहार ॥ रहिता र
मिता राम है ॥ बहिता सब संसार ॥ ५९ ॥ दादू कोई थिर
नहीं ॥ यहु सब आवै जाइ ॥ अमर पुरष आपै रहै ॥ कै सा
हिब को लाइ ॥ ६० ॥ यहु जग जाता देखि करि ॥ दादू करी

प्रकार ॥ घडी महूरत चाहतांं ॥ राषै सि रजंनहार ॥५१॥
दादू बिषसुषमांहै षेलतां ॥ काल पकड्या आइ ॥ उपजे
बिनसै देषतां ॥ यहु जग यौंही जाइ ॥५२॥ रांम नांम बि
न जीव जे ॥ केते मुए अकाल ॥ मींच बिंना जे मरत है ॥ तौ
थें दादू माल ॥५३॥ आप सिंघ हकमी रहांं ॥ राक सजूत
प्रेत तिस बंनमें दादू पडे पा ॥ चेतै न हीं अचेत ॥५४॥ मू
त पिता थें बीछुट्या ॥ मूंलि पड्या किं मगोर ॥ मरै न दीः
र फाटि करि दादू बडा कठोर ॥५५॥ ने ठैं न जाइ सु बकि
रिनआवै ॥ आव घटै तन छीजे ॥ अंतिकाल दिन आइ प
हूंता ॥ दादू ढील न कीजे ॥५६॥ दादू औसर चलि गया ॥ बी

रियां गाई बिहार॥ कर छिटकें कहां पाइये॥ जनमञ्जंमो
लिकजाइ॥५८॥ दोहा गापिकनि कै रसोगाहिलाकवा
गंवार॥ सो छिनचीतिनञ्जावई॥५९॥ दोहा कौलनहंमा
रा करगारे॥ छिनछिनपैचलतजाइ॥ श्रजंहजीवजागेन
हो॥ मोवनगाई बिहार॥ सूतांश्रावैसूतांजाइ॥ सूतांपै
हैं सूतांषाइ॥ सूतांलेवैसूतांदेवै॥ दोहा सूतांजाइ॥५९॥
जाइ है पलतहींजया॥ सांमबरणापोसेत॥ तनमनजोबन
सबरणा॥ श्रजसिनहरिसूंहेत॥६०॥ दोहा कूलेकेघरिदे
षिकरि॥ फूलेफूलेजाइ॥ फूलेफूगबोलत॥ रहैमसांणोंना
... करि गया॥ मांटीधरीमसांणि
॥६१॥ दोहा ...

जाणंनहारेदेषिकरि॥ चेतैनहींअजांण॥६१॥ दादूके
ईजाणैकेईजाणिए॥ केईजाणंननजांहिं॥ केईजाणंनकी
करैं॥ दादूजीवणनांहिं॥६२॥ दादूकेईगांडकेईगांमिरि
केईगांमनजांहिं॥ केईगांमगांकाकरैं॥ दादूजी[illegible]नांहिं
॥६३॥ दादूकहैउगिरियांणांजागिजीरअपणांसजंरवां
सेजाणि॥ गाफिलनींदभवांजिपा॥ दादूषरूंतांकांरे
॥६४॥ संमपथकामरणांतजे॥ गहैअंजानकीओट॥ दादूबंदे
वेतकालकी॥ कूंकरिबैचेचोट॥६५॥ अबनाहीके
अमरै॥ अजरावरकीओट॥ दादूमरणांसाचके॥ केटेनवा
गेबोट॥६६॥ मुसेनामपरवाणेउनाउभतरहामोर॥

दादू अगाधपयालमैं ॥ कठिनकालकामोर ॥ ६८ ॥ दादू स
बमुखमांहैंकालके ॥ मांड्यामायाजाल ॥ दादू गोरमसांणामैं
कंधैंअगाधपयाल ॥ ६९ ॥ दादू मड़ामसांणका ॥ केताकरैड
फांणा ॥ मृतककं मुरदागोरका ॥ बहुतकरैअभिमान ॥ राजारा
णारावमैं ॥ मैघोड़ेपिरधांन ॥ मायामोहपसारेऐता ॥ सब
धरधांअसमांन ॥ ७० ॥ पंचतत्तकापूतला ॥ यूंअपंपरसेदा
रा ॥ मंदरमाटीमासका ॥ बिंनसतनहीबारा ॥ हाडचांमका
पंजरा ॥ बिचिबिचिबोलनहारा ॥ दादू तामैंपैसिकरि ॥ बहुकी
यापसारा ॥ ७१ ॥ बहुतपसाराकरिगया ॥ कुछहाथिनआ
या ॥ दादू सरिखी नगातबिंन ॥ पांणीपछितावा ॥ ७२ ॥

॥ माया मजलका बुदबुदा ॥ पांणी का पोटा ॥ दादू का
या कोटमै ॥ मैं वासी मोटा ॥ १७३ ॥ बाहरि गाढ निरजे
करै ॥ जीव के ताईं ॥ दादू मांहै कातरे ॥ सो जांणें नां
हीं ॥ १७४ ॥ दादू साचे मतै साहिब मिलै ॥ कपट मि-
लै गा काल ॥ साचे प्रमपद पाईये ॥ कपट काया मैं सा
ल ॥ १७५ ॥ मन ही मांहै मीचिये ॥ मारौ मैं सिर साल ॥ जे
उं कह्या पै राम बिन ॥ दादू सोई काल ॥ १७६ ॥ दादू जे
ती लहरि बिकार की ॥ काल कवल मैं सोइ ॥ प्रेम ल
हरि सो पीवकी ॥ भिंनि भिंनि यो होइ ॥ १७७ ॥ दादू का
हूं रूप मांहै बसै ॥ कोई न जांणै ताहि ॥ रोकड़ी ताक

रणी काल है ॥ सब काहूं कूं षाइ ॥ ७८ ॥ दादू बिष अंम्रित
त घट मैं बसै दोन्यूं एकै ठांइ ॥ माया बिष बिकार सब
अंम्रित हरि का नांउं ॥ ७९ ॥ दादू कहां सु महंमद मीर
था ॥ सब नबियौं सिरताज ॥ सो भी मरि मांटी हूवा ॥ अम
र अलह का राज ॥ ८० ॥ केते मरि मांटी भये ॥ बहुत ब
डे बलिवंत ॥ दादू केते ह्वै गए ॥ दांनों देव अनंत ॥ ८१ ॥ दा
दू धरती करतै एक डग ॥ दरिया करते फाल ॥ हाकों परब
त फाड़ते ॥ ते भी षाए काल ॥ ८२ ॥ दादू सब जग कंपै का
ल थैं ॥ ब्रह्मा बिष्न महेस ॥ सुर नर मुनिजन लोक सब
स्वर्ग रसातल सेस ॥ ८३ ॥ चंद सूर धर पवन जल ॥ ब्रह्मं

म संमप्रवेस ॥ सो काल न फेरै करतार थें ॥ जैजैजु म्हकुम्हा देस
॥८४॥ पंडे नां पाणी धरती अंबर ॥ बिनसैं रवि ससि ता
रा ॥ पंच तत सब माया बिनसै ॥ मानिष कहां बिचारा
॥८५॥ दादू बिनसैं तेज के मांटी के किम मांहि ॥ अम
र उपावणहार है ॥ दादू जाको ई नांहिं ॥८६॥ प्राण पवन
जं पवन ला ॥ काया करै क मांहि ॥ दादू संब सेसा रमे ॥
कं हीं गया न जाइ ॥८७॥ नूर तेज जं जोति है ॥ प्रा
ण पिंड मयो है रहे ॥ छिपि छिपि मुखि ज्ञावे न दी ॥ जाहिं बके ब
सि मोह ॥८८॥ मन ही मांहै के मरे ॥ जीव मन ही मांहि
साहिब साथी ममत है ॥ दादू इस गाग नांहिं ॥८९॥ आपे

१८४

मारे आपकूं ॥ आप आपकूं षाइ ॥ आपै आपणां काल
है ॥ दादू कहि समकाइ ॥ ६० ॥ आपै मारै आपकूं यहु
जीव बिचारा ॥ साहिब राषणहार है सो तूं हिरदै मा
रा ॥ ६१ ॥ इति काल का अंग संपूर्ण ॥ अंग ॥ २५ ॥ सा
षी ॥ २२० ॥ अथ सजीवनि का अंग ॥ दादू नमो नमो
निरंजनं नमस्कार गुर देवतः ॥ बंदनं सर्ब साधवा ॥ प्रणा
मं पारंगतः ॥ १ ॥ दादू जे तूं जोगी गुरमुषी तो लेणां तत बि
चारि ॥ गहि आयुध गुर ग्यान का काल पुरिस कौं मारि ॥
२ ॥ नाद बिंद सूं घट भरै ॥ सो जोगी जीवै ॥ दादू काहे कूं
मरै राम रस पीवै ॥ ३ ॥ साधू जन की वासना ॥ सबद रहै संस

सार । दादू आतम लै मिलै ॥ अंम्रत पांणी आहार ॥४॥ रांम
सरीषे कैर है ॥ यहु नांही आहार । दादू साधू अम्रत हैं ॥ बि
न से सब संसार ॥५॥ जे कोई सेवै रांम कूं ॥ तौ रांम सरीषा
होइ । दादू नांव कबीर ज्यूं ॥ साषी बोलै सोइ ॥६॥ अमर पि
न आया सो गया ॥ आप सो करता जाइ । दादू तन मन जीव
तां ॥ आपा गोरख गाइ ॥७॥ पहली पीया सो अमर भया ॥ अम
ब सो आगै होइ ॥ दादू तीनूं गोरख की ॥ बिरला बूझै कोइ
॥८॥ जे जन बेधे प्रीति सूं ॥ ते जन सब रांम जीव ॥ ते ज्यौं दि
स मां ने आप मैं ॥ अंतर नांही पीव ॥९॥ दादू जे जन नै
केर केरे गिरा ॥ सो रांम करे ते जन जाइ ॥ सब गुरु गोसांई तन

रंगमें रहे समाइ ॥१०॥ साईं कीया सु क्यूं मिटै ॥ सुंदर सो
नारंग ॥ दादू धोवै हिं बावरे ॥ दिन दिन होइ सुरंग ॥११॥
दादू कहै सब रंग तेरे तैं रंगे ॥ तूंही सब रंग मांहिं ॥ सब रंग
तेरे तैं कीये ॥ दूजा कोई नांहिं ॥१२॥ ऐसा कोई नां मिले
तैन फेरि सवारे ॥ तूटे पैं बाला ना करै ॥ षैकाल निवारे ॥१३॥
छूटै है बंद तो लागा गोबिंद ॥ लागा गोबिंद तो अमृत कंद ॥ अमृत कं
दलाइ आनंद ॥१४॥ कहां जम भंजैं बरा नेजिरे ॥ कहां का
लकों मंडै ॥ कहां मीच कं मारिरे ॥ कहां जुरासत षंभ ॥१५॥
अमृत गोरष अबिनासी आसन ॥ तहां निरंजन लागि र
है ॥ दादू जोगी जुगि जुगि जीवै ॥ काल ब्याल सब सहै

जिगाये ॥१६॥ रोम रोम ल्यौ लाइ धुनि । ऐसे सदा अ
खंड दादू अबिनासी मिलै । तौ जम कूं दीजै डंड ॥
१७॥ दादू जुरा काल जांमण मरण । जहां जहां जीव
जाइ । भगति परांइण लीन मन । ताकौं काल न खाइ
॥१८॥ निरबिकार निज नांउ ले । जीवनि इहै उपा
इ । दादू कृतम काल है । ताके निकटि न जाइ ॥१९
सहज सुंनि मन राखिये । इन दोन्यूं के मांहि । लै समा
धि रस पीजिये । तहां काल भै नांहिं ॥२०॥ अबिना
सी के आसिरै । अजरावर की वोट । दादू सरणैं साच
के । कदे न लागै चोट ॥२१॥ मरणां भागा मरण थै ।

दुषैं नावडष॥ दादू जैसौं जैगया॥ सुषैं तूरासुष॥२२॥
दादू सब कूं संकुट एक दिन॥ काल गाहैगा आइ॥ जी
वत मृतक ह्वै रहै॥ ताके निकटि न जाइ॥२३॥ जी
वत मिलै सु जीवते॥ मुए मिले मरि जाइ॥ दादू दोनूं
देषि करि॥ जहां जाणौं तहां लाइ॥२४॥ दादू कोई पि
रनहीं॥ एक मन आवै जाइ॥ अमरपुरि ष आपे रहै
केसा भूल्यो लाइ॥२५॥ दादू साधन सब कीया॥ ज
बतैं न मन लागा मन॥ दादू अमसाधि र आत्मा॥ यों
जुगि जुगि जीवैं जन॥२६॥ रहतें सेती लागि रक्षा॥
तौ अजरावर है र॥ दादू देषि विचारि करि॥ जुदा न

जीवै कोइ ॥२७॥ जेती करणी काल की ॥ तेती परिहरि प्रा
ण ॥ दादू आत्म राम सौं ॥ जे तूं षरा सुजांण ॥ विष अमृत
घट मैं बसै ॥ बिरला जांणैं कोइ ॥ जिनि विष पाया ते मु
ये ॥ अमर अमी सूं होइ ॥२८॥ दादू मरबा ही मरि रहै ॥ जीव
त नांहीं कोइ ॥ सोई कहिये जीवता ॥ जे कलि अजरा
वर होइ ॥२९॥ देह रहै संसार मैं ॥ जीव राम के पास ॥ दा
दू कुछ ब्यापै नहीं ॥ काल झाल दुष त्रास ॥३०॥ काया
की संगति तजै ॥ बैठा हरि पद मांहिं ॥ दादू निरभै ह्वै
रहै ॥ कोई गुण ब्यापै नांहिं ॥३१॥ दादू तन त्रिसंसार स
ब ॥ रहै निरा [illegible] ॥ [illegible] सैं ॥ काल

नलोगोंकोंइ ॥३२॥ जागकलागकरांमसूं ॥ रैंणिबिहांणी
जांइ ॥ सुमरिसनेहीआपणां ॥ दादूकालनषाइ ॥३३॥
दादूजागकलागकरांमसूं ॥ छाडिकविषैबिकार ॥ पावै
जीवैरांमरस ॥ आत्मसाधनसार ॥३४॥ मरैतपावैपीव
कूं ॥ जीवैतबचैकाल ॥ दादूनिरंजैनांउलै ॥ दोनूंहाथि
दयाल ॥३५॥ दादूमरणौंकौंचल्या ॥ सजीवनकेसाथ
दादूलाहामूलसूं ॥ दोनूंआयेहाथि ॥३६॥ दादूजाता
देषिये ॥ लाहामूलगवाइ ॥ साहिबकीगतिअगमहै ॥
तौकुछलषीनजाइ ॥३७॥ साहिबमिलैतजीविये ॥ न
हीतजीवैकांमरि ॥ जावैअनंतउपावकरि ॥ दादूमूवौं

मांहिं ॥ ३८ ॥ मजीवंनि साधै नहीं । तौ मरि मरि जिव जाइ
दादू पीवै राम रस । सुष मैं रहै समाइ ॥ ३९ ॥ दिन दिं
न लकुडे होहिं सब । कहै मोटा होता जाइ ॥ दादू दिं
न दिन ते बक है । जे रहै राम ल्यो लाइ ॥ ४० ॥ न जांणौं दा
जी चुप गहि । मेटि अग्निं की झाल । सदा सजीवंन
सुमरिये । दादू बंचै काल ॥ ४१ ॥ दादू जीवत छूटै देह
गुण । जीवत मुकता होइ । जीवत काटै कर्म सब । मु
क्ति कहावै सोइ ॥ ४२ ॥ जीवत ही हूतर तिरै । जीवत
लंघे पारि । जीवत पाया जगत गुर । दादू ज्ञान बिचार ॥ ४
३ ॥ जीवत जगपति कौं मिलै । जीवत आतमराम । जीव

तरसरसलेपिये।दादूमनबिश्राम॥४४॥जीवतपायाप्रे
मरस॥जीवतपायाअंघाइ॥जीवतपायास्वादसुख॥
दादूरहैसंमाइ॥४५॥जीवतजागेरांमसब॥छूटैक्र
मअनेक॥जीवतमुकतिसदगतिभये।दादूदरसंन
ऐक॥४६॥जीवतमेलानांभया।जीवतप्रसनहोइ
जीवतजगपतिनांमिलै॥दादूबूडेसोइ॥४७॥जी
वतहूतरनांतिरे।जीवतबंधेनपार॥जीवतनिरमै
नांभये॥दादूतेसंसार॥४८॥जीवतप्रगटनांभया
जीवतप्रचानांहिं॥जीवतनापायापीवकूं॥बूडे
जौजगमांहि॥४९॥जीवतपरपायानहीं॥जीवत

मिलै न जाइ । जीवत ते छूटै नहीं । दोहा गाये बिलाइ ॥
५०॥ दोहा छूटै जीवत मूवां छूटै नाहिं ॥ मूवां पीछे छू
टिये । तो सब ज्ञाये जम माहिं ॥५१॥ मूवां पीछे मुकति
बतावै ॥ मूवां पीछे मेला ॥ मूवां पीछे आप सरूपै पद
दोहा न्रलेप निहिला ॥५२॥ मूवां पीछे बैकुंठ बासा । मू
वा अमरापुर वासै ॥ मूवां पीछे मुकति बतावै ॥ दोहा जग
बौरावै ॥५३॥ मूवां पीछे पद पंकज पावै ॥ मूवां पीछे
तारै ॥ मूवां पीछे सत गति होवै ॥ दोहा जीवत मारै ॥
५४॥ मूवां पीछे सतगति बतावै ॥ मूवां पीछे सेवा । मू
वां पीछे मेंतेन मिरावै । दोहा देत न मेवा ॥५५॥ दोहा ध

रती क्या साधन कीया॥ अंबर कवं गाजै न्यास॥ रवि ससि
किस अंबर रंजतैं॥ अमर जपे निजदास॥५६॥ साहिब मा
रै ते मुये॥ कोई जीवै नांहिं॥ साहिब राखै ते रहैं॥ दादू निज
घर मांहि॥५७॥ जे जंन राखे रांमजी॥ अपणौं अंगि लगा
इ॥ दादू कछू न व्यापे नहीं॥ जे कोटि काल झषि जाइ॥५८॥
॥इति सजीवनि कौ अंग॥ पूरी॥ अंग॥२६॥ साषी॥
रवन॥ अथ पारिष कौ अंग॥ दादू नमो नमो निरंज
नं॥ नमसकार गुरदेवतः॥ बंदनं सर्व साधवा॥ प्रणांम पार
गतः॥१॥ मन चित आतम देषिये॥ लागा है किस गैर॥ ज
सां लागा के सानांगि ये॥ काटै षे दादू और॥२॥ दादू साध

प्रषिए ॥ अंतरिआतम देष ॥ मनमांहैं माया अहै ॥ के आपैं अ-
पनु देष ॥ ३ ॥ टीका मन की दृष्टि करि ॥ पीछे धरिये नांहैं
अंतरगति की जेल षे ॥ तिनकी मैं बलि जांउ ॥ ४ ॥ कहै ल-
षे सो मानही ॥ मैं न लषे सो साध ॥ मन की लषै सु देवता ॥ ठा-
कुर आगम अगाध ॥ ५ ॥ टीका बाहर का सब देषिए ॥ अंतरि
लष्या न जाइ ॥ बाहरि दिषावा लोक का ॥ अंतरि राम दिषा-
इ ॥ ६ ॥ एक परि षसु राष्या अपनी ॥ अंतर की एक नांहिं
अंतर की जांणें नहीं ॥ ताथैं षोटा षाहि ॥ ७ ॥ टीका जे नांही सो
सब कहै ॥ है सो कहै न कोइ ॥ षोटा षरा परषिये ॥ तब ज्यूं
था त्यूं ही होइ ॥ ८ ॥ टीका दिस फिरै सब मन है ॥ आवै जाइ

सुपवन ॥ रांषं महाराधुंमाणा है ॥ देषमहाराब्रह्म ॥९॥ घ
ट की जोनि क्रंनी तिसब ॥ मनकी मेटि उपाधि ॥ दाह
प्रहरिपिंचकी रामकै बैतेसाध ॥१०॥ अरथ आयात
बजो गिंये ॥ जब अंनरथ छूटै ॥ दाह जां मा अरमका
गिरि चौडुं फूटै ॥११॥ दाह हजाको हिबे कररसा ॥ अं
तरकास्याधोह ॥ ऊपरकीये सबकोई ॥ मांहि न देषे
कोह ॥१२॥ जैसे मांहै जीव रहै ॥ तैसी आवै बास ॥ मु
षिबोलै तबजो गिंये ॥ अंतरका प्रकास ॥१३॥ हा
हृदपरदेषिकरि ॥ सबको राषै नांउ ॥ अंतरगतिकी
जैलधै ॥ तिनकी मैंबलिजांउ ॥१४॥ तबमनआत्म

एकहै ॥ इन्द्रा सब उणहार ॥ दादू मूल पाया नहीं ॥ दुवि
धा मैं बिकार ॥१५॥ काया के सब गुण बंधे ॥ चौरा
सी लष जीव ॥ दादू सेवग सो नहीं ॥ औरंगि राते पीव ॥
१६॥ काया के बसि जीव सब ॥ आतम है सब आकार
दादू काया बसि करै ॥ निरंजन निरकार ॥१७॥ सू
रंग ब्रह्म बिचारिये ॥ तब सकल आतमा एक ॥ काया
के गुण देषिये ॥ तौ नाना बरण अनेक ॥१८॥ म
ति बुधि बमेक बिचार बिन ॥ माणस पसू समान ॥ स
म काया मैं मैं कै नहीं ॥ दादू पसु गियान ॥१९॥ सब जी
व प्राणी भूत हैं ॥ साधु मिलै तब देव ॥ ब्रह्म मिलै तब

ब्रह्म है ॥ दादू अलषपच्छ मेव ॥२०॥ दादू बंध्या जीव है
छूटा ब्रह्म समान ॥ दादू दोनूं देषिये ॥ दूजा नांही आं
न ॥२१॥ करमों के बसि जीव है ॥ करम रहत सो ब्रह्म
जहां आतमा तहां परआतमां ॥ दादू भागा भर्म ॥२२॥ का
चा उछलै ऊफणै ॥ काया हांडी मांहि ॥ दादू पाका मि
लि रहै ॥ जीव ब्रह्म द्वै नांहि ॥२३॥ बांधै सुरनैंना येवा
जैं ॥ ऐका सो थिर ना जीज्यो ॥ राम सनेही साधु हाथैं ॥ बेगा मे
क लिदाज्यो ॥२४॥ सब जीवों कूं मनगै ॥ मन कूं बिर
ला कोइ ॥ दादू गुर के ज्ञान सूं ॥ सांई सनमुष होइ ॥२५॥
षांग जो मारि ये ॥ मन षोटा ले स्यावै ॥ षोटा मन के

मांथैं मारै ॥ दादू हरि जनां दे ॥२६॥ अवनां हैं मैं नां न
हीं ॥ तांथैं षोटा षाहिं ॥ ज्ञांन विचार न ऊपजै ॥ सांच कू
व समझैं नांहिं ॥२७॥ दादू साचा लीजिये ॥ झूठा दीजै डा
रि ॥ साचा सनमुष राषिये ॥ झूठा नेह निवारि ॥२८॥
साचे कूं साचा कहै ॥ झूठे कूं झूठा ॥ दादू दुबिधा कोंन
हीं ॥ ज्यूं था त्यूं ही दीठा ॥२९॥ दादू हीरै कूं कंकर कहैं
मूरिष लोग अजांण ॥ दादू हीरा हाथि ले ॥ परषै साध सुजां
ण ॥३०॥ हीरा कौंडी मोल है ॥ मूरिष हाथि गवार ॥ पा
या पारिष जौंहरी ॥ दादू मोल अपार ॥३१॥ अंधे ही
रा परषिया ॥ कीया कौंडी मोल ॥ दादू साधू जौंहरी ॥ ही

रे मोलननतोला॥५३॥रामबिनांकिंसकांमका॥नहीं
कौंमीकाजीवसोंईसरिषाह्वैगया॥दादूप्रेमेंपाव॥५४
मिसरीमांहैंमेलिकरि॥मोलिबिकांनांबंस॥योंदादूम
हंगाभया॥पारब्रह्ममिलिहंस॥५५॥सतगुरानिगु
रापरषिये॥साधकहैसबकोइ॥सतगुरासाचानिगुरा
झूठा॥साहिबकेदरिहोइ॥५६॥दादूसतगुरासमति
मैंजेमिरहै॥संनमुषसिरजेनहार॥निगुरालोभीला
लची॥भूंचैबिषैबिकार॥५७॥षोटाषरापरषिये
दादूकसिकसिलेइ॥साचाहैसोराषिये॥झूठारहैंणा
नदेइ॥५८॥षोटाषराकरिदेवैपारिष॥तौकैसेंबं

सिंध्यार॥ षरे षोटे का न्याव न बैरै॥ साहिब के मन भावे॥
॥३८॥ दादू जिन्हें जंं कही तिन्हें तूं मानी॥ ज्ञान विचा
रं न कीन्हों॥ षोटा षरा जीव परषि न जानै॥ झूठ साच
करि लीन्हों॥३९॥ जे निधि कहीं न पाइये॥ सो नि
धि घरि घरि आहि॥ दादू महंगे मोल बिन॥ कोई न ले
वै ताहि॥४०॥ षरा कसौटी कीजिये॥ बांनी बधतो जा
इ॥ दादू साचा परषिये॥ महंगे मोल बिकाइ॥४१॥
दादू राम कसै सेवग षरा॥ कदे न मोड़े अंग॥ दादू जे
ब लग राम है॥ तब लग सेवग संग॥४२॥ कबहू न
बिहडै सो भला॥ साधु दिढ मत होइ॥ दादू हीरा एक

रस॥ बांधि गांवडी सोइ॥४३॥ दादू कसि कसि निसि
रे॥ पकं ता ते पड़े वांणि॥ षोटा गांठि न बांधिए साहिब के
दीवांणि॥४४॥ षरी कसोटी पीव की॥ कोई बिरला प
हुंचणहार॥ जे पहुंचे ते ऊबरे॥ ताइ की ऐ तत सार॥४ ब
५॥ विपति जली हरि नांव सूं॥ काया कसोटी दुष॥ राम
विनां किस कांम का॥ दादू संपति सुष॥४६॥ दादू सा
हिब के मन मै सेवग षरा॥ सेवग कूं सुष होइ॥ साहिब क
रै सु सब भला॥ बुरा न कहिए कोइ॥४७॥ जब लग
नैन न देषिये॥ साध कहै ते अंग॥ तब लग क्यूं करि मा
निये॥ साहिब का प्रसंग॥४८॥ दादू औगुण गुण गा छाडे

लागा है ॥ सोई सिर ऊपरि साध ॥ गुण आगौ गुण थैं रहित है सो निज ब्रह्म अगाध ॥४९॥ दादू साचा अंग न ऊलिये ॥ साहिब मानै नांहि ॥ साचा सिरस्यौं खेलिये ॥ मिलि रहिये ता मांहि ॥५०॥ दादू साचे साहिब कौं मिलै ॥ साचे मारग जाइ ॥ साचे सूं साचा भया ॥ तब साचे लीया बुलाइ ॥५१॥ दादू उगम्या बूरै मैं ॥ साधौं सूं कहियौ ॥ हम सरनाई राम की ॥ तुम मौ कै रहियौ ॥५२॥ जूं है त्यूं कहै ॥ घटि बधि कहै न जाइ ॥ दादू सो सुध आतमा ॥ साधू परसै आइ ॥५३॥ इति पारिष कौ अंग संपूर्ण ॥२२॥ साषी ॥१२८५॥ अथ उपज अंग

लिंकाअंग ॥ दादू मोमो निर्जंन ॥ नमसकारगु
रदेवत: ॥ बंदनं सब साधवा ॥ प्रणांम पारंगत ॥१॥ दादू
मायाकागुण बल करै ॥ आपा उपजै आइ ॥ राजस
तामससातगी ॥ मन चंचल है जाइ ॥२॥ आपा नां
हीं बल मिटै ॥ त्रिविध तिमर नहीं होइ दादू यहु गु
ण ब्रह्म का ॥ सुंनि समांनां सोइ ॥३॥ दादू अनंतै
उपजी गुण मई ॥ गुण ही थें लै जाइ ॥ गुण हीं सौं ग दे
हि बंधिया ॥ छूटै कौंण उपाइ ॥ दोइ पष उपजी ग्रह
रै ॥ निरपष अंतरि नेतै सार ॥ एक रांम दूजा नहीं ॥ दादू
लेक बिचारि ॥४॥ दादू काया ब्यावर गुणमई ॥ म

नमुषतपजैह्यांन ॥ चौरासीलषजीवकूं ॥ हमसाया
ध्यांन ॥ ५ ॥ आत्मबोधवंझकाबेटा ॥ गुरमुषिउप
जैआइ ॥ दाइपंगुलपंचबिन ॥ जाहांरांमतहांजा
इ ॥ ६ ॥ आत्ममांहैउपजै ॥ दाइपंगुलेध्यांन ॥ केंम
जाइउदेषिकरिजहांनिरंजनध्यांन ॥ ७ ॥ आत्मउ
पजिऊकासकी ॥ सुणिधरतीकीबाट ॥ दाइमारगगैब
का ॥ कोईलषैनघाट ॥ ८ ॥ आत्मबोधअंमनजाई ॥ सा
धनिरपषहोइ ॥ दाइरातारांमसौ ॥ रसपीवैगासोइ ॥
९ ॥ इकनिरगुणइककगुणमई ॥ सबघटिएकैह्यांन ॥ का
याकामायामिलै ॥ आत्मब्रह्मसमान ॥ १० ॥ बिषअंमृ

तघट मैं बसै ॥ दोनूं ऐकै संग ॥ माया बिषै बिकार सब ॥ अं
मृत हरि का अंग ॥११॥ बिष अंमृत घट मैं बसै ॥ बिर
ला बूझै कोइ ॥ जिन बिषया तैं मूये ॥ अंमृत अंमी सू
होइ ॥१२॥ आपै आप प्रकासिया ॥ निर्मल ग्यान अनं
त षीर नीर न्यारा कीया ॥ दादू अंजन ग्राहिबा ॥१३॥ प
रै मन गति जब उपजै ॥ निहं चंचल सहज समाधि ॥ दादू के
पीवैं राम रस ॥ सतगुर प्रसाद ॥१४॥ प्रेम मन गति जब
उपजै ॥ पंगुल ज्ञान बिचार ॥ दादू हरि रस पाइये ॥ छूटे
सकल बिकार ॥१५॥ दादू मन गति निर्जन राम की
जबि चंचल बिनासी ॥ सदा सजीवनि आत्मा ॥ सद

जैंप्रकासी ॥१६॥ दादूबंकबियाईआंमा ॥ उपज्या
आनंदभाव सहजसीलसंतोषसत ॥ प्रेममगनमन
राव ॥१७॥ जबहंमनकैजडचावले ॥ तबकहेतेमां
रगमाहिं ॥ दादूपंकेचेपंथचलि ॥ कहैयकमोरग
नांहिं ॥१८॥ पहलीहमसबकछुकीया ॥ भ्रमक
मेंसेसार ॥ दादूआननजेउपजी ॥ तातेसिरजनहार ॥१
९॥ दादूसोईआननजेसोईकुपजी ॥ सोईसबटतत
सार ॥ सुणताहीसाहिबमिलै ॥ मनकेजाहिंबिकार
२०॥ दादूआननजेकासेरागाकूं ॥ आननहदउपजेआ
मेकेकाजत्वनिरमला ॥ पावैरुचिजेयोनाद ॥२१॥

जब घट दिष्ट्यां नैन कूं पड़ै ॥ तब कीया कर्म का नां
स ॥ जैसें तम मैं ज्याग सबै ॥ पूरण ब्रह्म परकास ॥२२॥
दादू बांणी ब्रह्म की ॥ अनैं घटि परकास ॥ राम
अ के लार हि गया ॥ सबद निरंजन पास ॥२३॥
पार ब्रह्म कह्या प्राण सौं ॥ प्राण कह्या घट सोइ
दादू घट सब सौं कह्या ॥ विष अंम्रत गुण दोइ ॥
२४ ॥ दादू मालिक कह्या अरवाह सूं ॥ अरवा
ह कह्या औजूद ॥ औजूद आलम सूं कह्या ॥ हुं
कम सब खबर मौजूद ॥२५॥ पीव दूध मैं रमि रह्या
व्यापक सब ही ठौर ॥ दादू बकता बहुत है ॥ म

थिकाटै ते भ्रोर ॥२६॥ मथि करि दीपक कीजि
ये। सब घट न्नया परकास। दादू दीवा हाथि करि।
गया निरंजन पास ॥२७॥ दीवे दीवा कीजिये। गु
रमुषि मारग जाइ। दादू ऐसा पीव का। दरसन
देषै आइ ॥२८॥ दादू अैन ने थैं आन नर न्नया।
पाया निरंजन जांने। निहचल निर्मल निरबांण प
द। अगम अगोचर रहै ॥२९॥ दादू अैन ने बाणी
अगम कूं। सोई मति गाइ। अगह गह है अगह कहै
कहै। अगम ने दूने रंगे दाइ ॥३०॥ दादू जे कुछ वे
दकु रांन थैं। अगम अगोचर बात। सो अन जैसा
म

चाकहै ॥ एक दादू ज्ञम कहै कहात ॥२१॥ दादू जे साधु
सहै ॥ तैसी क्यूं न जै उपजै होइ ॥ जे सा है तैसा कहै
दादू बिरला कोइ ॥२२॥ जे मति पीछै उपजै सो म
ति पहली होइ ॥ कबहूं न होवै जीव दुषी ॥ दादू सु
षिया सोइ ॥२३॥ दादू मरिबे की सब उपजै जीबे की
कछु नांहिं ॥ जीबे की जांणै नहीं ॥ मरिबे की मन मां
हिं ॥२४॥ इति जीवत मृतक को अंग संपूर्ण अंग
२८ ॥ साषी ॥ २४२० ॥ अथ [illegible] निरबैरता को
अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं ॥ नमसकार गुरदेवत:
बंदनं सरब साधवा ॥ प्रणामं पारंगत: ॥१॥ आपा मे

टेहरि न जे । तन मन तजे बिकार निरबैरी सब जीव
सूं । दादू यहु मत सार ॥२॥ दादू निरबैरी निज आतमा
साधन का मत सार । दादू जारा म बिंन । बैरी मकि
बिकार ॥३॥ निरबैरी सब जीवसूं । संत जन सोई
दादू एकै आतमा । बैरी नहीं कोई ॥४॥ सब हम देख
या सोधि करि । दूजा नाहीं आन । सब घट एकै आ
तमा । क्या हिंदू मुसलमान ॥५॥ दादू नारि पुरिष का
नांउ धरि । इहि संसै भरम भुलान । सब घट एकै आ
तमा । क्या हिंदू मुसलमान ॥६॥ दोन्यूं भाई हाथ
पग । दोन्यूं भाई कांन । दोन्यूं भाई नैन हैं । हिंदू मु

सब मांहि ॥७॥ दादू के दूजा नहीं ॥ एकै आतमराम
सतगुर सिर परि साध सब ॥ प्रेम भगति बिश्राम ॥८
॥ दादू ऐसा आरसी देषत दूजा होइ ॥ भरम माया
उ बिधा मिटी ॥ तब दूजा नांही कोइ ॥९॥ किस
सौं बैरी ह्वै रह्या ॥ दूजा कोई नांहि ॥ जिस के अंग
थैं ऊपजे ॥ सोई है सब मांहि ॥१०॥ सब घटि एकै
आतमा ॥ जांणै सो नीकी ॥ आपा पर सब चीन्हि ले
दरसन है पीव का ॥११॥ काहे कू दुष दीजिये
घटि घटि आतमराम ॥ दादू सब संतोषिये ॥ यहु सा
धूं का काम ॥१२॥ एकै आतमराम है ॥ समरथ सा

ई सोइ ॥ मेरे के पकवां न सब ॥ षातां होइ सु होइ
॥१३॥ काहे कूं दुष दीजिए ॥ सांई है सब मांहि ॥ दा
दू एकै आतमां ॥ दूजा कोई नांहिं ॥१४॥ साहिबजी
की आतमां ॥ दीजै सुष संतोष ॥ दादू दूजा को नहीं
चौदह तीन्यूं लोक ॥१५॥ दादू एकै आतमा ॥ सा
हिब है सब मांहिं ॥ साहिब के नातै मिलै ॥ भेष
पंथ के नांहिं ॥१६॥ दादू जब प्राण पिछांणैं आ
पकूं ॥ आतम सब भाई ॥ सिरजनहारा सबनि का
तासौं ल्यौ लाई ॥१७॥ आतम राम बिचारिए ॥ घ
टि घटि देव दयाल ॥ दादू सब संतोषिये ॥ सब

जीवौं प्रतिपाल ॥१८॥ दादू पूरण ब्रह्म बिचारिये
दुती नाव करि हरि ॥ सब घटि साहिब दे
षिये ॥ सामरथ्या नर पूरि ॥१९॥ दादू मंदर काच का
मरकट सुनहा जाइ ॥ दादू ऐक अनेक है ॥ आ
प आपकूं षाइ ॥२०॥ आतम नाई जीव सब ॥ ऐक
पेट परिवार ॥ दादू मूल बिचारिये ॥ तौ दूजा कवंण
गवांर ॥२१॥ तन मन आत[illegible] कहै ॥ दूजा सब
अगाहार ॥ दादू मूल न पाया नहीं [illegible] बिषू [illegible] वि
कार ॥२२॥ माया के बसि जीव सब ॥ [illegible]गा ऐकं
नत आपार ॥ दादू [illegible] सब मिले कोरे ॥ निरंजन नि

एकार ॥२३॥ घट घट का गुण हार सब ॥ पंचा प्रसि
कै जाइ ॥ दादू ऐक अंग नेक कै बूर तैं नां नां जाइ ॥२
४॥ आपे आपे कं कार सब ॥ सांई दीये पगाइ ॥ दादू न्यारे
नां नेधरि ॥ जिनि जिनि निकै जाइ ॥२५॥ आपे आपे कै सा
र सब ॥ सांई दीये पगाइ ॥ आदि अंति सब ऐक है
दादू सब जिस मांह ॥२६॥ दादू सक का मंह ज्ञें की जि
ये ॥ नीलो न्यारे नांहि ॥ का हेकं ड षदी जिये ॥ सादि
ब है एक मांहि ॥२७॥ आतम देव अराधिये ॥ बिरो
धि नहा जाइ ॥ आराधे सुष पाइये ॥ बिरोधे डष हो
इ ॥२८॥ जे आपे पैषै आप कूं यों नैं ह सर ढोइ

तो दादू दूसर नहीं। डर न पावै कोइ ॥२९॥ दादू समि
करि देषिये। कुंजर कीट समान ॥ दादू दुविधा दू
रि करि। तजि आपा अभिमान ॥३०॥ दादू दू
जा नैं हम विचारिये। तब सकल आतमा एक
काया के गुण देषिये। तौ नाना वरण अनेक ॥
३१॥ दादू अम्बर संबु दादू का ॥ अजरावर का थां
न ॥ दादू सो कूटा हिये। मारि बंका नी मान ॥३२
दादू आपा चिणा वैकुंठ करा। तिहि को करै जे तन
प्रत षिप्रमे सवरि कीया। सो जानैं जो परतन ॥३
३॥ मसी तिसि गौरी मां गां सु॥ तिस संकं करै सला

म मैं नन्हा पै पैदा कीया सोदा हैं मुसलमान ॥२
४॥ दादू जंगम नमींदैं जाव ले ज गैथौं रहैं ते दास
मै जात न ये न करो तिहिं न नि हं च लमों हौ बा
स बान्धा बंधी जीव सब जोजन पांहीं घास स्या
त मम्पान नउमजे दादू करैं बिंगो स ॥२५॥ दादू
काला मुंह करि कार्द का दिल थैं दूरि निवारि स
बसूरत सुबहान को मुल्ला मुगध न मारि ॥ गला
गुसे का कादि ये [illegible] मन ना कूं मारि पंचौं बिसम
लकीजे ये सब जीव उबारि ॥२६॥ दादू कंनि
यां सेति दिल ले बंधि करि बैठा नाना वाद नेकी

नां तें बिसारि करि ॥ कर टक माया षाइ ॥ ७७ ॥ मि १२८।२
हरि महबति मनिं नहीं ॥ दिल कै बजर कठोर ॥
काहे का फिरि नेक हि पैं ॥ मोमन मालिक ओर
॥ ७८ ॥ दादू दया जिन्हों के दिल नहीं ॥ बहुरि क
हावैं साध ॥ जे मुष उन का देषिये ॥ तो लागे बहु अप
राध ॥ ७९ ॥ मांस अहारी मद पीवैं ॥ बिषै बिकारी
सोइ ॥ दादू आतम राम बिन ॥ दया कहां थीं होइ ॥ ८० ॥
बैर बिरोधें आतमा ॥ दया नहीं दिल मांहिं ॥ दादू मू
रति राम की ॥ ता कौं मारन जांहिं ॥ ८१ ॥ मांस अ
हारी जे नरा ॥ ते नर सिंघ सियाल ॥ बग मंजार सु

नहांमहीं ॥ ऐतापूतषिकाल ॥४२॥ नोहरसिंघ
सियालसब ॥ केतेमुसलमांन ॥ मासषाइमें म
नजऐबमेमींयांकाज्ञांन ॥४३॥ बेभिंहरगुम
राहगाफिल ॥ गोसतपुरदनी ॥ बेदिलबदकार
ञ्चालेमहयातमुरदंनी ॥४४॥ कुलञ्चालेमह
केदींदंम ॥ ञ्चरवाहेफेलास ॥ बदञ्चमलबदका
रहंई ॥ पाकयांरापूरन ॥४५॥ ञ्चावहींराजे प्रिथ
मी ॥ दरयाविफिरांहम ॥ ञ्चगातिनहींनगावेतकों
नहींकेसप्रवेस ॥४६॥ कालकालमैंकाटिक
रि ॥ ञ्चातमञ्चागिनलगाइ ॥ नीवृदयांपुञपालि

रै॥ दादू सत्रु मत्र तें थाइ॥४७॥ दादू बुरा न बांछै जीव १५१२
का॥ सदा सजीवं नि सोइ॥ प्रलै विषै विकार सब
भाव भगति रत होइ॥४८॥ नां को बैरी नां को मी
त॥ दादू रांम मिलन की चीत॥४९॥ दादू जे साहिब
कै भावै नीया॥ तो सो सब काटि सूली दीया॥ मिहरि म
यां करि फिल कीया॥ तो जीवै जी में करि जीया॥५०॥
तुम कूं भावै और कुछ॥ हम कुछ कीया और
मिहरि करो तो छूटिये॥ नहीं तो नांही ठौर॥५१॥
इति श्री दया निरबैरता का अंग संपूरण॥ अंग २४
साषी २४१॥ अथ सुंदरि का अंग॥ दादू नमो

मो निरंजन ॥ नमसकार गुरदेव त ॥ बंदनं सब साधवा
प्रणाम पारंगत: ॥१॥ आरति कुंती सुंदरी ॥ पलप
ल चाहै पीव ॥ दादू कारणि कंत के ॥ तालाबेली जी
व ॥२॥ रतवंती आरति करै ॥ राम सनेही आव ॥
दादू औसर अब मिलै ॥ यहु विरहनि का भाव
॥३॥ काहे न आवहु कंत घरि ॥ क्यूं तुम्ह रहे रि
साइ ॥ दादू सुंदरि सेज परि ॥ जन मन मोहि कजा
इ ॥४॥ आतम अंतरि आव तूं ॥ या है तेरी ठोर ॥ दादू
सुंदरि पीव तूं ॥ दूजा नांही और ॥५॥ दादू पीव न दे
ष्यां नैन भरि ॥ कंठि न लागी धाइ ॥ सूती नहीं गलि

सांईं रे ॥ बिचि रह्या गई बिहाइ ॥६॥ सुरति पुकारे
सुंदरी ॥ अगम अगोचर जाइ ॥ दादू बिरहंनि आ
त्मां ॥ उठि उठि आतुर धाइ ॥७॥ जे कबहूं बिरहंनि
मरै ॥ तौ सुरति बिरहंनी होइ ॥ दादू पीव पीव जीव
तां ॥ मुवा न जीवै सोइ ॥८॥ सांईं कारणि सेज संवा
री ॥ सब थैं सुंदर ठौर ॥ दादू नारी नाह बिन ॥ आ
णि बिठाए और ॥९॥ कोई औगुण मन बिसा
रि चित तैं धरी उतारि ॥ दादू पति बिन सुंदरी हांढै घ
र घर बारि ॥१०॥ प्रेम प्रीति सनेह बिन ॥ सब झूठे
सिंगार ॥ दादू आतम रत नहीं ॥ क्यूं मानैं भरतार ॥११॥

प्रेमनहरिकीपालकी॥ व्याकुलनैनैमेलाइ॥ दाहसे
लैपीवसे॥ प्रकसुषकहानजाइ॥१२॥ दाहहूसु
षमूतीनीदूनरि॥ जागेमेरापीव॥ कंकुरीमेला
होइगा॥ जागेनाहीजाव॥१३॥ सषीनषेलेसुंद
री॥ सुपनैपीवसेजागि॥ सेदनपायाप्रेमका॥ रही
नहींउरलागि॥१४॥ पंचदिहाडेपीवसे॥ मिलि
काहेनषेले॥ दाहगहिलीसुंदरी॥ कंररहैसकेले
॥१५॥ सषीसुहागनिसबकहै॥ कूरदुहागनिम्या
हि॥ पीवकामहलनपाइये॥ कहांपुकारौंजाइ॥
॥१६॥ सषीसुहागनिसबकहै॥ कंतनबूझैबात

मनसाबाचाक्रमनां ॥ सुरस्त्रिसुरस्त्रिजीवजात ॥
१७ सषीसुहागंनिसबकहै ॥ पीवसंपूसंनहोइति
सबासुरिउपषपाइयो ॥ एकुबिथानजांगोंकोइ ॥१८॥
सषीसुहागंनिसबकहै ॥ प्यारनषेलैपीव ॥ सेजसु
हागंनपाईये ॥ उबियामेराजीव ॥१९॥ प्रपुरिषास
बप्रहरे ॥ सुंदरिदेषेजागि ॥ अपणांपावपिछांणिं
करि ॥ राहूरहिपेलागि ॥२०॥ पुरिषपुरातमछाणिक
रि ॥ चलीअंनेकेसाथि ॥ सोनीसंगथैबीछटपा
सडीमरोडेहाथ ॥२१॥ सुंदरिकबहूंकंतको ॥ सु
षसोंनाबेनेन्हेड ॥ अपनेंपीवकेकारणों ॥ दाह

तनमनदेह ॥२२॥ नैनबैनकरिवारसैं ॥ तनम
नप्यमपरांन ॥ शाहसुंदरिबलिजाईं ॥ तुम्हपरिकं
तमुंजांन ॥२३॥ तनन्नीतेरा मनन्नीतेरा ॥ तेरा
पंमपरांन ॥ सबकुछतेरा ॥ तूंहै मेरा यकशाहकां
जांन ॥२४॥ पंचन्नन्नूषंनपीवकरि ॥ सोलहस
वेहींगंने ॥ सुंदरियकसंगगारकरि ॥ लैलैपीवका
नांउ ॥२५॥ यकनरतसुंदरिलेरहै ॥ तोसद्दासु
हांगनिहोइ ॥ शाहज्ञानैपीवकूं ॥ तासंमिंज्ञोर
नकोइ ॥२६॥ सुंदरिमोहेपीवकूं ॥ बकतन्नाति
नरतार ॥ तूंशाहरिझवैरामकूं ॥ ज्ञनन्तकन्ना

करतार ॥२७॥ दादू नीच ऊंच कुल सुंदरी सेवा सा
री होइ ॥ सोई सुहागनि कीजिये ॥ रूप न पीजै धोइ
॥२८॥ न हिंयानी रत अंगि करि ॥ दरिया पैली पार
दादू सुंदरि सो सती जाइ मिलै करतार ॥२९॥ पे
म लहरि गहि ले गई ॥ अपने प्रीतम पास ॥ आत्म
सुंदरि पीव कौं बिलसै दादू दास ॥३०॥ सुंदरि कौं सां
ई मिल्या ॥ पाया सेज सुहाग ॥ पीव सूं खेलै प्रेम रस
दादू मोटे भाग ॥३१॥ दादू सुंदरि देह मैं साईं कौ
सेव ॥ राती अपने पीव सौं ॥ प्रेम रस लेवै ॥३२॥

तनमनदेह ॥२२॥ नैननबैनककरिवारमैं ॥ तनम
नप्रानपरांन ॥ दादूसुंदरिबलिजाईं ॥ त्रुम्हपरि कं
तसुंजांन ॥२३॥ तनतोतेरामनतोतेरा ॥ तेरा
प्रानपरांन ॥ सबकुछतेरा ॥ तूंहैमेरा यहुदादूका
ज्ञांन ॥२४॥ पंचस्त्रभूषंनपीवकरि ॥ सोलहस
वहींगारं ॥ सुंदरियहुअंगारकरि ॥ खेलैपीवकां
नांम ॥२५॥ यहुअनरतसुंदरिलेरहै ॥ तौसदासु
हांगनिहोइ ॥ दादूज्ञावेपीवकुं ॥ तासमिअौर
नकोइ ॥२६॥ सुंदरिमोहेपीवकुं ॥ बहुतभांति
भरतार ॥ त्यूंदादूरिझवैरामकुं ॥ अनंतकला

करतार ॥२७॥ दादू नीच ऊंच कुल सुंदरी ॥ सेवा सा
री होइ ॥ सोई सुहागनि कीजिए ॥ रूप न पीजे धोइ
॥२८॥ नदियां नीर उलंघि करि ॥ दरिया पैली पार
दादू सुंदरि सो भली जाइ मिले करतार ॥२९॥ पी
व हरि ना दिलै गई ॥ आपने पीव के पास ॥ आत्म
सुंदरि पीव कौं बिलसै दादू दास ॥३०॥ सुंदरि कौं सा
ई मिल्या ॥ पाया सेज सुहाग ॥ पीव सूं खेले प्रेम रस
दादू मोटे भाग ॥३१॥ दादू सुंदरि देह मैं साईं को
सेव ॥ राती आपने पीव सौं ॥ प्रेम रस लेवे ॥३२॥

दादू निरमल सुंदरी निरमल मेरा नाह॥ इन्हूं नि
मल मिलि रहे निरमल प्रेम प्रवाह॥ २७॥ तेज पु
ञ्ज की सुंदरी तेजपुंज का कंत॥ तेजपुंज की सेज प
रि दादू बन्या बसंत॥ २८॥ सांई सुंदरि सेज परि
सदा एक रस होइ॥ दादू षेलै पीव सूं नांह मिल्यो
र न कोइ॥ २९॥ इति सुंदरी का अंग संपूर्ण॥
अंग ७॥ साषी २५०॥ अथ कस्तूरिया मृ
ग का अंग॥ दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार
गुरदेवत॥ बंदनं सर्व साधवा प्रणामं पारंगत॥

स ॥११॥ दादू सब घट माहैं रंमिं रह्या ॥ बिरला बूझै को
ई ॥ सोई बूझै राम कौं ॥ जे राम सनेही होइ ॥१२॥ सदा
संगी पूरा है संगि सनमुष ॥ दादू लेषै नाहिं ॥ सुपिनैं ही
सैं मकै नहीं ॥ कौं करि लेहैं सूझ ॥१३॥ दादू जड
मति जीव जागैं नहीं ॥ प्रेम स्वाद सुष जाइ ॥ चेतनि से
मझै स्वाद सुष ॥ पीवै प्रेम अघाइ ॥१४॥ जागत जे आ
नंद करै ॥ सो पावै सुष स्वाद ॥ सूतैं सुष न पाइये ॥ प्रेम
गंवाया बादि ॥१५॥ दादू जिस का साहिब जागणां
सेवग सदा सुचेत ॥ सावधांन सनमुष रहै ॥ गिरि गि
रि पडैं अचेत ॥१६॥ दादू साईं सावधांन ॥ हंम ही

न ऐसा चेत ॥ पांयौं राम बिन जो गाहौ ता थैं निरफल
षेत ॥१७॥ दादू गोबिंद के गुण बहुत हैं ॥ कोई न जां
णैं जीव ॥ अपणी बूझै आप गति ॥ जे कछु कीया
पीव ॥१८॥ इति कस्तूरिया मृग का अंग संपूर्ण
॥ अंग ३१ ॥ साषी १८ ॥ अथ निंद्या कौ अंग ॥
दादू नमो नमो निरंजनं ॥ नमस्कार गुरदेवतः ॥ बंद
नं सर्व साधवा ॥ प्रणामं पारंगतः ॥१॥ साधु निरम
ल मल नहीं ॥ राम रमैं सम भाइ ॥ दादू अवगुण
काढि करि ॥ जीव रसातलि जाइ ॥२॥ दादू जब
ही साध सताईये ॥ तब ही ऊंघ पलट ॥ आकास

धसैं धरती षिसै ॥ तौ नूं लोक गारक ॥३॥ दादू जिंदि
घरि निज्यासा षकी ॥ सो घर गऐसं मूल तिंन की नी
वं न पाई ऐ ॥ नां तें न गं तें न षूलि ॥४॥ दादू निज्या
नां तें न त्वी झि ऐ ॥ सु पिनैं हीं जिन होइ ॥ नां हें मक
रैं न त्रु मकु सु ली ॥ पजिंन त्वा षै कोइ ॥५॥ दादू नि
ज्या की ऐंन रकै है ॥ की टपडै मुष मांहिं रांम बिमु
षजां मैं मरै ॥ ज्ञा गमुष ज्ञावै जाइ ॥६॥ दादू निद
क बपुरा जिनि मरै ॥ प्र उपगारी सोइ ॥ हमकें कर
तांन जलां ॥ ज्ञा प णमैं त्वा होइ ॥७॥ दादू जिहिं बि
धि ज्ञातम कपरै ॥ पमै पी लम प्रांण ॥ साध सबद कौ

नीद्र गा॥ समकै चतुर सुजांन ॥८॥ आपा देषा अं
नर थुकै हैं॥ कबि प्रिथमी का पाप। धरती अंबर जं
बरौं॥ नबलन गकरै कलाप॥९॥ आपा देषा अं
न थे कहैं॥ अपराधी संसार॥ जद्दि तद्दि ते पालैह
गा॥ समर्थ सिरजनहार॥१०॥ दादू हरि ये लोक थैं
कैसी धरैं उग्राह॥ आपा देषी अजौं बकी॥ औसी
कहै बगाह॥११॥ दादू अमृत कौं बिष बिष कौं
अमृत॥ फेरि धरैं सब नांउं॥ निरमल मैला मैला नि
रमल जाहिंगे कि सब गांव॥१२॥ दादू सांचे कूं झूंठा
कहैं॥ झूठे कूं सांचा॥ राम दुहाई काढिये॥ कंठ थैं

बाचा ॥१३॥ दादू कूड न कहि ऐसा च कूं ॥ साचे
न कहि ऐ झूठ ॥ दादू साहिब मानै नहीं ॥ लागै पा
प अमूट ॥१४॥ दादू कूड व रूपा पांडै सा च कूं ॥ नयं
न कूं सै भीत ॥ सा चा राता साच सौं ॥ कूं व न कूं रांगे
चीत ॥१५॥ [illegible]वे कूं कूंगा कहै ॥ कूंवा साच सं
मान ॥ दादू अमृच्छिरज है छि दे ॥ यहू लोगों का ग्यान
॥१६॥ दादू जूं जूं नींदै लोक बिचारा त्यूं त्यूं
छीजै रोग हमारा ॥१७॥ इति निंद्या को अंग
संपूर्ण ॥ अंग २९ ॥ साषी २५४ ॥ अथ निगु
णां को अंग लिष्यते ॥ दादू मोमो निरंज

नमः सकार गुरदेवतः ॥ बंदनं सर्व साधवा ॥ प्रणामं पार
गतः ॥१॥ दादू चंदन बांवनां ॥ बसै बटाऊ आइ ॥ सु
षदाई सीतल कीये ॥ तीन्यूं ताप नसाइ ॥२॥ काल
कुहाडा हाथि ले ॥ काटण लागा ताहि ॥ ऐसा यहु सत सा
र है ॥ फल मूल ले जाइ ॥३॥ सतगुर चंदन बांवनां
लागे रहै भवंग ॥ दादू विष छाडै नहीं ॥ कहा करै सतसं
ग ॥४॥ दादू कीडा नरक का ॥ राख्या चंदन मांहि ॥ उ
लटि अपूठा नरक कौं ॥ चंदन जांणै नांहि ॥५॥ सत
गुर साध सुजांन है ॥ सिष का गुण नहीं जाइ ॥ दादू ऐसे अं
म्रत छाडि करि ॥ बिषै हलाहल षाइ ॥६॥ को टि ब

रसलौंराषिये॥बंसाचंदपास॥दादूगुणलायेंरहे॥
कदेनलागेंबास॥७॥कोटिबरसलौंराषिये॥प
थरपांणींमांहि॥दादूआडाअंगहे॥भीतरिभेदै
नांहि॥८॥कोटिबरसलौंराषिये॥लोहापारस
संग॥दादूरोमकाअंतरा॥पलटैनांहींअंग॥९॥
कोटिबरसलौंराषिये॥जीवब्रह्मसंगिदोइ॥दा
दूमांहैंबासनां॥कदेनमेलाहोइ॥१०॥मूसाज
लतादेषिकरि॥दादूहंसदयाल॥मांनसरोवरिले
चल्या॥पांषांकाटेकाल॥११॥दीसैमांणसपरत
षिकाल॥ज्यूंकरित्यूंकरिदादूटालि॥१२॥सब

जीव जंत्र गमकं पैसै ॥ साधु काटै न्याइ ॥ दादू विष
हर बिस न्हारे ॥ फिरि ताही कौं खाइ ॥१३॥ दादू हूं
पिलाई पै ॥ बिसहर बिस करि लेइ ॥ गुण का औ
गुण करि लीया ॥ ताही कौं दुख देइ ॥१४॥ बिन
ही पावक जलि मूया ॥ जवासा जल मांहि ॥ दादू
सूके सींचतां ॥ तौ जन कौं इ समाना नांहि ॥१५॥
सुफल बिरिख परमारथी ॥ सुख देवै फल फूल ॥ दा
दू ऊपरि बैसि करि ॥ निगुणां काटै मूल ॥१६॥
दादू सगुणां गुण करै ॥ निगुणां मानै नांहि ॥ निगु
णां मरि निरफल गया ॥ सगुणां साहिब मांहि ॥१७॥

निर्गुणं गुणं मांनैं नहीं कोटि करै जे कोइ दादू स
[illegible]कुछ मैं पिसो फिरि बेरी होइ ॥१८॥ दादू सगुणं
[illegible]िये निर्गुणं नहीं जे दारि सगुणं सन मुघरा
[illegible]ये निर्गुणं नेह निवारि ॥१९॥ सगुणं गुणं के
ते करै निर्गुणं न मांनैं येक दादू साधू सब कहै
निर्गुणं नर कृतघ्न नेक ॥२०॥ सगुणं गुणं के ते क
रै निर्गुणं मांषै टारि दादू साधू सब कहै निर्गुणं
निर फल जाइ ॥२१॥ सगुणं गुणं के ते करै नि
गुणं न मांनैं कोइ दादू साधू सब कहै नेला क
हाथै होइ ॥२२॥ सगुणं गुणं के ते करै निर्गुण

नमो नैनीच ॥ दादू साधू सब कोई ॥ निरगुण के सिरि मी
च ॥२३॥ साहिब जी सब गुण कै ॥ सतगुर के घरि
होइ ॥ दादू काटै काल मुष ॥ निरगुण न मानै कोइ ॥
॥२४॥ साहिब जी सब गुण करै ॥ सतगुर माहें आ
इ ॥ दादू राषै जीव दे ॥ निरगुण मेटै जाइ ॥२५॥ सा
हिब जी सब गुण करै ॥ सतगुर का दे संग ॥ दादू प्र
कैरा षिये ॥ निरगुण फेरै अंग ॥२६॥ साहिब जी
सब गुण करै ॥ सतगुर आणा देइ ॥ दादू तारै देषतां
निरगुण गुण नहीं लेइ ॥२७ सतगुर दीया राम धन
रहै मुगुध बिकताइ ॥ मन माया बाचा कमनां ॥ बिल

सो बिन तें छूटै जाइ ॥ कीया कृत मेटै नहीं ॥ गुण ही मांहि

समांइ ॥ दादू सो बेधे अनंत धन ॥ कब कदि कदे न जाइ

॥ २४ ॥ इति निगुणां का अंग ॥ अंग ॥ २४ ॥ सा

षी ३१ पद ॥ अथ बीनती का अंग ॥ दादू नमो नमो

निरंजनं ॥ नमस्कार गुरदेवतः ॥ बंदनं सर्व साधवा

प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥ दादू बहुत बुरा कीया ॥ तुम्हें

न करणा रोस ॥ साहिब समाई का धणी ॥ बंदे कूं

सब दोस ॥ २ ॥ दादू बुरा बुरा सब हम कीया ॥ सो मु

ख कह्या न जाइ ॥ निरमल मेरा सांईयां ॥ ताकों

दोस न लाइ ॥ ३ ॥ सांई सेवा चोर मैं ॥ अपराधी

बंदा ॥ दादू इज्जा को नहीं ॥ मुझ सरीषा बंदा ॥४॥ दादू
तिल तिल का अपराधी तेरा ॥ रती रती का चोर ॥
पल पल का मैं गुनही तेरा ॥ बकसो औगुण मो
रे ॥५॥ महा अपराधी एक मैं ॥ सारे इहि संसार ॥ औ
गुण मेरे अति घणे ॥ अंत न आवै पार ॥ बेम्नजादा
मित नहीं ॥ ऐसे कीये अपार ॥ मैं अपराधी बाप
जी ॥ मेरे तुम्ह हौ एक अधार ॥६॥ दोष अनेक
कलंक सब ॥ बहुत बुरा मुझ मांहिं ॥ मैं कीये अप
राध सब ॥ तुम्ह थैं छाना नांहिं ॥ गुनहगार अपरा
धी तेरा जाजिकहां हम जांहि ॥ दादू देष्या सोधि सब

र। तुम्ह बिन कहीं न समांहिं ॥७॥ आदि अंति लौं
आइ करि॥ सुकृत कछू न कीन्ह॥ माया मोह मद
मछरा॥ स्वादि सबै चित दीन्ह॥ काम क्रोध संसै स
दा॥ कबहूं नांउं न लीन्ह॥ पाषंड प्रपंच पाप मैं॥ दा
दू ऐसे बीन॥८॥ दादू बंधन सूं बंधिया एक बि
चारा जीव॥ अपणौं बलि कछू है नहीं॥ सोंमंगाहारा
पीव॥९॥ दादू बंदीवांन है॥ तूं बंदिछोड दिवांन॥
अब जिनि राषहु बंदि मैं॥ मीयां मिहरवांन॥१०॥
दादू अंतरि कालिमां॥ हिरदै बहुत बिकार॥ प्रग
टि पूरा हरि करि॥ दादू करै पुकार॥११॥ सब कुछ

व्या पै रांमजी ॥ कछू कहा नांही ॥ तुम्ह थैं कहा छि
पाई ऐ ॥ सब घट पैमा मांही ॥ १३ ॥ सब तजी नैं मन मेरे हैं
रांम बिसरि क्यूं जाइ ॥ यहु तन पर हाथ कै लूं सहै ॥ सांई क
रैं सहाइ ॥ १४ ॥ राखणहारा राखि है ॥ यूं कैं मन मेरा
राखि ॥ तुम्ह बिन दूजा को नहीं ॥ साधू नैं ते साखि ॥ १
५ ॥ माया बिषै बिकार थैं ॥ मेरा मन न भागै ॥ सोई की
जै सांईयां ॥ तूं मन लागै ॥ १५ ॥ सांई दीजै सो रती
तूं मीठा लागै ॥ दूजा षारा होइ सब ॥ सूता जीव जा
गै ॥ १६ ॥ जे साहिब कूं भावै नहीं ॥ सो हम थैं जिन
होइ ॥ सतगुर लाजै आपणां ॥ साध न मानै कोइ

॥१७॥ जूं आपै देषै आपकूं। सो नैंनां दे मुझ॥ मीरां
मेरा मिहरि करि। दादू देषै तुझ॥१८॥ दादू पछिताव
रह्या। सके न ममहर लाइ॥ अरथि न आया राम के।
यहु तन यौं ही जाइ॥१९॥ कहतां सुणतां दिन गये
कै कछू न आया। दादू हरि की भगति बिन। प्राणी प
छितावा॥२०॥ सो कुछ हम थें नां भया। जा परि री
झै राम॥ दादू इस संसार मैं। हम आये बेकाम॥२१॥ दा
दू कहै छिन छिन मैं तन मन गति दे॥ छिन छिन मैं तन म
नांऊं॥ छिन छिन मैं तन मन हदे। मैं बलिहारी जांउं॥२२॥
साईं सत संतोष दे॥ भाव भगति वेसास। सिदक सबूरी

साचदे ॥ मांगै दादू दास ॥ २३ ॥ सांई सेसैं हूरि करि
करि संक्या का नास ॥ जांनि नर्म उ विश्वास उपजारं
न ॥ सेपिता सहजि प्रकास ॥ २४ ॥ नांहीं प्रमसर्वे घोर
स्या ॥ है सो रस्यो जु काढ ॥ सांईयां पड दादू हरि करि
मै कै प्रगट आइ ॥ २५ ॥ दादू माया प्रगट हैर ही ॥
यौं जे हो तारांम ॥ अरस प्रस मिलि जि वेलत ॥ सब जी
व सब हीं गाजें ॥ २६ ॥ दया करै तब अंग मै जागावे ॥
आति अंग पंकत देवै ॥ दादू दरसन आप भ केला
हूजा हरि सब लेवै ॥ २७ ॥ दादू साध सिषावै आत्मा
सेवा दिढ करि लेह ॥ पारब्रह्म सौं वीनती ॥ दया

करिहर संनेहु ॥२८॥ साहिब साध दयाल हैं ॥ हं
म ही अपराधी ॥ दादू जीव अजाणियां ॥ अबिद्या
साधी ॥२९॥ सब जीव तोरै राम सौं ॥ पैरा मन जोरै
दादू काचे ताग ज्यूं ॥ टूटै त्यूं जोरै ॥३०॥ फटा फे २
रि संवारि करि ॥ ले पहुंचावै ठौर ॥ ऐसा कोई ना
मिलै ॥ दादू गई बहोरि ॥३१॥ ऐसा कोई ना मि
लै ॥ तन फेरि संवारै ॥ बूढे थैं बाला करै ॥ षेकाल
निवारै ॥३२॥ गलै बिलै करि बीनती ॥ एक मेक
अरदास ॥ अरस परस कर राषि करै ॥ तब दरवेश दा
दूदास ॥३३॥ सांई तेरे डरि डरौं ॥ सदा रहैं भै भीत

अजा सिंघ जंनूसे घणां ॥ दादू लीया जीत्य ॥ नु४ ॥ दा
दू पलक मांहिं प्रगट सही ॥ जे जन करै पुकार ॥ दी
न दुषी तब देषि करि ॥ अति आतुर तिहिं बार ॥ नु
५ ॥ आगै पीछै संगि रहै ॥ आप उगै पैन्हार ॥ साध
ड षी तब दूर दुषी ॥ ज्यौं सासि रजंन हार ॥ नु६ ॥ सेवू
ग की रष्या करै ॥ सेवग की प्रतिपाल ॥ सेवग को बा
हरि न चढै ॥ दादू दीन दयाल ॥ नु७ ॥ दादू काया नां
वै समद मैं ॥ औघट बूडै आइ ॥ इहिं औसरि एकै
अगाध बिन ॥ दादू कवण सहाइ ॥ नु८ ॥ प्रभु तन
मेरा मैं जन ताकूं करि लेघै तीर ॥ मेरा बिन के

सेंतिरैं ॥ दादू गहर गंभीर ॥ ३९ ॥ पंच पपरो हंन सिध
जत्र ॥ भवसागर संसार ॥ रांम बिनां सूझै नहीं ॥ दादू
षेवं सागर पार ॥ ४० ॥ यकु घट मोहि ओघार मैं ॥ दरियावां
रेंन पार ॥ ऐसै जीतन नयंन कटे षिकरि ॥ दादू करी पुका
र ॥ ४१ ॥ कलिजुग घोर अंधार है ॥ तिसका वार न पा
र ॥ दादू उम कोई बिन कूं तिरैं ॥ संमरथो सिरजनहार ॥ ४
२ ॥ काया के बसि जीव है ॥ कसि कसि बंध्या मांहि ॥
दादू आतम रांम बिन ॥ कूं ही छूटै नांहि ॥ ४३ ॥ दादू
प्रांणी बंध्या पंच सूं ॥ कूं ही छूटै नांहि ॥ नीधणियां या
मारि ये ॥ यकु जीव काया मांहि ॥ ४४ ॥ दादू कहै तु म्ह

बिंन धणी न धोरी जीव का ॥ यौं ही भ्रमैं जाइ ॥ जे हूं सांई
सति है ॥ तौ बेगा पूगा टि भ्राइ ॥४५॥ नी धणियों भ्रमैं या भ:
रिये ॥ धणी न धोरी को इ ॥ दाइ सो कहि मारिये ॥ साहिब
सिर पर है हाइ ॥४६॥ रांम बिमुष जु गिजु गि डसी ॥ लष
चौरासी जीव ॥ जांमें मरै जगि भ्रमैं वै ॥ रांम ष्याह्या रासी
व ॥४७॥ संम्रथ सिर जंदार है ॥ जे कुछ करै सु होइ
दाइ सेवग राषि ले ॥ कालं न लोगै को इ ॥४८॥ सांई
साचा नांउं दे ॥ जातन फाल मिटि जाइ ॥ दाइ दूति रन्मे
कै रहै ॥ कब हूं काल न षाइ ॥४९॥ कोई न दीक
रतार बिन ॥ प्राण नधार रांम हार ॥ जीप राउ सिपा रांम

बिंन ॥ दादू डूबंहि संसार ॥५०॥ जिंनकी रषा तूं करैं ॥ ते
उबरे करतार ॥ जे तैं छाडे हाथ थैं ॥ ते डूबे संसार ॥५१
राषणहारा एक तूं मारणहार अनेक ॥ दादू के दूजा
नहीं ॥ तूं आपै ही देष ॥५२॥ दादू जग ज्वाला जम
रूप है ॥ साहिब राषणहार ॥ तुम्ह बिचि अंतर जिनि
पडै ॥ तायैं करौं पुकार ॥५३॥ जहां तहां बिषै बिका
र थैं ॥ तुम्ह ही राषणहार ॥ तन मन तुम्ह कौं सौंपि
या ॥ साचा सिरजनहार ॥५४॥ दादू कहै गरक रसा
तलि जात है ॥ तुम्ह बिन सब संसार ॥ कर गहि कर
ता काढि ले ॥ दे अवलंबन आधार ॥५५॥ दादू दौं

लागीजगपरजैसै॥ घटिघटिसबसंसारहैमैथैंकछू
नहोतहै॥ बरसिबुझेंवणाहार॥५६॥ आत्मजीवं
कंनाथसब॥ करतारनबारै॥ रामनिहोराकीजि
ये॥ जिनकाहूमारै॥५७॥ अनरसजिमींऔजूदमैं
तहांतपैंअफताब॥ सबजगजलतातैबिकरि॥ दा
हूपुकारैसाध॥५८॥ सकलजगतुकूनेसबैआतमा॥
निरबिषकरिहरिलेहु॥ परदाहैसोदूरिकरि॥ कुस
मजरहणनदेहु॥५९॥ तनमननिरमलआत्मा
सबकाहूकीहोइ॥ दादूबिषैबिकारकी॥ बातन
बूझैकोइ॥६०॥ संमथधोरीकंधधरि॥ रथलेवो

रि निश्चा हि ॥ मारग मांहिं न मेल्हिये ॥ पीछे बिड़ दल
आइ ॥६१॥ दादू गगन गिरै तब को धरै ॥ धरती धर
छंडै ॥ जे तुम छाड़ौ राम रथ ॥ कंध को मंडै ॥६२॥
दादू अंबर वे छूटत गगन न थें छूटै ॥ कहां धरैं निकृहां गा
म ॥ लागी सुरति अंग थें छूटै ॥ सो कत जीवे राम
॥६३॥ अंत्रजामी एक तूं ॥ आतम के आधार ॥ जे तु
म छाड़ौ हाथ थें ॥ तो कवण संबाहणहार ॥ तेरा
सेवग तुम लगैं ॥ तुम हीं मांथे भार ॥ दादू बूडत रां
म जी बेगि उतारो पार ॥६४॥ दादू जीव रे जक नहीं
बिश्राम न पावे ॥ आतम पाणी लूण ज्यूं ॥ ऐसे हो

रनआवै॥६६॥दादूतेरीषूबीषूबहै॥सबनींका
लागे॥सुंदरिसोभाकाढिलै॥सबकोईभागेतुम्हकहै
तैसीकीजियो॥तोछूटैंगेजीव॥हमसांत्रैसाजि
नकरैं॥मैंमरकैजाऊंपीव॥६७॥अनाथोंका
आसरा॥निरधारांआधार॥निरधनकाधनरांम
है॥दादूसिरजनहार॥६८॥साहिबदरिदादूष
डा॥निसदिनकरैपुकार॥मीरांमेराम्हिरिकरि
साहिबदेदीदार॥६९॥दादूप्यासाप्रेमका॥साहिब
रांमपिलाइ॥प्रगटप्यालादेहुभरि॥मृतकलेहुजि
लाइ॥७०॥अलाआलेनूरका॥भरिभरिप्याला

लोटेकु॥ हंम कूं प्रेम पियालाह कारि॥ मति वाला कारि
लेकु॥१०१॥ तुमकौं हम सेवक तहैं॥ हंम कूं तुमकूं
मानो हिंदाह कूं जिन पुहरै॥ हूं रकु नैनकुं मोहिं
॥१०२॥ तुमकपैं लबहीहो हमन॥ हरमपुमवहील
हंमपैक बकूं नहोहगा॥ जेवीचे जुगकाल॥१०
३॥ तुमही थें तुमकौं मिले॥ पेकं पलक में न्हा
ह॥ हंम थें कबकूं न होहगा॥ कोटिक कलप जेजा
हु॥१०४॥ माहिं वसू मिलि छिपे लतै॥ होता प्रेम स
नेह॥ दादू प्रेम सनेह बिन॥ घरीकहे लोरेह॥१०५
माहिं वसौं मिलि छिपे लतै होता प्रेम सनेह॥ प्रगट

दरसन देषते ॥ दादू सुषिया देह ॥१८६॥ अम्बा पाअं
परे पार की ॥ बसि अंबर करतार ॥ हरे पटंबर पहरि
करि ॥ धरती करै सिंगार ॥ बसुधा सब फूलै
फलै ॥ प्रिथी अनंत अपार ॥ गगन गरजि जल
थल भरे ॥ दादू जै जै कार ॥१८७॥ काला मुंह क
रि काल का ॥ सांई सदा सुकाल ॥ मेघ तुम्हारे घरि
घणां ॥ बरसहु दीन दयाल ॥१८८॥ तुम्ह कौं भा
वै और कछु ॥ हम कछु कीया और ॥ मिहरि करौ
तौ छूटिये ॥ नहीं तो नांही ठौर ॥१८९॥ मुझ ज्ञा
वै सो मैं कीया ॥ तुम्ह भावै सो नांहि ॥ दादू गुनहगा

रहै मैं देष्या मंन मांहिं ॥८०॥ षुसी तुम्हारी त्यूं क
रौ हम तौ मांनी हारि ॥ भावै बंदा बकसि ये ॥ भा
वै गहि करि मारि ॥८१॥ दादू जे साहिब लेषा लीया
तौ सीस काटि सूली दीया ॥ मिहरि मया करि फिल
कीया ॥ तौ जीये जीये करि जीया ॥८२॥ इति बि
नती का अंग संपूर्णं ॥ अंग ३४ ॥ साषी २६
थसी ॥ अथ साषीभूत का अंग ॥ दादू नमो नमो नि
रंजनं ॥ नमसकार गुरदेवत: ॥ बंदनं सब साधवा
प्रणामं पारंगत: ॥१॥ सब देषणहारा जगत का
अंतरि रहै साषि ॥ दादू साबति सो सही ॥ इजा

श्रीरंनरायि ॥ २ ॥ मांडीथैंमुकुंकोंकहै ॥ अंतर
जामीआपु ॥ दाहू ज्ञाधंथहै ॥ साचामे राज्ञाप
३ ॥ करतुहैसाकेरेगा ॥ दाहूसाम अनुत ॥ कौति
गहाराकिरहा ॥ अंगरकरताअवधूत ॥ ४ ॥
आपअकेलासबकरै ॥ घटमेंलहरिउगाह · दा
हूसिरिटेज्ञाबूके ॥ यैंआराहोइजाइ ॥ ५ ॥ आपःअ
केलासबकरै ॥ औरोंकेसिरिदेइ ॥ दाहूसोजा
दसकौं ॥ अपणांनांवनलेइ ॥ ६ ॥ दाहूराजस
करिउतपतिकरै ॥ सातगकरिप्रतिपाल ॥ तां
मसकरिप्रलैक ॥ निरगुणाकौंन्यगहार ॥ ७ ॥

दादूब्रह्मजीवहरिआतमांसौं॥पेलैगोपीकांन॥सक
लनिरंतरिभरिरह्या॥साषीभूतसुजांन॥८॥
जौमंनमरदांनासोनिकरि॥एकप्यंडबंणाया॥सो
ईदीयाजीवकूं॥लेजगमेंआया॥विषअंमृतसम
बयावकपांणी॥सतगुरसमझाया॥मनसाबाचा
क्रमनां॥सोईफलपाया॥९॥दादूजोगौबूझैजी
घमल॥गुणऔगुणकीजै॥जोगिबूझिपावक
पैडे॥दईहोसवजूटीजै॥मनहीमांहैकैमरै॥जीवै
मनहीमांहिं॥साहिबसाषीभूतहै॥दादूदूसरनां
हिं॥१०॥दुयानवतामिरजीवकै॥दोवेदमहीमांहिं

दादू करता करि रह्या ॥ सो सिर दीजै नांहि ॥११॥ प्र
माण थंभ राषिये ॥ कीजै प्रउपगार ॥ दादू सेवग सो
भला निरंजन निरकार ॥१२॥ जिस का तिस कूं
दीजिये ॥ सुकरत प्रउपगार ॥ दादू सेवग सो भला
सिर नहीं लेवै भार ॥१३॥ करता कै करि कूं ब
कै रै ॥ उस मांहि वधावै ॥ दादू उसकूं पूछिये ॥ उत
र नहीं आवै ॥१४॥ सेवा सुकित सब गया ॥ मैं मेरा
मन मांहि ॥ दादू आपा जब लगैं ॥ सांहिब मानैं ना
हिं ॥१५॥ दादू केई उतारैं आरती ॥ केई सेवा करि
जांहि ॥ केई आइ पूजा करैं ॥ केई षुलावैं षांहि ॥ के

ई सेवग्राकै रहै ॥ कोई साधु संगति मांहिं ॥ केई स्राइ टद
समनं करै ॥ हंमपै ऐसो होता नांहिं ॥१६॥ नांहं मकरैंक
रांवैं स्रारती ॥ नांहं मपीवैं पिलावैं नीर ॥ करै करा
वै सांईयां ॥ दाइ सकल सरीर ॥१७॥ करै करावै सां
ईयां ॥ जिनि सिरीया स्रोजूद ॥ दाइ बंदा बीचि है ॥ सो
ताको मौजूद ॥१८॥ देवै लेवैं सब करै ॥ जिनि सि
रजे सब लोइ ॥ दाइ बंदा महल मैं ॥ सो ताकै सब को
इ ॥१९॥ दाइ जूवा षेलै जो नराइ ॥ ताकों लेषै न को
इ सब जग गै बैगा जीति करि ॥ काइ लिपति न सोइ
॥२०॥ इति साषी जूदका अंग संपूर्ण ॥ अंग ५५ ॥
सा षी २६ ॥ अथ बेली का अंग ॥ दाइ मोना

निरंजनं ॥ नमसकार गुरदेवतः बंदनं सर्व साधवा ॥ प्र
णामं पारंगतः ॥१॥ दादू अंम्रत रूपी नांव लै ॥ आतमत
त पोषै ॥ सहजैं सहज समाधि मैं धरणी जल सोषै ॥ पस
रै तीनूं लोक मैं ॥ लिपति नहीं धोषै ॥ तो फल लागे स
हज मैं ॥ सुंदरि सब लोकै ॥२॥ दादू बेली आतमां ॥ सह
ज फूल फल होइ ॥ सहजि सहजि सतगुर कहै ॥ बूझै
बिरला कोइ ॥३॥ जे साहिब सींचै नहीं ॥ तौ बेली कु
मलाइ ॥ दादू सींचै सांईयां ॥ तौ बेली बधती जाइ ॥४
दादू जोति चमकै झिलमिलै ॥ तेज पुंज प्रकास ॥ अंम्र
त झरै रस पीजिये ॥ अंम्र बेलि आकास ॥५॥ हरि
तरवर तत आतमां ॥ बेली करि बिसतार ॥ दादू लागै अंम्र

म फल ॥ को साधू सींचणहार ॥ ६ ॥ दादू सकासं घड़ा
का है न हरिया होइ ॥ आपै सींचे अमीरस ॥ सू फल फ
लिया सोइ ॥ ७ ॥ कदे न सूके रूं घड़ा ॥ जे अमृत सीं
च्या आप ॥ दादू हरिया सो फलै ॥ कबहूं न व्यापै ता
प ॥ ८ ॥ जे घट रोपे रांमजी ॥ सींचे अमी अघाइ ॥ दा
इ लागै अमर फल ॥ कबहूं सूकि न जाइ ॥ ९ ॥ हरि
जल बरषै बाहरा ॥ सूकै काया खेत ॥ दादू हरिया हो
इगा ॥ सींचणहार सुचेत ॥ १० ॥ दादू अमर बेलि है आतमा
खार समंद मां मांहिं ॥ सूकै खारे नीर सूं ॥ अमर फल ला
गै नांहि ॥ ११ ॥ दादू बहुगुणवंती बेलि है ॥ अमी काल
नायै फिलि लै नांहि ॥ १२ ॥
र संगहि ॥ सींचै खारे नीर सूं ॥

बकुंगुणाकंतीनिलिहे॥ मींगीधरतीन्राहि॥ मींगापी
रांसीचिऐ॥ दाहूंअंब्रम्रफलषाइ ॥१३॥ अंम्रततै
लीब्राहिऐ॥ अंम्रतकाफलहोइ॥ अंम्रतकाफ
लषाइकरि॥ मुवानसुणिऐंकोइ ॥१४॥ विषकी
बेलीबाहिऐ॥ विषहीकाफलहोइ॥ विषहींका
फलषाइकरि॥ अंम्रतनहींकालिकोइ ॥१५॥ त
रवरसाषामूलविंन॥ धरतीपरिनाहीं॥ अंबिच
लअंम्ररअंमंनतफलसोषाइषांहीं ॥१६॥ तरव
रसाषामूलविंन॥ धरअंबरन्यारा॥ अविनासी
अंनतफलसोषाइकाप्यारा ॥१७॥ तरवरसाषामू
लविंन॥ [illegible] हिता॥ [illegible]

फल सो दादू पाहिला ॥१८॥ तरवर साषा मूल बिन उ
धपति न्यारे नांहिं ॥ रहिता राम बिना राम फल ॥ दादू
ऐन कछू मांहिं ॥१९॥ प्राण तरवर सुरति जड़ ॥ ब्र
ह्म भोमि ता मांहिं ॥ रस पीवै फूलै फलै दादू याके नां
हिं ॥२०॥ सतगुर संगति नीपजै ॥ साहिब सींच
णहार ॥ प्राण वृष पीवै सदा ॥ दादू फूलै अपार ॥
॥२१॥ दया धरम का रूषडा ॥ सत सूं बधता जाइ ॥
संतोष सूं फूलै फलै ॥ दादू अम्रत फल षाइ ॥२२॥
बेली कौ अंग संपूर्ण ॥ अंग २४॥ साषी
॥इति अथ अबिहड़ का अंग ॥ दादू मोनै मो
२८२१ अ पछ अबिहड़ का अंग ॥ दादू मो नै मो
ता सो कोइ गुरु देव दे ॥ नंद नंद अब साधवा

प्रेणां मपारंगत: ॥१॥ दादू संगी सोई कीजिये जे क
लि अजरावर होइ ॥ ना वहु मरै न नी मरै ॥ ना उस
व्यापै कोइ ॥२॥ दादू संगी सोई कीजिये ॥ जे अस्थि
र इहि संसार ॥ ना वहु षिरै न हंम षपैं ॥ ऐसा ले
उ विचारि ॥३॥ दादू संगी सोई कीजिये ॥ सुष दुष
का साथी ॥ दादू जीवण मरण का सो सदा संघाती ॥४
दादू संगी सोई कीजिये ॥ जे कबहूं पलटि न जाइ
आदि अंति बिहडै नहीं ॥ तासनि यहु मन लाइ
॥५॥ दादू माया बिहडै देषतां ॥ काया संगि न जाइ
कित्रम बिहडै बावरे ॥ अजरावर ल्यौ लाइ ॥६॥
दादू अविहड आप है [illegible] ॥ अमर [illegible] उपावणहार [illegible]

नासी आपै रहै ॥ जिनसैं सब संसार ॥७॥ दादू अबिह
डू आप है ॥ सांचा सिरजनहार ॥ आदि अंति बिहडै
नहीं ॥ जिनसैं सब आकार ॥८॥ दादू अबिहडै आ
प है ॥ अबिचल रह्या समाइ ॥ निहचल रमिता राम
है ॥ जो दीसै सो जाइ ॥९॥ दादू अबिहड आप है ॥ क
बहूं बिहडै नांहिं ॥ घटै बधै नहीं एकरस ॥ सब उपजि
खपै उस मांहिं ॥१०॥ अबिहड अंग बिहडै नहीं ॥ अ
पलटै पलटि न जाइ ॥ दादू अघट एकरस ॥ सब मैं रह्या
समाइ ॥११॥ कबहूं न बिहडै सो रत्ना ॥ साधू हिरदै म
हि होइ ॥ दादू हीरा एकरस ॥ बांधि गांठडी सोइ ॥१२॥

इतिश्री बिरह कांग्रंथ संपूर्णं॥ अथ मनु ग्रंथ सा
खी २७० ॥ साखी दोह इकतारे सकल मैं च्यारि सैं
हीं॥ सम्मत॥ सबै भेदाहू दयाल नाकै सब बड थी
डे॥ प्रथम राग गौड़ी लिख्यते॥ राम नाम नहीं
छाडौं न्याई॥ प्राण तजौं निकट जीव जाई॥ देखै
रती रती करि जारै मोहि॥ सांई संग न छाडौं तोहि॥
१॥ नावै लै सिर करवत देह॥ जीवन मूरि न छा
डौं तेहि॥ २॥ पावक मैं लै जारै मोहि॥ जैसे मरौं न छा
डौं तोहि॥ ३॥ अब दादू ऐसी बनि आई॥ मिलौं
गोपाल निसान बजाई॥ ४॥ १॥ राम नाम जिन छा

डौ॥

है कोई॥ रामकहतजननिर्मलहोई॥टेक॥ रामक
हतसुषसंपतिसार॥ रामैंतिरलैपेपारि॥१॥ रामक नाम
हतसुधबुधिमतिपाई॥ रामनामजिनछाडिकजा
ई॥२॥ रामकहतजननिर्मलहोइ॥ रामनामकहि
कुंसमलछोइ॥३॥ रामकहतकोकोनहोतारे॥
यकुतनदाइप्रांणहमारे॥४॥२॥ कवंणाबिधिपाई
येरे॥ मीतहमारासोइ॥टेक॥ पामिपीवप्रदेसहैरे॥
जबलगप्रगटैनांहिं॥ बिंनदेषैंउसपाईऐ॥ प्रकुसा
लैमनमांहिं॥१॥ जबलगनैंननदेषिये॥ प्रगटमि
लैनकोइ॥ पेकसेजसंगाहीरदे॥ प्रकुउसमसमान

जाइ ॥२॥ नबलनागनैंड़े हरिहैरे ॥ जबलनागपिछैंनमोहि
नैंननिकटनहींटै छिपे ॥ संगिरहेंक्याहोइ ॥३॥ क
हाकरौंकैंसैंमिलैरे ॥ तलपेमेराजीव ॥ दाहक्मातुर
बिरहणीं ॥ कारंगिक्नपरोंपीव ॥४॥ जीयराकौंरदे
रे ॥ तुम्हारेदरसंनबिनबेहाल ॥ टेक ॥ पड़ंदाक्लेनदरि
करिरहे ॥ हमझीवैंकिंहिंक्माक्षार ॥ सदसंगातीयाीला
अबकेलेकेउबारि ॥१॥ गोपिगुसांईह्वैरहे ॥ अबका
हेनप्रगटहोइ ॥ रामसंनेहीम गिपाड़ज्ञानेंहींकोइ
॥२॥ अंतजामीछिपिरहे ॥ हमकौंजीवैंहरि ॥ तुम्हवि
नब्याकुलकेसवा ॥ नैंनरहे जलपूरि ॥३॥ ब्यापस
[illegible]

पछि न फेर रहे ॥ हम कूं रैनि बिहाइ ॥ दादू दरसन
कारनै ॥ तलफि तलफि जीव जाइ ॥४॥४॥ अजहूं
न निकसै प्राण कठोर ॥ दरसन बिना बहुत दिन
बीते ॥ सुंदर प्रीतम मोर ॥टेक॥ चारि पहर च्यारूं जु
ग बीते ॥ रैनि गंवाई भोर ॥ अवधि गई अजहूं नहीं
आये ॥ कतहूं रहे चित चोर ॥१॥ कबहूं नैंन निरषि
नहीं देषे ॥ मारग चितवत तोर ॥ दादू ऐसैं आतुर बि
रहनि ॥ जैसैं चंद चकोर ॥२॥५॥ सो धन पीव जी सा
जि संवारी ॥ अब बेगि मिलौ तन जाइ बनवारी ॥टे
क॥ साजि सिंगार कीया मन मांही ॥ अजहूं पीव प

तौ जै नांहीं ॥ पीव मिलैं न कंध्रव हनिस जागी ॥ ब्रज कूं
मेरी पलक न लागी ॥१॥ जतन जतन करि पंथ निहा
रैं ॥ पीव ब्रनावे तू आप संवारौ ॥ अब सुष दीजै जांउ
बलिहारी ॥ कहै दादू सुणि विपति हमारी ॥२॥ सोदि
न कब आवैगा ॥ दादू जंन पीव पावैगा ॥ टेक ॥ कंर्
ही आप नें अंगि लगावैगा ॥ तब सब दुष मेरा जावैगा
॥१॥ पीव आप नैं बैंन सुनांवैगा ॥ तब आनंद अंगि न
मावैगा ॥२॥ पीव मेरी प्यास मिटावैगा ॥ तब आप
हि प्रेम पिलावैगा ॥३॥ देव आप नां दरस दिषावैगा ॥
तब दादू मंगल गावैगा ॥४॥१०॥ नैं मन [illegible]

रहिनसकौ हैं रांमजी ॥ टेका ॥ तौरै नांहं चितलाई यारे
कैरौ रंगनगुयाउदास ॥ सांई ये समझाई या ॥ होंसंग्यानलगामौं
यामरे ॥ १ ॥ जां सोंतिलहननबी छुटौरे ॥ जिनपछितावा
होइ गुंणतेरे रसनांजपौं ॥ सुनिसी सांई सोइरे ॥ २ ॥
गौरैं जनमगवाईयारे ॥ चीन्हांनहीं सो सारसूं जड़ूं
येअंचेतहे ॥ अवरं नहीं आधाररे ॥ ३ ॥ पीवकीप्रीति
तौ पाईयारे ॥ जो सिरहीं वे नागा ॥ येतौं अंननतनजांडसी
रहिसी चरनौं लागिरे ॥ ४ ॥ अंननतें मननिवारियारे
मोहिपेकहिं मेंतीकाजरे ॥ अंननतगाऐं सुत्रपजे ॥ मोहि
येक हिं[illegible]राजरे ॥ ५ ॥ सांई सोंसमझैरमौं ॥ आर

नहीं आंन देव॥ नहीं मन बिलंब किया॥ जहां अलख अलख
सेव रे॥८५॥ चरन कवल चित लाई पार रे॥ और हीं दे
भाव॥ दादू जन अचेत है॥ सहजैं हीं आवे रे॥८
६॥ बिरहनि कौं सिंगार न भावै॥ है कोई ऐसा राम
मिलावै॥ टेक॥ बिसरे अंजन मंजन चीरा॥ बिर
ह बिथा याकै व्यापै पीरा॥१॥ नव सत थाके सकल
सिंगारा॥ है कोई पीर मिटावण हारा॥२॥ देह गेह न
हीं सुधि सरीरा॥ निस दिन चितवत चात्रिग नीरा॥
३॥ दादू ताहि न भावै आंन॥ राम बिना भई म्रित
क समान॥४॥८७॥ अब तौ मोहि लागी बाइ॥ इनि

निहचल चित लीयो चुराइ ॥टेक॥ आंन न रूचै
और न ही भावै॥ अगम अगोचर तहां मन जाइ॥ रू-
हं नारे घबरं न कछू के सा॥ तिंन चरनौ चित रह्या स-
माइ॥१॥ तिंन चरनौ चित सहजि समानां॥ सो रस
भीनां तहां मन धाये॥ अब तो ऐसा बनि आई॥ बिष
तजे अंम्रत ल्यौ लाइ॥२॥ कहा करौ मेरा बस नाही
और न मेरे अंग मेसुखाइ॥ पलय कदै हद देखण पावै॥ तो
जन मजन मकी त्रिषा बुझाइ॥३॥१०॥ रे जिन कामे
के सबुवा मेरे और निबाहण हार हो॥टेक॥ और गुण
मेरे टेमि कर॥ नां करि मे लाम न॥ दीनांनाथ दया

तै है ॥ अपराध सेचूक जांनही ॥७॥ हंम अपराधी
जनमके ॥ नखसिख नेरबिकार भरे हैं मोरे औगुन गा
ंगर ते सिर जन हार रहो ॥८॥ मैं जानूं ब कुलवि गरि
हीं यु ॥ अब तुम सों नेकु मंचारि ॥ संग थमे रा सांई यु ॥ रे
औ पे आपन धाम रहो ॥९॥ रन बिसारी के सचा ॥ मैं जान
तू लागो हि ॥ राहु औ रमि माचि लो ॥ अब जिन छांडकु
मा हि हे ॥१०॥ राम सचाविय रे ॥ बिंम म हु हें लीबार
ऐ कमजि मं संनाव रारे ॥ तू के बैठ टमाजा ॥ का टं न हारा
का न हो ॥ एक राम बिन न आजा ॥११॥ ता रवि पद कुचूरे राम
बिन ॥ जो रे जोज नमा हि ॥ गारं न हारा यो पेरु ॥ इंडा को रे

माहि ॥२॥ जौं रपरो हम तौ चलै ॥ तुम्ह केवल सिरजनहार ॥
औ सागर मैं मूडिहे ॥ तुम्ह बिन प्राण अधार ॥३॥ औघट दू
रि याकुं तिरै ॥ को हि पैबै मनुहार ॥ दादू केवट राम बिना ॥ को
जाने तारै पारि ॥४॥१२॥ पार नहीं पाइये रे ॥ राम बिना को निरबा
हणहार ॥टेक॥ तुम्ह बिन तारन को नहीं ॥ दूजा यहु संसा
र पैरत थाके केसवा ॥ सूझै वार न पार ॥१॥ बिषम भया नक
औ जहां ॥ तुम्ह बिन भारी होइ ॥ तूं हरि तारन केसवा ॥ दूजा
नाहीं कोइ ॥२॥ तुम्ह बिन खेवट को नहीं रे ॥ अतिर तिर्यौ न
ही जाइ ॥ औघट भेरा डूबिहै नाहीं आन उपाइ ॥३॥ यहु
घट औघट बिषम है ॥ डूबत माहि सरीर ॥ दादू कायर राम

बिंना ॥ मंननहीबांधेधीर ॥४॥१३॥ कंहूंहंमजीवंदासगुसां
ई ॥ जेतुमकछ्ज्ञानकंमंमरथसांई ॥ टेक ॥ जेतुमकजनकोंम
नहिंबिसारा ॥ तोहूसरकवनसंन्याउनक्षारा ॥१॥ जेतुमकपु
हरिदेहोंनिनारे ॥ तोसेवगजाइकवंनकेद्वारे ॥२॥ जेजनस
वंगावकतबिगारे ॥ तोसाहिबगरवाटोमनिवारे ॥ संमरथ
सांईसाहिबमेरा ॥ दाहूहांमदांनहेतेरा ॥४॥१४॥ कंहूंकहिमि
लैमोकोंरामगुसांई ॥ यहकलिपियामेरहमिनाहीं ॥ टेक ॥ यह
मनमेराटहरसिखावे ॥ नियरेरांमनदेषणपावे ॥ जिन्यासे
हमैदेरसजाम ॥ ईदीन्वागबिधिपेकोंजाग ॥१॥ स्वरुद्धोंमा
चकरेसबंधोजाबे ॥ नैनरूपनवांदेपिसुन्नादे ॥३॥ कं

मक्रोधकष्टनहींछीजै ॥ ज्ञानचिन्तागिरिबिषैरसपीजै
ठाहृदैषिमिलेकूंसांई ॥ बिषैबिकारबसैंमनमांही ॥ ध
१५ ॥ जोरेत्राइरांमरुयानहींकरते ॥ नवक्रानांदपैवट
हरिन्न्रापे ॥ पोबिनकूंनिमतिरते ॥ टेक ॥ करणीकवि
नहोतननहींमोपे ॥ कूंकरियेबिनन्नरते ॥ ज्ञानचिन्ता
गिपरतपावकमैं ॥ आपेआपहिंजरते ॥ १ ॥ स्वादहिंसगि
बिषैनहींछूटै ॥ मनानिहिचलननहींधरते ॥ घाइहलाह
लसुबकेतांई ॥ आपैहींपचिमरते ॥ २ ॥ मैंकांमीकपटी
क्रोधकायामैं ॥ कूंपपरतननहींफरेते ॥ करहतकामसीस
भरिक्रतै ॥ आगाहिंआपबिहरते ॥ ३ ॥ हरिक्रपनांक्रगा

आपनहीछाडि। अपनीआपबिचरतो॥ पितासूंपत
कुंमारै। ताहुयेकुंनतिरंतो॥१६॥ तोलगजिनमारैतुमो
हि। जोलगमैंदेषौंनहींतोहि॥टीका॥ अबकेबिछुरमिल
नकैसेहोइ। हेदिविविधिबकरिनचीन्हैंकोइ॥१॥ दीन
दयालदयाकरिजोइ। सबसुषआनंदउमंगपैंहोइ॥२
जनमजनमकेबंधनपोइ। देषनदाहुअबहनिमरोइ॥
॥श्री॥१७॥ संगनछाडिमेरापांवरूपाव। मेबलितेरेजीव
नजीव॥टीका॥ संगितुम्हारेसबसुषहोइ। चरंनकवल
सुषदेषौंतोहि॥१॥ अनेकजतंनकरिपायासोइ॥ देषौं
नैनकूंतोसुषहोइ॥२॥ सरीरपिंडुरीअंतरवासा॥ चंरस

कव॥ तनहां ठंक निवास ॥२॥ अब दास मनमंत्र नतनका
ह॥ अंतर बेधि रस्यो लोलाइ ॥४॥१०॥ नहीं मेरे कोरां मन
होमेरे कौमें साधी लाधो नहीं मेरे कौं॥ चित तुम सौं बांधों
नहीं मेरे कौं॥टेक॥ मैं तुम का जेता ताबेली॥ हिवैं कि
मनै जाइ समेल्यो॥१॥ साहिबसूंनें मन सौं गांठो॥ चर
न सेमा नौं केहो परिका ढो॥२॥ राषि लिरिदैं मांहरो
स्वामी॥ मैं हि है दासोंमेंत्र जांमी॥३॥ हिवैं न मेरे कौं
रे स्वामी मांहरो॥ दास संतन मुष मेंवू गतां हरो॥४॥११॥ रा
म सुनकौं नबिपति हमारी हो॥ तेरी मूरति की बलिहारी
हो॥टेक॥ मैं जु चरनन चित्त चोहंनां॥ तुम सेवग मा
धरनां॥१॥ तेरे बिन मनतितरं न दिषावनां॥ करिद

यांकं त्रिश्नाबनं ॥२॥ जेनर सुह्व्रिपति सुनां बमां ॥ असुगोबं
द तपति न कांबनं ॥ अथ श्री पदमा ॥ कबु गांन्हां ति जनम मां
नें गुसांई ॥ ते मन जांव सो मैं जांनत नांही ॥ टेक ॥ के ते जनम मां
नें नांचे गायें ॥ के ते जन मांनें लोक रिझायें ॥१॥ के ते जन मांनें
तीरथ न्हायें ॥ के ते जन मांनें मुंड मुंडायें ॥२॥ के ते जन मांनें म
ब घर त्यागी ॥ के ते जन मांनें भये बैरागी ॥३॥ के ते जन मांनें जा
टा बधायें ॥ के ते जन मांनें भसम लगायें ॥४॥ के ते जन मांनें ब
न बन डोलें ॥ के ते जन मांनें मुषें न बोलें ॥५॥ के ते जन मांनें
जप तप कीयें ॥ के ते जन मांनें करवत लीयें ॥६॥ के ते जन मां
नें बहु त्यागियां नी ॥ के ते जन मांनें अधिक ध्यायां नी ॥७॥
जे तुम जांनें सो कहायें ग्याहिं ॥ दादू जन मांनें बहु हिं समजा

र॥४१॥ ३॥ गउडी की साखी॥ दोहा सचु बिन सांई ना मिलै
भावे जैसा बरत गाइ॥ भावे करवत उरधमुख॥ भावे तीर्थ जाइ
॥२४॥ दाहंजे ने समके तो कहों॥ मा चाये कब्बी लेख॥ डा वणान
तज्जिम दृगहि॥ कावि दिसलोवे जेख॥ ३॥ सखी॥ सूहो हो गु नंते
रब्बी आगु गामा रगु साई॥ ३ कंक्रित की कामों में जानत तना
हो हे का सक ३ एगा यकी ये हरि के ते॥ सो हम ब्रिसरि गाये
ब्राए उपा हब्री मिनमु ... बै॥ ता हा प्रति एगाल वनंथेया गु साई
॥१॥ नैमसमह सांति की ये हासजा वे नि॥ उदेरे ब्राधा रहीये॥ बे
नणनजा हांजा हब्ब समके॥ तहां ते राखि लीये हां गु साई॥
॥२३॥ छिनछिजांनि जवनकरि ऐसे॥ सदा समीप रहे॥ बेगम
न्ने

ऊपरकीरउनकेते॥ कबहूंनांहिंकंचनहोइगुसाईं॥ ३॥
कबहूंनांहिंनरहस्मृतनचितवत॥ मायांमांहिंपरे॥ दादू
कृतजिजाहरुगुसाईं॥ बिषियामांहिंजरे॥ ॥१३॥ कैसेंजी
वौपैरे॥ सांईसंगनपास॥ चंचलमनमिहंचलनहीं॥ नि
सदिननफिरैउदास॥ टेक॥ नेहनहींरेरांमका॥ प्रीतिनहीं
प्रकास॥ साहिबकासुमरणनहीं॥ करैमिलनकीआस॥
॥१॥ जिसघटचेंतूंफलियारे॥ पांणीभडवंधणांमास॥ सो
भीजावितबलिजाइगा॥ फूगरजोमबिलास॥ तौजावीजे
जीवूणांसुमरैसासोसास॥ दादूयुगनटपीवमिलै॥ तौअंतन
रिहोइउजास॥ २॥ ७४॥ जीवूरांमरेसुमरिसांई॥ कामक्रो

धमक्षमजिबिकार ॥टेक॥ तूं जिन जूंखे मन गंवार ॥ सिख
ज्ञारं नलीजे मानि निहारि ॥१॥ सुगोंसमझायो बारबार ॥ अ
जहूं न चेतै होउसियार ॥ करि तैसें जवतिरिए पार ॥ दाहूअ
बहो ये द बिचार ॥१॥१४॥ जीयरा चेतो रे जिनि जारे ॥ हे
जें हरिसों प्रीति न कीन्ही ॥ जंनमनं मोलिक हारे ॥टेक
वेरवेर समझायो रे जीयरा ॥ अचेतन होइ गवारे ॥ यज्ञत
नहैका मदकी गुफिया ॥ कछू येक चेति बिचारे ॥१॥ तिज
तिजनु फकों दागि होत है ॥ जेपलरांम बिसारे ॥ अवजारी
दाहूके जीवमे ॥ कछू कैसें करि डारे ॥२॥१५॥ तासुषकों
कहो ध्याकीजे ॥ जाथें पलपल यज्ञत नछीजे ॥टेक॥ अ

संता कुंजर सिरि छत्र धरीजै ॥ नाथे फिरि रिफिरि हिज पसरीजै
॥१॥ सेज संवारि सुंदरि सिंगार संमीजै ॥ घाऽ हत्ना हलत्र रोगि म
रीजै ॥२॥ बंकु बिधि न्ताजै नसो निंसु चितीजै ॥ स्वाद सं
कुंटप नम्मिपासि परीजै ॥३॥ ऐतजि हुइ प्रांप तीजै ॥ सब
सुघर संनारां मरमीजै ॥४॥२६॥ मन निरमल जनतन निर
मल नजाई ॥ ऋ मनु पाछ हवि कार नजाई ॥ टेक ॥ जो मनु का
हुपै सोतन कारा ॥ फटिकि कै रन हूंआ हिंबिकारा ॥१॥ जो
मन बिमुह रसै तो तन भव गा ॥ कंरे तपाछ हि बिषे फुनि सगा
॥२॥ मन कै सो तो तन न ज्ञत्न नांहा ॥ बक्तु तप चिह्ना रे बिकार
न जाई ॥३॥ मन निर्मल मन न निर्मुहा ई ॥ दाहु मांग छिच

१ ले

रेकोई ॥५३॥ मैमेंकरतमबैजगजाबे ॥ अजुहूंअबन

चेतैरे ॥ याकुतुनिपसबंकेछिद्रिहानो ॥ अबहुगयेहैकेतेरे ॥

हे ॥ मैमेरमाअलिरेहेरे ॥ साजनसोईबिसारा ॥ आयाहारा

हाथिअमोलिक ॥ जनमजूवाजहारा ॥४॥ लालचलोभेवा

गिरहेहै ॥ ज्ञानतमेरमेरा ॥ आपहिआपबिचारतनाहा ॥ सू

काकोकोतेरा ॥३॥ आवतहेसबजातादीसे ॥ इनसूलागिज

नमजिनलोवै ॥ सोधिटेछिसचुमाही ॥ ३ ॥ निहीचलसमनम

नेमेरा ॥ साईसबनिआई ॥ दासरोकअूमोरारासाजन ॥ जिनूप

कुमुरकोनाई ॥५॥२८॥ काजाबनोकामरनारेआई ॥ जोति

रामन ॥ रेमासिअघार ॥टेक॥ कासुपसपतिछत्रपतिराजा ॥

वेनषभिजाइहबसेकिहिंकाजा ॥१॥ काविद्यागुनषग्रवगु
रांनां ॥ कामृरिघजैनेतैरामननंजांनां ॥२॥ काआरसकरिन्हद
निसजागे ॥ काफिरिसोवृतरामनजागे ॥३॥ कामुक्ताकां
वेधेहोई ॥ दुह्रामनजांनांसोई ॥४॥ ॥ मेनरेसंमठिंना
तेनकीजे ॥ जेबपूस्तजाईसिलेमाटीमें ॥ तबकछुकेमैकी
जेटेक ॥ पारसपरसिकंचनकरिलीजे ॥ सहजसुरति ॥
सुषरासि ॥ १ ॥ मांयाबंभिनिबिषैफलजांगे ॥१॥ तापरिन्हृत्रिनजा
ई ॥ जेबलगापंड्रायाधिमहैनाका ॥ तबलगतामहिजिनिपूछे
यकं संसारसैंबलकेसुषज्यूं ॥ तापरिब्रेजिनिफूलै ॥२॥ क्यों
मरयेदजांनिजगाजीवृम ॥ सेमफिटेषिसचुपार्धे ॥ क्यंगा

अनेक अंगीका माहि जु हे॥ ताहु जिं न मस्कावै॥ सा॥ ३०॥ मोसो

मृ मारे थिंवन क्रूधा॥ सुफल नहीं काल के फंधा॥ टेक॥ फं

दे यो फिरत सकल जग मांही॥ सिर सांधि सिर सफल न मांही॥ ४॥

जम सदि धातो तन के गाट॥ कामि चले यो सब बारह बाट॥ ३॥ के

॥ २॥ फंधो न ... न चाह॥ ताहु स्वादि बंधो नो आप॥

॥ ३१॥ काढे मन रांम बिसारे॥ मनि सु ... न मजा ... जी वह

रे॥ टेक॥ मात पिता को है बंधन नाही॥ सबही सु पिता काढ

सगाई॥ १॥ तन धन जो बन फगानी॥ रांम बिरदै धरि सारंग पा

णी॥ चंचल चित वत फुली माया॥ काहे न चेते सो हि अ

३ या॥ ॥ २॥ ताहू तन मन फूले कहिये॥ रांम चरण गहि काहे नर

हियै ॥ भाषा ॥ ऐसा जनम अमोलिक औ नाहि ॥ जो मे अ
इम जैरां मरां ई ॥ टीका ॥ जो मे प्राणी भरम स पावै ॥ सा दासु
हाग से जसु षजी वै ॥ १०॥ आतम आइ राम मे रांता ॥ अछि
अमृ धंन पावै श्रासा ॥ ११॥ प्रगट दरस ... पावै ॥ प्रभ प्रि
य मिलि निमां हिं समावै ॥ १२॥ ऐसा जनम ... नर औचे ॥ सा
कां दास रतन गांवै ॥ भाषा ॥ कंच गा जनम कहे जा
तो है ॥ अरे ना ई शं म ... निक हारा तो है ॥ टीका ॥ मे मे मेरी
इन सं लागि ॥ स्वाद पतंग न सं फे आगि ॥ १॥ हिरिणा सूर
त गर ब मान ॥ कुंजर कामि बंधे ॥ अभिमान ॥ २॥ लोभ
मोह मद माया फंध ॥ अंजन मां न न चेते अंध ॥ ३॥ दास

कतंनथोहिं जाइ॥ रामबिमुखमरिगयेबिलाइ॥५॥ कुं
नमूरिखातेंक्याकीया॥ कुछपीवकारंगलिबैरागनलीया
रतंनपतपसाक्षक्याकीया॥ टेक॥ रेतैंकर्वंतकांसीक
हिंमरणा॥ रेतैंतीरथमांहैंनावहना॥ रेतैंबिंदहनिजंरुडव
नांसहाा॥ ॥१॥ रेतैंपातेलैप्रबतिनांगहना॥ रेतैंआपहिं
आपानांदहना॥ रेतैंपीवपुकारीकहिकहना॥ ॥२॥ होइपा
सेहरिजनलनांपीया॥ रेमूबनरंनफाटोरहिया॥ ॥ छिंगजी
वंनिवाहुरेजीया॥ ॥३॥ क्याकीजेमनिथाजंनमकों॥ रामन
जपहिनिधारा॥ मायाकेमदिमातोबहे॥ जूलिरहेसंसारा
॥६४॥ हिरदैरांमनआवई॥ आवैबिबेबिकारारे॥ हरि
मारा॥ सूकेनहीं॥ ...दरीबारारे॥ ॥१॥ आंपान्न

गंनि जु आप मैं ॥ ताथैं अह निस जलै सरीरो ॥ आव
जगति जावै नहीं ॥ पावै न हरि जन नीरो ॥३॥ मैं मेरी
सब सू कहै ॥ सू के माया जालो रे ॥ राम नाम सू के न दै
अधन सू के कालो रे ॥४॥ ऐसैं ही [illegible] गवाई यौं
जित आया ति न जाये रे ॥ राम रस मांड [illegible] पीया ॥ जन त
इदे तन गाये रे ॥५॥८१॥ इन मैं क्या लीजै क्या डारि जै ॥ अं
तर मंत्र मोलि कं कोजै ॥ टेक ॥ भोवत तनु पिंड मांहे होइ ॥ जा
थैं नहीं कोई ॥१॥ मृग त्रिसनां जल जैसा ॥ चेति दे
खि जग ऐसा ॥२॥ बाजी जग मैं दिखावा ॥ बाजी पारे डह का
वा ॥३॥ दादू संगी तेरा कोई नहीं कि सकै रा ॥४॥८२॥
षालिक जागै जीय तावै [illegible] कर मेरा होइ ॥ टेक ॥

सेज्या पे कंत न हीं मिला ॥ ताथें प्रेम न षेला ॥१॥ सांई संगति
पाया ॥ सोवत जनम गंवाया ॥१॥ गाफिल नींद न कीजे
आव घटै तन छीजै ॥ दादू जीव अयानां ॥ फूवे न म्यैतु
हंराना ॥४॥ [illegible] रा ॥ राग जंगली गौडी ॥ पह्लै पद
वैरी साद्वै वरि जि आरीया ॥ तूं आया है इहि संसार वे ॥ माया कार
स पी वै न लगा ॥ विसरया सिरजंनहार वे ॥ सिरजंनहा
र विसारा ॥ कीया पसारा मात पिता कुल नारि वे ॥ कूडी
माया आप बंधाया ॥ चेतै नहीं गंवार वे ॥ गंवार न चेतै
कैसो गुण आके ते ॥ बंधा सब परिवारि वे ॥ दादू दास कहै व
लिंदजारा ॥ तूं आया है इहि संसार वे ॥१॥ हजे पद हरैरै लिंदे

बणिजारिया ॥ हूंरतातरूणीनालिवे ॥ मोसौमोहफिरे
मतिवालां ॥ रामननसकुचासंज्ञालिवे ॥ रामनसंज्ञालेरता
नाले ॥ श्रूधनसफैकालवे ॥ हरिनहींध्यायाजनमगं
वायो ॥ चहदिसफुटातालवे ॥ टक[illegible]सफुटातारनबु
टा ॥ लेछोफिवंतामालेवे ॥ टाफदासवे [illegible] बणिजारा ॥ हूं
रतातरूणीनालिवे ॥२॥ तोजेपहेरेरविणवणिजारि
यांतेबकुलतउगायामारवे ॥ जोमनजायोसोकरिज्ञायो ॥ गा
ऊंळकीयाबिचारवे ॥ बिचारंनकीयागांठेनकीया
कूंकरिलंघैपारवे ॥ पारंनपावैफिरिपछितावे ॥ फूहै
[illegible]गाधारवे ॥ फुंबेगालगानेशजगा ॥ हाथिनसायां

मारवे ॥ दूषासुणसक हे बणिंजारा ॥ नैं बकृत नगाया नारे
वे ॥ ३ ॥ चौथै पहरै रैणि दै बणिंजारिया ॥ नूं पकाङ्कवांपी
रवे ॥ जो बं न गाया जुरा बियापा ॥ नाही सुषि सरीरवे ॥ सु
षि न पाई रैणि गवाई ॥ तैं न कंत्रा या नारवे ॥ नो जलन
रा है बंधे लेजा ॥ कोई न बंधी धीरवे ॥ कोई धीरं न वंधै जं
म के फंधे ॥ कंप्र करि लं घेतीरवे ॥ दाइ हास कहे बणिंजा
रा ॥ नूं पकाङ्कवापीरवे ॥ धा ॥ कृपे ॥ काहे रे नर करकै फा
रा ॥ अंति काल घर गोर मंसाण ॥ टेक ॥ पहले बलि दे
तापे विलाइ ॥ ब्रह्मा ब्रह्मा टिम हे सुर जाइ ॥ १ ॥ ब्रह्मा गो हो
ते मोदे मोरगापेद्धा फिपैं कं बर घीर ॥ २ ॥ का चीटे हक

हागरबांनां ॥ जेउपज्यासोसबैबिलांनां ॥ य ॥ दादूअंम
रचपांउंणाहार ॥ आपहिआपदैकरतार ॥४४४०॥
इलघरन्चोरंनमूसेकोई ॥ अंतरिहैजेजांणेसोई ॥४१
जागकोरेजननतनजाई ॥ जागतहैतैसहजसमाई
जंतनजतनकरिराषौंसार ॥ तसकरउपजेकौणबि
चार ॥२॥ इबककरिराहजांणौंजे ॥ तौसाहिबसरनां
गतिलेह ॥४४४२॥ मेरीमेराककरतंजगषीनमा ॥ देष
तहीचलिजावै ॥ कांमक्रोधत्रिष्णांतननजालै ॥ ताथै
पारनपावै ॥३का॥ मूरिषममंतांजानसमावै ॥ नू
निरहेइहिबाजी ॥ बाजीगरकौंजांनतनांहीं ॥ जन

मगंकोबेभारी ॥१॥ पुंपंचांपचकैरेबूकेतेरा॥ कालकु
टबकेतांई॥ बिभुकेस्वादसबेये लोगा॥ तांछेंचोन्हतना
ली॥११॥ एताजायमेजांनतनांहीं॥ न्हाइकहाछनिजावे
सुरिमुयोइहकोवे ॥१॥ ऐसब
श्रेणोपोछेम...नांही॥ सोईपेकछमा
समेमानेन्नलपोचे॥ सोपिलेकसोसाई॥
गछेनकोजिरोरे॥ ग
रासाजंन॥ दाइइमरनांहीं॥१४॥
रेबोहोइछिनास॥ गछेगोचांदनांमिले॥ गछेन्नकनिवा
म॥टिका॥ गछेरसातलिजाइये॥ गछेघोरन्त्रंधार॥ गछ
बेजोजंथपमूबिहै॥ गछेवारनपार॥१॥ गछेपारनपा
इये॥ गछेजमपुरिजाइ॥ गछेकोकछेनदी॥ गछेवं

बेस्वास ॥२॥ ऐसैं न्यावं न उपजै ॥ ऐसैं आतम न होइ
ऐसैं पीव कूं पाईये ॥ तन बकरै जिन कोइ ॥ ३१ ॥ ऐसैं
बकत बिनास है ॥ ऐसैं बकत बिकार ॥ दादू ऐसैं बकन
को ज्रिये ॥ मन मुष मिजै न हार ॥ ... कू सिरजन
रहौ मन मोरे ॥ साई सतगुर तारै ॥ ॥ टेक ॥ माया का
सुष न्यावै ॥ मूरिष मन बौरावै रे ॥ १ ॥ झूठ साच करि जा
नां ॥ इंद्री स्वाद सुं लपटानां रे ॥ २ ॥ उ ष कं सुष करि मानै ॥
काल झाल नहीं जानै रे ॥ दादू कहि समझावै ॥ यह
औसर बहुरि न पावै रे ॥ ३ ॥ ४४ ॥ नै हैं हैं है नै हैं नै रां ॥ मैं
नहीं मैं नहीं मैं नहीं मेरा ॥ टेक ॥ नै है नै राजा मै नटणा ॥

या॥ मैं मैं मेरा बहु नाया॥१॥ तूं है तेरा सकल पसारा॥ मैं मैं मेरा क या
है गंवारा॥२॥ तूं है तेरा सब संसारा॥ मैं मैं मेरे तन सिर भारा॥
॥३॥ तूं है तेरा काल न खाइ॥ मैं मैं मेरा मरि मरि जाइ॥४॥ तूं
है तेरा रह्या समाइ॥ मैं मैं मेरा गया बिलाइ॥५॥ तूं है तेरा
तुम्ह ही मांहि॥ मैं मैं मेरा मैं कुछ नांहि॥६॥ तूं है तेरा तूं ही
होइ॥ मैं मैं मेरा मिथ्या न कोइ॥७॥ तूं है तेरा लंघे पार॥ दाइ
पाया ज्ञान बिचार॥८॥ ५५॥ साहिब जी सति मेरा रे लो
गक थें बहु तेरा रे॥ टेक॥ जीव जनम अमोल बपाया॥ मस्तकि
लेख लिखिया यारे॥१॥ घटै बधै कुछ नांही॥ कर्म लिख्या जस
मो हारे॥२॥ बिधाता बिध कीन्हां॥ सिर जिस बनिकं ही को

रे ॥३॥ समरथ सिरजनहारा । सो तेरे निकटि गंवारा रे ॥४॥
सकल लोक फिरि आवै । तो दादू दरस न पावै रे ॥५॥४॥ ६८॥
पूरि रह्या प्रभु सब मैं तेरा । अलख माया देखि बकत तेरा ॥ टे
का ॥ सिरजनहार सहज मैं देख । तो का है धाइ करि जाइ अं
न लेह ॥१॥ विसंभर सब जग को पूरै । तो तूं इह का जिन दू
का है क्यूरे ॥२॥ पूरि कर पूरा है गोपाल । सब की चीत करै
इ हाल ॥३॥ समरथ सोई है जगनाथ । दादू है पूरन हीं संग
साथ ॥४॥४॥६०॥ तें मन धन पाया न तन छूटै रे । अपरंपार पार
नहीं आवै । आथि न छूटै रे ॥ टेका ॥ तन मन कर लै इह न पाव
क जालै । प्रेम न छूटै रै ॥१॥ चढि दिस पवन समथो बिनर

षवाले ॥ चोरं नलूटैरे ॥ हरिहीरा है रांमरसाइन ॥ अस
नमूकैरे ॥ २ ॥ वाइअोर अाथिबकतेरा ॥ तुमेनकूटैरे
॥ ३ ॥ ६ ॥ रांमबिमुषजगमरिमरिजाइ ॥ जीवैंसंतरहैल्यो
लाइ ॥ टेक ॥ लीन भये ते अमर रांमां ॥ सदासजीवनकी
येनांमां ॥ १ ॥ अमत रांमरसाइंनपीया ॥ ताथैंअमरकबी
राकीया ॥ २ ॥ रांमरांमकहिरांमसनेंनां ॥ जनरैदासमि
लेन्यारानां ॥ ३ ॥ अाटिअतिकैतेंकसानिजागे ॥ अमरन
येअबिनांसीलागे ॥ ४ ॥ रांमरसांइनसहमाते ॥ अबिच
लनयेरांमरंगिराते ॥ ५ ॥ ४९ ॥ निकटनिरंजनलागि
रहे ॥ तबहंमजीवतमुक्तिभये ॥ टेक ॥ मरिकरिमुक्तज

हाजगजाइ॥ तहांनमेरामनपतियाये॥ १॥ अगोजन
मलहैश्रोतारा॥ तहांनमांनेंमनहमारा॥ २॥ तनछूटे
गतिजोपदहोइ॥ मृतकजीवमिलेसबकोइ॥ ३॥ जी
वतजनमसुफलकरिजांनां॥ दादूरांममिलेमनमां
नां॥ [illegible]॥ काइकुदरतिलषीनजाइ॥ कहांथेंउपजे
कहांसमाइ॥ टेक॥ कहांथेंकीन्हंपवनअरूपांणी
धरणिगगनगिरितिजाइनजांणी॥ १॥ कहांथेंकायाप्राण
प्रकासा॥ कहांपंचमिलिएकनिवासा॥ २॥ कहांथें
एकअनेकदिषावा॥ कहांथेंसकलएककैआवा
३॥ दादूकुदरतिबडतहैरांनां॥ कहांथेंराषिरहेर

हिमांनां ॥६॥५१॥ न[illegible] की साषी ॥ रहै निराला सबक
है ॥ काहू लिपति न होइ ॥ आदि अंति चौंनैं छेदे ॥ ऐसा
समुण साइ ॥१॥ सुरमन दी सब कुछ करै ॥ जो कहि लिख
राषनाइ ॥ कोतिन दारां किरह्या ॥ सब कुछ देतानां
इ ॥१॥ प्रभु ॥ ऐसा रांम है मोरे आवे ॥ वार पार कोई अं
तन पावे ॥ टेक ॥ हलका भारी कह्या न जाइ ॥ मोल
मांपनहार ह्या संमाइ ॥१॥ कीमति लेषा नहीं परवांण
सब पचि हारे साध सुजांण ॥२॥ आगो पीछो परमति नां
हीं ॥ केते पारिष आवहिं जांहीं ॥३॥ आदि अंति मधि
कै है न कोइ ॥ दादू देषै अचरिज होइ ॥४॥५२॥ प्रभु ॥
कौं ण मन बंदे कौं ण पूजणहार ॥१॥ कोण सुरति कक

कौंण बिचार ॥ टेक ॥ कौंण सज्ञाता कौंण गियांन ॥ कौं
ण उंनमनी कौंण धयांन ॥ १ ॥ कौंण सहज कक कौंण
समाधि ॥ कवण ग्याति कक कौंण अराध ॥ २ ॥ कवण जा
प कक कौंण अभ्यास ॥ कौंण प्रेम कक कौं पियास ॥ ३ ॥
सेवा कौंण कहौ गुरदेव ॥ दादू पूछै अलष अभे
व ॥ ३ ॥ पद ॥ उत्तर की साषी ॥ आपा मेटै हरि भजै ॥ तन मन
तजै बिकार ॥ निरबैरी सब जीव सूं ॥ दादू यहु मत सार
॥ १ ॥ आपा गरब गुमान तजि ॥ मद मंछर अहंकार ॥ ग
हैं गरीबी बंदगी ॥ सेवा सिरजनहार ॥ २ ॥ पद ॥ मैं न
ही जांनौं सिरजनहार ॥ अब है तब ही की करतार ॥
टेक ॥ न सनक वकहां वकहां कर यां ॥ अबगति नाथ

कहौ समझा ॥१॥ कहां मुष नैंनां श्रवनां साईं ॥ जांन
राइ सब कहौ गुसांईं ॥२॥ पेट पीठि कहां है काया ॥ पड
दौ षोलि कहौ गुरराया ॥३॥ जे है तो कहि स्रवजांमी
दादू पूछे सतगुर स्वांमी ॥४॥ पद ॥ उत्तर की साषी ॥ दादू
सबै दिसा सो सारिषा ॥ सबै दिसा मुष बैंन ॥ सबै दिसा श्र
वणौं सुणौं ॥ सबै दिसा कर नैंन ॥१॥ सबै दिसा पग सीस
है ॥ सबै दिसा मन चैंन ॥ सबै दिसा सनमुष रहै ॥ सबै दसा
कैं ठालैं न ॥२॥ प्रस्न ॥ अलष देव गुरदेव बताइ ॥ क
हां रहै त्रिभुवन पति राइ ॥ टेक ॥ धरती गगन निबसकौ
कवलास ॥ त्रिभुं लोक मैं कहां निवास ॥१॥ जल थल पा

वक पवनां पूरि ॥ चंद सूर निकटि के दूरि ॥ ३ ॥ मंदर
कंचन कवूण घर बार ॥ आसंण कवूण कहौ करतार
॥ ४ ॥ अलष देव गति लषी न जाइ ॥ दादू पूछै कहि सम
झाइ ॥ ५ ॥ पद ॥ उतर की साषी ॥ दादू मुझ ही मांहै मैं रहूं ॥
मैं मेरा घर बार ॥ मुझ ही मांहै मैं बसूं ॥ आप कहै करता
र ॥ १ ॥ दादू मैं ही मेरा अरस मैं ॥ मैं ही मेरा थांन ॥ मैं ही मेरी
ठौर मैं ॥ आप कहै रहिमांन ॥ २ ॥ दादू मैं ही मेरे आसिरे
मैं मेरे आधार ॥ मेरे तकिये मैं रहौं ॥ कहै सिरजनहार ॥ ३ ॥
दादू मैं ही मेरी जाति मैं ॥ मैं ही मेरा अंग ॥ मैं ही मेरा जीव मैं ॥ आ
प कहै प्रसंग ॥ ४ ॥ पद ॥ रांम रस मीठा रे ॥ कोई पीवै साध

मे

सुजांण ॥ सदा रस पीवै प्रेम सूं ॥ सो अम्रित नांमी प्रांण ॥ टेक ॥
इहिं रस मुनिं लागे सबै ॥ ब्रह्मा बिसन महेस ॥ सुर नर साधू सं
त जन ॥ सो रस पीवै सेस ॥ १ ॥ सिध साधिक जोगी जती ॥ सती
सबै सुषदेव ॥ पीवत अंत न आवई ॥ ऐसा अम्रत लष अम्र ते
वे ॥ २ ॥ इहिं रस राते नांमदेव ॥ पीपा अम्र रैदास ॥ पीवत क
बीरा नां थाके ॥ अजहूं प्रेम पियास ॥ ३ ॥ यहु रस मीठा
जिनि पीया ॥ सो रस ही मांहि समाइ ॥ मीठे मीठा मिलि रि
ह्मां ॥ दादू अनत न जाइ ॥ ४ ॥ ५८ ॥ मन मतिवाला
मधु पीवै ॥ पीवै बारंबारो रे ॥ हरि रस राते रांम के ॥ सदा
रहै इकतारो रे ॥ टेक ॥ भाव भगति जागी नहीं ॥ काया

कसणी सारोरे ॥ पोताभेरे प्रेमका ॥ सद्गुरु संग धनतधारोरे ॥ १ ॥ दु
रमत्य गति जोबन जैरे ॥ चेतं निचित कंज्ञासोरे ॥ सुमतिक
ताली सारवे ॥ कोई पीवे बिरला दासोरे ॥ २ ॥ ज्ञायाधं न सब सो
पिया ॥ न बरस पाया सोरोरे ॥ ज्ञान छिया लेपा वहां ॥ छिंन छिं
न बार बारोरे ॥ ३ ॥ ज्ञा पाप्न नहीं जांणिं यां ॥ न्है लै माया जाले
रे दास हरिरस जे पीवे ॥ ताकं कटेन लागे कालोरे ॥ ४ ॥ पद ७ ॥ रा
म के रसियां लोग न भये ॥ सकल सिरोवां णिंत द्वागये ॥ टेक
रांमरसांइन सूं नत माते ॥ ज्ञबिच लित नये नरकिं न दी
जाते ॥ १ ॥ रांमरसांइन चरित जो पीवे ॥ सदा सजीवं निं जु
गि जुग जीवे ॥ २ ॥ रांमरसांइन त्रिनवें नसार ॥ रांमरि

सकुसबनसरेपारि ॥७॥ दोहरा ॥ अमलीबकुरिनूआयो
सुषसागरत्तामाहिंसमायो ॥६५८॥ अंछनराकेमरांनि
उअनरतार ॥ तांपैकीजेप्रीतिबिचार ॥ टेक ॥ डुराचार
नारचिनेसबनावै ॥ सीनसाचानहींपीवकंनमोवै ॥१॥ कंत
नमोवेकरैसागार ॥ जिनपतीराकेंसंसार ॥२॥ जौपैपतिब्र
तांभेहैनारा ॥ सोअनन्नावपाघपियारा ॥३॥ पीवपहिचा
नेंअनननकोई ॥ दोहमोहसुदांगतिहोइ ॥४॥ पद ॥
सबकेमनारीएकअनरतार ॥ सबकोईतनिकरैसिंगार
॥टेक॥ घरिघरिअपनैसेजसंवारैं ॥ कंतपियारेपंथनिं
हारैं ॥ आरतिअपनीपीवकंधावैं ॥ मिलैनाहतबअं

गिलागांवै ॥१॥ अतिआतुर ये षोजत फेलें ॥ वांनि परी वि
वोगं निझोलै ॥ सब हम नारी रह्द्दीन ॥ देसु हागाकां हुं सं
गिलीन ॥२॥ ६५॥ सोई सुहागनि साच सिंगार ॥ तनमन ला
इजे भरतार ॥ टेक ॥ नाव न मति प्रेम लयो नावै ॥ नारी
सोई सार सुष पावै ॥१॥ सहज संतोष सील सब आया ॥ तब
नारी नांह कंत मोंलि क पाया ॥२॥ तन मन जोबन सोंपि स
बदीन्हां ॥ तब कंत रिझाइ आप बसि कीन्हां ॥३॥ दादू
बकरि बिवोगनि होइ ॥ पीव संप्रीति सुहागनि सोई ॥४॥
६१॥ तब हम ये कंत ये रे नाई ॥ मोहं नमिलि सांची मान
आई ॥ टेक ॥ पारस प्रसि न ये सुष दाई ॥ तब उतियां उर

मंतिहूरिंगवाई ॥ १ ॥ मल्लियागिरमंरमसिलिपाया ॥ तब
बेसबरंनञ्जुऊलजरंमगावाया ॥ हरिजलनीरनिंकटिजे
बञ्जाया ॥ तबबूंदबूंदमिलिमांहिंसमाया ॥ ४ ॥ नांनांजे
दजमेसबंगागा ॥ तबसहूएकरगोरंगलागा ॥ ३ ॥ दूह ॥ ऋ
लहरांमदूटिगयाजमेमोरा ॥ हिहनुरकजेदकुछनो
हो ॥ दूषांदरसंनतोरा ॥ टेक ॥ सोईप्रांणपुनिंसोई
सोईलोहामासा ॥ १ ॥ सोईनैनंनासिकासोई ॥ सहजेकीक
नगासा ॥ २ ॥ फ्रवंनोसहूबाजदासुणियें ॥ जिभ्यामांगलोगे
सोईजन्धसबंनिकंब्यापे ॥ पेकजुगतिसोईजांणे ॥ ३ ॥ सो
ईसंषवंधपुनिसोईं ॥ सोईसुषसोईपीरा ॥ सोईहस्तपाव

पुनि सोई ॥ सोई ऐक सरीरा ॥४॥ ऐक्क सब्ब पैल षालि कहरि
तेरा ॥ तैं हीं ऐक करि लीन्हा ॥ दादू जुगति जांनि करि ऐसा
तब ऐकै प्रांन पतीन्हा ॥५॥ ८०॥ न्याई रे ऐसा आंपण हंमारा
है पषर हित पंपगादि पूरा ॥ चउबरन ऐकै क्षेत्र धारा ॥ टेक
बाट बिनां टका हूं सैनां हीं ॥ मांहिं जगत थैं न्यारा ॥ सम
दृष्टि सुन्याइ सहज मैं ॥ आपहिं आप बिचार ॥१॥ मैं तैं मेरी
ऐक्क मति नांहीं ॥ फिर बैरा निरकारा ॥ पूरं न सबै देषि आपा
ब ॥ निरालंब निरक्षारा ॥२॥ काहू के संगि मोह न ममिता
संगी सिरजनहारा ॥ मन ही मन सौं समझि सयांनां ॥ आनंद
ऐक अपारा ॥३॥ कांम कलप मांकदेनकीजे ॥ पूरण ब्रह्म

पियारां महिं हिंरदै पथि पंछी पारगा हि दादू॥ सो तत सहज जि
सेभारा ॥४॥६४॥ ऐसो सो षेल न बंन्यू मेरी माई॥ कैसैं कहूं क
छू जांन्यूं न जाई॥ टेक॥ सुरनर मुनिजन अंचिरज आ
ई॥ सो मन्त्र रांम को कन्हे देंन पाई॥ मंदिर मांहे सुरति समा
ई॥ को कहै सो टेक दिषाई॥२॥ मनहि बिचार करो ल्यो
लाई॥ दीवा सं मांनां जोति कहां छिपाई॥३॥ देही निरं
तरि सुवं न ल्यो लाई॥ तहां को पार मैं को पासू तारे भाई॥ ध
दांहन जानें ये चतुराई॥ सोई गुर मेरा जिनि सुधि पाई
॥४॥६५॥ भाई रे घर ही मैं घर पाया॥ सहजि समाइ रह्या
ता मांहीं॥ सतगुर षोज बताया॥ टेक॥ ता घरि का जस

पुनि सोई ॥ सोई ऐक सरीरा ॥ ४ ॥ ऐकइ सब्द षेलन षालिक हरि
तेरा ॥ तैं ही ऐक करि लीन्हा ॥ दाइ जु पति ज्ञानि करि कै स
तब ऐक प्रांन पतीन्हा ॥ ५ ॥ दव ॥ जाइ रे कै सांपथ है मारा
है पषर हित पपग दिपूरा ॥ अबरं न ऐक अक्षरा ॥ टेक
बाद बिनाद काहू सूं नांही ॥ मोहि जगत थैं न्यारा ॥ सम
द्रिष्टी सु जाइ सहज मैं आप हिं आप बिचार ॥ १ ॥ भै तैं मेरी
ऐक मति नांही ॥ फिर बैरा निरकारा ॥ पूरं न सबै दृष्टि आगा
ष ॥ निरालंब निरक्षारा ॥ २ ॥ काहू कै संग मोहन ममिता
संग सिरजन हारा ॥ मन ही मन सौं समझि सयांनां ॥ आनंद
ऐक अपारा ॥ ३ ॥ कांम कलप नांकद नकीजै ॥ पूरण ब्रह्म

पियाराहैहिंपंथिपंछिपारगाहिदाइ॥ सोततसहजि
सेन्यारा॥४॥६४॥ ऐसोषेलबंन्यूंमेरीमाई॥ कैमैकहूंक
हूंजांन्यूंनजाई॥टेक॥ सुरत्नमुंनिजनन्मंचिरजन्मा
ई॥ संमन्चरंगाकोकजेदेंनपाई॥ मंदिरमांहेंसुरतिसुंमा
ई॥ कोकहेसोटेकदिपाई॥२॥ मनहिबिचारकरोल्यो
ल्याई॥ सीवांसमांनांजोतिकहांछिपाई॥३॥ देहीनिरं
तिमुवेंनल्योल्याई॥ तहांकोंएरमैंकोंयासूतारेन्याई॥४
दाइतजांनैयेचतुराई॥ सोईगुरमेराजिनिसुधिपाई
॥४॥६५॥ न्याईरेघरहीमेंघरपाया॥ सहजिसमाइरस्मा
लामांही॥ सतगुरषोजबताया॥टेक॥ ताघरिकाजस

वैकिरिआया॥ आपहिंआपउपाया॥ खोलिकपाटमह
लकेदीन्हें॥ थिरअस्थानदिखाया॥ १॥ नयाजेटअमैसब
जागा॥ साचसोईमनलाया॥ यंमनपरेंजहांजीवजावै॥ ता
मैंसहजिसमाया॥ २॥ निहचलसदाचलैनहींकबहूं॥ दे
ला ध्यानसबमैंसोई॥ ताहीसोंमेरामनलागा॥ औरसकलकूजाकोई
३॥ आदिअंतनहिंसोईघरपाया॥ अबमनअंतनमननजाई
दादूएकरंगैरंगलागा॥ तामैंरह्यासमाई॥ ४॥ दूजा॥ इकतदै
नीरनहांवंनजोगा॥ अनतहीजनमैंझूलैरेलोगा॥ टेक॥ तिं
हिंतटिन्हायैंनिर्मलहोइ॥ बहिअगोचरघरमेंसोई॥ सुघ
टघाटअम्रततिरिबोतीर॥ बैठेतहांजगतगुरपीर॥ १॥ दा

हूं नज्ञानै तिं नकाजेव ॥ आपलषावे अंतरिदेव ॥ ३ ॥ ६०
अज्ञा साज्ञानकपैतौ नरज्ञांनी ॥ तिंहिं घरि होइ सहज सुषजां
नी ॥ टेक ॥ गंगा अमुनत हां नीरन हाइ ॥ सुष मननारायं
गलगाइ ॥ १ ॥ आप तेजसनरष्यासंमाइ ॥ मैं वलिताकी
देषौं अघाइ ॥ २ ॥ बासनिरंतरि सो समकाइ ॥ बिंन नैंन
क्रूं देषत हां जांइ ॥ दादू रे पूजे अग्रमअपार सो धनमेरे अ
धर अधार ॥ ३ ॥ ६१ ॥ सतसंमतिमगंनपाईये ॥ गुर प्रसा
दे रांमगाईये ॥ टेक ॥ आकासि धरणीं धरीजे ॥ धरणीं आ
कास कीजे ॥ सुंनिं मांहैं निरषिलीजे ॥ १ ॥ निरषिमुकता
हल मांहें साइर आयो ॥ अपहीं पियामैं धावत षोज

तयायो।सो चिंमाय रस्सगोच न हियै।दादू देखौरे मांहि कौं नवा
हिरै॥ हरि कौ हितार एक्त देषै न कोई।दादू जे पीव पावै वै अं
त्र होई॥४॥६९॥ अब तौ ऐसे पीव निक्साई।राम चरन विं
नरहौ न जाई॥टेक॥ सांई कौं मिलिबे के कांरनिं॥ त्रिकु
टी संगम नीर नहाई॥ चरन कवल की तहां ल्यो लागे॥
जतन जतन कर प्रीति बनाई॥१॥ जे रस भीनां छां वरि
जावे॥ सुंदरि सहजै संगि समाई॥ अनहद बाजै बाजन लाग
गे॥ जिह्वा हीणै कीरति गाई॥२॥ कहा कहूं कछु बरि
नी न जाई॥ अविगत अंतरि जोति जगाई॥दादू उनकौ
मरम न जांनैं॥ आप सुरंगे बैंनि बजाई॥३॥७०॥ नीकैं

ंराम कहत है बपुरा॥ घर मांहैं घर निरंमल राषै॥ पंचौं धो-
वै काया कपरा॥ टेक॥ सहज समर्पण सुमरण सेवा
त्रिवेणी तटि संजम सपरा॥१॥ सुंदरि सनमुष जागंण
लागी॥ तहां मोहन मेरा मन पकरा॥२॥ बिन रसनां मो-
हन गुन गावै॥ नाना बाणी अनभै अपरा॥ दादू अंत्र न
हद कै सै कहिये॥ जगति नित एक मा राम सकरा॥४॥७१
अवधू कामधेनि गहि राषी॥ बसि कीन्हीं तब अंम्रत
स्रवै॥ आगै चारं न नाषी॥ टेक॥ पोषैं नां पहली उठि गा-
रुझै॥ पीछै हाथि न आवै॥ भूषी जलै इसधनि तहाणी॥ यौं
यह धेनि कि हावै॥१॥ जंजूं षीणा पडै तौं इजै॥ मुकती

मेल्ह्यो मारै ॥ घाटा रोकि घेरि घेरि आंरौ ॥ बांधा कारिज
सारै ॥ २ ॥ सहजै बांधा कटै न छूटै ॥ करमैं बंधण गाहु टिजो
ई ॥ काटै श्रम सहज सौं बांधै ॥ सहजै रहै समाई ॥ ३ ॥ छिन
छिंन मांहि मनोरथ पूरै दिन दिन होइ अनंदा ॥ दादू
सो देषतां पावै ॥ कलि अजरावर कंदा ॥ ४ ॥ ७२ ॥ जब
घट प्रगट रांम मिले ॥ आतम मंगलाचार चहूं दिस ॥ ज
नम सुफल करि जीति चले ॥ टेक ॥ जगमगि मुकति अजै
करि राषे ॥ सकल सिरांवें निज आपण कीये ॥ निरगुण रांम
निरंजन आपे ॥ अजरावर उरलाइ लीये ॥ १ ॥ अपने अंग
संगि करि राषे ॥ निरंतरि नांउ निसांन बजायो ॥ अब

गतिनापयऋंमरऋविनासी॥ऋमपुर्षनिजसोपावा॥
३॥ सोईवकस्नानामिसदासुहागी॥ऋगटभ्रीत्मसंगिऋये
सहस्नागवमेवरवरिकरि॥सोऋजरावरजौतिगरे॥३
७ऋ॥रमईस्पयुक्तडसमालेमोहि॥सेजसुहागंनप्रीति
प्रेमरसं॥स्तरसमनाहीतोहि॥टेक॥ऋंगासंगऐकरस
नाही॥सदासंगीपुनपावे॥जंपूरसमेरसवंकरिननिक
से॥ऐसेहाइनऋावे॥१॥ऋात्मलीननहीनिसवासुरि
भगतिऋषफसेवा॥संनमुषसदाप्रसप्रनाही॥ताछेदष
मोहिदेवा॥२॥सगनगलतमहोरसमाता॥नुहेतवलग
ताजे॥चाहजवलगाऋतंनऋावे॥तवलगदेषगावीजे॥३

॥७८॥ गुरमुष पाई रे ॥ ऐसा ग्यान बिचार ॥ संमझि संम-
झि संमझ्या नांहीं ॥ लागा रंग अपार ॥ टेक ॥ जांणि जांणि जां-
ण्या नांहीं ॥ ऐसा गइ पैजे आह ॥ बूझि बूझि बूझ्या नांहीं ॥ ठौ-
र लागा जाइ ॥२॥ लै लै लै लीया नांहीं ॥ ह्वै रह्या मन मांहिं
रा षिरा षिरा ष्या नहीं ॥ मैं रस पीया नांहिं ॥३॥ पाय पाय
पाया नहीं ॥ तेजैं तेज समाइ ॥ करि करि कछू कीया नहीं
आतम अंग मिलाइ ॥४॥ देषि देषि देष्या नहीं ॥ सं न मु
ष मिरजनहार ॥ देषि देषि देष्या नहीं ॥ दादू सेवग सार ॥
५॥७९॥ बाबा गुरमुषि ग्यांनां रे ॥ गुरमुषि ध्यांनां रे ॥ टेक
गुरमुषि दाता ॥ गुरमुषि राता ॥ गुरमुषि गवनां रे ॥ गुरमु-

घजवनां॥गुरमुखिछवनां॥गुरमुखिरवनांरे॥१॥गुर
मुखिपूरा॥गुरमुखिमूरा॥गुरमुखिबांसीरि॥गुरमुखिटेसां
गुरमुखिलेसां॥गुरमुखिजीसी॥२॥गुरमुखिआहिबा॥
गुरमुखिरहिबा॥गुरमुखिन्यारारे॥गुरमुखिसारा॥गुर
मुखिधारा॥गुरमुखिपारे॥३॥गुरमुखिरायां॥गुरमुखि
पाया॥गुरमुखिसेलारे॥गुरमुखिसेजं॥गुरमुखिसेजंटाशुचे
लारे॥४॥२६॥मेमेरेमेहेरा॥मधिमाहिंपीवनेरा॥टेक॥
जहांअकथअनूपनिवासा॥तहांमहापुरषकावासा॥
तहांजांसोंगाजनकोई॥हरिमोहिंमेंमांनासोई॥१॥अकथ
मजोतिजहांजागे॥तहांरामनांमज्योतिजागे॥तहांरामम

रहे नर पूरा ॥ हरि सें गिर है नहीं कूरा ॥२॥ त्रिबिधि तापि बटि तो
रा ॥ तहां चक्र मलंछ मोलि कहीरा ॥ जेसहीरे सों मन लागा ॥ त
ब नमिगा नब कुनागा ॥३॥ टाहू टेषु बरि पाया ॥ हरि स
ह जैसें गिल पाया ॥ पूरंन पद मनि धंना ॥ मे अनि रषत
हेन मवांनां ॥४॥७७॥ मनि लांगा सकल नका ॥ हे मनि स
बिन हरि रदे सो भूप ॥ टीका ॥ हे मन हरि रदे सों देहेरा ॥ पीव पू
गट पाया नेरा ॥ सो नेरै ही निजन्जी ज्ञे ॥ तब सब ह जै अंक्र मत
पीजै ॥१॥ जब मन नहीं हें मन लागा ॥ तब जोति सरूप पी जा
गा ॥ जब जोति सरूप पीयां या ॥ तब अंत्र तर मोहिं सें माया ॥२
जब चिते तें चित सें मांना ॥ हे मन हरि बिन औरं न जांना ॥

जो नां जीवन सोई ॥ अब हरि बिन और न कोई ॥७॥ अ
बलखि लखि कै बासा ॥ घटि घट मांहिं प्रकासा ॥ प्रकासा पि
र घियारा । सो दादू मीत हमारा ॥५॥७८॥ राग गौड़ी संपूर्ण
पद ॥७८॥ अथ राग माली गौड़ ॥ गोब्यंदे नां तेरा ॥ ॥
जीवन मेरा । तारन भव पारा ॥ आगे हिं नाहीं लागे ॥ सत
नि आधारा ॥ टेक ॥ करि बिचार तत सार ॥ पूरन साधन पा
या अब मिलनां उत्ता समवांम ॥ जागि ह मारे ध्याया ॥१
जग तिमिर मुकति फल ॥ भवजल निसतिरनां ॥ अरे
सकल मजे जनां ने ऐ । कलि बिष सब हरनां ॥२॥ सकल सि
धि नवै निधि ॥ पूरन सब कांमां । राम रूप तत अनूप

दाहू निरंजनं नांमां ॥ त्र ३ ॥ गोव्यंदे के सै तिरिये ॥ नांव नां हीं हे-
व नां हीं ॥ रांम बिमुष मरिये ॥ टेक ॥ ग्यांन नां हीं ध्यांन नां
हीं लै समाधि नां हीं ॥ बिरहा बैराग नां हीं ॥ पंचौं गुण मंहीं
॥ १ ॥ प्रेम नहीं प्रीति नहीं ॥ नांव नहीं तैसा ॥ भाव नहीं भ-
गति नहीं ॥ काइर जीव मेरा ॥ २ ॥ घाट नहीं बाट नहीं ॥ कै-
सैं पग धरिये ॥ वार नहीं पार नहीं दाहू बहुत डरिये ॥ ३ ॥ पी-
व म्हारा वे हे मारे रे ॥ निनि प्रांणां पियारे रे ॥ बलि जांऊं तुम्हा-
रे रे ॥ टेक ॥ सुनि सषी सयां नीरे ॥ मैं सेवूं नजीं नीरे ॥ हूं वन दे-
हिवां नीरे ॥ १ ॥ सुनि सषी सबे नारे ॥ कूं र हूं म्हं के नी-
रे ॥ हूं घर रंग हेलारे ॥ २ ॥ हूं करौं पुकारा रे ॥ सुनि सिर

ॐनहारारे ॥ दाकूटासतुक्षारारे ॥३॥५॥ वालासेजहंमा
गीरे ॥ नूंक्षावकूंवारी ॥ हूंटासतुक्षारीरे ॥ टेका ॥ नेरापंथानि
हारोंरे ॥ सुंदरसेजमंवारोंरे ॥ जीयरातुम्कपरिखारोंरे ॥१॥
नेराञ्जगातुंपेघोरे ॥ नूरातुपडाटेघोंरे ॥ तबजीवनांनेषों
रे ॥२॥ सिलिसुखडाटनेरे ॥ पकुलाहाडालीजेरे ॥ तुम्कदेखें
जीजेरे ॥३॥ नेरेकमकीमातारें ॥ नेरेरंगडिरातीरे ॥ दाइवारनें
जातीरे ॥४॥४॥ टरबाशितुक्षारेदरहूंवंद ॥ पावपांपुकारेरे ॥ दादा वृ
रटरूंनेंदीजिये ॥ सुनिषसमहंमारे ॥ टेका ॥ ननहांकेतनिंपा
रेहे ॥ सुनिंनूंदीनिंवारे ॥ करंमकरीमांकीजिये ॥ मिलिपीवृ
पि:यारे ॥१॥ सलनसुजाकोंसोंसहों ॥ नेगतिनमारे ॥ मिलिसा

ई सुपदी जिये ॥ तूंही तूंही संभारे ॥ ३ ॥ मैं सुहदा तन सो पता
बिरहा ऊ पजारे ॥ जीवत रसै दीदार कौं ॥ दादू न बिसारे ॥ ४ ॥ ५
॥ मैंई या तूंहि साहिब मेरा ॥ मैं ऊं बंदा तेरा ॥ टेक ॥ बंदा खं
दा चेरा तेरा ॥ ऊंकं मां मैं बिचारा ॥ मीरां मिहरबान तुं सांई
तूं सिरताज हमारा ॥ १ ॥ गुलांम तुम्हारा मुलांजादा ॥ तौं
मा घरकाजाया ॥ रानि करिजक जीवतैं दीया ॥ ऊं कं मतुम्हा
रे आया ॥ २ ॥ साचा लबै साजरि बंदा ॥ ऊं कं मतुम्हारे मांही
जब हीं तुं लाया तबहीं आया ॥ मैं मवासी नांही ॥ ३ ॥ पसम
हमारा सिरजनहारा ॥ साहिब संमरथ सांई ॥ मीरां मेरा मि
हरि मया करि ॥ दादू तुम्हहीं तांहीं ॥ ४ ॥ ६ ॥ मुफपीकछ

नैन्न यारे ॥ योह योंही गया रे ॥ पछिताबा रह्या रे ॥ टेक ॥ मैंसी
मनही यारे ॥ नरिये मन पायारे ॥ मैं क्या कीयारे ॥ १ ॥ हरंगन
रातारे ॥ रसये मन मातारे ॥ नहीं गलित गातारे ॥ २ ॥ मैं पाव
जपयापारे ॥ कोमन मन कानापारे ॥ कुछ होइ न आयारे ॥ ३ ॥
हरि हरि उदासारे ॥ मुझ तेरा आसारे ॥ कहे दादू दासारे ॥ ४ ॥ १ ॥
मेरा मेरा काहि गंवारा ॥ सिर परि तेरे सिरजनहारा ॥ आपणे जी
व बिचारत नांही ॥ क्या लेगइ ला बंस तुम्हारा ॥ टेक ॥ तब मेरा
कत करता नांही ॥ आवत है हंकारा ॥ काल चक्र सौं षरा पड़ी
रे ॥ बिसरि गया घर बारा ॥ १ ॥ जाइ तहां का संजम कीजे ॥ बिक
ट पंथ गिरधारा ॥ दादू रे तन अपणां नांही ॥ तो कैसे भया संसा

रा ॥१॥८॥ दादूदास प्रभु कोरैरे ॥ सिरका छत्र म्हारैरे ॥ सरसो
धें मारैरे ॥ ॥ टेक ॥ जमकाल निवारीरे ॥ मन मनसा मारी
रे ॥ यक जनमन हारीरे ॥१॥ सुष नींद नमोंईरे ॥ अपणांडु स
रोईरे ॥ मन मूल नषोईरे ॥२॥ सिर जोरन लीजौरे ॥ हिमक
तिस दीजैरे ॥ अब ढील न कीजैरे ॥३॥ यक अंखो सरसेरारे ॥ प
थी जागि सवेरारे ॥ सब बाट बसेरारे ॥४॥ सब तरवर छायारे
धन जोबन मायारे ॥ यक काची कायारे ॥५॥ हम सत्रम पनिन्
हीरे ॥ बाजारे षिंन फूलीरे ॥ सुष सागर फूलीरे ॥६॥ रस अं
मृत पीजैरे ॥ अष कानों नलीजैरे ॥ कछ्रा प्रभु कीजैरे ॥७॥
सब अंत्रातम जांणीरे ॥ अपणां पीव पिछांणीरे ॥ यक दाहू बांणी

रे ॥ ८ ॥ ९ ॥ पूजौं पहलो गणपति राइ ॥ पडि झंपाकं चरनौं धा
इ ॥ आगे होके करि तीरथ गावे ॥ सहजे आपणो बैन सुणाइ ॥ टेक
के कुं कण कुल कहा न जाइ ॥ इकति लमे लेमै समाइ ॥
गुणकुं [illegible] धारतन देह ॥ ऐसो मनुष्य संबै सुहाइ ॥ १ ॥ जि
सा दूसरै मोचो दाहै रे ॥ आपरत्या गिर ते वरछाइ ॥ दाइ रे आगे
क्या होवे ॥ प्रीति पिया करि जो हि लोई ॥ २ ॥ १० ॥ नी कोधनु हरि
कहि मेजानए ॥ मेरे सबरै श्रोता ॥ आगे पांछे सोई है रे ॥ श्रो रं
न इजा कोई ॥ टेक ॥ कमहुं न छोमे संग पिया को ॥ हरि के द
रस निमाहा ॥ आग हमारे जो हुणके ॥ सरने आए तो ही ॥ १ ॥
श्रा न दन या सखी जो यमे रे ॥ चरंणा कवल को जोई ॥ दाइ हे

र कैा बा ऊँ ग्रौ ब ऊ शिबिहो गन हो ई ॥२॥१३॥ बा बा मू ब म
रद्दूं गोहु ॥ पोदिलपाक करद मधोह ॥ टेका ॥ तर कदु निं ण्णा हु
रिका शिचिल ॥ फरिजंद्ग रक होहू ॥ पेव मध्रव रहिमा गा रेमै त
श्राकिलां सिर सोहू ॥१॥ मनें मुरदों हिरस फोनौ ॥ सफूसरा ये
मालु ॥ बदरां ब रत तरफ करदं ॥ नां ते ने की ष्याल ॥२॥ जंप द
गां नें मुरद्द बा सिद ॥ ऊँ जका दिर कार ॥ ता लिबां रा हक कहा
सिलं ॥ पासबानी यार ॥ नू ॥ मर्द मरदां मालिकां सिर ॥ ग्या सिकां
सुलतां न हजूरी कसि यार दाहू ॥ इहै गो मैं दां न ॥४१२॥ ये स ब
चिरतनु म्हारे मोहं ना ॥ मो है सब बुल्लैं म घना ॥ मो है पवं न पा
णी ग्रमे मुर ॥ सबमु निं मो हे रविचंदा ॥ टेका ॥ मा हर म पत मो

हेधरणीधरा।। अहकालीप्रबलमेरमोहे।। तासिंलोकमो
हेजगजीवन।। सकलभवनतेरासेवमोहे।।१।। सिवबिरं
चिनारदमुनिमोहे।। मोहेसुरसबसकेदेवा।। मोहेइंद्रफनि
गकिंनरमोहे।। मुनिमोहेसेराकरतसेवा।। अगमअगोचर
अपारअपरंपरा।। कोपकुतेरेचरितजानें।। ऐसोमाकुम
कोसोहेसुंदर।। बलिबलिजांनंददासजांगें।।२।।१३।। अ
सारेगुरज्ञानलखाया।। आवेजाइकछुद्रिष्टिनआया।।टेक।।
मनथिरकरौंगा।। नादअनरौंगा।। रामसरमोगारसमाता।।१।। अ
धरसरकूंगा।। कमलकूंगा।। एकअजोंगाअगवंता।।२।। अलष
लषौंगा।। अकथकथौंगा।। मनहीमथौंगा।। गोबदा।।३।। अ

गहगहगा॥ अकलकलकगा॥ अनहदनुरगागोभेजता॥४॥ अ

चरचरैगा॥ अजरजरैगा॥ अतिरतिरैगा अमनेदरा॥५॥ पकु

तेनतारोधिधै निवारै॥ अपवबारैसाधेता॥६॥ अकमजा

कुलनमनैलोकं॥ सहजिसमांकंगुगुरप्रवता॥७॥ अनरपिछो

णोतेजहिंजाणो॥ दाहजोतिहिंदेवता॥८॥१॥६॥ बदेहाजि

हजूरराखे॥ अलखहआलेनरखे॥ अमिकोरहमिहकसाब

ति॥ ताखिबाभरपूरिखे॥ देक॥ अजूदमेमोजूदहे॥ पाक

परवरदिगारखे॥ देषिदेदारकू॥ गेबगोतामारिखे॥१॥ मो

जूदमालिकतषतखालिक॥ अमिकागंजेनहु॥ गुजर

करिदिलमगाजभोतरि॥ अजबदहेपक्कमेनरखे॥२॥ अ

रैस करि आपै छै गा ॥ दोस्त दांनां यूं रि बे । खोजि करि दि
लतक बजकरि ले दरूं ने दा दारं बे ॥ फुंमि यार हांडि
रचुंस्त करि दम कारां मिहरबांन बे ॥ दि धिं ले दरहा
ल माहूं ॥ आपै दीपां न बे ॥६॥१४॥ निर्मल तत निर्म
ल तत ॥ निर्मल तत ऐसा ॥ निरंजणि निज निं धिनै जंनं ॥ जैसा
है तैसा ॥ टेक ॥ उतपति आकार नांही ॥ जोबन ही काया ॥ का
ल न ही क्रम नही ॥ रहित राम रांया ॥१॥ सीत न ही घाम नही
धूप नही छाया ॥ बांन नही बरन नही ॥ मोह नही माया ॥२॥ धरणी
आकास अगम ॥ चंद सूर नांही ॥ रजनी निस दिवस नांही ॥ पव
नां न ही जांही ॥ कितम घट कला नांही ॥ सकल रहित सो

ह॥ दादू निज अगम निगम॥ इ ज्ञान है कोई॥ ४॥ १६॥ इति
रागमाली गौडी संपूर्ण॥ राग २॥ पद॥ ९४॥ अथ राग कल्याण॥
मन मेरे एक छूं भा चेत गंवार॥ पाछै फिरि पछितावैगा रे॥ आ
वै न दूजी बार॥ टेक॥ काहे रे मन भूला फिरत है॥ काया सोच वि
चारि॥ जिन पंथों चलणां है तुझ कौं॥ सोई पंथ संवारि॥ १॥ आ
गे बाट तुं बिषमी मन रे॥ जैसी षंडे की धार॥ दादू दास संभू सोई सू
मत करि॥ कूडे कौ मन निवारि॥ २॥ १॥ जग मैं कहा है मेरा॥ ज
बै है ध्यान तुम्हारा॥ टेक॥ ब्रम्ह तेज घर मेरा॥ सुख सागर मांहि
बसेरा॥ १॥ झिलि मिलि झिलि मिलि अंनंत न्यारा॥ पाया ब्रम्ह मैं नंन्यारा॥ ३
जोति अपार अनंता॥ षेलैं फाग बसंता॥ आदि अंत तिहूं स्यां

नों ॥ दादू सो पहिछांनों ॥४॥२॥ इति राग कल्याण ॥ संपूर्ण
राग ॥ ३ ॥ पद ॥ २६ ॥ अथ राग कंनड़ा ॥ देहु दरस देषण तेरा
तो जीयरा जक पावै मेरा ॥ टेक ॥ पीव तूं मेरी वेदन जांनैं ॥ हूं क
हा दुराऊं छांनैं ॥ मेरा दुष दैषै मन नमांनैं ॥१॥ पीव करक क
लेजे मांहीं ॥ सो क्यूं ही निकसै नांहीं ॥ पीव पकरि हमारी बां
हीं ॥२॥ पीव रोम रोम दुष सालै ॥ इन पीरें पंजर जालै ॥ जीव
जाता क्यूं ही वालै ॥३॥ पीव सेज अकेली मेरी ॥ मुझ आरति
मिलनै तेरी ॥ धनि दादू वारी फेरी ॥४॥१॥ आव सलोंनें देषण
देरे ॥ बलि बलि जांऊं बलिहारी तेरे ॥ टेक ॥ आव पियारे तूं मे
रा हमारी ॥ निस दिन देषौं बाट तुम्हारी ॥१॥ सब गुन तेरे औ

गुंनमेरे । पीवहं मारो आदिनतेरे ॥२॥ सबगुनवंतासाहि
बमेरा । नाम्याद्देत्वादाह्केरा ॥नृ॥१॥ आवपियारेमीतहं
मारे । निसदिनदेषोंपावतुमारे ॥टेक॥ सेजहं मारोपीवसं
वारी । दासतुमारीमोधनवारी १ जेउफणकं अगिनमां
कें । कंचसमकाकंवारतौंजांकं ॥२॥ पंथनिहारोंबाटसं
वारों । नाहतारोंतनमनवारों ॥नृ॥३॥ आववेमजयाआ
व । सिरपरिधरिपाव । जोतीमें माज्यटक्रसाद्दो ॥ बूरांवैद
रावे समजयाआव ॥टेक॥ कथांकथांकिथांकिपां ॥ हौं
जोवां तेनालिवे । मेंपामेंमा आववक्रसाफे ॥ बूलावेंस्यजो
वेसमजणाआव ॥१॥ ननजीफेवांमनजीफेवां ॥ मेंवांप्पा स

परां णावे ॥ सचा सांईं मिलिइ पाईं ॥ जंपट कर कांकुर बांणा बेमन
णा क्षाव ॥ २ ॥ तूं पाकें मिरि पाक वे मजणा ॥ दं षहूं बैं मिरि षूब ॥
टांहूं न्नावे मजणा क्षावे ॥ तूं मिवा मेंह हूब बवे मजणा क्षाव ॥ ३ ॥
४ ॥ टया लन क्षा परोंचरणों नि मेरा मन न लगा वकं ॥ नांकेंहीक
२ ॥ टेक ॥ न्यष षष मक लन मेरा ॥ तूं नां नें रहें नरी ॥ १ ॥ मैं क्रज्ञा
णा मतिहीणा ॥ जमकी या मिषे रह तहूं मरी ॥ मबे हो षटाहू के ह
रिकारि ॥ कुम हां रहे हो हरी ॥ २ ॥ मनमतिहीणाधरे ॥ मूरिषमन
कछु चेतत नांहीं ॥ मैं जाइ जेरै ॥ टेक ॥ नांनें बिमारि क्षबर
चिंतराषे ॥ कं डेः काज करै ॥ मेवा हरि की मन हूं न क्षाणों ॥ मूरि
षबकुरि मरे ॥ १ ॥ नांनें संगम करि जी नै प्राणी ॥ जम षेंकरा

नैरे । दादू रे जे राम संभारै ॥ सागर तीर तिरै ॥२॥५॥ पीव तैं
अपनैं काज संवारे । कोई डूबो नदी नंके मांझ धार ॥ कोई राखि
तैं मार ॥टेक॥ मेर संभा नता पतन न ब्यापै ॥ सहजैं हीं मोटा रे
संतनि कौं सुषदाई माधौ ॥ बिन पावक फंध जारे ॥१॥ तुम्ह
थैं हो इस बे बिधि संमूरथ ॥ आगम सबै बिचारे । संत उबा
रि डूब षटी नैं हो ॥ अंधक पमैं नारे ॥२॥ अैसा है सिरि षस
मह मार । तुम्ह जी तैं षल जिहारे ॥ दादू सं अैसैं निरबाहिये । प्रे
म प्रीति पीव प्यारे ॥रु॥७॥ कहु तेरा मर मन जानै रे ॥
सब ज्ञपे दिवांनां रे ॥टेक॥ माया केर सिरा ते माते । ज्ञा
न बुलांनां रे । को का हु का कह्मा न मांनैं ॥ ज्ञये अंत्र ध्यांनां

रे ॥१॥ माया मोह मद हित मगन । धांन धांन नांरे ॥ बिषिया रस
रस सब सम साच गंनांरे ॥२॥ आदि अंत जीव जंत ॥ की
या पंथ नांरे दादू सब संग मिलै टेढ बिछंनांरे ॥३॥७॥ तूं
ही तूं गुरदेव हमारा ॥ सब कुछ मेरे तूं ही तुम्हारा ॥टेक॥
तुम्ह ही पूजा तुम्ह ही सेवा । तुम्ह ही पाती तुम्ह ही देवा ॥१॥
जोग जगि तूं साधन जाप । तुम्ह ही मेरे आपै आप ॥२॥ तप
तीरथ व्रत तूं सनांनां । तुम्ह ही ग्यांन तुम्ह ही ध्यानं ॥३॥
वेद भेद तूं पाठ पुरांनां । दादू के तुम्ह पिंड परांनां ॥४॥८॥
तूं ही तूं आधार हमारे । सेवग सुत हम राम तुम्हारे ॥टेक॥
माय बाप तूं साहिब मेरा । भगति हीण मैं सेवग तेरा ॥१॥

मात पिता नृं बंधव नाई ॥ तुम्ह हीं मेरे सजंन सहाई ॥ ३ ॥ तु
म्ह हीं तांन तुम्ह हीं मातं ॥ तुम्ह हीं जातं तुम्ह हीं न्यातं ॥ ४ ॥
कुल कुटंब नृं सब परिवारा ॥ दादू कातें तारंन हारा ॥ ४ ॥ १०
नृरैनं नर रिदै षंणादींजे ॥ अमी महारस नरि नरि पीजै
॥ टेक ॥ अमृत धारा वारंन पारा ॥ निर्मल सारा ॥ तेज तुम्हा
रा ॥ १ ॥ अनरजंरंता ॥ अमी झरंतां ॥ तारं अंनंता ॥ बहु गुण
वंता ॥ झिलिमिलि सांई ॥ जोति गुसांई ॥ दादू मांहीं नूर रहा
ही ॥ २ ॥ ११ ॥ अंनपेक स भोग लागे ॥ जोति सरूपा कछा
आगे ॥ टेक ॥ झिलिमिलि करंणां अजरा जरणां ॥ नीझ
रझरनां ॥ तहां मन धरणां ॥ १ ॥ निज निरधारं ॥ निर्मल सा

रे ॥ तेज अपारं ॥ प्राण आधारं ॥ २ ॥ अगम अगाह गहणं ॥ अकहा

कहणं ॥ अनल हलाल दहणं ॥ तहां मिलि रहणं ॥ ३ ॥ निरसं

धनूरं ॥ सकल सनूर पूरं ॥ सदा हजूरं दादू सूरं ॥ ४ ॥ १२ ॥ मैं का

हे कौं प्रया हहं मोरे ॥ राति माने नांव तुम्हारे ॥ टेक ॥ किलि

मिलि किलि मिलि ते जन तुम्हारा ॥ प्रगट खेले प्राण हमारा

॥ १ ॥ नूर तुम्हारा नैंन अंमाही ॥ तन मन लागा छूटे नांहीं

॥ २ ॥ सुख का सागर वार न पारा ॥ अमी महारस पीवणहारा

॥ ३ ॥ प्रेम मगन मतिवालां भाता ॥ रंगि तुम्हारे दादू राता ॥ ४

॥ १३ ॥ इति राग कनड़ा संपूर्ण ॥ राग ॥ ४ ॥ पद ॥ १०९ ॥ अथ रा

ग आसावरी ॥ नांई रे कोई सा समरथ गुरु कहिये ॥ जा गति मुकति फ

जलहिये ॥ टेक ॥ अबिचल अमर अबिनासी ॥ अगमि धनय
निघिदासी ॥ ऐसा सतगुर राया ॥ चारि पदारथ पाया ॥ १ ॥ अमा
महासमाता ॥ अमर अभै पद दाता ॥ २ ॥ सतगुर रवि मधुन सा
रै ॥ दादू पार उतारै ॥ ३ ॥ १ ॥ भाई रे नाव न छूडै गुर मेरा ॥ मेमेंचगा
नसकेरा ॥ टेक ॥ कंचन करि लै काया ॥ घडि घडि घाट निपा
या ॥ १ ॥ मुष दर्पन माहि दिषावै ॥ पावपागट आणि मिलावै ॥ २ ॥ सत
गुर साचा धोवै ॥ तो बहुरि न मैला होवै ॥ ३ ॥ तन मन फेरि सवा
रै ॥ दादू कर गहि तारै ॥ ४ ॥ २ ॥ भाई रे तैं नेह रूडो ष्याए ॥ झग्गुरमु
षि मारग जाए ॥ टेक ॥ कुसंगति परहरिए ॥ सतसंगति अणसरि
ए ॥ १ ॥ काम क्रोध नहीं आणो ॥ बांणी ब्रह्म बषांणो ॥ २ ॥ बिषिया

ऐसे मन वारे॥ ते आप गये तारे॥ बिषै मूँ काकूँ मत लौ धौं। दादू
रहै कौ कीधौं॥४॥३॥ बाबा मन अपराधी मेरा॥ कह्या न मा
नै तेरा॥ टेक॥ माया मोह मद माता॥ कनक कांमणी राता
॥१॥ कांम क्रोध अहंकारा॥ भावै बिषै बिकारा। कांछ मांच न दी
सूझै। आतमरांम न बूझै॥२॥ समरथ सिरजनहारा। दादू करै पु
कारा॥३॥४॥ भाई रे ऐसे बिनसै संसारा। कांम क्रोध अहंकारा॥ टेक॥
लोभ मोह मैं मेरा॥ मद मछर बहुतेरा॥१॥ आपा पर अभिमांनां
केता गरब गुमांनां॥२॥ तीनि तिमर नहीं जांहीं पंच के गुण मां
हीं॥३॥ आतमरांम न जांनां॥ दादू जगत दिवांनां॥४॥५॥ भा
ई रे तब कां कथि सि गियांनां॥ जब दूसर नांहीं आंनां॥ टेक

जबतत हितत संमांनां ॥ जहांकात हां तेमांनां ॥ १ ॥ जहांका
तहां मिलावा ॥ जंहूं प्यारे हे हो हम्मावा ॥ २ ॥ संघे संघि मिल्ला
ई ॥ जहां तहां प्रीति निपाई ॥ मनबंछ्या गमबहीं गांईं ॥ दादू इस
रनांही ॥ ४ ॥ ६ ॥ इति राग अमावास पूर्ण ॥ राग ॥ पद ॥ ११ ॥
अथ राग केदारा ॥ माझा नाथ जी नां क्यों नां जे विवारे ॥
रांम रतन नरिह याभेरा घे ॥ माझ्या वाल्हा जी बिखिया थों वारे.
॥ टेक ॥ वाल्हा बांगणी नैं मनमांहैं माझैं ॥ चंचल ता क्यों न्हि
तरा घे ॥ क्रवंन नेमल्लाइ इन्द्री नां गुण ॥ माझा मांहि जा मल
ते नां घे ॥ १ ॥ वाल्हा जी वांडै तो रांम रमाडै ॥ मं नैं जी यां नां
फल ये आपे ॥ ताझा मां नें बिनां हो जिसा जिंहां वाधो ॥ जं

नवाहमां बंधनकापे ॥२॥१॥ अरे मेरे समदासगाती रे राम । का
रनितेरे कं छापहरो ॥टेक॥ भसमलगा कें ॥ बेरागन्यके दूटो रे
राम ॥ जिरघर बासा रहूं उदासा ॥ चंदिसर मेर पुकारो रे राम ॥१॥
पूकतनजालो पूकमनगालो ॥ करवतम्मास चढंकें रे राम ॥२॥
सासम तोरो उ क्रिपरिचारो ॥ दादू बलि बलि जाई रे राम ॥३॥२॥
अरे मेरा अमरन पांडे ता हारे बालिक ॥ आसिक तेरा ॥टेक॥ उ
ऋसं रामा ॥ उ ऋसं माता ॥ उ ऋसं लागा गांरे बालिक ॥१॥ उ ऋसं
छेला ॥ उ ऋसं मेला ॥ उ ऋसं प्रमसनेह रे बालिक ॥२॥ उ ऋसं
लेखा ॥ उ ऋसं देखा ॥ उ ऋहीसंर तहो रे बालिक ॥३॥ बालिक
मेरा आसिक तेरा ॥ दादू अनत जाइ रे बालिक ॥४॥३॥ अरे मे

रेसं मर्थ साहिब रेक्ष्मला ॥ नर तुम्हारा ॥ टीका ॥ सब बिधि समर्थ वे
सब बिधि स्वले वै ॥ सब बिधि स्वबारन पारे कुसला ॥१॥ सब बिधि स्प्रक
रता सब बिधि स्वहर्ता ॥ सब बिधि स्मतारन हारे कुसला ॥२॥ सब बिधि
सबकमा सब बिधि स्य सुर्ता ॥ सब बिधि सर्वे पंग्ला हारे कुसला ॥३
हैहै तै साक हियै ब्रसा ॥ राह ज्ञान टर्दोह रे कुसला ॥४॥४॥
हालक्ष्म सां जो त्ता लहे ॥ तो के मबक मालनु म हे ॥ टीका ॥ मंफे
घोमा मंकि वरांला ॥ मंफे अगी ज्ञा हिडे ॥ मंक मंडी मुच पोला
केटरि करिया धा हहे ॥१॥ बिरहक माई मारेला ॥ मंफे बटे
मा हहे ॥ सा घों करें कबा बजी ला ॥ हयेदा हजे स्मा हहे ॥२॥
॥५॥ पीवजा सेती नेहनवेला ॥ ज्ञाति मंगा ग मा हि जा बेरे ॥ निम

दिन टै यो बार टनु म्हारी। कब मेरे घरि आवै रे ॥ टेक ॥ आइ बंसी
हे साहिब सेती ॥ तिस बिन तिल क्यूं जावै रे ॥ दासा कुं दरसन द
रि दी औ ॥ अब क्युं आप छिपावै रे ॥ १ ॥ तिल तिल टेट यों साहिब
मेरा ॥ तुं तुं आन न द्रूं गिन मावै रे ॥ दास कूं परिटया करी ॥ क
बं नैन कं जैन मिलावै रे ॥ २ ॥ ६ ॥ मा हरा रे वाल्हा नै कोई रि
दै जो बांनै धांन धरौ ॥ आकुल थाये प्राण म्हारा ॥ कहीनै के
हा परि करो ॥ टेक ॥ संभा स्यो आवि रे वाल्हा ॥ वेल्हो पहो कोई द
रै ॥ साथी जी सा थे पर ईनै ॥ पेली ती रै पारि लिरै ॥ १ ॥ पीव पाछै
दिन डु हे लो जाये ॥ घडी बरस मांसी को म जरो ॥ दाइरे जे ह
रि गुण गाता पूरण स्वामी ने हबरो ॥ २ ॥ ७ ॥ म रिये मीत न बिछो

है ॥ जीवयजाइस्में दोहै ॥ टेक ॥ ज्यूं जलविछुरेमीनां ॥ तल
पितलपिजीवूदीन्को ॥ पोंहरिदमसंकीन्हा ॥ १ ॥ चात्रिगम
रैपियासा ॥ निसदिनरहैउदासा ॥ जोवैकिंदिनेसमासा ॥ २
जलबिनकवलक्रुमिलावै ॥ प्यासानारनपावै ॥ कैसूकरि
त्रियाबुझावै ॥ ३ ॥ मिलिजिनिबिछुरेकोई ॥ बिछुरेंरबद्धु
कुषहोई ॥ कंजनजीवैसोई ॥ ४ मरतांमातमुहैला ॥ दादू
धनधरणिदेवता दादू पावैसहैला ॥ ५ ॥ ७ ॥ पीवहौकु
हाकरौरे ॥ पाइपरौकैंप्राणहरौरे ॥ स्रबकूंमरतांनहीम
रौरे ॥ टेक ॥ गतिमरौकैजातिमरौरे ॥ केहैकहंतसीमध
सौरै ॥ १ ॥ पाइमरौकैपाइमरौरे ॥ केहैकतहैजाइमरौरे

॥३॥ नवल्लफिमरैकेकृ शिमरैरे॥ केम्होबिरहोराइमरैरे॥५
नेरिक ह्मामेमरणागी ह्मारे॥ दादू कुष्पिपादीनन्नयारे॥४॥५॥
वाल्हासौंजाणोजेरे॥ वान शिरमिपू॥ माहरौनाएनिमषनहीं
मल्हौरे॥ अवजामीनांहीनआवो॥ तद्दिन आवाछैतौरे॥ दे
का॥ वाल्हामेजआम्हारापिकेंडीरे॥ तहांउऊनेकांनपांमोरे॥ अद ल
तअम्हारेपूरिबलो॥ नेतोआवोसाम्हौरे॥३॥ वाल्हामाहरारिदया
नातरिकांइनआवे॥ मूनेचरंनबिंलंबनदीजैरे॥ दादूतोअ
पराधीनांहरौ॥ नांथऊधारीलीजैरे॥२॥१०॥ तूंछेमाहरारामगुसां
ई॥ पालविनारेबाधारे॥ उऊबिनांहोंअनंतरडुबडियो॥ कीधी
कमाईलाधारे॥ टेक॥ जीवूंजेतिलहरीबिनारे॥ देहडीडपैदा

धीरे ॥ ऐसौं श्रीतारि कां ह्न ज्ञांरिये ॥ माधे ष्टो टाकर षाधीरे ॥१॥ छू
टिक मोहरौ केहै ही परि प्यासी ॥ मकेयो नरो भज्ञ्यारा धीरे ॥ दाह्न क्र
परि दया मया करि ॥ हौं ताहरौं क्षपरा धीरे ॥२॥१४॥ तूं ही हैं तनि
मो हैरै गुसांई ॥ तूं बिनां तूं के न्हैं कहूं ॥ तूं तां तूं ही थई रखारे ॥ स
रणि तुम्हारे जईर हूं ॥ टेक ॥ तन मन मो है ओईये तूं तो ॥ तुझ टी
गहूं सुषलहूं ॥ तूं तां जे तिलतजार हैं होरे ॥ तिमतिमतां हूं डषमहूं
॥१॥ तुम्ह बिन माहरौ को इ न कहीरे ॥ हूं तो ताहरा बंना बहूं ॥ दाह्न
रे जन हरि गुण गातां ॥ मैं मैं कौं माहरौ मैं हूं ॥२॥१५॥ हमारे तुम्ह
ही हो रषिपाल ॥ तुम्ह बिन और न ही को मेरे ॥ कोउ छमे टयाः दार
टेक ॥ बैरी पंच निमषन हीं न्यारे ॥ रो किर है जमकाल ॥ हा जग

दीसदासकुछपावे॥स्वामीकरोसंभाल॥१॥तुम्हबिनरामदहैऐ
हृंदर॥दयोंदयासबमाल॥दयतदीनकुछाकृपाकीजे॥तुम्हहीं
दीमदयाल॥२॥निरभैनांवदेहुहरिदीजे॥दरसनप्रसनलाल
त्राहूंदीनलीनकरिलीजे॥मेटहुसबजंजाल॥३॥१४॥येमन
माछेबरजिबरजि॥अतिगतिबिषियासूंरतर॥भगतअगर
जिमारजि॥टेक॥बिषैबिलासअधिकअतिआतुर॥बिल
सतसंकनमांनै॥चाइहलाहलमगनमायामैं॥बिषअंमृत
करिजांनै॥१॥पंचनिकेसंगिबहुतचहूंदिस॥नवटिनक
बक्रंक्रावे॥जहांजहांकालजाइतहांतहां॥मृगजलज्यूंमन
जावे॥२॥साधकहेगुरज्ञांननमांनै॥जावतजनमतुम्हारा

दास कै तुम सम जन सहाई॥ कलु न बसाई हं मारा ॥रू॥४॥ हांह
मोरे जीय रा॥ राम गुण गाइ॥ ये ही बचन बिचारे मांनि॥टेक॥
केती कहुं मन कारंनें॥ बूझो मीरे ज्ञ त्रिमांन॥ कहिं मम जोये
बेरबेर॥ उझ फ्रम जहं न आवे जांन॥१॥ ऐसा संसा कहां पाई
ये॥ गुण गावत आवे तांन॥ चरनौं संचित राखिये॥ नि सदिन
हरि कौ ध्यांन॥२॥ वे जो देषा देहगो॥ आप सहौं वे ध्यांन॥ जन
दास रे गुण गाई पे॥ पूरी है निरबांण॥रू श्यं॥ बटाकन चूखणं आ
जक काछिसे मफिंन देषे कहा सुष सोवे॥ रे मन राम संभालि
॥टेक॥ जैसे तरवर बिछि षब सेरा॥ पंषी बैठे आइ॥ ऐसे यह
सब हाट पसारा॥ आप आप को जाइ॥१॥ कोई नहीं तेरा

मजनसंगाती॥ जिनबोवैमनमूल॥ एकसंसारदेषिजिनिभूले
सबहीमैंबलफूल॥२॥ ननननहींतेराधननहींतेरा॥ कहारेसो
हरिसिंगागि॥ दादूहरिबिंनकूंसुषसोवे॥ काहेनदेषैजागि॥
॥२॥१६॥ ज्ञातकतमधकोमातोरे॥ ननधनजोबनदेषिगरबां
नौं॥ मायारातोरे॥ टेक॥ अपनोंहीरूपनैननरिदेषै॥ कांमनि
कौंसंगआवैरे॥ बारबारबिषैरतमांनें॥ मरिबोचीतिनआवैरे
॥१॥ मैंबफआगेमेरोरनआवै॥ करतकेतअभिमांनारे॥ मेरी
मेरीकरिकरिफूल्यो॥ मायामोहभुलांनारे॥२॥ मैंमैंकरतज
नंमसबषोयो॥ कालसिरकोगोंआयोरे॥ दादूदेषिमूढनरसं
सीं॥ हरिबिंनजनमगवायोरे॥२॥१७॥ जागतकोंकदेनभू

दादू के तू मम जंन सहाई ॥ काल्हु न बसाई हं मारा ॥ ३ ॥ ४ ॥ हां हं
मोरे जीय रा ॥ रांम गुण गाइ ॥ ये ही बचंन बिचारे मांनि ॥ टेक ॥
केती कहूं मन कारनै ॥ तूं छै मीरे अजि मांन ॥ कहिंहिं मंम जोये
बेर बेर ॥ उफ अन जकूं न आवै ग्यांन ॥ १ ॥ ऐसा सांमरा कहां पाइ
ये ॥ गुण गावत आवै तांन ॥ चरनौं संचित राषिये ॥ निसदिन
हरि को ध्यांन ॥ २ ॥ वै ज्ञा ले षोदे हगो ॥ आप कहां वै यांन ॥ जंन
दादू रे गुण गाईये ॥ पूर्यौ है निरबांणा ॥ ३ ॥ ५ ॥ बटाऊ कन चलणां आ
जकै काल्हि संमझि नंदे षे कहा सुष सोवै ॥ रे मन रांम संभालि
॥ टेक ॥ जैसै तरवरि बिछि षब सेरा ॥ पंषी बैठे आइ ॥ ऐसे यहु
सब हाट पसारा ॥ आप आप कों जाइ ॥ १ ॥ कोई नहीं तेरा

मजनसंगगानी॥जिनबीवैमनमूल॥पंकसंसारदेषिजिनिमूले
मबहींमेंबलफूल॥२॥तननहींतेराधननहींतेरा॥कहारहेलो
इकिलागि॥दादूहरिबिनक्यूंसुषसोवे॥काहेनदेषैजागि॥
२॥१६॥जागतकतनमथकोमानौरे॥तनधनजोबनदेषिगरबा
नौं॥मायारातौरे॥टेक॥अपनोंहीरूपनैनजरिदेषै॥कांमनि
कोंसंगआवैरे॥बारबारबिषेरतमानें॥मरिबौचीतिनआवैरे
॥१॥मैंबडआगेअौरनआवै॥करतकतअभिमानौरे॥मेरी
मेरीकरिकरिफूल्यो॥मायामोहभुलानौरे॥२॥मैंमेंकरतजु
नमसबषोयो॥कालसिरापरिआयौरे॥दादूदेषिमूढनरप्रा
णी॥हरिबिनजनमगवायौरे॥३॥१७॥जागतकौंकदेनमू

सै कोई ॥ जागत जांनि जतन करि राषै । चोरं न लागै होई ॥ टे
कं ॥ सो वतन साहब सतन नहीं पावै ॥ चोर मुंसे घर घेरा ॥ आसि या
सि पहरै को मांही ॥ बसतैं को आन बेरा ॥१॥ पीछै कऊ त्या जा
गें होई ॥ बसत हाथ थैं जाई ॥ बीतां रैंनि बकऊ रिन हीं आवै ॥ त
बक्या करि है जाई ॥२॥ पहलें हीं पहरै जे कोई जागै ॥ बसत कै
हू न हीं छीजै ॥ दाहू जु गति जांनि करि ऐसी करणां है सो की
जै ॥३॥१०॥ सज्जन नीर जनी घटती जाइ ॥ पल पल छीजै अव
धि दिंन आवै ॥ अपणां लाल मनाइ ॥ टेक ॥ अति गति नी
द कहा सुष सोवै ॥ यऊ औसर चलि जाइ ॥ यऊ तन बिछु
रें बऊरि कहां पावै ॥ पीछैं हीं पछिताइ ॥१॥ प्रांण पति जांगै

कोमलबचनकहूंगा
सुंदरि कांसो कहै ॥ तर आतुर गहि प्राण ॥
करि आभै ॥ न्यास्यार है लपटाइ ॥१०॥ सखी सुहाग सेजे सुख पावे
प्रातम डूम बताइ ॥ दाहू भाग बने णावणचे ॥ सकल सिरोवृणिरां
इ ॥अ॥१४॥ कोई जांनै रे मरम माप ईश केरो ॥ कैसे रहैं करी रे का ॥
सजनी ॥ प्राणमेरो ॥ टेक ॥ करण बिनोद करत री सजनी ॥ क
ब्रुननि सं गब सेरो ॥ संत साक्ष गंमि आयेननके ॥ करत जु प्रेम
हगोरो ॥११॥ कहां मिलि बास सब बास कहां सजनी ॥ गवन तेरो ॥ घट
घट माहें रहै निरंतरि ॥ ये दाह नेरो ॥१२॥२०॥ संत बैरागी राम
को ॥ संगि रहैं सुख होइ दे ॥ टेक ॥ हरिकारन मन जोगिया ॥
कंचू हो मिलै सुख सोइ ॥ निरपण का मो हि चावै है ॥ कंसूआप

दिषावै मो हि हो ॥१॥ हिरदै मैं हरि आव तूं ॥ मुष दे षो मम
धो इ ॥ तन मन मैं तूं ही बसे ॥ ध्यान आयै तो हि हो ॥२॥ निर्ष
ण का मो हि चाव है ॥ पेड षो रा घो इ ॥ दादू तुम्हारा दास दे ॥ नै
न देषण कौं रोइ हो ॥३॥ ॥२१॥ धरणीं धरि वा म्हा धूतारै ॥ अगाप्र
सन ही आपैरे ॥ कहो अम्हा रो कांइ न मांनै ॥ मनि आवै त
था पैरे ॥ टेक ॥ नाही बाही नैं फकसन्ती थैं ॥ अबला कोई
न जांणै रे ॥ अलग रहै रोणीं परि तैहे ॥ अंतं गाहै घरि आं णै
रे ॥१॥ रमी रमी नैं रांमि रज्या वे ॥ के मैं अंतन है षो र ॥ गोपि
गफ ते कोई न जांणै ॥ रे को आ चरन की धैरे ॥२॥ मांना
लक रुदन करतां ॥ बाही नाहि नै राषै ॥ जे छौ छैते छौ

आपणपैं ॥ दादू ले नहीं तो मेरे ॥ श्री ॥ २३ ॥ सिर्जनहार थैं सब हो
इ ॥ उतपति परलै करै आपै ॥ दूसर नांही कोइ ॥ टेक ॥ आप होइ
कुलाल करता ॥ बूंद थैं सब लोइ ॥ आप करि अगोचर बैठा ॥ दुं
नी मंन को मोहि ॥२॥ आप थैं उपाइ बाजी ॥ निरषि देषै सोइ
बाजीगर कौं यहु भेद आवै ॥ सहजि सौं जं समोइ ॥३॥ जे कु
छु कीया सु करै आपै ॥ ऐह उपजै मोहि ॥ दादू रे हरि नांव सेती
मैल कुसमल धोइ ॥४॥ श्री ॥२४॥ देव करे मंझि देव पायौ ॥ बसत अ
गोचर लषायौ ॥ टेक ॥ अति अनूप जोति पति सोई ॥ अंतरि
आयौ ॥ पंचन बूद क्रम संभितु लिदिषायौ ॥ सदा प्रकास निवास
निरंतर ॥ सब घटि मांहिं समायौ ॥ नैंन निरषि नैरो ॥ हिरदै

हेतलायो ॥ ७ ॥ पूरबजन्मागमुदागसेजसुष। सोहरिलीनपछेगोयो
देव कान्ह पार न पावै। आहो पे जन हं चितायो ॥ न्रू ॥ १ ॥ अ
इति रागकेदारा संपूर्ण ॥ राग ॥ धा ॥ पद ॥ १ ॥ श्री अन्न घर राग मा
रू मांझ ॥ मनां जन जिरां मनां मलीजे। साध संगति सुमरि सुम
रि रस नांरस पीजे ॥ टेक ॥ साधु जन सुमरण करि केते जपि
जागे। अंग मनि गम अंसरकीये। काल कोई न लागे ॥ १ ॥ नी
च कंच चिंतन करि। सरनां गति लीये। जगति सुकति अ
पनी गति। अंसे जन कीये ॥ २ ॥ केते तिरि तीरि लांगो। बंधन
न छूटे। कल्प मलबि घजुगा जुगके। रांम नांम षूटे ॥ न्रू ॥
अरं मक रंम सब निवारि। जीव निजपमासे ईसं द्वांकड घरं

रिकरण॥ हूजा नहीं कोई॥४॥१॥ मनां जपि रांमनांम कहिये
रांम नांम मनि विश्रांम॥ संगी सो न हिये॥ टेक॥ जागि जागि से
वै कहां॥ काल कंध तेरे॥ बारंबार करि पुकार॥ आवत दिंन नेरे
॥१॥ सोवत सोवत जनम बीते॥ अजहूं न जीव जागे॥ रांम सं
भालि नींद निवारि जनम जुवा लागे॥२॥ आसि पासि भरम बं
ध्या॥ नारी ग्रिह मेरा॥ अंति काल्य छाडि चल्यो॥ कोई नहीं तेरा
॥३॥ तनि कांम क्रोध मोह माया॥ रांम रांम कहणां॥ जब लग
जीव प्राण प्यंड॥ दाह गहि सरणां॥४॥२॥ कंू बिसरै मेरा पीव
पियारा॥ जीव की जीवनि प्राण हमारा॥ टेक॥ कंू करि जीवै
मीन जल बिछुरें॥ ऊं हरि बिंन रांम संनेही॥ चिंतामणि जब

करषे कूट । तब कछु पावै देंही ॥४॥ मात तात बालिक कहु धनु देवै । सो
केसै करि पावै ॥ निरधन का धन अनंत तमु लाना । सो केसै क
रि जीव ॥२॥ बरस कु रांम सकल सुख अंमृत ॥ नीझर निरमल
धारा ॥ प्रेम पियालानां भरि भरि पीवै जे । दुइ दास सतु म्हारा ॥३॥४॥
कोई कहै रे मासा नां छूमों ॥ नारीनैं न मिल्हा रे बाट ॥ टेक ॥
दीन कछु पायकु सुंदरी ॥ करुणां बचन कहै रे ॥ उमक बिंन ना ह
बिरहणी व्याकुल ॥ किंम करि गा धरु हैरे ॥ स्वा ॥ भूख न बिंदा नाव्रैन
हां कोई ॥ हरि बिन औरन जांणैरे ॥ दृहगनै दतनै क्षाम्रापीं ॥ जैको
इ गोबंद रझांणैरे ॥२॥ जगपति नैं जाबा नैं कोजै ॥ झातुर पूर्ह
रहीरे ॥ दादूनै बिमाडो स्वामी ॥ व्याकुल नेहो घरे ॥७॥४॥ श्री

स्याबिरहनिंयारीमनुस्यारहिं॥पा॥ऊधोबिंननाथअनाथ॥कोइ
बिसारडि॥पा॥टेक॥ऊधोनेंअगिअनलप्रजाली॥नाथनिक
टिनहीं आवेरे॥दरसनकारनिबिरहनिंब्याकुल॥औरनको
ईआवेरे॥आपअप्रठंनऊधोनेंदेषे॥आपणपोनदिषाडे
रे॥प्राणीपंजरलेहरस्यारे॥आनाअरपाडेरे॥देवदेवकारिर
रमनमांगे॥अंतरजामीआपेरे॥दादूबिरहनिंबनिबनिढूंढे
रेउपकाहंनकापेरे॥अथपद॥कबहूंऐसाबिरहकपावेरे॥पा
वांबिनांदेषेजीवजावेरे॥टेक॥बिपतिहमारीसुनकेसहेली
पीयबिनचैननआवेरे॥जंजलमीनचीनतनकलपे॥पीव
बिनवजरहावेरे॥१॥ऐसीप्रीतिप्रेमकीलागे॥जेपषापी

षसुनोवैर॥ तं मंनमेरारहै निसबासुरि॥ कोई पीव कूं आणि मिला
वै॥२१॥ तौ मन मेरा धीरजधरई॥ कोई आगम आनि जणावैरे॥ तो
मुष जाव दाइ का पावै॥ पल पीव नी आपरिष्यावैरे॥ २२॥ ९॥ पंथी
डा बूझै विरहनी॥ कहि नै पीव की बात पंथीडा॥ कब घरि आवै
कब मिलै॥ जो कै दिन अरु रात पंथीडा॥ टेक॥ कहां मेरा प्रीतम
कहां बसै॥ कहां रहै करि बास॥ कहां ढूंढैं कहां पाईयो॥ कहां र
हे किस पास पंथीडा॥१॥ कस्यं तै देस कहा जाइयो॥ कौ जे कवण
उपाइ॥ कवण गांव गा के मेरे है॥ कहां कै रस मजाइ पंथीडा॥ २॥
प्रम सनेही प्रीतम का॥ सो कत टेक दिषाइ॥ जा बनि मैरे जीव की सो
मुफ आणि मिलाइ पंथीडा॥ नैन न आवै मीठ सा॥ निस दिन

अनफतजाहपंथीड़ा॥ दाझन्नातुरबिरहंनी॥ कूंकरिरैंनिबिहा
इपंथीड़ा॥ ४॥ ७॥ पंथीड़ापंथपिछांणीरेपीवका॥ माहिबिरहे
कीबाट॥ जीवतमतकदेचलै॥ लंघेऔघटघाटपंथीड़ा॥ सतगु
रसिरपरिराषिये॥ निरमलजांनबिचार॥ प्रेमभक्तिकरिप्रीति
सूं॥ संतमुषसिरजनहारपंथीड़ा॥ ४॥ प्रआतमसंआतमांजूंजल
जलहिसमाइ॥ मनहीसूंमनलाइये॥ लेकेमारगिजाइपंथीड़ा
॥ २॥ नालाबेलीजपजे॥ आतुरपीड़पुकारपंथीड़ा॥ सुमरिसनेही
आपणां॥ निसदिंनबारंबारपंथीड़ा॥ ३॥ देषिदेषिदेषिपगारा
पिठे॥ मारगसंतनाआर॥ मनमसाबाचाकरमनां॥ दादूलंघेपारपंथी
ड़ा॥ ४॥ ८॥ साधकहैंतउपदेसबिरहंनी॥ तनमनसैतबपाइये॥

निकटि नयापहे सबिरहणी ॥टेक॥ उमड्यो मोहि देत न बैसें ॥ तेहे:
रहे करि रिवास ॥ तहां ठूंठू पीव पाइये ॥ जीवनि जीव के पास बिर
हणी ॥१॥ प्रभ मेटे सत तहां जाइये ॥ आतम लीन उपाइये कें अंग
कै में रहे ॥ जूं जल जलदि संमाइ बिरहणी ॥२॥ सहा संघाती ज्
ण्यौं ॥ कंवल कहै हरि नउ... ॥ प्रांण सनेही पाइये ॥ तन मन ले
ऊ लगाइ बिरहणी ॥३॥ जागें जगपति देपिये ॥ प्रगट मिलि
है आइ ॥ दादू संतन मुषि कीरहे ॥ आनंद अंग न माइ बिरहणी ॥४
॥४॥ गोब्यंदा गाइबा दे रे ॥ आडौ आंणि निवारि रे ॥ गोब्यंदा गाइ
बा दे रे ॥ अनदिन अंतरि आनंद कीजे ॥ भगति प्रेमरस सार रे
॥टेक॥ अनभै आतम अभैकरम ॥ निरषे आंहन की जे रे

मैं मां महारसकूं मतलावै ॥ कूं मैं रसिकरसपाजैरे ॥१॥ कूं बिच
लकूं मनकूं षेकूं बिनासी ॥ ते रस कां इं नदीजैरे ॥ आतमराम कूं
धारकूं मकारो ॥ जनम सुफल करिलीजैरे ॥२॥ देवदयाल किंपा
लट मोटर ॥ प्रेम बिना क्यों रहिए ॥ दाहूं रंग नरिरां मरमाडौ ॥ त
गति बकलनंक हिंएरे ॥३॥१॥ गोतं साजो इबादेरे ॥ जेवर कैते
बावरिरे ॥ गोब्यदाजो इबादेरे ॥ आदि पुरिषकूं कठे कूं मकारो ॥
कंत तुम्हारी जारिरे ॥ टेक ॥ कूं गो मंगो रगो रमिए ॥ देवा हरिनकौ
जैरे ॥ रमआंदे रसइ मथइ रहिए ॥ ए मुषकूं मकनैदीजैरे ॥१॥
मुजडिं एकुमरंगलरिरिंमिए ॥ प्रेमनगातिरसलीजैरे ॥ एक मक
रसके लिकांरता ॥ कूं मके स्रवलाइं मजीजैरे ॥२॥ समथ स्वामी

अंतरजामी ॥ बारबार कांई बोहैरै ॥ आंठैं अंतैंते जतु कारो ॥ टे
रुघे गावैरै ॥ ३ ॥ १ ॥ उमक अमीरं गरमाहि ॥ आपअप्रतठ नथई क
री ॥ मूंनें मम नरमाहि ॥ टेक ॥ मूंनें जोलविकांथई बेगहो आ
पणायै दिषाहि ॥ किम जीवैं हूं एकली ॥ बिरके रोगे नारि ॥ १ ॥
मूं नें बाहिसि मो अलगो थई ॥ आत्मा उधारि ॥ दाहूं संरभि एसदा
ऐरांषी पैरैं नारि ॥ २ ॥ १२ ॥ जागिरे किम नींदडी मूलां ॥ रैनिबि हाईम
बगई दिन आफ्यरूंता ॥ टेका ॥ सोकंरू सोवें नींदडी ॥ जिस मर
गां होवैरै ॥ १ ॥ औरां बेरीजागणां ॥ जीवनूं कं सोवैरै ॥ १ ॥ जांधी
सिरपेजमषडा ॥ अगंधें मारैरै ॥ सोकंरू सोवै नींदडी ॥ कहिकं
नपुकारैरै ॥ २ ॥ दिन घतीं निमकालफपे ॥ जीव मजागैरे ॥ टे

सेयानी टर्डी ॥ उसखुमिन लागै रे ॥ ३ ॥ १३ ॥ जागि रे सबेरे लिबिहरा
जाइ जनम खजुरी को पाशा ॥ टेक ॥ घडी घडी घडियाल बजावै ॥ जे
दिन जाइ सुबरु फरि नआवै ॥ १ ॥ सुरिज चंद कहैं समझाइ ॥ दिन दिन
आव घटती जाइ ॥ २ ॥ सरवर पांणी तरवर छाया ॥ निसदिन काल
गासै काया ॥ ३ ॥ हंसबटाऊ प्रांणपयानां ॥ दादू आतमरांम न जां
नां ॥ ४ ॥ १४ ॥ आदि काल अंति काल मधि काल जाई ॥ जनम का
लखुरा काल ॥ काल संगि सदाई ॥ टेक ॥ जागत काल सोवत काल
काल फंपै आई ॥ चलत काल फिरत काल ॥ काल खेले जाई ॥ १ ॥
आवत काल जात काल ॥ काल कवि नयाई ॥ लेत काल देत काल
काल ग्रसै धाई ॥ २ ॥ कहत काल सुनत काल ॥ करत काल सगा

ई ॥ कांम काल क्रोध काल ॥ काल जाल छाई ॥ ३ ॥ काल कर्म गौ बान
पोहै ॥ काल संग्रि ममाई ॥ काल रहित रांम गहित ॥ दादू ले लाई ॥ ४
२४ ॥ नाकों केता कहा मन मेरे ॥ पिंगा इक मांहैं जाइ अनेरे ॥ पांणा
नधारी लेरे ॥ टेक ॥ सांगे है मन परी बिमासं गोंले षा मांगे टेरे ॥ काहे
सो है नीद नरीर ॥ कित बिसारे तेरे ॥ १ ॥ ते परिका झें मन बिचारे ॥
रांघ चरनों नेरे ॥ रनी एक जीवन मो हि न मूके ॥ दादू चेति संवेरे
॥ २ ॥ १६ ॥ मन वाल्हा रे कछू बिचारी षेल ॥ पडि सीर गढ नेलि ॥
टेक ॥ बहु जानांते डगरे ऐसा वाल्हा ॥ जूं तिल मैं लो जैते ल ॥ करणी
ताकी सोधि सो ॥ हांसी रे सिर हेल ॥ १ ॥ सब ही ऐक रित ना जूं पैरे
वाल्हा ॥ साई सेती मेल ॥ दादू संगन छोमी पी वाल्हा ॥ पाई है गुंसां

कां खेलि ॥२॥१२॥ मनवा क्यूं रे हो अंजन तजि निरंजन जाइ ॥ तौ तूं जीवे अंजन मी
र सूं पावे ॥ अंजन फल का है न पाइ ॥टेक॥ रंक च्यंत्र न संत्र न सुष
पावे ॥ सुष के नैंन अंजन घाइ ॥ आगम रे पावे नैरे ॥ पीर थां न बताइ ॥
सेधि मैंरे रहे घेरे ॥ सहजैं अंजन मिसि माइ ॥ सरीर मांहे सोधि सांई ॥ अंजन
हृदय धांन लगाइ ॥३॥ पाव पासि अंजन वै सुष पावे ॥ तन की तपति बु
काइ ॥ दाइ रे जनहां ना दरपजे ॥ पाव पासि मिटि षाइ ॥३॥१८॥ निरंज
न अंजन जन की न्हारे ॥ सब अंजन मेली न्हारे ॥टेक॥ अंजन जन माया अंजन
जन काया ॥ अंजन जन छाया रे ॥ अंजन जन राते अंजन जन माते ॥ अंजन जन
पाया रे ॥१॥ अंजन जन मेरा अंजन जन तेरा ॥ अंजन जन मेला रे ॥ अंजन जन
लीया अंजन जन दीया ॥ अंजन जन षेला रे ॥२॥ अंजन जन देवा अंजन जन

सेवा॥ अंजन रूप जोरे॥ अंजन आंगो अंजन ध्यांनो॥ अंजन पूजा
रे॥३॥ अंजन बकता अंजन सुती॥ अंजन गावेरे॥ अंजन रांम
निरंजन की न्हा॥ दादू गावेरे॥४॥१४॥ अंन बैंन चैंन होवे॥ सु
णतां सुषदायो॥ तीनूं गुण त्रिविधि तिमर॥ नसे कंम नायो॥ टेक॥
होइ प्रकास अति उजास॥ परम तत सूझे॥ परम सार निरविकार॥
बिरला कोई बूझे रे॥१॥ परम थांन सुष निधांन॥ परम सुंनि षे
लै॥ सहज भाइ सुष समाइ॥ जीव ब्रह्म मेलै रे॥२॥ अगम निगं
म होइ सुगम॥ दुस्तर तिरि आवे॥ आदि पुरिष दरस परस॥ दादू सो पावे
रे॥३॥२०॥ कोई रांम का राता रे॥ कोई प्रेम का माता रे॥ टेक॥ को
ई मन कौं मारे रे॥ कोई तन कौं तारे रे॥ कोई आप उबारे रे॥१॥

कोई जोगजुगंभारे । कोई मोष मुकंतारे ॥ कोई हैन्नगवंतारे ॥२॥
कोई मद गतिसारारे ॥ कोई तारंगाहारारे ॥ कोई पीवृकाप्यारारे
॥३॥ कोई पारकायापारे ॥ कोई मिलिकारन्त्रायारे ॥ कोई म
नकाभायारे ॥४॥ कोई है बनन्नागीरे ॥ कोई सेजसुहागीरे । को
ई है अनुरागीरे ॥५॥ कोई सबसुषदातारे । कोई रूपबिधाता
रे । कोई अमृतपालारे ॥६॥ कोई नूरपिछोरोरे । कोई तेजकौ
जोरोरे । कोई जोतिबपोरोरे ॥७॥ कोई साहिब जैसारे ॥ कोई
साई तै मारे कोई ताई अैसारे ॥८॥१२॥ सबगति साधवारे ॥ सेनमु
निजैनदारे ॥ जो जलन्म्रापतिरैनेतारें ॥ प्रांगानधारं नदार ॥९॥
॥१०॥ पूरी बुद्धरांमरंगपराते ॥ निमिलनातें अक्षार ॥ सुषसंतो

सेवा ॥ अंजन रूप जोरे ॥ अंजन ज्ञांनां अंजन ध्यांनां ॥ अंजन छूवा
रे ॥ ३ ॥ अंजन बकता अंजन सुती ॥ अंजन नांवे रे ॥ अंजन थंभ
निरंजन कीन्हा ॥ दादू गावे रे ॥ ४ ॥ १४ ॥ अंजन बैंन चैंन होवे ॥ सु
गतां सुष ज्योगे ॥ तीन्यूं गुण त्रिविधि तिम्र ॥ अपमें कंभ न्योगे ॥ टेक ॥
होरह्यू कासन्नति नज्ञास ॥ प्रेम तंत सूकै ॥ प्रेम सार निरविकार ॥
बिरला कोई बूझे रे ॥ १ ॥ प्रेम प्यांन सुष निधांन ॥ प्रेम सुं निधे
लै ॥ सहज जनाइ सुष समाइ ॥ जीव ब्रह्म मेले रे ॥ २ ॥ अंमम निरं
मल होइ सुम ॥ छूटत रति भ्रांवे ॥ आदि पुरिष दरसन प्रेम ॥ दादू सा पावे
रे ॥ ३ ॥ २० ॥ कोई रांम का रातारे ॥ कोई प्रेम का मातारे ॥ टेक ॥ को
ई मन कौं मारे रे ॥ कोई तन कौं तारे रे ॥ कोई आप उबारे रे ॥ १ ॥

कोई जोग जुगत मारे ॥ कोई मोष मुकंतारे ॥ कोई है जगत वंतारे ॥२॥
कोई सहज गति सारारे ॥ कोई तारंगाहारारे ॥ कोई पीव का प्यारारे
॥३॥ कोई पारख पायारे ॥ कोई मिलि करि आयारे ॥ कोई म
न का भायारे ॥४॥ कोई है बेहद भागीरे ॥ कोई सेज सुहागीरे ॥ को
ई है अनुरागीरे ॥५॥ कोई सब सुख दातारे ॥ कोई रूप बिधाता
रे ॥ कोई अम्रत षालारे ॥६॥ कोई नूर पिछांणोरे ॥ कोई तेज को
जांणोरे ॥ कोई जोति बषांणोरे ॥७॥ कोई साहिब जैसारे ॥ कोई
साई ते मारे कोई [illegible] मारे ॥८॥२१॥ सहज गति साधवारे ॥ संत मु
[illegible] जे न हार ॥ जो जल म्राथतिरें तेतारें ॥ प्रांणनाथ अंतर नहार ॥[illegible]
[illegible]॥ पूंजी [illegible] परा ते ॥ निर्मल नाम [illegible] सार ॥ सुष संतो

घसदा सति संजम ॥ मति गति वार न पार ॥१॥ जुगि जुगि राते ॥ जु
गि जुगि माते ॥ जुग जुगि संग गति सार ॥ जुगि जुगि मेला जुगि जुगि
जीवें ॥ जुगि जुगि ज्ञान विचार ॥२॥ सकल सिरोवणि सब सुषदा
ता ॥ कुल जन हि संसार ॥ दादू हम रहे सुष सागर ॥ आये पुरष संगा
र ॥४॥२१॥ अकथ परिपाहू गांये ॥ आवा आत्म राम ॥टेक॥ च
के दिस मगल चार ॥ आनंद अति घणां पे ॥ बरत्या जै जै कार ॥
विरह विथा वृ गांये ॥१॥ कनक कलस रमां हि ॥ सषीं न विद्या
कुंत्यो ये ॥ आनंद अंगि न माइ ॥ अ[illegible] कोर आविज्यो ॥२॥ मा वे
जगति अपार ॥ सेवा कीजिये ये ॥ संजम सुष सिरजे नहार ॥ सद
सलो जिये ये ॥३॥ धंनि [illegible] आणां ॥ आवा आत्म राम ण गांये ॥

दादू सेज सुहाग ॥ नैनि निरखे न धपीये ॥ ४ ॥ २० ॥ इति राग मारू संप
पू ॥ राग ॥ ३ ॥ पद ॥ २८ ॥ १६ ॥ अथ राग रामकली मांझ ॥ सबदि सं
मोनां जे रैहे ॥ गुरबाइक बीधा ॥ ३ न नहीना गा ऐक सं ॥ सोई जन सी
षू ॥ टेक ॥ ऐसी ज्ञानी मरम की ॥ तन मन सब मेला ॥ जीवत मृतक
कै रहै ॥ गहि ऐका तम ला ॥ १ ॥ चेतनि चित हूं निबास रे ॥ महारस मीठा ॥
सबद मिर्जन गाहि रहै ॥ तन साहिब दाग ॥ २ ॥ ऐक सबदि जन उधरे ॥ सु
निसहजें जागे ॥ अनंत राते ऐकसूं ॥ सर मन सु पलांगे ॥ ३ ॥ सबदि सं मोनां
सम सु ठैरैहे ॥ प्रकटा तम आगे ॥ दादू सो फेर दे घणा ॥ अबिनासी लागे ॥ ३ ॥ १ ॥
अहे नर लो को है हरि नाव ॥ इजा नाही नांउ बिन नौका ॥ कहिले केव
लसम ॥ टेक ॥ निर्मल मदा ऐक अबिनासी ॥ अज अमे कलंके सा ॥ ति

टगाहिराछिम लगन नमांही ॥ निरषि देषि निजं के सा ॥ १ ॥ यकु रसमी ग्राम
हा अंमीरस ॥ अंमृत अंनं पन पीवे ॥ रनार है प्रेम संमाता ॥ औसें नुगि
नुगि जीवे ॥ २ ॥ इजानं नहीं और को औसा ॥ गुरु अंजन करि सूझै ॥ द
हु मोटे नागहं मारे ॥ दास बंमे की बूझै ॥ ७ ॥ ३ ॥ कबञ्चावे गा कब अ
वेगा ॥ ब्रनट आपदिषा वेगा ॥ मिरडा मुक कोंन्हा वेगा ॥ टेक ॥ कं
वडे लागिरकु रे ॥ मैं नकुं मै बाहि धरोरे ॥ तुफ बिंन कूरि मरौरे ॥ १
पांके मलक मेरा रे ॥ तंमन न पावे जातेरा रे ॥ रूंराषौ मैं नकुं नेरा रे ॥ २
हियंडे हेत लगारे रे ॥ अब के जे पीवू पांऊं रे ॥ तौ बेर बेर बलि जा ऊं
॥ ७ ॥ सेजड़ि पंपीव अविं रे ॥ तब अंनंद अंग न मांवे रे ॥ ज्ञब
दाहूद रस दिषावे ॥ ४ ॥ ७ ॥ पिरि नूं पांया पमाइडे ॥ मीम तिल्ली

जाहिंडे ॥ टेक ॥ पांधीवीदो निकरीलाअ्रसांसांगागल्हाइडे ॥ सां
ईसिकांसमकेला ॥ गुझीगाल्हसुणांइडे ॥ पसांघाकदीदारके
ला ॥ सिकअ्रसांजीलाहिंडे । दाहूमंकिकल्हिबमेला ॥ तोडेबिया
नकाइडे ॥ २ ॥ ४ ॥ कोमेडीदोमजणां ॥ तुहारीसूरतिकेला ॥ जग
डीकूघणां ॥ टेक ॥ प्रियांसंदीगाल्हदीनां ॥ पंधीडापुछां ॥ कंमीई
दोम्हगरेला ॥ १ ॥ डीदोबांहअ्रसां ॥ आहेसिकदीदारजीला ॥ पिरी
पूरिपसां ॥ इएकेंदाहूजांदरोंदी ॥ मजणांसांगारहां ॥ २ ॥ ५ ॥ हरिहादि
घावोनैनां ॥ सुंदरिमूरतिमोहनां ॥ बोलिसुनावोबैनां ॥ टेक ॥ प्र
गरमुरांतंनमंकणां ॥ मदीमांनसुधर्मकणां ॥ अबिनासीअ्रपरं
परंरां ॥ दीनदयालगोपालनवधरा ॥ १ ॥ पारब्रह्मसमरणां ॥ ररसदेकिउ

षड्‌रसं ॥ करि किंनि पाकर संग मई ॥ नव बनाहूटै षेत मर्दई ॥१॥ द
रंग मधुप सेवग ज्यों मैंरे ॥ हूं जात मक्करि मांनै रे ॥ टेक ॥ ऋोरक्षां गां
निं की जाला ॥ फंध रोपै है जंम जाला ॥ संभ्य कालक बिन सिर
पैषै ॥ ऐसि घरूप मबटै षै ॥१॥ बिष सागर लहरि तरंगा ॥ एक
कै सारूप जन बंगा ॥ जै चीत नयन नकं नारी ॥ इ पक्कर वत मी
च बिचारी ॥२॥ एक कै सारूप क्कलारा ॥ गग पासी हारा म्ना
बि रा ॥ सब कै साटे पिंचारे ॥ पै प्रांगा घा नबट धारे ॥३॥ कै स
जंन सेवग सोई ॥ मैं नि ऋोरंन जावे कोई ॥ हरि प्रेम मगन
रंगि राता ॥ दाहूरां मरमै रसि माता ॥४॥३॥ आप निरंजन यों
कहै ॥ कीरति करतार ॥ मैं जंन सेवग है नही ॥ ऐ के अंग सार

॥टेक॥ मंमकां रणि सब घट है ॥ आपा अभिमान मदा अ षंम
त छरि धरे ॥ बोलै नगावां न ॥१॥ अउपट जीवै नहीं ॥ तब ही मरि
जाइ ॥ बिछुरें तलफे मीन ज्यूं ॥ जीवै जल [illegible] आइ ॥२॥ धीर नीर ज्यूं
मिलि रहे ॥ जल जलहि समान ॥ आत्म पांणी लूंण ज्यूं ॥ हज्जा नहीं
आन ॥३॥ मैं जन सेवग है नहीं ॥ मेरा हित राम ॥ मेरा जन मुझ मा
रिषां दादू कहै राम ॥४॥८॥ संत नितु म्हारी के मंगू ॥ मैं अनंत
सुष पाया ॥ जाका बम ते तूं ने हिया ॥ [illegible] चरनों आया ॥टेक॥ मेरा तप
ति मिटा तुम्ह दे षतां ॥ सीतल भयो भारी ॥ तब बंधन मुकता भए
जब मिले मुरारी ॥१॥ अब मन [illegible] सब छूटिया ॥ चेतन चित ला
यां ॥ पारस सौं [illegible] गा ॥ अविगति [illegible] निज पाया ॥२॥ मेरा चंच

नचितनिहचलमैंपौं॥ अबबंसननतनजाई॥ मगनमयौमरवे
छिपैं॥ रसमयापैंअंगाधाई॥ २॥ मनमुषकैतैसुषदीया॥ यकुसुं
छेदयातुम्हारी॥ दाहदरसंनपावई॥ पीवप्राणअक्षरी॥ ३
॥ गोब्यंदरायसौंअपनीवोट॥ कांमक्रोधमनऐवटपारा॥ तकि
मारैतरचोट॥ टेक॥ वैरीपंचमबलसंगिमेरे॥ मारगरोकिरहे
कालअहेडीअधिकक्रैलागो॥ जंजीवबाजगादे॥ १॥ जांनधां
नहिरदैहरिलीन्हा॥ संगहीघेरिए॥ संमफिंनप्रईबापरमई
या॥ तुम्हबिनमूलसहे॥ २॥ मरोगितुम्हारीरायषजगोब्यंद॥ इ
नसंसंगनदीजे॥ हंनकेसंगिबकूतउघपायो॥ दाहकौंगहिलीजै
जे॥ ३॥ १०॥ रामकिपाकिहोदयाला॥ दरसंनदेकुकरौपरति

पालो ॥ टेक ॥ बालक हू धन देई माता ॥ तौ देवंत करि जीवें विधाता
॥१॥ गुण औगुण मन कछु न विचारे ॥ अति हेत प्रीति करि पालै ॥५
अपनौं जानि कैरे प्रतिपालो ॥ नैन निकटि उर धरै हो गोपालो ॥२
तुम कहे नहीं वस मेरा ॥ तूं माता मैं बालक तेरा ॥४॥११॥ जगति मां
गौं बाप जगति मांगौं ॥ मूनें ता हरा नांव नौं प्रेम लागौं ॥ सिवपुरि व
सपुर फ्र बसरू की जिये ॥ अमृत पावा नहीं लोक मांगौं ॥ टेक ॥ अ
पि अवलंबन महा हरा अगनौं ॥ जगति म जीवें नीर गिरा चौं ॥ देह
नैं गेह नैं वास वैकुंठ तणौं ॥ इंद्र आसंन नहीं मुकति जाचौं ॥१॥
भगति का की परीक्षा पत्र विचल हरी ॥ निरमलौं नां अंतर सपान
भावै ॥ मि पि मे रा घनैं रायरू डौं नहीं ॥ देवपदि मा हरै काजि नां

वै ॥ आत्मा अंतरि सदा निरंतरि ॥ ता हरि बाप जी नगा तिदी जै ॥ क
हे हरि हिवै कोडि दत्त आपै ॥ तुम्ह बिना तें अरू कें नही लीजै ॥१
१२॥ पैं को ऐक रूरामजी नांव रूडौ ॥ ता हर रामनांव बिना बीजौं सबै
ही कूडौ ॥ टेक ॥ तुम्ह बिना और कोई कलि मान ही ॥ सुमरदी
संतनैं सदा आपै ॥ कम को धम कोटि छोडदे बाधौ ॥ नांम लेतां पि
त गां हि ऐका पै ॥१॥ संतनैं सांकडौ तु पूपी डा करै ॥ बाहरैं बहिलैं
वेगि आवै ॥ पापनां पुंज पज्जा करी नांखौ ॥ नू जियां जेनर मजौ
नि नावै ॥२॥ साधनैं उ हिलौ तिहां रूआकु लौ ॥ मां हरौ मां हरौ क
रीनैं धावै ॥ उ पूनैं मारिबा संतनैं तारिबा ॥ प्रगट था वा नहा आप
जावै ॥३॥ नांव लेतां पिषणा नां पतै पै ककलैं ॥ कोटि नां क मनां

छेदं की धां॥ कहै दादू हरि कैं तुम्ह बिनां को नहीं॥ साधि बोलै जे मरणि
लीधां॥५॥१४॥ हरि नांव देहु निरंजन तेरा॥ हरि हरि धें उपै जीव
मेरा॥ टेक॥ भाव भगति हेत हरि दीजे॥ प्रेम मगन मगि मन ल्यावै॥ को
मल बचन नहीं नता दीजे॥ रांम रस सांई ल्यावै॥१॥ विरह वैराग प्री
ति मोहि दीजे॥ हिरदै साच सति भाषौ॥ चित चरणौं चिंतामणि
दीजे॥ अंतरि जिठ करि राषौ॥२॥ सहज संतोष सील सब दीजे॥ म
न निहचल तुम्ह सूं लागौ॥ चेतनि च्यंतन सदा निवासी॥ संगि तुम्हा
रै जागौ॥३॥ ग्यांन ध्यांन मोहन मोहि दीजे॥ सुरति सदा संगि ते
रे॥ दीन दयाल दादू कौं दीजे॥ प्रेम जोति घटि मेरे॥४॥१५॥ जे जे
जै जगदीस तूं॥ तूं समरथ सांई सकल भवन भांनै घडै॥ तूं जा

कोनांही ॥टेक॥ कालमीचक्रगांकरै ॥ जमकिंकरमाया ॥ महा
जोधबलिवंतबली ॥ तेकंपेरापग ॥१॥ जुक्तामरंगातुमकूषेहैंमहैं
मनकंजेजरी ॥ कामदलनमकरूगंगामहै ॥ वेदेवमुरारी ॥२॥ सब
कंपैकरतारथै ॥ तबबंधनपामा ॥ ग्रारिरिपंजेजननेगता ॥ सब
बिघनबिनासा ॥३॥ सिरऊपरिसांईषडा ॥ सोईहमसांही ॥ द
हसेवगारामका ॥ निरजनेंनडरांई ॥४॥१५॥ हरिकेंचरनपकरि
मनमेरा ॥ यहअम्रबिनासीघरतेरा ॥टेक॥ जबचरनकवल
रजपावै ॥ तबकालब्यालबोरावै ॥ तबत्रिबिधितापलनमांसे
तबसुषकीरासिबिलासै ॥१॥ जबचरनकवलचितलागै ॥ त
बमांथेमींचनलागै ॥ तबजनमजुरामबबीनां ॥ तबपदपा

ठेनउरलीन्हा ॥२॥ जबचरनकवलरसपीवै ॥ तबमायानव्यापै
जौवै ॥ तबजनमकरमजबभाजै ॥ तबतीनूंलोकबिराजै ॥३॥ ज
बन्हनैकवलजरूचितेरी ॥ तबच्यारिपहरपचेरी ॥ तबदसहूंओर
नबोहे ॥ जबमनलागेसाच ॥३॥१६॥ संतोंओरकहोंक्याकहि
पै ॥ हमतुम्हसीषदहैसतगुरकी ॥ निकटिरामकेरहियै ॥टेक॥
हमतुम्हमांमाहिंबसेसोसांमी ॥ साचेसूंसचलहियै ॥ दरसनपरस
नजुगिजुगिकीजै ॥ काहेकूंदुषसहियै ॥१॥ हमतुम्हसंगनिकटि
रहैनेरे ॥ ॥ हरिकेवलनकरगहियै ॥ चरणांकवल[illegible]निकटिरहैसे
केननतकोहेकूंबहियै ॥२॥ हमतुम्हमतारनतेजघनसुंदर ॥ नी
केसूंनिरबहियै ॥ दुष्टहेसुंओरदुषसमवहीं ॥ नामेंननकूंवहि

पे॥३॥१७॥मनरेबकुरिनंन्हेमैंहोई॥पछिफिरिपछितावैगारे
नीदन्नरेजिंनसोई॥टेक॥आमसारैसंचुकरीले॥तोसुषपावैता
हीं॥प्रीतिकरीपीवपाइयेरे॥चरनौंराषैमांहीं॥१॥संसारसागर
बंषमझतिन्हारी॥जिनिराषैमनमोहि॥दादूरेजंनरामनांमसु
कुममलदेहीछोड॥२॥१८॥साधीसावधांनह्वैरहिये॥पलक
मांहिंपरमेस्वरजांणौं॥कहाहोइकाकहिये॥टेका॥बाबाबाटघा
टकुंछसंभकनआवै॥हरिगावंनदेहमझांनां॥प्रेसीपंपिवलै
अकेला॥अवघटिघाटपयांनां॥१॥बाबासंगनसाथीको
नहींतेरा॥यहुसबहाटपसारा॥तरवरपंषीसबैसिधाये॥ते
राकवनगंवारा॥२॥बाबासबैनवाकंपंथसिरोरांयो॥अस्थि

रनांहींकोई॥ अंतिकालिकोईआगेपाछै॥ बिस्तुर्तबारनहोइ॥३॥
अवाकाचीकायाकदनजरेसारै॥ निगईकहामोवै॥ दाइसैंबव्ल
मुक्तिकलीजे॥ सावधंनकिनहोवै॥४॥१९॥ मेरामेराकाहेकुं
कीजे॥ जेकछुसंगनिआवै॥ अंनतकरीनैधंनधरीलारे॥ तेक
नैरीतानजावै॥ टेक॥ मायांबंधनअंधनचैते॥ मेरमांहिंलपटा
या॥ तेजांणोंकुं रैहबिलासौ॥ अनंतबिरोधबाया॥१॥ आपस्वा
थीरहबिलसमारै॥ आगमममनिजांणोंं॥ जमकमांथैबांणाधरीला॥
तेतेमनिनआंणोंं॥२॥ मनबिचारीसारीतेलीजे॥ तिलमांहैतन
पड़िबा॥ दाइरेतिहांतनमनाडीजै॥ जेणोंमारगिचढिबा॥३॥२०॥ स
नमुषनईजारे॥ तनकसमाईजारे॥ तेमेरेप्रांणाअधारी॥ निराका
रनिजंनदेवा॥ लेवातेहबिचारी॥ टेक॥ अगमअपारपरमनिजसोई

रे ॥ अवगुण मेरा बिसतारं ॥ अकरबी जैसैं मन्हूं जि संमानारे ॥ ऐसे सां
म पै मारं ॥१॥ जैसैं कांन्हा किन्यछ कची न्हारे ॥ जईलातै प्रवां सां ॥ ऐ
बा ति तेरा गति नहीं जांनूं ॥ मैं मूरिष अग्यांनं ॥२॥ मह जे तेरा ये मन
मेरा ॥ साधन मेरंग आई ॥ राहू तेरी गति नहीं जांनैं ॥ त्रिबा हो कर
लाई ॥३॥२१॥ हरि मारग मसतक दीजिये ॥ तब निकटि प्रेमपद
लीजिये ॥टेक॥ इस मारग मांहे मरनां ॥ तिल पीछै पाव न धरणां
अब आगै होइ सु होई ॥ पीछै सोचै न करणां कोई ॥ जसूरा सिं
गा कूकै ॥ तब आपा पर नहीं बूकै ॥ सिर साहिब काज संवारै ॥ घ
णा घांवां आपा मारै ॥२॥ सती सतगहि साचा बोलै ॥ मन निहंचल
करै न डोलै ॥ वाकै सोचु पोच जीवन नावै ॥ जग देषत आप जला

वै ॥ इस सिर सूं साटा कीजै ॥ तब अविनासी पद लीजे ॥ ता काल

बसिरसाबतिहोवै ॥ जबदादूआपापोवै ॥४॥२२॥ कूगकलिजुग
श्री कहुआनंजाइ॥ मृतकोंविषकहैबणाइ ॥टेक॥ धनकोंनिरध
ननिरधनकोंधन ॥ नीतिअनीतिपुकारै ॥ निर्मलमैला ॥ मैला
निरमल ॥ साधचोरकरिमारै ॥१॥ कंचनकाचकाचकोंकंच
न हीराकंकरआषै ॥ माणिकमणियांमणियांमाणिक ॥ साच
कूंअकरिनांषै ॥२॥ पारसपत्थरपत्थरपारसि ॥ कामधेनिपसुगा
वै ॥ चंदनकाठकाठकोंचंदन ॥ ऐसीबहुतबनावै ॥३॥
रसकोंअणरस ॥ अणरसकोंरस ॥ मीठाषाराहोई ॥ दादूकलि
जुगऐसावरतै ॥ साचाबिरलाकोई ॥४॥२३॥ दादूमोहिन
रासामोरा ॥ सारंगपाणिरंगमोईमनिमेरे ॥ कहाकरैकलिघोटा
टेका ॥ तेरेनांगेदरियासूंन्यारा ॥ दरियामांहिंनजांहिं ॥ मनछकेरहै

जलिजेते तिनकंकालंनपाई ॥१॥ जबसबैपंजरघरपाया
बाजरषाबंनमांहीं ॥ जिनकासमथैरापणाहारा तिनकंकै
करनांहीं ॥२॥ साचेकूउंनपूजैकबकूं ॥ सतिनजाणौंकाई
दाहूसाचासबजिसंमांमां ॥ फिरिवेकूगबिलाई ॥३॥ रेषां ॥ सो
ईकंसाचपियारा ॥ साचेसाचसुहावैदेषो ॥ साचासिर्जन
हारा ॥ टेक ॥ जंघणाघावांमारघडीजे ॥ कूउसबैकड़िजाई
घणांकेघांकेंसाररहैगा ॥ कूउनमांहिंसमाई ॥१॥ कनकमे
टीकगंनिमुषटाजे ॥ कंपसबैजलिजाई ॥ यौंतोकसणीसा
चसहैगा ॥ कूउसहैनहींजाई ॥२॥ जंघृतकौंलेतातांकीजै
ताइताइतंतकींना ॥ ततेंतरहैगाजाई ॥ कूउसबैजलिषीनां
॥३॥ यौंतोकसणीसाचसहैगा ॥ साचाकसिकसिलेवै ॥ दाहूद

रसंनसाचापावै ॥ कवे दरसंनदेवै ॥ ५ ॥ २५ ॥ बातैंबाटिजांहिंगोन
ईरो ॥ ज्ञमुक्तिजिनजांनौंबालनिपईरो ॥ टीका ॥ जबलगआपणांआ
पनजांणौं ॥ तबलगकथणीकाची ॥ आपाजांनिसांईकौंजांनैं ॥ त
बकथनीसबसाची ॥ १ ॥ करनीबिनांकंतनहीपावै ॥ कहेंसुनें
क्याहोई ॥ जैसीकहैकरैजेतैसी ॥ पावैगाजनसोई ॥ २ ॥ बातनि
हीजैनिर्मलहोवै ॥ तौकाहेकूंकसिलीजै ॥ सोनांआगिंदहेद
माबारा ॥ तबयकंपाणापतीजै ॥ ३ ॥ यौंहमजांनांमनपतियांनां
करनीकबिनआपारा ॥ दाइतनकौंआपाजारै ॥ तौतिरतनला
गैबारा ॥ ५ ॥ २६ ॥ पंडितरांमभजिलेसोकीजै ॥ पढिपढिबेदपुरान
बषांणौं ॥ कोईतनंकहिदीनै ॥ टीका ॥ आतमरांगाबिषमबि

याधी॥ सोई करि श्रोषदि सारा॥ प्रमतत्त्व प्राणी होइ प्रमसुष॥ छूटै स
ब संसारा॥१॥ रे गुण इंद्री अंग निअंग पारा। तासनि जो लै सरीस
तेन मन सीतल होइ सदा सुष। सो जन जनो वा तो नीरा॥२॥ सोई सारा
हं महि बतावो जिहिं पंथि पहुँचै पारा॥ जूं लिन पैरै उलटि नहीं
आवै॥ सो कुछ करइ बिचारा॥३॥ गुरु उपदेस सदेइ करि दीपक॥
तिमर मिटै सब सूझै॥ दादू सोई पंथि निज ज्ञाना॥ राम मिलन की बू
झै॥४॥२७॥ हरि राम बिना सब भ्रम्य गये॥ कोई जन तेरा साच ग
है॥ टेक॥ पावै नीर त्रिषा तनि जाइ॥ ज्ञान गुरु बिन कोई न
लहै॥ प्रगट पूरा समझि न आवै॥ तांथैं सो जल दूरि रहै॥१॥ हरि
षसो कहै को कंसे नि जलिये॥ येक येक कै संगि निवदै। अनतज्जा

इत हांउ सपावे ॥ आपहि आपा आपा पर है ॥२॥ आपा पर तजि सब छाडि मे
री निलोक पितामहि धरे ॥ सो जन सही साच कूं परसे ॥ अमर मिलै न दी
कबहूं मरे ॥३॥ पारब्रह्म संगी ति निरंतरि ॥ रांम रसांइन भरि पीवे
सदा अमर दसु धी साचे सूं ॥ कहै दादू सो जन जीवे ॥४॥२०॥ जग अं
धा नैंन न सूझै ॥ जिनि सिरजे ताहि न बूझे ॥टेक॥ पांहण ताकी पूजा
करै ॥ करि आतम घाता ॥ निर्मल नैंन न आवई ॥ दोजग दिसि जाता
॥१॥ पूजे देव दिहाडियां ॥ महा माई मानैं ॥ प्रगट देव निरंजनां ॥ ताकी
सेव न जानैं ॥२॥ भैरूं भूत सब भरम के ॥ पसु प्राणी ध्यावैं ॥ सिरजन
हारा सबनि का ॥ ताकौं नहीं पावैं ॥३॥ आप स्वारथ मेदनी ॥ का
कोन ही करई ॥ दादू साचे रांम बिनां ॥ मरि मरि दुख भरई ॥४॥२१॥
साचा रांम न जांनैं रे ॥ सब झूठ बंधांनैं ॥टेक॥ झूठे देवा झूठी सेवा

फूगा करै पसारा ॥ फूगी पूजा फूगी पाती ॥ फूगा पूजणहारा ॥ १ ॥ फू
गा पाककं रै पूजारी ॥ फूगा ने गलगावै ॥ फूगा सत्ता मा पडे पड्यौ ॥ फू
गा था लव बंजारौ ॥ २ ॥ फूठे बकता फूठे सुरता ॥ फूगा कथा सुना
वै ॥ फूगा कलिजुग सब को मानैं ॥ फूगा न मिटि हावै ॥ ३ ॥ थावर जं
गम जल थल महिल ॥ घटि घटि ते ज समांनां ॥ कहै कबीर राम है मा
रा ॥ स्त्राहि पुरिष पहिचांनां ॥ ४ ॥ ३७ ॥ मैं पंथि येक अपार को ॥ मन
हौरत न जावै ॥ सोई पंथ पावै पीव का ॥ जिसै आप लखावै ॥ टेक ॥ को
पंथि हिंहबरक के ॥ को कान्ह राता ॥ को पंथि सोफी सेवडे ॥ को संन्या
सी माता ॥ १ ॥ को पंथ जोगी जंगमां ॥ को सकति पंथ धावै ॥ को पंथि
कमडे कापडी ॥ को नकं तमनावै ॥ २ ॥ को पंथि काहू के चलै ॥ मैं
औरन जांनौं ॥ दास कबीर जिनि जग सिरजिया ॥ ताही को मांगौं ॥ ३ ॥

॥१॥ आज हे मारे रांमजी ॥ साध घरि आये ॥ मंगलचार चौक दिसनाये
कै आनंद बधाये ॥ टेक ॥ चौक पुरांकं मोतियां ॥ घसि चंदन लीकें ॥ पंच
पदारथ पोह करि ॥ एक माल चढांकं ॥१॥ तन मन धन करौं वारनै
प्रदिछिण दीजे ॥ सीस हंमारा जीव ले ॥ नवछावरि कीजे ॥२॥ ज्यावन
गति करि प्रीति सूं ॥ प्रेम रस पीजे ॥ सेवा बंदन आरती ॥ एक लाहा ली
जै ॥३॥ ज्यां घरि हे मारा हे सखी ॥ सुख सागर आया ॥ दाह काटि दरस कीया ॥
मिले त्रिभुवन राया ॥४॥ ३२॥ निरंजन नांउ के रसि माते ॥ कोई पू
रे प्रेंगी राते ॥ टेक ॥ सदा सनेही रांम के ॥ सोई जन साचे ॥ तुम्ह बिंन
औरं न जांनहीं ॥ रंगि तेरे ही राते ॥१॥ आन न आवै ऐक तूं ॥ मति साधू
सोई ॥ प्रेम पियाला सो पीवै ॥ जे सांनन कोई ॥२॥ तुम्ह दीजा नांव निंतरि

रहे ॥ ग्यान दृष्टि अंतर नूरी गी ॥ प्रेम मैं मगन पीवृ पीव डी लै तु मसौं लागी ॥ ४
जे जन तेरे रंगि रंगे ॥ दूजा रंग नां हीं ॥ जे न मसु फल करि लीक्षिये ॥ दा
दू उन मां हीं ॥ ५ ॥ ३२ ॥ चलु रे मन जहां अमृत बनां ॥ निर्मल नीके
संत जनां ॥ टेक ॥ निर गुण नां वै फल अगम अपार ॥ संत निज जीव निं
प्राणा धार ॥ १ ॥ सीतल छाया सुषी सरीर ॥ चरण सरोवर निर मल नी
री ॥ २ ॥ सुफल सदा फल बारह मास ॥ नांनां बांणी धुनि प्रकास ॥ ३
तहां बास बसि अमर अनेक ॥ तहां चलि दादू यहै बबेक ॥ ४ ॥ ३३ ॥
चलौं मन महरा जहां मित्र अम्हारा ॥ तहां जामण मरण नजांणि
यें न हीं जांणि ॥ टेक ॥ मोह न माया मेरा न तेरा ॥ आवागवन नहीं जे
म फेरा ॥ १ ॥ पंड पडै नहीं प्राण न छूटै ॥ काल न लागै आवन छूटै ॥

३॥ अमरलोक तहां अषिल सरीरा ॥ ब्याधि बिकार न ब्यापै पीरा ॥३॥ रां
म राज कोइ निजिडे न जाजे ॥ अमर सषिर रहणां बेगा छाजे ॥ अकल षानि र
जे न अ्रौर न कोई ॥ मित्र अमर कारा दास सोई ॥४॥४॥ बेली अमा न हदे सी
सम समाई ॥ सहजै भगत रांम रमचे ॥ दिन दिन बधती जाइ ॥टेक॥ स
तगुर सहजैं न्हाहौ बेली ॥ सहज गगन घर छाया ॥ सहजै सहजै कूंपल
मेल्है ॥ जांणै अवधू राया ॥१॥ अमृत बेली सहजैं फूलै ॥ सदा फूल बपल
होई ॥ काया बाडी सहजै निपजै ॥ जाणैं बिरला कोई ॥२॥ मन नह छबे
ली म्रकणा लागी ॥ सहजै जुगि जुगि जीवै ॥ दाइ बेलि अमृत फल ला
गी ॥ सहजि सम् हारस गावै ॥३॥६॥ संतो रांम बांन मोहि लागी ॥ मातम
रामं मतवणी ॥ सबसंगी मिलि जांणे ॥टेक॥ चिर चेत न चिंता म ॥

सिंचीजै ॥ उलटि अपूठा आया ॥ भेद रिये सि बकरै नहीं निकसै ॥ प्र
मतत घर पाया ॥ १ ॥ आवै न जाइ जाइ नहीं आवै ॥ तिहिं रसि मन गंगामा
ता ॥ पांन करत प्रमांनंद पायो ॥ थकित भयो चलि जाता ॥ २ ॥ भयो
अपंपा पंक नहीं लागे ॥ निमिल संगि सहाई ॥ पूरी अ सल अपिल अवि
नासी ॥ तिहिं तजि अनत न जाई ॥ ३ ॥ सो सरुला गिरे मप्रकासा ॥
प्रगट ग्रीम बांणी ॥ दादू दीनदयाल हिं जांणी ॥ सुष मैं सुरति समांनी
॥ ४ ॥ २३ ॥ मधि नैन निरषौं सदा ॥ सो सहज सरूप ॥ देषत ही मन
मोहियो ॥ सो तत अनूप ॥ टेक ॥ त्रिवेणी तटि पाइया ॥ मूरति अ
बिनासी ॥ जुगि जुगि मेरा भावता ॥ सोई सुषरासी ॥ १ ॥ तारुणी तटि
देषिहूं ॥ तहां अस्थानं ॥ सेवग स्वामी संगि रहै ॥ बैठे भगवानं ॥ नि

रखेध्यानसुहातसो ॥ नहांसेवगस्वामी ॥२॥ अनेकजतनकरिपा
ईया ॥ मैंअंतरजामी ॥३॥ तेजनतारप्रमतिनहीं ॥ औसाअतिनियारा ॥
दाहपाइंनपावहीं ॥ सोसरूपमंझारा ॥४॥३८॥ निकटिनिरंजं
नदेषिकें ॥ छिनमहरिनजाई ॥ बाहरिभीतरिएकसा ॥ सबरह्या
समाई ॥टेक॥ सतगुरभेदबताइया ॥ तबपूरापाया ॥ नैननि
हींनिरषोंसदा ॥ घरिसहजेंआया ॥१॥ पूरेसंप्रचाभया ॥ पूरी
मतिजागी ॥ जीवजानिजीवनिमिल्यो औसेंसबकजागी ॥२॥
रोमरोममैंरमिरह्या ॥ सोजीवनिमेरा ॥ जीवपांवन्यारानहीं
सबसंगिवमेरा ॥३॥ सुंदरिसोसहजेंरहे ॥ घटिअंतरजामी
दाहसोईदेषिकें ॥ सारूसंगिस्वामी ॥४॥३९॥ सहजसनेहलडी
हे ॥ तूनिमितनैननिहारि ॥ [illegible] आगुणमें ॥

त्रिभवनदेवमुरारि ॥टेक॥ बारंबार निरषि जगजीवन ॥ इहिं घ
रहरि अबिनासी ॥ सुंदरि जाइ सेज सुष बिलसै। पूरण ब्रह्म निवासी
॥१॥ सहजैं संगि प्रसि जगजीवन। आसंनि अंग मधि अंक के ला॥ सुंदरि
जाइ सेज सुष सोवै॥ ब्रह्म जीव का मेला ॥१॥ मिलि अंश्रा वद प्रीति
करि पीवन॥ अंग मनि मंमझ हौं राजा॥ जाइ नवं प्रसि पांवन कौं
सुंदरि सारे काजा ॥२॥ मंगलचार चहूं दिसि रोपे॥ जब सुंदरि पी
व पावै॥ प्रम जोति पूरे सं मिलि करि ॥ दादू रंगलन गावै ॥४॥४०॥ त
हां आपै आप निरंजनां॥ तहां निस बासुर नहीं संजमा ॥टेक॥
तहां धरती अंबर नांहीं॥ तहां धूप न दीसै छांहीं॥ तहां पवन न चा
लै पांणी॥ तहां आपै एक बिनांणी॥१॥ तहां चंद न कगै सूरा॥ म्रु
षि काल न बाजै तूरा॥ तहां सुष दुष का गम नांहीं॥ ओ तो अगम माहिं

गोचर मांही ॥३॥ तहां काल का यान नहीं जागै ॥ तहां को सोवै को जागै
तहां पाप पुंनि न नहीं कोई ॥ तहां अलष निरंजन सोई ॥३॥ तहां सह
जि रहै से स्वांमी ॥ सब घटि अंतरजांमी ॥ सकल निरंतर बासा रहित दा
इ संग म पासा ॥४॥४॥ अवधू बोलि निरंजन बांणी ॥ तहां एकै अंतन
हह जांणी ॥५॥ तहां बसध का बल नांही ॥ तहां गगन घाम नहीं
छांही ॥ तहां चंद सूर नहीं जाई ॥ तहां काल का यान नहीं जाई ॥६॥ तहां
रैणि दिवस नहीं छाया ॥ तहां बाव बरन नहीं माया ॥ तहां दैअंतस
नहीं होई ॥ तहां मरै न जीवै कोई ॥७॥ तहां नांही पाप पुरांनां ॥ तहां
अगम निगम नहीं जांनां ॥ तहां बिद्या बाद नहीं ग्यांनां ॥ नहीं तहां
जोग रषोनां ॥८॥ तहां निराकार निज ऐसा ॥ तहां जांणां पां जाइ

नजैसा॥ तहांसबगुरगरहतागहिये॥ तहांदाहुअंनहदकहिये॥४॥६
१॥ बाबाकोअैसाजनजोगी॥ अंजनछांमेंरहैनिरंजन॥ सहजि
सदारसजोगी॥ टेक॥ छायामायारहैअबरजत॥ पिंडब्रह्मंनियारे
रेचंदसूरषेंअगमअगोचर॥ सोगहितविचारे॥१॥ पापपुंनिलि
पैनहींकबहूं॥ दोइपषरहितासोई॥ धरणिंअंकासतेंहीषेंकपरि
तहांजाइरतहोई॥२॥ जीवंनिमनजबांछेकबहूं॥ आवागवंन
नफेरा॥ पांनीपवंनप्रसनहींलागौ॥ तिहिसगिकरैबसेरा॥३॥ गु
नआकारजहांगमिनांहीं॥ आपेआपअंकेला॥ दाहुजाइजहांउ
नजोगी॥ प्रमपुरिषसौंमेला॥४॥४८॥ जोगीजांनिजांनिजनजी
वै॥ बिनहींमनसामनहिंबिचारे॥ बिनरसनांरसपीवै॥ टेक॥

बिन ही लोचन निरषि नैंन बिन ॥ श्रवण रहित सुनि सोई ॥ ज्यौं सें ज्ञा
स्वर है एक रस ॥ सो इस्मरनां न होई ॥१॥ बिन ही मारग चलै चरं
न बिन ॥ निहचल बेवा जाई ॥ बिन ही काया मिलै प्रसपि ॥ ज्यूं जल
जल हिं समाई ॥२॥ बिन ही नाद स्वासैं न पूरै ॥ बिन करबे न वजावै
बिन ही पांऊं नंचै जिम सदिन ॥ बिन ज्यान्यां गुण गावै ॥३॥ सबगु
णा रहिता सकल बियापी ॥ बिन इन्द्री रस भोगी ॥ दादू ऐसा गुरु हं
मारा ॥ आप निजैं न जोगी ॥४॥४४॥ इहै प्रम गुर जोगं ॥ अम्हमां महा
रस भोगं ॥ टेक ॥ मन पवनां थिर साधं ॥ अबिगति नाथ अराधं
तहां सबद अनाहद नादं ॥१॥ पंच सषी परमोधं ॥ अगम ग्यान गुर
बोधं ॥ तहं जंनां पापबिहिनैं न सोधं ॥२॥ सतगुर समांहिं बतावा ॥ निरा

धार घर छाया ॥ तहां जोति सरूपी पाया ॥ ३ ॥ सदा जैं सदा प्रकासं ॥
पूरंण ब्रह्म बिलासं ॥ तहां सेवग दास कदासं ॥ ४ ॥ ४५ ॥ मूनैं ये हरि जनं
भौ थाये ॥ कीडायें हली बिदास्यो ॥ तेन्हैं बेगी पाये ॥ टेक ॥ आं गाऊं तो
तें बैठो हारे ॥ ऋंजां गातें न्हैं ता बाहे ॥ पां गुह्यों उजां वाला गो ॥ तेन्हैं क
रको साहे ॥ १ ॥ नांन्हीं कै तोने मांटी थाये ॥ गगन मंडल नहीं मा ये ॥ मो
टेरौ बिस्तार नर्णी जै ॥ तेनैं की हें जाये ॥ २ ॥ तेज्यां यों जो नर पी जो वे ॥ सो
जी नैं बलि मांहें ॥ दास ते कों भर मन जां यों ॥ जो जिन्या बिकू गों गाये
॥ ३ ॥ ४६ ॥ इति श्री राग गौरी भक्ति सी संपूर्ण ॥ राग ॥ ८ ॥ पद ॥ ४६ ॥ १० ॥ ३ ॥ अ
थ राग आसावरी ॥ तूं ही मेरे रसनां तूंही मेरे बैनां ॥ तूं ही मेरे श्रवनां
तूंही मेरे नैंनां ॥ टेक ॥ तूं ही मेरे आतम कवल मंझारी ॥ तूं ही मेरे मन

सा तुम्ह परिवारी ॥१॥ तूंही मेरे मन नहीं तूंही मेरे सासा ॥ तूंही मेरी सुरतैं प्रा
णनिवासा ॥२॥ तूंही मेरे नषसषसकल सरीरा ॥ तूंही मेरे जी पर जंस ज
लनीरा ॥३॥ तुम्ह बिन मेरे अवर कोई नांहीं ॥ तूंही मेरा जीवनिंदा
इ मांही ॥४॥१॥ तुम्हारे मांइ लागि हरि जीवन मेरा ॥ मेरे साधन संकल
नांउ निजि तेरा ॥ [illegible] ॥ दांन पुंनि तिन पतीर्थ मेरे ॥ के देवनांउ तुम्हारा
ऐसब मेरे सेवा पूजा ॥ के सांबूत है मारा ॥१॥ ऐसब मेरे बेद पूरांनां ॥ सु
मिरन महे सोई ॥ ज्ञांन ध्यांन गोई सब मेरे ॥ अवर न दूजा कोई ॥२॥ को
क्रोध [illegible] काया बसि कर रांगा ॥ ऐसब मेरे नांमा ॥ मुकता गुपता प्रगटक
हिये ॥ मेरे केवलनं रांमां ॥३॥ नांरंग नांति रंगांनांउ निजि तेरा ॥ तुम्ह हीं ऐक
अधारा ॥ [illegible] नांउ गांवै जन बपारा ॥४॥१॥ २

मेरे

रि केवल [illegible] एक अधारा । सोई तारंन तिरंन हमारा ॥ टेक ॥ नांमैं
पंडित पढि गुनि जांनैं । नां कछु ग्यांन बिचारा । नांमैं आगमी जोति
ग जांनैं । नां मुकरूप सिंगारा ॥१॥ नां तप इंद्री निग्रहु । नां कछु ती
र्थ फिरणां । देवल पूजा मेरे नांही । ध्यांन कछू नहीं धरणां ॥२॥ जोग
जुगति कछू नहीं मेरे । नांमैं साधन जांनैं । औषदि मूली मेरे नांही
नांमैं देस बषांनैं ॥३॥ मैं तौ और कछू नहीं जांनैं । कहौ और क्या
कीजै । दादू ऐक गलित गोब्यंद सौं । इहिं बिधि प्राण पतीजै ॥४॥३॥
पीव घरि आवनौं ये । अहो मोहि भावनौं ते ॥ टेक ॥ मोहन नीकौ रि
हरी । देषौंगी अंषियां भरी । राषौंहूं उरधरी प्रीति षरी ॥१॥ मोहन मेरौ
री माई । रहौं हूं चरणौं धाई । आनंद बधाई । हरि के गुन गाई ॥२॥ दा

हूरेश्वर न गहिये॥ जाइ मैं तिहां तो रहिये॥ तन मन सुष लहिये बीनती
कहिये॥ ॥३॥४॥ हो माई मेरो राम बैरागी॥ तजि जिन जाइ॥ टेक॥ रां
म बिनोद करत उर अंतरि॥ मिलि हूं बैराग निधाइ॥२॥ जोगनि ह्वै क
रि फिरैंगी बदेसा॥ राम नाम ल्यो लाइ॥ दादू को स्वामी हे रे उदासी॥ रहि
ऋनैं न देइ ल्याइ॥ ॥३॥४॥ रे मन गोबिंद गाइ रे गाइ॥ जन्म अबरथा
जाइ रे जाइ॥ टेक॥ ऐसा जनम न बारंबार॥ ताथैं जापले राम पिया
रा॥१॥ यहु तन ऐसा बहुरि न पावै॥ ताथैं गोबिंद काहे न गावै॥२॥
बहुरि न पावै मनिषा देही॥ ताथैं करि ले राम सनेही॥३॥ अब के दा
हैकी एनि हाला॥ हू जिजै न दीन दयाला॥४॥५॥ मन रे सोवत रैंनि
बिहांणी॥ तैं अजहूं जात न जांणी॥ टेक॥ बीती रैंनि बहुरि नहीं
आवै॥ जीव जागि जिन सोवै॥ चार्यों दिसि चोर घरि लागे॥ जागि दे

सिक्या है वै ॥१॥ जो रस नैं पछिताव न लागै ॥ मांहिं महल न कुछ वां ॥
जब जाइ काल काया कर लागै ॥ तब सोधै घर मांही ॥२॥ जोगि जे तन
करि राषे सोई ॥ तब तन न तन न जाई ॥ चेतनि पहरै चेतन मांही कहै
दादू समझाई ॥३॥१२॥ देषत ही दिन आइ गयो ॥ पलटि के सब केस
नये ॥ टेक ॥ आई जु जामी च स्व रु मरणां ॥ आया काल अब कैसा क
रणां ॥ श्रवनां सुरति गई नैंनन सूझै ॥ सुधि बुधि नांठी कहा न बूझै ॥
१॥ मुष थैं सबद बिकल नई बांणी ॥ जनम गयां सब रैंनि बिहांणी ॥ प्रे
रां पुरिष पछितावैं लागा ॥ दादू औसरि काहे न जागा ॥२॥३॥ हरि
बिन हा हा काहू सच नांही ॥ देषत जाइ बिषै फल षाई ॥ टेक ॥ रस
रसनां के मीन मन भीरा ॥ जल थैं जाइ यौं दहै सरीरा ॥१॥ गज के
ग्यांन मगन मद हि माता ॥ अंकुस सहि आरि गहे धन दाता ॥ मरकट मूठी मां

सिं मनलागा ॥ ३ ॥ षकी रासिं नरमे भ्रमि लागा ॥ दादू देषि दरासु षदाता ॥
ताकौं त्यागि कहां मनराता ॥ ४ ॥ ९ ॥ सांई बिनां संतोष न पावै ॥ जौ वै
घर तजि बनि बनि धावै ॥ टेक ॥ जौ वै पढि गुनि बेद उचारै ॥ आगम नि
गम सबै बिचारै ॥ १ ॥ जौ वै नव षंड सब फिरि आवै ॥ अजहूं आगे का
हे न जावै ॥ २ ॥ जौ वै सब तजि रहै अकेला ॥ आई षेद न काहू मेला
॥ ३ ॥ दादू ढूंढै छैसा कोई ॥ साचा बिनां संतोष न होई ॥ ४ ॥ १० ॥ मन माया
राते भूले ॥ मेरी मेरी करि करि बौरे ॥ कहां मुगध नर फूले ॥ टेक ॥ मा
या कारणि मूल गंवावै ॥ समझि देषि मन मेरा ॥ अंतकाल जब आइ पहूं
ता ॥ कोई नहीं तब तेरा ॥ १ ॥ मेरी मेरी करि करि जांगो ॥ मन मेरी करि र
हिया ॥ तब यहु मेरी को पिंतन आवै ॥ त्राण पुरि सजब गहिया ॥ राव रंक सम

बरजारां गी ॥ सब बहिन कूं बौरावे ॥ छत्रपति रूपति तिन कूं केसरि
चरनी बैरन क्यावे ॥३॥ चेति बिचारि जो निजीय जूपैनें ॥ माया स
गिनजाई ॥ दादू हरि जनजिसंम फिमयां जो ॥ रहे हौं राम स्यो लाई ॥४॥११
रह सांपे कम्यां पें नहारा ॥ क्षवृ चलिसी सब संसारा ॥ टेक ॥ चल
सी धरणि गगन [illegible] चलिसी ॥ चलिसी पवन रूपांणी ॥ चलिसी चंदसू
रपुनि चलिसी ॥ चलिसी सबै उपांणी ॥१॥ चलिसी दिवस रैंनि चलि
चलिसी ॥ चलिसी जुग जमवारा ॥ चलिसी काल ब्याल पुनि चलि
सी ॥ चलिसी सबै पसारा ॥२॥ चलिसी स्वर्ग नरक [illegible] चलिसी ॥ चलि
सी जूं चेगा हारा ॥ चलिसी सुख दुख पनी चलिसी ॥ चलिसी क्रम बिचा
रा ॥३॥ चलिसी चंचल निहचल रहसी ॥ चलसी जे कुछ कीसे

च

बैडझे धुर है अबिनासी ॥ और सबै घट बीनां ॥४॥१२॥ इहि कलि हं मम रयों
के आंप ॥ मरन मीं ञन सं गा गा पे ॥ टेक ॥ जब पैं यञ हंम मन बिचा
रा ॥ तब थें आगा म पंथ संवारा ॥ मरणां दे पिंहं मागे बन कीन्हा ॥ मरंन
पवा ऐसो हं मली न्हा ॥१॥ मरनां मीं वा ञा गे मोहि ॥ इहिं मरणों मीवा सुष
होइ ॥ मरणों पहली मेरे जे कोइ ॥ दाइ सो अजरावर होइ ॥२॥१३॥ रे म
न मरणों का होइ राई ॥ आगे पीछे मरणां रे न्याई ॥ टेक ॥ जे कछु आ
वै थिर न रहाई ॥ ट घत सबै चलग जा जाई ॥१॥ पांरपे कंबर कीयां प
यांनां ॥ से घम म साइ क म सबै संयांनां ॥२॥ ब्रह्मा बिष्णु महेस महा बलि
मोटे मुनिजन गा पे सबै चलि ॥३॥ निहचल सदा सोई मन लाइ ॥
लोइ हरि सिं... नोइ ॥४॥१४॥ केसे सात तत्त रूप मन जाई ॥ म

रै नजीवै का नैन षाई ॥टेक॥ पावक जैरै न मास्यो मरई ॥ काट्या कै न
टास्यो टरई ॥१॥ अधिर थिरै न लागै काई ॥ सीत घाम जलि न बूबि न आई
॥२॥ मोटा मिलै न गगन बिलाई ॥ अघट एक रस रह्यो समाई ॥३॥ अैसा
तत अनूपम कहिये ॥ सो गहि हिरदा है काहे न रहिये ॥४॥१५॥ मनरे सेवि
निरंजन राई ॥ ताकी सेवा रे चित लाई ॥टेक॥ आदि अंति सोई उपावै
प्रलै लै इहि पाई ॥ बिन हौं जाकी जिन गगन रहाया ॥ गोर हास सब निमै
समाई ॥१॥ पाताल मांहैं जे आराधै ॥ बाहिर रंगु न गाई ॥ सहस मुष
जिभ्या हूँ ताके सो न ता पार न पाई ॥२॥ सुर नर जाको पार न पावै ॥ कोटि
मुनी जन ध्याई ॥ दादू रे न ताको है रे जाको सकल लोक आराही ॥
॥३॥१६॥ निरंजन जोगा जानि लै चेला ॥ सकल बियापी रहै अकेला

टेका ॥ षपर न झोली कै मंत्र धारी ॥ महान माया लेऊ बिचारी ॥१॥ सो जोगी मुक्ता

मं रूपातें न कंथा ॥ जटा जाप न मैं गान न हीं पंथा ॥२॥ तीर्थ व्रत न बन षंभ बा

सा ॥ में गिन थाइ न हीं ज गि न्यासा ॥३॥ ग्यान गुरू न्म बिना सो जोगी ॥ दास चे

ला मद्दास न जोगी ॥४॥७॥ जोगिया बैरागी बाबा ॥ रहे है न्म केला तै न मन

मां का ॥ टेका ॥ ग्यान जोगी धीरज कंथा ॥ निर्भै चलन अंग मंगल ग्यान पंथा

॥१॥ सहजै मुद्रा न्म लप न्म धारी ॥ अन हद सींगी रहि नाहं मारी ॥२॥

काया बन षंड पंचौं चेला ॥ ग्यान गुफा मैं रहे न्म केला ॥३॥ दास दरस मन

कां निजा मे ॥ निर्जं न नगरी जि ष्पा मागै ॥४॥१८॥ बाबा कऊ हूजा कूं

कहिये ॥ ताथैं नहि सेवक षसम हिये ॥ टेका ॥ यऊ मति अंसी पसु बाजे मी

का है चेतन तन मांही ॥ ... पं न हीं जाने ॥ देषे इपन मांही ॥१॥

इहि मति मीच मरन के ताईं ॥ कपसंघ घत हो आया ॥ हू बि म्हवा मनि मन
न जांनां ॥ देषि आपणी छाया ॥ २ ॥ मधु के मांते सं म कफत नांहीं ॥ मैं गलकी
मति आईं ॥ आपदिं आप आपउ षटीनं हो ॥ देषि आपणी कांईं ॥ ३ ॥ म
न सं म के तो इह जांनां हीं ॥ बिं न सं भ फेंड घपांदै ॥ दाइ जांन गुरू कानां
हीं ॥ सम कफ रूहा पैं आवै ॥ ४ ॥ १ ॥ बाबा नांही इह जा कोईं ॥ पेक अंन
कनांतु म्हारे ॥ मो पे ओर न होईं ॥ टेक ॥ अलषकं आदी पेकं तूं ॥ तूं
हीं रांम रहीं म ॥ तूंहीं मालिक मोहनां ॥ कै सै मानें कशम ॥ १ ॥ सांईं सिर
जनहार तूं ॥ तूं पांवन तूं पाक ॥ तूं कांइम करतार तूं ॥ तूं हरि हाजरि आप ॥
२ ॥ रमिता राजिक एक तूं ॥ तूं सारंग सुबहांन ॥ कादर करता एक तूं
तूं साहिब सुलतान ॥ ३ ॥ अबगति अलष ए एक तूं ॥ गनी गुसाईं पे

क ॥ अजबअंनूपमछ्यापहे ॥ जनदाइनांतेअनेक ॥ध॥२०॥ जीव

लमारेमुषकिजिलाये ॥ बोलतमूगोगूगानुलाये ॥ टेक ॥ जागतनिसन्न

रिसेईमुलाये ॥ सोवतरैनीसोईजगाये ॥१॥ सूफतनैनकंलोइंन

लोये ॥ अंधबिचारेतापुषिदीये ॥२॥ चलतेचारासेबिगलाये ॥ अंप

गाबिचारसेइचलाये ॥३॥ अंतेनाअदलनुतहमकुलपाव ॥ दाइमत

गुरिकहिमनमझाबा ॥ध॥२४॥ प्रभा ॥ कांकरियऊजमारचोमुसांई ॥

नेरकवनबिमेटबनोमनमांही ॥ टेक ॥ केतुमकृछ्यापाप्रगटक यऊ

रंगा ॥ केयऊकरचितेजोवतधरनां ॥१॥ केयऊतुम्हकोमवगाजा

नों ॥ केयऊकरचितमनकेमानें ॥२॥ केयऊतुम्हकोमवगानांवें ॥ के

ऊकरचितेधचमहितमनांवे ॥३॥ केयऊतुम्हकोघेलपियारा ॥ केयऊ

मोवेवोनाधपमारा ॥४॥ यऊसमबदाइत्रकेयकमा गी ॥ कहिसंम

जाको सारंग पुराणी ॥५॥२१॥ कबीर की साषी ॥ षालिक पैलै षे-
लक रि ॥ बूझै बिरला कोइ ॥ लेक रि सुषियां नां नया ॥ दे कां रि
सुषियां देह ॥१॥ दे बे की सब जनम्य है ॥ लेबे की कछु नांहिं
सांई मेरे सब की पा ॥ समझि देषि मन मांहि ॥२॥ पद ॥ हरे हरे स-
कल जन बन मरे ॥ जुगि जुगि सब करै ॥ जुगि जुगि समझ षरे ॥ म्रकै पं-
सकल जरे हरे हरे ॥ टेक ॥ सकल भवन छोड्यो ॥ सकल भवन ना-
जे ॥ सकल न कै है धरती अंबर गहै ॥ चंद सूर सु छिये है ॥ पवन प्रग-
ट भै है ॥ घट घट व्यापि है वे ॥ घट घट व्यापि लेवै ॥ मंझि जमाया जब हां त-
हां व्यापि रह्या ॥१॥ जहां तहां व्यापि रह्या या ॥ अगम अगम अगम पाया ॥२॥
रस मांहि रस माता ॥ रस मांहि रस माता ॥ अमत पीया ॥ नूर मांहि नूर ली-
या ॥ तेज मांहि तेज कीया ॥ दास हरि रस मन भया ॥ ३ ॥ २ ॥ पीव पीव करि

सिअतिपाव॥ षसि षसि अगसंगा॥ पीवत हंजाव॥ टेक॥ मनपवन
भवनगवन॥ षेगाकवलमांहिं॥ निधि निवास बिधि बिलास रातिदि
वसनांहिं॥१॥ मास वास अास पास॥ आतम अगिलगाह॥ अैंनबैंन
निरषि नैंन॥ गाह गाह रिझाइ॥२॥ आदि तेज अंत तेज॥ सहजिस
दजिआइ॥ अादि मूर अंति नूर॥ दाइबलि बलि जाइ॥३॥२४॥ नू
रनूर अवलि अाषरि नूर॥ दोइ मकोइ मकोइ मस्लेम॥ हाजरि हैन
रमूरि॥ टेक॥ असमान नूर जिमी नूर॥ पाक परवरदिगार॥ आबनू
रबाद नूर॥ षूब षूबां यार॥१॥ जाहिर बातिन हाजर नाजर॥ दाना
बेदीवान॥ अजब अजाइब नूर दीदम॥ दादू है हैरान॥२॥२५॥ मेंअ
ल्लामतिवांला माता॥ प्रेम मगन मेरा मन मगता॥ टेक॥ अमीमहा

रसनरिनरिपीवै ॥ मनमतिवालाजोगीजीवै ॥१॥ रहै निरंतरिगग-
नमझारी ॥ प्रेमपियालासहजिबुमारी ॥२॥ आसंणिअवधू अमृ-
तधारा ॥ जुगिजुगिजीवै रमपीवनहारा ॥३॥ महरू मलीहरिहिर
सिमाते ॥ रामरसाहू नपीवमस्ताके ॥ धा ॥ ६ ॥ मुषडषसै साहरि
कीया ॥ सबहमकेवलरामनीया ॥ टेक ॥ मुषडस्दे अमृतमेरि
करी ॥ रुन सबंध्या है जगसारा ॥१॥ मेरीमेरामुषकेतांई ॥ आ-
इ जनममनरचे तै नांही ॥२॥ मुषकेतांई फूलीं तोले ॥ बांधे बंध-
नकबकूनषोले ॥ हाहमुषडषसंगि न जाई ॥ प्रेमपीव तिपीवमूल्यो
लाई ॥४॥ २३॥ कासौं कहौं हे अगम हरिबाता ॥ गगननधरेंनि-
हिवसनरहीराता ॥ टेक ॥ संगनसाथी गुरुमचेला ॥ आसंनपाति

[illegible]औं रहै अकेला ॥१॥ बेदन भेद न करत बिचारा ॥ अबरणीं बरणीं सब निषेधें
न्यारा ॥२॥ प्राण न पिंड रूप नहीं रेषा ॥ सोई तत सार नैंन बिन देषा ॥३॥
जोग न भोग मोह नहीं माया ॥ दष्ट देषु काल नहीं काया ॥४॥२०॥ मेरा गुरू
[illegible] मा ज्ञान बतावै ॥ काल [illegible] जागै ॥ जं हे तं सं मफावे ॥टेक॥
[illegible] गुरू के ग्यान [illegible] हिये ॥ [illegible] नित हां लहिये ॥ [illegible] तेज सो दिढ क
रि गहिये ॥ [illegible] रहिये ॥१॥ मन पवन नांग हि अस्थान भेला ॥ सहज
सुंन [illegible] मेला ॥ [illegible] गोचर अस्थान पञ्च केला ॥ अकेला मेला षेला ॥२॥
धरती अंबर [illegible] ॥ सकल निरंतर पूरा ॥ सब [illegible] नाह [illegible] बाजैं तूरा
[illegible] सूरा ॥३॥ अबिचल [illegible] पद [illegible] ॥ तहां निर्जन राता
[illegible] गुरू [illegible] माता ॥ माता [illegible] ॥४॥२१॥ मेरा गुरु [illegible] पञ्च के

जाषेले ॥ आपहिंदेवै आपेंलेवै ॥ आपेदेकरिमेलै ॥ टेक ॥ आपेंआ
पउपावै माया ॥ पंचतततकरिकाया ॥ १ ॥ जीवजंतमहेजगमेआया
आयाकायामाया ॥ २ ॥ धरतीअंबरसमहलउपाया ॥ सबजगधंधैला
या ॥ आपेंअलषनिरंजनराया ॥ रायाआयाउपाया ॥ ३ ॥ चंदसूर
दोइदीपककीन्हा ॥ रातिदिवंसकरिलीन्हा ॥ राजिकरिजनकै मनै
निकंहीना ॥ दुनोहुलीन्हाकीन्हा ॥ ४ ॥ प्रभराममैपुनिमैहमारा ॥ स
बसुषदेवैसारा ॥ दाइषेलेअनतअपारा ॥ अपारामैहमारा ॥ ६ ॥ ३० ॥
पकितनयेमनकहोनजाई ॥ सहजसमाधिरहोलैलाई ॥ टेक ॥
जेकछुकहिएसोचबिचारा ॥ जोनअगोचरअगमअपारा ॥ १ ॥ सा
इरबूंदकैसैकारतेले ॥ आपअबोलकहाकहिबोले ॥ २ ॥ अंअलप

...रैं परिहरि रिझै सारंग रहा अरपूरि ॥ ७ ॥ अब मन मेरा अैसैं रे आई
दादू कहि वा कहि रान जाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ अब गति का गति कोई न ल
है ॥ सब अपरंपार नमां न कहै ॥ टेक ॥ केते ब्रह्मा वेद बिचारैं ॥ केते
पंडित पाठ पढैं ॥ केते अनभै आतम खोजैं ॥ केते सुरनर नांव रटैं ॥ १ ॥
केते [illegible] र आतम लिये बैठे ॥ केते जोग ध्यान धरैं ॥ केते मुनिवर मन कं
मारैं ॥ केते [illegible] करैं ॥ केते पार के ते पैकं बर ॥ केते पढैं कुरांनां ॥ के
ते कासा केते [illegible] ॥ केते मे घ मयांनां ॥ २ ॥ केते पार थकं तन पावैं ॥ वा
रंपार कछु नाहीं ॥ दादू की मति कोई न जांणैं ॥ केते आवैं जांहीं ॥ ३ ॥
८ ॥ ये कदूँ फिर हाथी पीवक जे साहे तेपा कोई न कहै रे ॥ आगम अगाध
अपरंपार [illegible] गोचर ॥ सुधि बुधि कोई न कहै रे ॥ टेक ॥ [illegible] पार कोई अंत

न पावै ॥ आदि अंत नि मधि नां हीरे ॥ घरे सयां नें अपरे हिवां नें ॥ के सा कहुं र
हैरे ॥१॥ ब्रह्मा बिस्न महेस रब्र के केता कोई बतावै रे ॥ से घम सा ह
क पीर पैकंबर ॥ है कोई अंत गाहि गहैरे ॥२॥ अंबर धरती सूरज सि व
फे ॥ बाव बरंन सब सोधैरे ॥ दाहू चकित ह्वै है रांनां ॥ को है कम दैहैरे
॥७॥ पद ४ ॥ इति राग आसावरी संपूर्ण ॥ राग ग ॥ पद ॥ १ ॥ प
घरा ॥ सीधूडा ॥ हंस सरोवर तिहां रमैं ॥ सब्न रब ल ॥ पांणीं अ
पपघा छिये ॥ निरमल सदा हो सरीर ॥ टेक ॥ मुकता ह म नमां निये या
चुगै हंस सुजांन ॥ मधि निरंतरि कुलि ए ॥ मध्क म सधा ॥
मवर कवल रस बास मनां रातौ रंम पीवंत ॥ अंर मध्य अज्ञान न
तहां मन सदा हो जीवंत ॥२॥ मांन सर गं न मांहैरे हे ॥ मदित म गे

पूरणप्रमितिनाहिं ॥२॥ निरंजन तहां नेको
हिं ॥ सुषसागर क्रीला करे ॥ संतन सुष सिरंजनहार
नहीं ॥ बिलंसत बार बार ॥ दादू दरसन कीजिये ॥
॥ सुषसागर मैं फुलिबो ज्यूं समंद फेंडै हो अपार ॥ निरमंजन स्वामी होइ
बो ॥ मिलिबो सिरंजनहार ॥टेक॥ त्रिहिं संत मिं पावन सदा ॥ पंकन ला
गे प्रारस ॥ कवलबिमासै तिहिं तरी ॥ उपजे ब्रह्म गयांन ॥१॥ अगम निगं
म तहां भ्रमि करे ॥ तनैं तन मिलांन ॥ आसंणि गुर के आइ बो ॥ मुकतैं मर
स संमान ॥ श्री गोपरि पूजा करे ॥ पूरै प्रेम बिलास ॥ सहजैं सुंदरि से
वै पि ॥ ला... कवलास ॥२॥ रैणि दिन सदा से नहीं ॥ सहजैं पुंज प्रका
सै ॥ इहिं रसि राते हो दास ॥३॥ अबिनासी से
दादू दरसन दीपि ले ॥ येक निरंतर ते जे ॥ हरि हरि योगी
ज्ञांनां ॥ रमे हो रै निसि दिन राम ॥ सकल निरंत
...गुर बसे ॥ सो मन जांणी जे ॥

रिष्टि सब ॥ आतम रांमैं ते ॥१॥ निराधार निज देषि सनो ॥ निहितत्त आ
सण प्रष्टि ॥ गुरमिष आनंद रूप जे ॥ संत मुषम सहज रूप ॥ निहचल
ते चालै न कहीं ॥ जांणीं ते प्रवांणियें ॥ मांथी मांथैं तें रहे ॥ जांणैं जांणं सुजांण
२॥ ते निरगुण आगुण धरी ॥ मुंहैं कौ निराधार ॥ देह अछत अलंगो रहै
ह सेवि अपार ॥४॥३॥ पारब्रह्म नजि प्राणियां ॥ अवगति के अ
पार ॥ अबिनासी गुर सेवियें ॥ सहजैं प्राण अधार ॥ [illegible] ॥ तपुरषां णं
ते हमैं ॥ अबिचल सदा रहंत ॥ आदि पुरिस ते आ[illegible] ॥ पूर्ण प्रम
नंत ॥१॥ अबिगति आमणा कीजियें ॥ आपैं आप निषेध ॥ निराकं
न जिते हमैं ॥ आनंद आतम रांम ॥२॥ निरगुण निहचल थिर रहै ॥ नि
कार निज सोइ ॥ ते सति प्रांणीं सेवियें ॥ ते समां थिर तं सोइ ॥३॥ अ
म आदं मिता रैमै ॥ घट घटि सिरजनहार ॥ गुण अतीत नमि[illegible] प्रांणी

यं[...]हू ऐह बिचार ॥४॥४॥ कं जाजै सेवग तेरा ॥ ऐसा सिर साहिब मेरा
॥टेक॥ जाके धरती गगन अकासा जाके चंद सूरक बिलासा ॥ जाके ते
जपवन नजल साजा ॥ जाके पंच तत के बाजा ॥१॥ जाके अवतार नारबेन
मा[...] ॥ गिर प्रबत दीनदयाला ॥ जाके साहर अनंत तरंगा ॥ जाके चौ
रासी[...]सेवा ॥२॥ जाके ऐसे लोक अनंता ॥ रचि राखे बिधि बहु भंता
जा के ऐसे [...]पसारा ॥ सब देखे कौतिग हमा ॥३॥ जाके काल मींच
[...]मांही ॥ सो निरंतर रह्या सब मांही ॥ मनि आवे षेलै षेला ॥ ऐसा है आ
[...]के ला[...] ॥४॥ जाके ब्रह्मा ई सम गुर बंदा ॥ सब मुनिजन लागे अंगा
[...]द साध सिध सब मांही ॥ प्रपूरंग प्रमति नांही ॥५॥ सोई जानैं घटै घट सं
[...]॥ जाके ते कब हूं न हारे ॥ ऐसा है हरि साहिब पूरा ॥ सब जीवनि

आत्ममूरा ॥६॥ सो सब हिं न की सुधि जानैं जो जे सौं ते सो बो मानैं
अब गीरां मसयांनां हरि करै सु होइ निदांनं ॥७॥ जे हरि जन सें
गन्याजे ते ओरे सो सो हित बन्याजे ॥ अब मरंगामांसि हरि अगे ॥ तै
रा हूं मांग मन्यागे ॥८॥१॥ हरि भजन तें किं न न्यारि पै ॥ न्याजे मलं न्याहै
मायो मलं करपाई पै ॥ पछितावै मांही ॥ टेक ॥ मूंरो सो मन हजे ॥ म
रवर फेले ॥ रिंगरो केम न जे नहीं ॥ ते मा गान मैले ॥१॥ मलाम तें सा चे ग
है ॥ मरगांन मराई पां गात जेन गह षनां ॥ पीयडों ते रे ॥२॥
त गायें तजे अंगां अं मन मेडे ॥ जो बन जाते जो सि मू ॥ मन मलं के
॥३॥ सेवा सो स्वामी न जे ॥ तन मन तजि अंगा सा ॥ ते हूं दरसं न
है ॥ सुषसंगा मधामा ॥४॥६॥ मूरि नं मनां रे मूरि ष मूढ वि

आवै लहरि विहंग गीरे॥ दमै देह अपार॥ करिबो है तिंमका जिये॥ सु
रिसे आधार॥ १॥ सरंगा बिंकूगों चालिबौ रे॥ संजारी लेसार॥ दाहू
ह जिनी जियेमि॥ साचौ सिरजनहार॥ १॥ ७॥ रे मन साथी माहरा॥ नै
म कायो केवातो रे॥ रातैं [illegible] कसूं जदो॥ तैं विसास्यो आधारौ रे॥ टेक॥
छिनै सुखकै कारनैं॥ फिरि पीछे उपद्दो ईरे॥ दीपक दिष्टि पतंग ज्यूं
जरमि जड़ै॥ जिंन को हू रे॥ १॥ जिभ्या स्वाद आपरसे॥ ज्यूं मीन मरे
जिमी री रे॥ माहैं जालं नजांणियौ॥ ताथैं नर पछितावे मसरी रे॥ २॥ स्वा
नि मंत्रो छिपडो ऐ॥ देघ न हीन रआधौ रे॥ मरि बसंवी छाजि रे॥ होइ
निरबंधो रे॥ ३॥ मानि सिसिधा नरांगि माहरी॥ नूं हरि भजि मूलन महारी
का [illegible] कैसे विरेरे॥ नं नहर रामसंजारी रे॥ ४॥ ८॥ [illegible]

श्री सूरदास पूरी राग ॥ १० ॥ पद ॥ ४४ ॥ राग धनाश्री देव गंधार ॥ मै
रे गोविंद म्हारी ज्ञाई परे ॥ जदं तन हा हदमस वफिदि ज्ञाने ॥ रावि राषि लै
दु ष्यत न घरे ॥ टेक ॥ कमि क मि का या तं प वर तक रव क रि कारि ॥ जा
न मम तहं मन लिपरे ॥ कहूं गीतल कहूं व पति दहे तन ॥ कहूं के
रवत सी स धरे ॥ १ ॥ कहूं वन नृती थि फिर फिरि थाके ॥ कहूं गीरथ
हि चढे ॥ कहूं मिषरि चढि परे धरि लि परि ॥ कहूं द हि ज्ञाप पा
हरे ॥ २ ॥ ज्ञ धन ते हं म निकट न सके ॥ नाथें तु फ्न जि जा
हाहरि ज्ञव दीनहीन कंरि ॥ हाह व ज्ञ पराध्य करे ॥ ३ ॥ वं
बारबार बदरानी ॥ हषी मुह गन पावै कै से ॥ कैसे जर मिं जुल
॥ टेक ॥ चरनौं चेरा चित नहीं राषी ॥ पति व्रत नहिं न जो

पीव सुन न नहीं मानं ॥७॥ तन मन सबै सरीर
रि मेक संगति नहीं जानै ॥ इक रस परीति रहै नहीं कबहूं ॥ प्रेम त
स सों प्यार ॥ सासन दोऊ नवाढी ॥ नैनन निरषि न घ्रघांनी
गनहूं वाढी ॥७॥ प्रीतम रूप नैनों प्र समनेही ॥ पतिब्रत स्या
पतासु रिष्या लिं तरि रूततरि ॥ प्रमपु जिन नहीं जांनी ॥८॥ दादू पीव बिन ओर न जा
[illegible] जिं जिनि पाल्यो ॥ सुंदरि तिन सब छाजे ॥ मन मूरिष ते यो हीं जनम गमायो ॥ सा
ने ना हि मूढा गब्रिरानै ॥४॥११॥ तूं इहिं कं लिकाहे कूं आयो ॥टेक॥ जिन बात नि
[illegible] फिरा सेवा न ढीली ॥ मो इ मन्य तेरे जायो ॥ कामी होइ बिषिया संगि लागो
तो छूटि जामाही ॥ कछु ऐक चेति बिचारी दैषो ॥ कहा पाप जीय
१३ रे सं[illegible]रोम न पदा पौ ॥१॥ [illegible] करि लीजे सुधि कैं जग न द्द कायो
कां स्वा [illegible]

कोरै जिम्यत ॥ बालकाहूं नाकी तुम माहरै नाथ ॥ तुम सुपहली प्रीत
डी ॥ पूरबयेनो साथ ॥ टेक ॥ बालको मैं तुम मा को अबलंबियो रे राधे मिलं
नै रिद्धा मंकारि हूं पांमी पीवत्रा पग्यो रे । त्रिभवंन राताते वमुरारि ॥
बालको मन न मा हरै मन मांहैं राधिम आत्म येक लिजै नदेव चित मांहै चि
त सदा निरंतरि रै गां परैं तुम्हारा सेव ॥ १ ॥ बांहि का मा चुम मक्रि दहरि जन
तुम्हारो पै [illegible] कत्साक पल जिगाम आनि आतरि आनंद [illegible] विना जी
दाह निहिवें पर विश्वास ॥ ३ ॥ २ ॥ बारी बारक हूं रे ग [illegible] रामग [illegible]
म कांइ बिसारा रे जन मत्र मो निक पांमियां । ऐ कोरे [illegible] का हांसा [illegible]
सूंरे ॥ टेक ॥ बिषियां बाझौ नै लिंहा धायो को धौन ही मांहरै बा [illegible]
रे माया धन जोइ नैं [illegible] घरतई ये गो हांसूंरे ॥ १ ॥ [illegible]
व मती प्रांणी आपमते [illegible] दाहि जे ने राम [illegible] प्रां [illegible]

दीतौ जण्या वधहासूरे ॥३॥ नू ॥२॥ इति राग कल्हेरो संपूरण ॥ राग ॥ १२
२२ ॥ ९५ ॥ इति राग पिरजंयौ लिष्यंते ॥ नूर रह्या नूर पूरि ॥ अंमीर
सपा जिरे ॥ रस मांहे रस होइ ॥ लाहा लो जिरे ॥ टेक ॥ प्रगटते जंत्र
नत ॥ पार नहीं पाइरे ॥ झिलि मिलि झिलि मिलि होइ ॥ नहां मन
लाइरे ॥ १ ॥ महकै मदा प्रकास ॥ जोति जल पूरिया ॥ नहां रहै निं जदा
स ॥ सेवगा सूरिया ॥ २ ॥ सुषमा ग्वां रंन पार ॥ इं क्ता ताबा स रहे ॥ हंस रदे
ना मांहि ॥ दास दास रहै ॥ ३ ॥ ११ ॥ इति राग पिरजियौ संपूरण ॥ राग ॥
१२ ॥ ९५ ॥ अथ राग ... लिष्यंते ॥ साफ्ता वा ल्हा रे तादे
रे संसार हे स ॥ बीनतडी वा ला नै कहता ॥ अंनत सुष लहे स ॥ टे
क ॥ स्वामी तणौ हौं संगात म ल्हौं ॥ बीनतडी कहे स ॥ इं अंब ला

हूं बलि वंत राजा ॥ ताका बंनां बहेस ॥१॥ संगि रहूं तां सब सुष पांमौं
अंत्रै पैरद दहेस ॥ दादू कपरि दया करां नैं ॥ आनैं आ गांठी घेस ॥२॥१४॥
चरंणा दिषा डि तैं प्रवांणि ॥ सांमी माक्रौ नैं तक निरषौं ॥ कांगौ ये
हजमांणि ॥ टेक ॥ आ हूं तुझ फैनैं आ मा मुझ फनैं ॥ कांगौ ये हजु धां
न ॥ वाल्हौ माक्रौ मैं हौं रस हिपै ॥ आवै कैं वल्लं स्यांन ॥१॥ जे गांयें कं
दे षौं तुझ फनैं मुझ फैनैं आ ल्हौ जांणि ॥ पांव त गांपरि नहीं आंनौ ॥ दा
दूरें श्र जांणि ॥२॥२॥ तेहरि मेल्हौ माक्रौ नाथ ॥ आवां नैं माक्रेते
नतपै ॥ केहां प्रे प्रांमैं मांथ ॥ टेक ॥ ते कारणि आ ... त्याकुं ल्ही
रे ॥ कन्ना करौं बिलाप ॥ सांमी माक्रौ नैं गां निरषौं ॥ तेहत गांयें
नैं ताति ॥१॥ पकतार घरि आवे वाल्हा ॥ नवि मेल्हौं कारहा श्र ॥ प

बीनती सां जलि स्वांमी ॥ दादू दास ॥२॥ दुजा ॥ ते किं मखां मि पेरे
उतर जेजे आधार ॥ तेवि नां नारंग को नहीं रे ॥ किं मन्नत रिये पारि ॥ टेक ॥
के ही पैरै की झे ज्ञा पर्योरे ॥ ननबूते छै सार ॥ मन मनोर छूपूरै मादरा
ननचौ ता पनि द्वारि ॥१॥ संजा स्यो ज्ञा दूरे दा ला वे लां पेज्ञ वार ॥ बिर
हंनी बिलापं करै ॥ तिं मदाहू मनिं बिचार ॥२॥४॥ इति राग मालीगौडी
संपूरण ॥ राग ॥ १५॥ पद ॥ २५ श्री ॥ अथ राग आसावरी लिष्यंते ॥ हो बै
सा ग्यांन ध्यांन गुर बिनां क्यूं पावै ॥ वार पार पार वार ॥ दूतर तिर आवै हो ॥ टेक ॥
भवन मेमंग मगावन भवन ॥ मन हीं मन लावै ॥ रबंन छवंन छबन रवन
सतगुर संमझावै ही सीर न नीर नीर षीर ॥ ऐसे मंन गति जावै ॥ प्राण कवल
बिगासि बिगासि ॥ गोबिंद गुण गावै हो ॥१॥ ते ति जुगति बांट घाट ॥ हैसं

माधि मोरै ॥ पूरन ब्रह्म तेज ॥ दादू हिम ज्यौं वै हो ॥ ३ ॥ ३१ ॥ तौ निबहै जन
सेवक तेरा ॥ ऐसैं दया करि साहिब मेरा ॥ टेक ॥ ज्यूं हम तोरैं त्यूं तूं
जोरै ॥ हम तोरैं पै तूं न हीं तोरै ॥ १ ॥ हम बिसरैं पै तूं ना बिसारै
हम बिगारैं पै तूं न बिगारै ॥ २ ॥ हम भूलैं तूं आनि मिलावै
हम बिछुरैं तूं अंग लगावै ॥ ३ ॥ तुम्ह भावै सो हम पै नाहीं
दादू दरसन देहु गुसांई ॥ ४ ॥ ३२ ॥ माया संसार की सब झूठी
मात पिता सब ऊभे भाई ॥ तिन दी देषतां लूटी ॥ टेक ॥ जब
लग जीव काया मैं थारे ॥ षिण बैठी षिण ऊठी ॥ हंस जु था
सो षेलि गया रे ॥ तब थैं संगति छूटी ॥ १ ॥ ए दिन पूगे आव घट
घटी ॥ तब कित लै रहै मती ॥ दादू दास कहै ऐसी काया ॥ जैसी

गगरी या फूटी ॥२॥ ॥ ऐसे मैं त्रिह मैं कून रहै ॥ मन सा बाचा
राम कहै ॥ टेक ॥ संपति बिपति नहीं मैं मेरा ॥ हरिष सोक
दोऊ नां व्हा ॥ राग द्वेष रहित सुख पद पै तै ॥ बेगा हरि पद मांही
॥१॥ तन धन माया मोह न बंधै ॥ बैरी मीत न कोई ॥ आपा प्र
संग्रि रहै निरंतरि ॥ निज जन सेवग सोई ॥२॥ अवर कवल
रहै जल जैसे ॥ दधि मथि घृत कर लीन्हा ॥ जैसे बन में रहै ब
राक ॥ कांहू छित न कहीं कीन्हा ॥३॥ भाव भगति रहै सिं माता ॥ प्रेम
मगन गुन गावै ॥ जीवत मुकति होइ जन ताकौ ॥ अंत्र मत्र जे पद पावै
॥४॥४॥ चलि रे मन तहां जाइये ॥ चरन बिन चलिबो स्त्रवन बिन सु
निंबो ॥ बिन कर बैन बजाइये ॥ टेक ॥ तन नांहीं जहां मन नांही

तहां ॥ प्रांण नहीं तहां आइ है ॥ सब्द नहीं जहां जीव नहीं तहां ॥ बिं
दु रस नौं मुष पाइ है ॥ १ ॥ पवन पावक नहीं धरनि अंबर नहीं उ
भै नहीं तहां लाइ है ॥ चंद नहीं तहां सूर नहीं जहां ॥ प्रेम आनि सुष
पाइ है ॥ २ ॥ तेज पुंज सो सुष का सागर ॥ झिलिमिलि नूर न हाइ है
तहां चलि जाइ अगम अगोचर ॥ तामैं सहजि समाइ है ॥ ३ ॥ इति
राग सारंग गौड़ी पूरण ॥ राग ॥ ५ ॥ पद ॥ २६ ॥ अथ राग टोडी लि
ख्यते ॥ सो तत सहजैं सुष मन कहणां ॥ सांच पकड़ि मन जुगि जुगि
रहणां ॥ टेक ॥ प्रेम प्रीति करि नीकां रषे ॥ बारंबार सहज अरसा पे
सुष रूटै सो सहज समं नारे ॥ निहित तरहणां करे सबि मारे ॥ १ ॥ अं
तरि सांई नीकां जांणो ॥ निरषन बिसरे ब्रह्म बषांणे ॥ सो ही सुजा

रामसुधारसपीवै । दादूबेपुनुगेत्रुगिजीवै ॥४॥१४॥ नांवरे नांवरे सक
ल सिरोमणि नांवरे । मैं बलिहारी जांवरे ॥टेक॥ दूतर तारै पार उ
तारै । नरक निवारै नांवरे ॥१॥ तारण हारा भव जल पारा ॥ निर्मल
सारा नांवरे ॥२॥ नूर दिखावै तेज मिलावै ॥ जोति जगावै नांवरे ॥
३॥ सब सुख दाता अंमृत राता ॥ दादू माता नांवरे ॥४॥१५॥ राम रे रा
म रे सकल भवन पति राम रे ॥१॥ अमरतटिकं अघा अरे राम ॥टेक॥
अगम तुंरा ताप्रगट माता ॥ प्रगट नूर दिखा अरे राम ॥ अस्थिर थांनां
अस्थिर थांनां ॥ अस्थिर तेज मिला अरे राम ॥३॥ अबिचल मेला
अबिचल बेला ॥ अबिचल जोति समा अरे राम ॥ निहचल नैं
नां ॥ निहचल बैंनां ॥ दादू बलि बलि जा अरे राम ॥५॥१६॥ हरि सि

माते मगन न न्हेवे ॥ सुमरि सुमरि न्हेवे अति चाहे ॥ जो मन राम नाम सौं बहु
लिगाये ॥ टेक ॥ निमल नाम लिये मन रस पीवै ॥ आन न कहु जो जानै चाहे धरै
मन्है जैसें सदा राम मर गिरा ते ॥ सुकृति है कै कुं जैकं कहा करै ॥ १ ॥ मगन गाइ
म लीन ज्यों है ॥ कबहु न मगो गैं संत जन ना ॥ और न ज्ञान कवेकु दत ज्यों
ज्ञान न ज्ञावै राम बिना ॥ २ ॥ इक रस ध्यान रहै ज्यो लागे ॥ ज्यों कि परे
द रिरस पीवै ॥ दादु मगन रहै रस माते ॥ ऐसैं हरि के जन जीवै ॥ ३ ॥
४ ॥ तैसैं की धन्नाराम ॥ जैसैं चातृ तें ॥ मारग मेल्हि [illegible] मारग [illegible]
क्षकर म कमि हरे ॥ टेक ॥ साधु का संग छाडि नैं ॥ [illegible]
रीयो ॥ सुकृत है कि अविद्या राखी ॥ बिषिया बिस तरीयो ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] कहो ज्ञान [illegible] ॥ तैसैं [illegible] ॥ [illegible] बो बिषय

मनलोभीघातांसू लिपटयो ।।३।। रामरिदाथोंविसारीमें । मायामनदी
धौं ।। पांचेइंद्री गुरमुषिवरज्यातेदाइकी धौं ।।३५।। कहौंकंइंजन
जीमेंमांईयां ।। देचनेकवलन्वाधारहो ।। डूबतहैभवसागरा ।। का
राकरैकरतारहो ।।टेक।। मीनमरैछिनपांणीयां ।। तुमबिनयेहबि
चारहो ।। जलबिनकैसेंजीवई ।। अबतोकितीएकबारहो ।।१।।
जपपैपतंगाजोतिमें ।। इंद्रीदेषिनिजसारहो ।। प्यासाबूंदनपावई
तबबेअंबनिकरैपुकारहो ।।२।। निसदिनपारपुकारही ।। तनकी
तापनिवारिहौ ।। दादूबिपतिसुनावही ।। करिलोचनसंनमुषचा
रिहो ।।३५।। [illegible] सामासादिवमेरा ।। कमंञ्कीमक्किपालनिहारो ।। मैंजं
नंबंदातेरा ।।टेक।। [illegible] दानानाफ्स्दग्रा

लादिषाइ दीदार मौज बंदे कूं ॥ को ... मक गैनि दाला ॥ १ ॥ मालिक
सबै मुलिक कै साईं । सब सथ सिर्जनहारा । पैर मुदाइ सबकु कंमै षैलैत
देदार खुमारा ॥ २ ॥ मैं मिस्कीन तात रगह तेरी ॥ हरि दिदार रिंकहिये ॥ दादू
वौरै दीन पुकारै । काहे न दरसन लहियै ॥ ३ ॥ २३ ॥ कंचन चेति रेक
हिक्याछ्याया । इन मैं बैबा फिलिकरि । तै टैषी माया ॥ टेक ॥ तूं जिनजा
नै मन धन मेरा ॥ मूरिष देषि जुलाया ॥ ज्ञान का क्रिजलि जावै देह
कै सा सुंदर काया ॥ राम नाम जपि लीजियै । मैं कहि संमझाया ॥ दादू
हरि की सेवा कीजै ॥ सुंदर साज मिलाया ॥ ४ ॥ २४ ॥ नैं टि रे आ दा मैं मि
त मां ॥ मो रि मो रि रहै हां का रे कूं च नलनां ॥ टेक ॥ काहे कूं क्ष पनां मन
मूलादै पक्र तनक्ष पनां नां कां धरनां कोठि ब रस रंक काहे न जी

वे ॥ बिचारि दे घिस्या गौ है मनि ॥२॥ काहे न ब्रूपनी बाट सब्जोरे ॥ संजी
विरहनी सुमरिपी करणंग ॥ गदि निदाहा हू बन की जै ॥ यहु संसार पं
च दिन ब्वार का ॥३॥५॥ जाइ रेम न जाइ रे ॥ जनम सुफल करि ले
जै राम रंमि ॥ सुमरि सुमरि गुन गाइ रे ॥ टेक ॥ नरनारी इंन सकल
सिरोधरि ॥ जनम मरन्न मीलि कन्या हिरे ॥ सो तन जाइ जगत नहीं जा
ने ॥ सकहि बिवादहं रक्ता रे ॥१॥ जुरा काल दिन जाइ गरासैं ॥ तासुं
कुछ न बसाइ रे ॥ छिन छिन छीजत जाइ मुगध नर ॥ अंति काल
दिन आइ रे ॥२॥ प्रेम भगति साध की संगति ॥ नांव निरंतरि गाइ रे
जो सिर भाग तो सौं जनम सुफल करि ॥ दादू बिलंब न लाइ रे ॥३॥१०
काहे रे बकि मूल गवावे ॥ राम के नांइ नलैं सचु पावे ॥ टेक ॥ दी
द बिन बाट न की वे कोई ॥ बाट बिना [illegible] होई ॥१॥ में तें मे

रीमांकैनांही ॥ मैतैमेटिमिलेहरिमं ॥ ३१ ॥ हारिजीतिसंहरिसजाई
ममकिटेषिमेरेमनजाई ॥ ३२ ॥ मूलंनगोफीटाइडौरे ॥ ज्ञिंनमूलेसूब
किंबेजोरे ॥ ४ ॥ ३१ ॥ जिसियारहाकिंमन्यावूहे ॥ सांईकंदीधान ॥ जालि
काहसेवकैंगा ॥ ममकिमुमललमांन ॥ टेकं ॥ एतिनेकीसाखिहां ॥ रा
समांईमांन ॥ इयलासझूदरिजापरों ॥ रषरांसुखहांन ॥ ३ ॥ जकंम
हाजरिहेकवाबा ॥ मुपलंमिंम्यदरवांन ॥ जकंखिमेतीजापमां
सोधिहेजमुजसि ॥ २ ॥ कसहद्धरिकूरां ॥ देषरांकरिंजन ॥ दे
खदेनांर्दीनकां ॥ मनेंलेप्रुरमांन ॥ ४ ॥ गुसहैवांनीहूरिकरि ॥ छा
डिदेशूनिमांन ॥ ५ ॥ डडदेगांनोहिसुसियां ॥ जहूलेकेपिछांनिं ॥ ५
॥ ३२ ॥ निरपषिरहांरांमरांमकंहरां ॥ कांमक्रोधमैंदेहनधरां ॥ १
औरोंमारगिरंसांरजाहला ॥ तेरींप्राणीजापबहाइला ॥ जेनेके

रसांवै जागतकहिस्यासो कुलांहीं हिरदै हरिधरीला ॥ जेपोपंथछैसो करतालौ
दादूरांमरांम ऐसैसंकैं हिरे । रांमरं मतरां मदिं मिलिरहिरे ॥३॥१३॥ हम
पायांहंमपायारे भाई ॥ भेषबनाइ ऐसीमनिआई ॥टेक॥ भीतरका
यहुभेदनजांनैं ॥ कहैसुहागणिक्यूंमनमांनैं ॥१॥ अंतरिपीवसूंपरचा
नांहीं ॥ भईसुहागणिलोगनिमांहीं ॥२॥ सांईसुपिनैंकबहूंनआवै
कहिबाऐसैमहलिबुलावै ॥३॥ इनबातनिमोहिअचरजआवै
पटमकीयेंपीवकैसैंपावै ॥४॥ दादूसुहागणिऐसैंकोई ॥ आपामेटिरांम
रतहोई ॥५॥१४॥ ऐसैंबाबारांमरमीजे ॥ आतमसूंअंतरनहीकीजे
॥टेक॥ जैसैंआतमआपालेषै । जीवजंतऐसैंकरिदेषै ॥ एकरांमऐसैं
करिजांणैं ॥ आपापरअंतरनहींआंनैं ॥१॥ सबघटआतमएककवि

न्यारै । रामसनेही प्राण हमारै ॥३॥ हमसा चीरा [illegible] गाई । ऐसा
भाव हमारै भाई ॥४॥१५॥ माधई यौ माधई यौ मोगोरी गाई । माह
वौ माहवौ मेटि यौ भाई ॥टेक॥ कान्ह ई यौ कान्ह [illegible] यौ करता जा
ई । केसवौ केसवौ भाई ॥१॥ [illegible] धरौ [illegible] भाई । राम ई यौ राम ई यौ
रह्या समाई ॥२॥ नरहरि नरहरि नरहरि राई । गोब्यंदा गोब्यंदा दाह
गाई ॥३॥१६॥ ऐकहि [illegible] हि [illegible] नद । ऐकहि ऐके [illegible] ॥टेक॥
ऐकहि ऐके [illegible] ऐकहि ऐके पद निरबांण ॥१॥ ऐकहि ऐ
के त्रिभवन सार । ऐकहि ऐके अगम अपार ॥२॥ ऐकहि ऐके नि
रंजन होइ । ऐकहि ऐके कालन कोइ ॥३॥ ऐकहि ऐके घट परकास ।
ऐकहि ऐके निरंजन बास ॥४॥ ऐकहि ऐके आपै आप ॥ ऐकहि

ऐकैं माइनबा[illegible] ॥५॥ ऐक कहि दे[illegible] मरहजसरूप ॥ ऐक कहि ऐकैं नपेत्र
नूप ॥६॥ ऐक कहि ऐकैं अनतनजाइ ॥ ऐक कहि ऐकैं रह्या समाइ ॥७
ऐक कहि ऐकैं [illegible] पैलै लीन ऐक कहि ऐकैं दाहूदीन ॥८॥१८॥ आदि दै
आदि अंत नाहि मेरा ॥ संसार सागर तें अगति मेरा ॥ आदि दै अंत तिह अं
तिहै आदि दै बिड़ रतैं रा ॥ टीका ॥ काल है फाल है फाल है काल है
राषि लेरा पिलै प्राणपेरा ॥ जीव का जनम मे[illegible] जनम का जीव का
आपदी आपलै आनि फेरा ॥१॥ जरम का [illegible] मर्म का जनम का
आइबा जाइबा मेटि फेरा ॥ तारि लै पारि लै पोरि लै तारि लै ॥ जीव सं
सौ वहै निकटि नेरा ॥२॥ आतमा रांम है रांम है आतमा ॥ जो लिहै सु
ततिसू कहो मेला ॥ तेज है मे जो है से ज है तेज है ॥ ऐक रस दादू षेलै [illegible]ना

॥ १८ ॥ सुंदर रंग भराया ॥ परम रंग न परम ध्यान ॥ परम प्राण आया ॥
टीका ॥ अकल सकल अति अरूप ॥ छाया नहीं माया ॥ निराका
र निराधार ॥ वार पार न पायां ॥ १ ॥ गंभीर धीर निधि सार ॥ निरगुण
निरंकारा ॥ अषिल अमर परम पुरिष ॥ निरमल निज सारा ॥ २ ॥ प
रम नूर परम तेज ॥ परम जोति प्रकासा ॥ परम पुंज परापरं ॥ दादू निज
दासा ॥ ३ ॥ १४ ॥ अषि[illegible] जिवाव अषिल जगपति ॥ अषिल अनंत देवा
अषिल परम अषि[illegible]ति ॥ अषिल सुरति सेवा ॥ टीका ॥ अषिल
अंग अषिल संग ॥ अषिल रंग रामा ॥ अषिला रत अषिला मत
अषिला निज नामा ॥ १ ॥ अषिल ग्यान अषिल ध्यानं ॥ अषिल
[illegible]न टकाजै ॥ अषिला लै अषिला तामै ॥ अषिल आरस पीजै ॥ २ ॥

अषित्ति समन अखिल मुदित । अखिल गालित सांई । अखिल दरस अ
खिल प्रस । दादू दरस मांही ॥ ३ ॥ २० ॥ इति राग टोडी संपूर्ण ॥ राग ॥
पट ॥ १२४ ॥ अथ राग जैमती लिख्यते ॥ है हैं नां हिर दौर
मेरे कां नें । तूं ही मेरे जानि जिगर । यार मेरे षांनां ॥ टेक ॥ तूं ही मेरे
मादर पदर । आलंम बेगांनां । साहिब सिरताज मेरे । तूं ही सुलितां
नां ॥ १ ॥ दोस्त दिल तूं ही मेरे । किस का षलि षांनां । नूर चिसम जिं
द मेरे । तूं ही रहिमांनां ॥ २ ॥ एकै असनाव मेरे । तूं ही हम जांनां । जांनि
बअजीज मेरे । षूब षबजांनां ॥ ३ ॥ नेक नजरि मिहरि मीरां । बंदा मै
तेरा । दादू दरबारि तेरे । षूब साहिब मेरा ॥ ४ ॥ २ ॥ तूं घरि आव सुल
षिंन पीव । हिक तिल मुष दिषलाव तेरा । क्या तरसावै जी

॥१०॥

व ॥ टेक ॥ निसदिन तेरा पंथ निहारौं । तूं घरि मेरे आव ॥ हिरदा भीत
र हेत सूं रे वाल्हा तेरा मुख दिखलाय ॥ १ ॥ वारी फेरी बलि जाऊं सो
तन मोहि क्यों न दादू कृपा करिहों करीने सुखदाइ दुखदाई बोलि
॥ २ ॥ इति राग कानेरो ग्रन्थ समाप्त ॥ राग १२ ॥ पद ॥ १२८ ॥
ज्वर छुरा राग नट नारायण ॥ ॥ ना को काहे न मुगधा माथ जाने को रसिया
राय कल प के लागे माहि महूं न बलटी ॥ टेक ॥ मैं न सेहज कर मक
बेध मनबाढे ॥ बिन पावक फंध जाले ॥ ऐसी है मन तीन्यो कों के
बहु भव सालै ॥ १ ॥ चंचल न मन गीत गति सूं रांषे जन जन मा सुत पा
लै दादू दे सुद ऐक करि जै सो जन कों जा तें ने राबे ॥ २ ॥ ३ ॥ गोब
द्वक बहु मिले प मे र ॥ चरन कवल कर होक रि टे षो ॥ रा

झूनैं बकूं नेरा ॥ टेक ॥ निरषण का मोहि चाव घणेरा । कब मुष दे
षौं तेरा ॥ प्राण मिलन कौं भयेउ दासी ॥ मिलि निरषूं मात वेरा ॥१॥ व्या
कुल ताथे ... तन दही ॥ बिरह परिजर म कां देरा ॥ दादू रे जन मरा म...
लन कूं तलफई तन वकूं तेरा ॥२॥४॥ कब देषौं नैंन भरे परती ॥ प्रा
ण मिलन कौं भई मती ॥ हे मो पे लौं हरी गती । कब मिलि है मोहि
प्राणपती ॥ टेक ॥ बलि कौ ती कूं देषौं गारि । मुझ मांहें अति बात
अनेरी ॥ सुनि सषि हि बपेक बीनती मेरी । जनम जनम कूं दासी ते
री ॥१॥ कक दादू सो सुनि मा सांई ॥ कूं अबला बल मुझ मैं नाही
कर्म करी घरि मेरे आई ॥ नौ मो न्ना पापी ... मेरे ताई ॥२॥७॥ नीके मा
हु नम सु पाति लाई ॥ तन मन प्राण देव बजाई ॥ पार सकें बनाई
टेक ॥ पेहजी यर वे सांप अरे ॥ ... नाई मांई ॥ बाण नेत के देत

लगाई ॥ देषत ही सुरझाई ॥१॥ निमल नैन दपि पास्यूं लागो रही नर
षी काई ॥ दादू रे तिल मैं तन जावै ॥ संग न छाडौ माई ॥२॥४॥ उमहि बि
सै सैं कवन न करै ॥ गरा बनि वाज गुसाई मेरै ॥ मो थप्यूं कट धरै ॥टे
क॥ नीच ऊंच चले करै गुसाई ॥ टार्यो हूं न टरै ॥ हस्त कवल की
छाया राषै ॥ काहूं पैं न डरै ॥१॥ जाकौ होति ज राग न कहूं लागो ॥ ताप
रि है हाटरै ॥ अमि अपने करै गुसाई ॥ मार्यो हूं न मरै ॥ सांमद वक
बीर लुलादे जन नरै दामति रै ॥ दादू ब गिबार न ही लागो ॥ हार पै सब
सरै ॥२॥५॥ मो मै हरि न मो न मो ॥ ताहि गुसाई नमो नमो ॥ अकल
निरंजन नमो नमो ॥ सकल वियापी जिहिं जग कीन्हो ॥ नारायण नि
ज नमो नमो ॥टेक॥ जिनि सिरजे जल सीस चरण कर ॥ अविगत जी

व दीयो ॥ श्रवण सवारि नैन रसना मुष ॥ ऐसो चित्र कीयो ॥१॥ ऐसा

पछपाहकी पैजगाजीवन ॥ मुनंर संकर साजे ॥ पीरी पैकं बर सिषस्त्र
रूसाछिक ॥ स्त्रपैनें नाक्ष निवाजे ॥ २ ॥ धनी स्त्र बर चंद सूर जिंनि
पांगीं पवं सकोपि ॥ आंनं नगाषडं नपलक मेकेते ॥ सकल संवारि
लीपे ॥ ५ ॥ स्त्रायस्त्र षृभत षांकितनांही ॥ मनबसं मिपरि रहे ॥ हडी
नत्ताहिनें बदितस्त्र मस्त्र माधकेहे ॥ ५५ ॥ हमपेहं हूरि रहींगो तिते
री ॥ सुम्हकौते मेतु म्हहीं जानें ॥ कहाव परी मतिमेरी ॥ टिका ॥ भ
नषेहं स्त्रमफ्रिदिषृस्त्र गोचर ॥ मनसाकागमिनांहें ॥ सुरतिसमा
स्वबुधिबलनथाके ॥ बचननपकेंचेंनांही ॥ ११ ॥ जोगंद्रध्याननजा
नगामिनांही ॥ समक्रिमसकिमबहोरि ॥ ननमसारदतंप्रगा घ
टसाधे ॥ पारनगदतेतुम्हारे ॥ १२ ॥ बोधिपरें गति जो कहन जानें ॥ स्त्र
गहुगदनकेसस्त्रावे ॥ दाहूस्वन [illegible] नापदिरेहृदयाकरि ॥ ज्ञा के हि

सो पावै ॥३॥१॥ इति राग नटनारायण संपूरण ॥ राग १२ ॥ शब्द ॥
२९५ ॥ अथ राग मारू लिख्यते ॥ कोउ ही सालन काको फेरे, सब घा
ट रीति काटे रे ॥ टेक ॥ प्रेम पंथ लागा आई धांगे ॥ ननिते लोक जाया या ॥ ऐक
मनोहू सम सूरा रैन लागा ॥ पांन राखे ज्ञारि लीया ॥१॥ नां तेन लीन रे
बुण कर लागा ॥ अब राति रिपी राता ॥ तो तोंबा तों जीव जुलाहा ॥ प्र
मतत संमाता ॥२॥ मकल सिंरो मनि बुधे विचारा ॥ सां कुरा सबनतो
डे सदा मुक्त रहै लो लागा ॥ छूटे तंजो डे ॥३॥ अब से न निबुनि
गहर गतां ना ॥ सांई के मनि जावे दादू कोधी कर ताके संगि ॥ बक
रिनहू हिंदू मिछावे ॥४॥१॥ बिरहंनी बपुन मंभोरे निस दिन
फेरे राम बंकारां ति ॥ जिये क बिचारे ॥ टेक ॥ स्वातुर नन हीं मि
लनके कारनि कोहिक दिराम तुकारे ॥१॥ मास सत सास निम घ

मनहि बिसरै ॥ जितनितनां थ निहारै ॥ फिरै लग्राम चहूं दिसि चित नव
न ठैनन नारचरगि आवै ॥ रेमन बिओग बिरह को जारा ॥ औरन कोई
भावै: ॥२॥ ब्यात्कुल जैजई मराजन संसकै ॥ बिषम बान हरि मोर वा:
दरसन बिन कं जीवै सां मस नेहा हंमारे ॥३॥ मन रे तेरा कव
नां वारा ॥ जपि जीवन प्रांणा धारा ॥६॥ रे मात पिता कुल जा
ती ॥ धन जोबन सजन संघाती ॥ रे त्रिदहारा सुत भाई ॥ हरि बि
न सब कू वांधे जाई ॥५॥ रे मूंञ्ञ बिद्धक के ना जावै ॥ काहू के न
गिम आवै ॥ रे मूं नाकें रि मेरी मेरा ॥ हरि नां तें बिनां कोइ तेरा ॥२॥
रे मूं चेतिन है षेकं धाय कमाया मोह सबै धंधा ॥ रे कांल लेमीन्च सिर
जागो ॥ हरि सुमरन का है न लागो ॥८॥ पकर औ रे रबकरि मआ

वै ॥ फिरि मनि षाजन न मन पावै ॥ अब ताहि दीनन कीजैं ॥ हरि सें
मजन करि लीजै ॥ ४ ॥ ७ ॥ मन रे राम रटत क्यूं रहिये ॥ युं कीत न
बांधि रकूं न कहि ॥ टेक ॥ जब लग त्रिस्ना बांणी ॥ तौ लौं जप
तेसा गपाणी ॥ जब पंनाच लिजांवै ॥ तब प्राणी पछितावै ॥ १ ॥
जब लग अंभौ सुणी है ॥ तौ लौं साम सब सुणी जै ॥ कवणौं
सुरति जब जाई ॥ तब कथा सुणि दे आइ ॥ २ ॥ जब लग जैं न कें पेषै
तौ लौं चरन कवल किन देषै ॥ जब नैन कंवल सूं जै ॥ ये मब म
रिष कथा नूंकै ॥ ३ ॥ जब लग तन मन नीका ॥ तौ लौं जप लै जीव
न जीका ॥ अब ताहि दीना भावै ॥ तब हरि कें मनि भावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ म
न रे देषत जन्म गयौ ॥ ना पैं कांज न कोई भयौ रे ॥ टेक ॥ मन कें

गि ज्ञांन बिचारा ॥ ताथैं तन मनु राजं दुहारा ॥ मन रूप सा चक किसौ
नैं ॥ हरि साधक कहैं बाग मजे ॥ १ ॥ मन रे बावरे ढिंग हैं चतुराई ॥ ताथैं मनि
मुष कमल तें नाहि ॥ मन आप आपा कं थापै ॥ करता कैं बैग आगे ॥ २ ॥
मन स्वादी नकु तन बनावै ॥ मैं ज्ञांन ध्यां बिषै बतावै ॥ मन मांगे सोई दीजे
हम दीरा मङ षी कंर कीजे ॥ ३ ॥ मन सं बंधी छाडि बिकारा ॥ प्रांणी
होय गुंन नर पैं न्यारा ॥ निरगुण निज आदि रहावै ॥ ताहु साधक कहैं तै
कहियै ॥ ४ ॥ मन रे अंत्रि कालि दिन आया ॥ यह सब नर पाप
या परायां ॥ टेक ॥ पूरब रांमों सुपै नैंन नैंन कू सूझे ॥ मन नां कहां नजा
ई ॥ सो मन चंचल कुं पनन लागो ॥ सो दिन पंछी चिल्यां भाई ॥ ५ ॥ कालेषौ
लें बर गा मनलरणा ॥ तन मन का बंधन जाया ॥ जो बंधन गया जुरा

फ

चलिक्राई ॥ नउपछितावनलागा ॥ ३१ ॥ रह्या सघटै घटरह्यो जैकाया
पूकूतननत्रयापुरंनां ॥ पांचौंथाकेकट...टलानैं ॥ ताकामरमन
जैनंनो ॥ ३२ ॥ हंसबटाऊप्रांणपयांनो ॥ संमकिछूधिसमंमांही ॥ दि
नदिनकालनग्रासैजाय्यरा ॥ दादूचेतैनांही ॥ ३३ ॥ मसरेदूदैसैसो
नांही ॥ हैसोब्रह्मगमब्रह्मगोचरमांही ॥ टेक ॥ निसम्रोधियारीकछू
नसूझै ॥ संसैसरपदिषावा ॥ ऐसैंअंधजगतनहींजांणैं ॥ जीवकी
वृडीषावा ॥ १ ॥ मृगजलदेषितहांमनधावै ॥ दिनदिनझूठीआ
सा ॥ जहांजहांजाइतहांजलनांही ॥ निहचैमरैपियासा ॥ २ ॥ भ
मिविलासकूक्रतविधिकीन्हा ॥ जंमसुष्पमैंसुषपावै ॥ जागतझू
ठतहांकछुनांही ॥ फिरिपीछैपछितावै ॥ जबलगसूतातबल

मूखै॥ जागत जनम बिलांनां॥ रामकृष्ण तिन्हांकु कछु नांही॥ हे सो सो

षिसयांनां॥ १॥ ७॥ बाजीगर नट षेला॥ अैसें आपैर दे अकेला

॥ टेक॥ रंग भाजी मे ... सारा॥ सब मोहे को तिगहारा॥ एक बाजी षे

लहि षावा॥ बाजीगर किंन हूं न पावा॥ १॥ इहि बाजी जगत भुलांनां

बाजीगर किंन हूं न जांनां॥ कुछ नांही सो पेषा॥ हे सो किंन हूं न देषा

२॥ कुछ अैसा चेटक कीनां॥ तन मन सब हरि लीनां॥ बाजीगर नु

रकी बाही॥ काहू पैल षोन जाई॥ ३॥ बाजीगर परकासा॥ एक बा

जी कू गत न भासा॥ रामू पावा मोई॥ जो इहि बाजी लिप लिन होई॥ ४॥

॥ टेक॥ जाग

८॥ जाके रे अैसा एक बिचारा॥ यों हरि गुर कहै हमारा॥

त सूते सो ... ॥ ... नांनां॥ जाग सजां नें सो ... जा

गो॥जबरांमनांमममनमांनो॥१॥देषतत्रूंमेंभूंभागुसनेजीत्रूंमेषे॥जोंबदे
गमतिनसूंके॥देषतदेषेत्रूंमक्षजाढूंछे॥जो[illegible]मनेंनेदीसूंके॥२॥बो
लेत्रूंगोगंस्याजीगंगूंगो॥जबलगागतनचींन्हा॥बोलतदेवेलीगंगजी
बोले॥जबरांमनांमकहिदीन्हा॥३॥जीवतमूंएमुंसेंजीमूंए॥ज
बलगनहीप्रकासा॥जीवतजीपमरेजीजीये॥दादूरांमनिवासा
॥४॥रांमजीनांवबिनाऊपसारा॥केसेसाधनकहीबिचारी
टेक॥केईजोगध्यानगाहिरहिया॥केईकुलकेमारगबहिया
केईसकलदेवकोंध्यावें॥केईरिधिसिधिचाहेंपावे॥१॥केईबे
दपुरांनोंमाते॥केईमायाकेसंगिराते॥केईदेसदिसंतरफि
रे॥केईजांनीहैबहुकरबोले॥२॥केईकायाकसेअपारा॥के

मैं षडंग की धा[illegible]ई अंजन तजी वनकी आसा ॥ कोई करैगु
फा मैं बासा ॥ ९ ॥ [illegible] भ्रति जे जागे ॥ सो तो राम नाम ल्यो लागे ॥ अ
बूता हूं कैसे है बिचारा ॥ हरि लामायां पाहं मारा ॥ ५ ॥ १० ॥ माधो हरि सों
हेत हमारा ॥ जिनि युक्ति कीनं प्रसारा ॥ टेक ॥ जाकारन व्रत कीजे
तिल तिल युक्त तन छीजे ॥ सहजैं दीसे जांनां ॥ हरि जानत नहीं म
न मांनां ॥ १ ॥ जाकारनि तप जप कीये ॥ धूप सीत सिर सहिये ॥ सहजैं
हीं सो आवा ॥ हरि आवत नहीं म चु पावा ॥ २ ॥ जाकारं तीरथ फिरि
पे ॥ करि तीर्थ [illegible] नर भिन्नर भिमरियो ॥ सहजैं ही सो चीन्हों ॥ हरि चीन्हें
सबै सुष लीन्हों ॥ ३ ॥ प्रेम भक्ति जिनि जांणी ॥ सो कांहे कौं नर
मे प्राणी ॥ हरि सहजैं सों [illegible] मानें ॥ ता पे दादू और न जानें ॥ ५ ॥ ११ ॥

रामजी जिनि न्नरमानौ हं मेकौं ॥ नाथै कौ हौं पतीत भक्त कौं ॥ टेक ॥
चरन तुम्हारे सबही देषौं ॥ न पतीर एं बृ र टरौं ॥ गंगा जमुनि पासि पां
इं नवे ॥ तहां है कजुमनानो ॥१॥ संगि तुम्हारे सबही लागौं ॥ जैगि जप
जे कीजे ॥ साधन सकल जोई मन मेरे ॥ ए गुरु सापरणौ दीजे ॥२॥ पूजा
पाती देवी देवल ॥ सब देषौं तुम्ह माही ॥ मोकौं नौट स्यापणौ दीजै
चरण कमल की छाई ॥३॥ पंच रत्न मटा सकी मुलि पै ॥ हरि करौ ज
र मंमेरा ॥ दादू तुम्ह बिन और न जानै ॥ राषौ चरनौं चेरा ॥४॥१४॥
सोई देव पूजौं जे टांकी नहीं घडिया ॥ गर्भवास नहीं औतरिया ॥
टेक ॥ बिन जल संजम सदा सो देवा ॥ नावन अति करौं हरि
सेवा ॥१॥ पाती प्राण हरि देव चढाऊं ॥ सहजै संमाधि प्रेम लैलां

ऐं ... हिं बिधि सेवा ... नहां होइ । अलष निरंजन लषै न कोई
पू पूजा मेरे मन मांहि ... हिं बिधि होइ सो कहु न जानैं ॥४॥१४॥ रा
म राइ मो कौं अचिरंज भावै । तेरा पार न कोई पावै । टेका । ब्रह्मा
हि कं अनेक कोटि कुनारद । नेति नेति तिजे गावै ॥ सारंगी तुम्हारा रहै नि
सवा सुरि ॥ तिन कौं तूं न लष पावै ॥१॥ संकर सेस सबै सुर मुनि जन:
तिन कौं तूं न जानावै । तीनि त्रिलोक करटै रस मां त्रि हरि । तिन कौं तूं न दि
पावै ॥२॥ ती न लोंन रामरंग रिराते ॥ तिन कौं मूं संगि गावै ॥ अपने
अगा कौं कुशा ॥ तिन कौं [illegible] ॥ सो [illegible] पते रे गावै ॥३॥ सेवा संजम करे अ
प पूजा ॥ सब टम तिन कौं [illegible] ॥ मे अछो [illegible] तिनसौ ॥ दादू कौं
हिम गावै ॥४॥ [illegible]

॥ राग आसा गुरू ॥ हरि हरि हरि सन ने ॥ मैने तेरा मुक्ति न मांगउ र
॥ टेक ॥ सिधि न मांगउ रिधि न मांगउ ॥ तुम्ह सरणि मांगउ जोग बंधप ॥ १ ॥ जोग
न मांगउ भोग न मांगउ ॥ तुम्ह ही मांगउ राम जी ॥ १ ॥ धरम न ही मांगउ ब
न न ही मांगउ ॥ तुम्ह ही मांगउ देव जी ॥ १ ॥ हरि तुम्ह बिन ओर न मा
गें दरसन मांगउ देव जी ॥ ४ ॥ १ ॥ सुखदेव जी विचारि ॥ तुम्ह बिन कउ
र हे मेरे प्रीतम न हूजा को हू ॥ उर बाकि सब को कहू ॥ टेक ॥ मीत न कोई मेरा
सो हर कोई हैं अपणा ॥ मुझे मिलावै को हू ॥ वै जीवन जीया ॥ १ ॥ मेरे मैं न
दिखा हू ॥ जीके किम सब प्रासिर ॥ सोई मन जीवै के लोई हीजि सब पासिर ॥ पंज
र मांहे प्रेम तुम्ह बिन जाहू सी ॥ जा दिन हू मांगउ मांन न ॥ कर स्वामि प्रासहसी
॥ ३ ॥ १ ॥ कि जो हरि दीरे बार सुधा रि सभ वि जै नाम नाद रहन पै सुख दे

॥ नैं ह्वं ल्या वि ने ॥ ॥ चरन जो बानी षाति ॥ ते हंदि षाडे
मेरा ॥ तुझ बिना जीव दे ड ॥ ३ हेली कामनी ॥ १ ॥ नैनन ते दारोंवा
ट ॥ ऊसो चावनी ॥ तू अंतर थे तुझो आव देहा जावनी ॥ २ ॥ ते
दयाकरी घरि आव ॥ दासा गावनी ॥ जनदादू राम संमालि ॥ वेन
सुनावनी ॥ ३ ॥ ३ ॥ पीव देषे बिन क्यूं रहूं ॥ जीवत लपै मेरा ॥ सब
सुष आनंद पाइसी ॥ सुषदे पीतेरा ॥ टे ॥ ॥ पीव बिन कैसा जीवना
मोहि चैन न आवे ॥ निरधन जु धन पाई री ॥ जब दरसन दिषलावे ॥
१ ॥ तुम बिन क्यूं धीरज धरों ॥ जो लौ तो हि न पाऊं ॥ सनमुष के
सुष दीजिये ॥ बलिहारी जाऊं ॥ २ ॥ बिरह बियोग न सह सकों
कायर घट वाव ॥ पा तन पीव न पाइ री ॥ सुनि साहिब मा चा

१॥ रागु धनासरी मुहला ॥ दरसन देहु दरसन मन रे ॥ मै मैं तेरा मुक्ति न मांगौं रे
॥ टेक ॥ सिधि न मांगौं रिधि न मांगौं ॥ तुम्ह सरन मांगौं गोबिंद ॥ १॥ जोग
न मांगौं ज्ञान न मांगौं ॥ तुम्ह ही मांगौं रामजी ॥ २॥ धरम न ही मांगौं ब
न न ही मांगौं ॥ तुम्ह ही मांगौं देवजी ॥ ३॥ राम तुम्ह बिन केवल न मां
गैं दरसन मांगै देहु जी ॥ ४॥ १॥ मृत्यु पेखी बिचारि ॥ तुम्ह बिन कउ
र हुं मेरे स्वामी रन हु जा को ह ॥ उरब किस को कहूं ॥ टेक ॥ मांन न ह मारा
मोह स्यामी ते अपरा ॥ मुझे मिलावै को ह ॥ वैजी व न जीया ॥ १॥ मेरे मैं न
दिखा ह ॥ जी के जिस स्वामी सिरे ॥ मो धे नजी वे कं दी जिस पासिरे ॥ पं के
र मां है प्रभु तुम्ह बिन जाह स्यो ॥ जगु ह ह मांगौ मां न ॥ करब घरि स्वामी ह स्यो
॥ २॥ कुंजो ह दरि बार नृपति स्वामी बिसै ना ज्ञा दरसन पेखैं सु पदे

॥ मोहंत्यावि नेहु ॥ चरन जो बानी षाति ॥ नेहुं दिषाडे
नेही ॥ तुझ बिना जीव दुःष ॥ ३ ॥ हेली कामनी ॥ ३ ॥ नैन नी दारोवं
ट ॥ कसी चावनी ॥ दुष्यंत रथे तुझ जोग्याव ॥ देहा जावनी ॥ १ ॥ दं
दस्या करी यरिस्याव ॥ दासा गावनी ॥ जन दादू राम संभालि ॥ बेन
सुनावनी ॥ ३ ॥ ३ ॥ पीव देषे बिन क्यूं रहूं ॥ जीवत रत्न पेमरा ॥ सब
सुष आनंद पाइरो ॥ सुष देषो तेरा ॥ टेक ॥ पीव बिन कैसा जीवना
मोहि चैन न आवे ॥ निरधन जस धन पाइरो ॥ जब दरस दिषावे ॥
१ ॥ तुम बिन क्यूं धीरज धरो ॥ जो लो तोहि न पाऊं ॥ सनमुष के
सुष दीजिये ॥ बलिहारी जाऊं ॥ २ ॥ बिरह बियोग न सहि सकों
कायर घट काच ॥ [illegible] तन पाइ रो ॥ सुनि साहिब माचा

सुनियेंमेरीबीनती ॥ अबदरसनदीजे ॥ [illegible]दरसनपावहीं ॥ नैसैंकां
छकांकै ॥४४॥४४॥ इहिविधिछेधोमोरमना ॥ जेहूले ऋणाकीटतनो
॥टीका॥ चातुमासनैंनिबिहाह ॥ ध्यंमपरेंपैडैंबांनतिजाह ॥१
मैरेमांनविसैरैनहींपांणी ॥ प्रांपतिजेतेनि श्रोरैनजांणी ॥२॥
जैलैमरणबमोतुश्रणा ॥ जोतिनलागैपेडेपरणा ॥३॥ हाहस्त्रव
थैंस्त्रसैहाह ॥ ध्यंमपरैनहींलागैतेहि ॥४५॥४५॥ श्रापोरांमदयाक
रिमैरे ॥ बारबारबलिहारीतेरे ॥टीका॥ निरहंनयश्रातुरपथनिद
रै ॥ रांमरांमकहियावपुकारे ॥१॥ तथावृकैमरणाजोवे ॥ मैंनन
रजनलमिलिजरिरोवै ॥२॥ निमदिनअनलनेपैफिरैरहरांम ॥ श्रात्मरां
मतुम्हारैपास ॥३॥ बपविमरैरनकोसुभिनाहीं ॥ दाहूविरदं

म न क मांही ॥ ४ ॥ ६ ॥ निरंजन कूं रहै ॥ मैं निगाहै बैराग केते
गुण गाये ॥ टेक ॥ जो जगम पतिराइ ॥ द्रमि बोलै नहीं प्राण टघूघ
ट मांहि ॥ पंच बोलै नहीं ॥ १ ॥ मदि के करौं समार ॥ सब जग [illegible] रे तै
छा मांस ब परिवार ॥ तेरै कांमै ॥ २ ॥ धारौं पंच मं प्राण ॥ पांच सिर ध
रै ॥ जं जं जा बैराग ॥ सो सेवा करौं ॥ ३ ॥ श्री कांना पर दयाल ॥ त्रि
लं बन की जियै ॥ दास बलि बलि जाइ ॥ मेज सुपहीजियै ॥ ४ ॥
७ ॥ निरंजन भयौं रहै ॥ काफलि पतिन होइ ॥ जत सत लपण बूरज
गमा ॥ गुमान दी लागै कोइ ॥ टेक ॥ धरम्र बर लागै नहीं ॥ न
ही लागै मम सिहर समूर ॥ पांणि पवन लागै नहीं ॥ जहां तहां न्नर
पूरि ॥ १ ॥ निरनतर मुरति लागै नहीं ॥ नहीं लागै सीतल छांम ॥ पु

धांत्रिषकत्यागीमैंनहीं॥ घटिघटिआत्मरांम॥१॥ मायामोहस्वागेदेम
हीं॥ नहीं त्यागीकायाजाव॥ कालक्रमत्यागीमैंनहीं॥ प्रगटमैंरापीव
॥४॥ इकलसपोकैनरहै॥ इकलनमयेकैतेज॥ इकलवम्येकैजो
तिहैदाहुयेनैसेज॥५॥७॥ जगाऊंवैनप्रांणस्त्रधार॥ बांचापा
लनं॥ इकहापुकारौंजाइ॥ मेरेलालनं॥ टेक॥ मेरेवेदनिस्त्र
गिस्त्रपार॥ सोइग्रटालनं॥ साजेपनिमकमर॥ गदस्वास्त्रातिघणां
॥१॥ स्रतिरिहेमोटालि॥ कीजेस्वापणां॥ मेरेतुम्हबिनस्त्रोरन
कोइ॥ इहैविचारनं॥२॥ तासैंकरौंपुकार॥ प्रभुतनचालनं
राइकौंटरसजनइंजे॥ जाइहुषमलनं॥ हुपदे॥ मेरेतुम्हहोराय
गाहार॥ इकजाकोनहीं॥ पेचचलनचऊंदिसजाइ॥ कांसेतदी

सूरी॥ दोहा॥ मैं केते कागे तुपाइ मिटं चलनां रहै॥ जहां बरजौं तहां जा
इ॥ मति भातो बहै॥४१॥ जहं जातौं तहां जाइ॥ तुम्ह छैं नां मिरे॥ नासौं क
हां बसाइ॥ भावै तूं करै॥४२॥ मकंन पुकारैं साध॥ मैं केता कह्या॥ गुर
ह्म ऊं सकतां नें नाहिं॥ निरमैं कै हेला॥४३॥ तुम्ह बिन और नकोइ॥ इ
मनन कोगावैं॥ रू राषैरा छनं हारटाह तौ रहै॥४४॥ निर्जन का इर कं
पे प्रांणि या॥ देषि पऊं हरिया॥ वारपार सूकैं नहीं॥ मन मेरा फरिया॥
देषा॥ अति अंथा हपे मोजला॥ आमघन हीं आवै॥ देषि टमि फरपे
घणां॥ प्रांणी डषणावै॥४५॥ बिंघ जल लनरिया सागरा॥ मबथ के सयांनां
तुम्ह बिन कऊं के मैं तिरि मैं मूढ अयांनां॥४६॥ आगै ही फरपे घणां
पार तौं लहिं ये॥४७॥ ऐक
मेरी वाका हियै॥ करगा हि [illegible] के महा

मेरा साँई तो रहै। जे तुम्ह कौ दह्याला। दादू कहु कैसैं तिरै ॥ जूं तारि त्यूं पा
रा ॥४॥१९॥ समरथ मेरा साँई या। सकल अघ जारे ॥ सुषदाता मेरे प्रा
ण का ॥ संकोच निवारे ॥२६॥ त्रिविधि ताप तन मन का हरे ॥ चौथैं जन राषै
आप सेमा गैं सेवग ॥ साध यों नाथैं ॥१॥ आप कौ प्रतिपाल मैं। दा
दू उघटौ रैं छाजन की पूरवै। सब कारज सारे ॥२॥ करे सकौटि जे जे
जेना ॥ सुष संफ समाई ॥ मन मनोरथ पूरना ॥ ऐसा और न कोई ॥३॥
ऐसा और नेइ षिङ ॥ सब पूर्ण कांम ॥ दादू साध संगी कीये ॥ जे नि आ
करा मं ॥४॥१२॥ उभु बिन राम कवन कलि मांहे ॥ बिधियां थीं
कोई वारे ॥ मुनि पर मोटा मन वे वाह्या ॥ ऐन्हौ कौण मैं तार थ
मारैरे ॥२६॥ छिन पेके मन वीन कट माछो ॥ घरि घरि बाणिना चा

बैरे ॥ छिन एकें मनवौं चंचल माझो ॥ छिन एकें घरमें आवैरे ॥१॥ छि
न एकें मनवौं मान अभमारे ॥ सचराचर मांधापैरे ॥ छिन एकें मनवौं
उटमट मालो ॥ स्वादें लागो घांपैरे ॥२॥ छिन एकें मनवौं जोगी यत
गा ॥ सर मिन्सर मिस्वादें वामेरे ॥ छिन एकें मनवौं लोभें लागो ॥ आ
पापमें बाफेरे ॥३॥ छिन एकें मनवौं कुंजर माझो ॥ बंन बनमां हिं
जर मांडेरे ॥ छिन एकें मनवौं कांमी माझो ॥ बिषियारंगिरमांडेरे ॥
छिन एकें मनवौं मध्य अमारो ॥ नाटे मां स्वाजापैरे ॥ छिन एकें मन
वौं मायारातो ॥ छिन एकें अप्रभनें वादेरे ॥५॥ छिन एकें मनवौं नव
रस्म प्रभुरो ॥ बांमें क्वललिं बंधां सौरे ॥ छिन एकें मनवौं चउदिस जा
ये ॥ मनवांमें कोइं ज्ञानरि ॥६॥ उमहूबिनराषे करुणाविधाता

लि

मुनिं युर साधी अंगोरे ॥ दाहू मन न कछि न मांजावै ॥ मन वो मांन्हार वि
न अंगोरे ॥ ८ ॥ ५ ॥ कर गांपो च सो च सुष कर ई ॥ दो हकी नाचु के से
न वृजल तिरई ॥ टेक ॥ रम नजात पछि म के मैं आवै ॥ नैन न बिन न च
लिवा टकम पावै ॥ १ ॥ हिष बन नबैं अंतन फल न चावै ॥ घा इह लां द ल
अम त माहे ॥ २ ॥ अंगनिं गहे पे सि कर मुष कं सोवै ॥ जेते गंपला गी
घणी सीत न कंदे दे ॥ यापपा व मन कीयें पुन न कं पाई पे: ॥ कंप षं निं पढि
बाग मन कं जाड़ी पे ॥ कदै दाहू मो हिंम्म चरज नारी ॥ हिंदै कप रकं
मिलै मुरारी ॥ ५ ॥ ४ ॥ मेरा मन के मन सुं मन लागा ॥ सबद के स बद
सें नांद बागा ॥ टेक ॥ श्रवन के ष्व सुन गा हु लि: सुष पाया ॥ नैंन के नैं न
सें निर षराया ॥ १ ॥ घ्रां वा के प्राण संषे लिप्राणी ॥ मुष के मुष सें

कै लिखि बांणी ॥ ७ ॥ जीव के जीव मूरं गियाना ॥ चित के चित्र सं प्रेम
माता ॥ ८ ॥ सास के सास सके कों सा म मेरा ॥ दे घिरे दा हूवा न्ना गतेरा ॥ ४ ॥ १५ ॥
मेर सि घर चढि बोलि मन मोरा ॥ रांम झल बरषे सबद सुनि तोरा ॥ टे
का ॥ श्रवणति आतुर पावू पुकारे ॥ मो वत जा गत पंपथ निहारे ॥ १ ॥ नि
सबासु रय कहि अमृत बाणी ॥ रांम नांम मैं लेबो लाइ है नै प्रांणी ॥ २ ॥ टे
रि मन न्हाई जबल गाजी है ॥ प्रीति करि माटी प्रेम रस पीवै ॥ ३ ॥ दादू औ
सरि जे अब न जागे ॥ रांम घटा दल बरषण लागे ॥ ४ ॥ १६ ॥ नारी ने दन
की जिये ॥ जे तु ऊरांम पियारा ॥ माया मोहन बंधिये ॥ तजिये संसारा
टेक ॥ विषिया रंग विस है न दीं ॥ न दी करै प सारा ॥ देदा रहै परिवा
र मैं ॥ सब थैं रहै न्यारा ॥ १ ॥ आपा पर हरि जे नहीं ॥ नांही मैं मेरा ॥ मन

साबाचाक्रमनां मांईसबतेरा ॥१॥ मनकई दौ अमथिरकैरै कतसंतदी
मोहे ॥ अगनिविकारसबप्रहरै ॥ मिथ्यावदं बोले ॥३॥ रहै निरंतरिरामसं
अंतरिगतिराता ॥ गावैगुणगोबंदके ॥ दादूरसिमाता ॥४॥१०॥ मेराथे
तूंहीरहै ॥ तेईजंननेरा तुम्हबिनऔरनजानंही ॥ सोमेवगनेरा ॥टेक॥
अंबरआपैहीधरया ॥ अनकूंउपयारी ॥ धरतीधरीआपथें ॥ सबदी
सुषकारी ॥१॥ पवनपालिसबकेचले ॥ जैसेतुम्हकीन्हापायोप्रगट
है छिहूं सबमेंरहैलीनां ॥२॥ चंदसूरदिवाकीचहूंदिसा ॥ सबसातलमें जो
तें ॥ सरजनसासेवाकरै ॥ जैसैंतनमानें ॥३॥ ये निसुसेवगसबरहैं ॥ सब
आज्ञाकारी ॥ मोकोंऔसेकीजिये ॥ दादूबलिहारी ॥४॥१॥ नि
रंकराबाबीरहंमारा ॥ तिननहोंकोंमेवदैबिसारा ॥टेक॥ क

मकोटिकेकुसमसकोटे । काजेमवारेबिनहांमाटे ॥३॥ आपणाम्
वेआरकोंतारे । असाप्राणपारिखतारे ॥४॥ जुगिजुगिजीवोनिंदक
मोरा । तंमईवड्फकरौंनिहोरा ॥५॥ निंदकबपुराप्रउपगारी । दा
दूनिंदककैरेहमारी ॥६॥१९॥ रंकजीटेकजी प्रेमपियालादेकजी
टेकरिबकरिनलेकजी ॥टेक॥ जंजंपनूरनदेषोतेरा । तंतंजी
यरातनपेमेरा ॥१॥ असीमहारसमनांवनआवे । तंतंप्राणबकु
लड्षपावै ॥२॥ प्रेमजगतिरसपावैनांही । तंतंमासैमनहीमांही
॥३॥ मेनसुदासगसधासुषदीजे । दादूदइबियाबिलंबनकीजे ॥४॥२०॥
बरषकंरामअमरतधारा । झिलिमिलिझिलिमिलिसींचणहा
रा ॥टेक॥ प्राणबेलिनिजनीरनपावै । जलंदरबिनांककूलकु

मिलौंवे ॥ १ ॥ मैंकें केलि सकल बनराइ ॥ रांम देव कुंज लत्रै बरखै ज्यौं आइ ॥ २
श्रालम बेली मैरै पियास ॥ नीरन पावे हं दृठ हास ॥ श्री ॥ २१ ॥ इति वियोग अनुमान
स रस ॥ राग ॥ २० ॥ पद ॥ नू ॥ २२ ॥ अथ राग विलावल ॥ दयों तुम्हारी दूर
से न पईये ॥ जो मनते दोउ तुम्ह कुंज रजतांमौ ॥ जो न राहत तुम्ह सौं कोक हिये
ते कौ ॥ तुम्ह संकदहो चतुराईकी जे ॥ कौंन कर मकरि तुम्ह पाये ॥ को
ईन कहो मिले प्रांण बलि अपनै ॥ दयों तुम्हारी तुम्ह अपने ॥ १ ॥ कहांदे
मारो श्रानन तुम्ह आगे ॥ कौंन कला करि बसि कीये ॥ जातें कोंने तु
म्हि वन वन पारखष ॥ रुचि अपनी थें सरन पलीऐ ॥ २ ॥ तुम्ह हीं आहि अ
ति पंडुनि तुम्ह ही ॥ तुम्ह कर्त्ता त्रिय वलोक भंजारि ॥ छुं छनां हरेंथे ककहा
होत है ॥ दाह वलिया पै छुं दिर ॥ ३ ॥ मानिक मिस्र वाल कारी स ॥ गु

नरुगारखोअहरदम । पंन हपचिरहीम ॥ टेक ॥ अवतिआघरिबंदगु
नंकी ॥ अमनबंदविमयार ॥ मकुंनिफामितारसाहिब । दरददबुका
र ॥१॥ पनोमिनेकाबदी ॥ करंडामबुराईबदफेल । बकसंपदरनूं अ
जाबआखरि ॥ ऊकमदाजरमेल ॥२॥ नांवनेकरहीमराजिक । पाक
परवरदिगार ॥ गुनहफिलकरिदेकंदाह ॥ तंनबदरहीदार ॥३॥ कव
नआरदमीकभिनविचारा ॥ किसकंपूछेगरीबपिजारा ॥ टेक ॥ भैंजं
नऐकअनेकपसारा ॥ सोजलनदरियाअधिकअपारा ॥१॥ पेकंदोह
लोकदिसमकाजांके ॥ अंमेकअकरुफेकंसुरंकाकं ॥२॥ भैंरुनिबलम
बलयेसारे ॥ कंफुकरिपूछेगबकुतपसारे ॥ पीवपुकारोसमफतनाही
दुइदेषावदेसोदमदजाई ॥३॥३॥ जामउसकीहराकादेसोवे । सेयकरी

मातौ सुष होवै ॥ टेक ॥ आतैं जीवन सौं तैं बिसारा ॥ पछि जामां पंथ
न संवारा ॥ मैं मेरा करि बिकल नहुं लागा ॥ अजहूं न चेतै हरि पद लागा
॥२॥ सोई केरा सेवा नाहीं ॥ फिरि फिरि हूबे दरिया माहीं ॥ बार न क्षा
वा पार न पाया ॥ ऊबा जीवन नाव कनजुं खाया ॥३॥ मन्नन मेरा घ्याना
हान लीया ॥ कैं मोबद लेही गहीया ॥ फिरि फिरि छिता नांम संजनुं नांही
हारि चल्या कर पावैं मांई ॥४॥ हरब सुष कारंण फिरि फिरि बसपावै ॥ अज
हूं न चेतै कंकर हिं कौवै ॥ दाहु करै मां ममु नि मेरा ॥ कंडक री मसं नाहि
मेवेरी ॥५॥ बार बार तेन न होवा वेरे ॥ काहे कौं बादि गवावै रे ॥ बिन मत
बारक जन हो लाहौ ॥ बहुरि कहां को पावै रे ॥ टेक ॥ तेरे अगाव फेन्ना
वधरि कीन्हा ॥ कंकर रिधि बनावै रे ॥ मोनूं लेइ विषै मैं मारे ॥ कंचन

कारमिलवौरे ॥१॥ तूं मतिजानैं बजरिया ईये अबके जिनहरका
वैरे । मीनिलोककी पूंजीतेरे । वनजिबिपसीसोक्त्रावैरे ॥२॥ जबलग
घटमैं सासबोसरे । तबलगाकी हेनपावैरे । दाहतंवधसींवनली
न्हो । सोपुंगीपलितावैरे ॥३॥४॥ रामबिसायोरे जगमनाथ । हीरा
हाथ्योटेमनहारे । कौमीकीन्ही हाथि ॥टेक॥ काचकुनाकंचंनक
रिजानैं । लूकौरे नरमपास । काचेसंघलपलप्रचानांही । कारिका
चेकीआस ॥१॥ बिषताकौं अमृतकरिजांयौं । सौसंगानअवेसा
थ ॥ संबलनकेफलनिप्रफलेया । चूकौं अबकीघात ॥२॥ हरिन
जिरे सवसवलआपिछाणें । येसुणिमाच्यावात । दादूरेअबधैंकारि
लीजै । अपावघटैदिनजात ॥३॥१८॥ मंनसंने मैरो कोलोनमानै
टसोहेसाकैरो रावैरे । अपावतजनमनवाकाहीलागौ । बकुतरमांतिवो

रहैरे ॥ टेक ॥ बेर बेर बरजत या मन कौं ॥ किंचत सी सुष मानैरे ॥ ऐसे
निकसि जाइ यात न थैरे ॥ जैसैं जीव मन मानैरे ॥१॥ कोटि क जतन क
रत या मन कौं ॥ निहचल निमष न रहैरे ॥ चंचल चपल चहूं दिसि
नरमैं ॥ कहा करै न न कोहैरे ॥२॥ सदा सो चूर है संग जो तरि ॥ मन थि
र कैसैं कीजैरे ॥ सहजैं सहज साध की संगति ॥ दादू हरि सजि लीजैरे
॥३॥११॥ इंद्रिन कौ मति धर घालैरे ॥ प्रीति लगाइ प्रेम सब सो छूरे ॥ बि
न पावक जो वनवालैरे ॥ टेक ॥ अंग लगाइ मार सब लेवे ॥ इन थें को
इ न बांचैरे ॥ यह संसार जोति मन लीया ॥ सिल [illegible] नदे इस सांचैरे ॥१॥
हेत लगाइ सबै धन लेवै ॥ बाकी कछू न राषैरे ॥ मांषण मांहिं सो घिस
बलेवे ॥ छाछि छाछि [illegible] नाषैरे ॥२॥ जे जन जांनि जुगति सूं त्यागै
तिन को निज पर [illegible] ॥ [illegible] सतगुरु ॥ दादू हरि तिन

कोटरसैं ॥ ७ ॥ जिनमतकी छोहै बावरे ॥ पूरि कहै पूरा मिरजे को सब
चिंतवहे देवकों मूरख ॥ [illegible] ॥ जन्न वास जिन राषि याप्प वक थै न्यारा
जु गनि जिनवक रिसी चिया ॥ सेप्पा गाम्ब्र धारा ॥ १ ॥ कुंजक दांधरि संच
रै तदां कोरषनारा ॥ देमहरत जिनि निराषिया ॥ सोषसमहं मारा ॥ २ ॥ ज
लछु लजी वृ जितरहैं ॥ सो सब कों पूरे ॥ संपट मिलो भेंटत है ॥ का देव
रफूरै ॥ ३ ॥ जिनि यह ज्ञारनगाईया ॥ निरबा है सोई ॥ दाहृ छिंनन बि
सारिये ॥ ताथैं जीवन निं होई ॥ ४ ॥ ५ ॥ सो ईश्वर मसं [illegible] जीयरा ॥ प्राण
पंम जिनदान्को रे ॥ अमर न्याप भूपाना ताहारा ॥ मा हिं चित्र जिनको
न्को रे ॥ ६ ॥ [illegible] जिनिं कोप चितांका ॥ चरनैं [illegible] बिना चलावै रे ॥ द
कसी तन [illegible] कतताफौले ॥ अनत [illegible] ॥ १ ॥ धरती धरनि

बरंनबकबांनी। रचिलेमपतसंमदारे॥ जालथालजीवमें......नहारा
पूरणसाससबसंसारे॥२४॥ प्रगटपवनपाणि......मां। बरघाटैबकंथ
रारे। अगारसारबिरषबकुबिधके। मनकासीचुनहारे॥३॥ पंच
ततजिंनकीयापसारा। सबकरिहूंपसारनारे॥ निहचलरांमजपीमे
रेतारा। दादूजायेजांगारे॥४॥१०॥ जबमेंरहतेकीरहजांणी। कानं
कायाकेनिकटिजआवे। पावननहेसुषप्रांणी॥ टेक॥ सोगसंतापनें
ननहीदेषो। रागदोषनहीआवे॥ जागतहैनासोलांचिमेरी॥ सुपिनेंमो
हैदिषावे॥१॥ नरमक्रमभ्रमदहनहीममता। बादबिबादननजांनें॥ मो
हनममेरातनिआई। रसलांसोईबधांनें॥२॥ निसबासुरमेंहनत
निमेंरे। चरनकवलमनमांनें॥ सोईनिधिनिरषिदेषिसचुपांके। दादू

औरंरनजांनै ॥ रा ॥ १ ॥ जबमैंसाचेकीसुधिपाई ॥ तबथैंअंगिऔरनदांआ
वै ॥ टेयतनहूसुषदाई ॥ टेक ॥ […]दिनथैंतनितापनव्यापै ॥ सुषदुषसं
गिनजांकें ॥ पांवनपीवप्रसंदलीन्हा ॥ आनंदनगुनगांकें ॥ १ ॥ सबमं
संगानहींपुनमेरे ॥ अरनप्रसनुकाहुंनांही ॥ एकअंनंतसोईसंगमेरे ॥ निर
षतहूंनिजमांहीं ॥ २ ॥ तनमनमांहिसिकोधिमैंलीन्हा ॥ निरषतहूंनिजस्वा
रा ॥ […]संगसबैसुषदाई ॥ दाहुनांगंदमारा ॥ रा ॥ १२ ॥ हरिबिननदिदच
लकहानदेषो ॥ तेतिनिलेकुफिरंसोधारे ॥ जेदीसैसोबिनसिजाइमा ॥ जे
सागुरपरसोधारे ॥ टेक ॥ धूरतीगगनपवनअंकपांणी ॥ चंदसूरथिरनांही
रे ॥ रैनिदिबसरहंतनसांदीसे ॥ एकरहैंकालिमांहीरे ॥ १ ॥ पारपैकंबरसे
षममसाइक ॥ सिवबिरंचसबबटेवांरे ॥ कलिअंगयामोकोईनरहसी ॥ रहि

सो कछ्वु षञ्जे वारे ॥२१॥ सदा लाभ मेरे गिर पे बत । मम दनार हम श्री राशे नदी
निं वां नक हु न हि दासे । रदसा कक लस [illegible] ॥ [illegible] ॥ बनासा त्र हपे करहे
गा । जिनि यक सब कुछ की नारे । दाहु ज्ञाता मसं जगा है हो । पेकर हत सो चीन्हें रे
॥४॥२३॥ मूल सो चिन्ह धैं ज्ञू बेला । सें सत तरं व हर दे के कैला ॥ [illegible] ॥ देवी दे
सत फिरैं ज्ञ सूले । घाह हवां दख बिषै कं पहले । सुष कों चाहें पढ़े गोविं पासी दे
षत हारा हा थ थैं आइया ॥२४॥ के पूजा रं न्हि धान लगावें । देवं लदे थें षबरि न पा
वैं । तो रें पाती जु गहि न जानी । इहि सरं मन सूलि रहे [illegible] मानी ॥२५॥ तो रष
बत न पूरे आसा । तन षफि ज्ञा इरहै तदासा । ये तन पक रिकरि है लजलावैं । न
मत फो बिझ न मम गावें ॥२६॥ सत गुर मिले न मम साजाइ । ये वधमं से बंटे हकु
मा ई तब लाह पम माति फिरै सो निज मूरति मांहि न पावें ॥२७॥ सोइ

साधमिरो[illegible]ता॥ गोब्यंदगुनगावे॥ रामनजेबिषियानेसे॥ आपानजनावे
टिका॥ मिथ्यासुषबोले[illegible]॥ प्रनियानाही॥ ओगुणछाडेगुणगहै
मनहरिपदमाही॥ २॥ निरबैसबआतमा॥ परआतमजानेसुषदाईस
मतागहै॥ आपानहीमानै॥ ३॥ आपापरअंतरनही॥ निरमलनिजसा
रा॥ सतवादीसाचाकहै॥ लेलीनबिचारा॥ ४॥ निरबैरनजिन्यारहै
काहूलिपतिनहोई॥ दाहूसबसंसारमे॥ असाजनकोई॥ ५॥ १५॥ राम
मिल्याप्योंजाणिये॥ जोकालनब्यापे॥ जुरामरनताकोनही॥ अवरमेटै
आपा॥ टिका॥ सुषदुषकबहूनकपजे॥ अरुसबजगसूझे॥ क्रमको
बांधेनही॥ सबआगमबूझे॥ १॥ जागिरहैसोजनरहै॥ अरुजुगि
जुगिजागै॥ अतरजामीसूरहै॥ कंठकाल[illegible]लागे॥ २॥ काममदहसद

जैरहै ॥ अहमुनिविचारै ॥ दादू सोसब कीनदै ॥ अकल [illegible] अकलनदोरे
॥ ३ ॥ १६ ॥ इनबातनिमेरोमनमांभे ॥ [illegible] दादूनंदीमुररअंतरि
एकएककरिपावकंजानै ॥ टीका ॥ पूरणब्रह्मघटघटबिषैव [illegible] हिंतमै
अमनजीवकाहूयेंजानै ॥ दादूदयालकहीनतासबवस्तु ॥ अरूपा
नंनिकोंकरैकिसानैं ॥ आपापसमसबतत्तचीन्हें ॥ हरिमजै
केवलजसगांनें ॥ दादूसोईसहजघरिआनें ॥ सकटसबैजीवके
भांनें ॥ ३ ॥ १७ ॥ आजप्रजातिमिलिहरिलाल ॥ छिनकीबिपापी
ड सबजागी ॥ मिटियोदैजीवकोकाल ॥ टीका ॥ देषतनैनसंतोषम
योहै ॥ इंद्रेनकागेपाल ॥ दादूजनमोंहिलिमिलिरसलीयो ॥ उम
होंदीनदयाल ॥ ३ ॥ १८ ॥ मैमनमेरापांवसं ॥ ओरनिसोंनांदहा ॥ सी

वबिंनपद ।। हैनजीवसौं ।। तेउपजैमांही ।। टेक ।। देषिविमुषजीव
सौं ।। तकौंधूपंनछांहीं ।। [illegible] ।। [illegible]रमनबंधियां ।। तापैंअनंतनजा
है ।। १ ।। तेजपुंजफलपा[illegible]या ।। तहांरसमांही ।। अमबेलिअमृतफ
रै ।। पोमपावअघांही ।। २ ।। प्राणपतीजहांपाईया ।। तहांउलटिअंघां
ही ।। दासइयावपरचानया ।। हियरैहितलावांहीं ।। ३ ।। १ ।। अरमहैला
दीरबहरा ।। इच्छांईदिमांनवे ।। मकाबीचिमुसाफराला ।। महीनामुल
तानवे ।। टेक ।। नबांनालिपिकबैरेपीरोंहंदाथांनवे ।। जनतकोंनदि
कसोला ।। इच्छांजिसदितिमुकांमवे ।। १ ।। इच्छांअल्लाबनमजमा ।। इच्छांई
सुबहानवे ।। नषत्रबांनीकंगुरेला ।। इच्छांईसुलतानवे ।। २ ।। सवइ कु ७४
थांअंदरिस्याहहावे ।। इच्छांईईमांनवे ।। दासदयालअंबाहदेला ।। इच्छांई

श्रीसांनदे ॥३०॥ श्रीसगरिमनरोमदा ॥ हरिहरध्यान श्रीगतिश्री·
पदे ॥ कांयाकासीवृजतां ॥ हरिहरथांम [illegible] तदे ॥टेक॥ महादेव
मुनिदेवदे ॥ सिधेंदानिषमामदे ॥ [illegible] सगाकुलवेरां ॥ हरिहरपेंक
नरांमदे ॥१॥ श्रीमीमरोवरश्रीतरां ॥ दूथ [illegible] श्रीमरदे ॥ श्रीमन्थांन
श्रीवगतिरहे ॥ हरिहरथेंसिर्जनहारदे ॥२॥ मवकुछहदेशेश्रीवदे
हरथेंप्रमांनदे ॥ दासश्रीपामृकिकारि ॥ हरिहरपांईश्रीआनंददे ॥३॥
[illegible]
[illegible] ॥ तुम्ह बिचसूं न जिन परे माधौ ॥ जाचे तन धन लेकै ना
वे [illegible] करमीकल ॥ जावे करवत दे कै ॥टेक॥ जावे [illegible] तिदेकै
[illegible] ॥ जावे [illegible] सुष सरीर ॥ जावे घर वन तनरा [illegible] वंकंकारि

जाँवे मास ॥ धीरमाधव ॥ १ ॥ जाँवे बंधि मुकति करि माधव ॥ जाँवे त्रि
भुवन सार ॥ जाँवे सकैं तकि धरि माधव ॥ जाँवे सकल जनि धारमा
धव ॥ २ ॥ जाँवे धरं नि गगन धारे माधव ॥ जाँवे मात नसरस्वाहन्यक
रि सकल संग माधव ॥ जंजि मदेवेहु रि माधव ॥ ३ ॥ १ ॥ अबहं मरा मस
नेही पाया ॥ आग मन्नम मदद मों चित लगावा ॥ टेक ॥ तन मन न आस
ता कौ बान्हो ॥ तब हं मरहरि अपनो करि लीन्हो ॥ १ ॥ बा णी बिमल
पंच परांणा ॥ पहली सारा सि लेन गावांना ॥ २ ॥ जीवन जनम सुफ
ल करि लीनां ॥ पहली चेते तिन जल कीन्हं ॥ ३ ॥ जो सरि आपा
गोरल गावा ॥ दादू जी वत लेप रूं दावा ॥ ४ ॥ १ ॥ ... ॥
... ॥ ... सुरसंग मनि नां रे ॥ सब कंकवा

या मांहिं छिपावै ॥ काया मांहें सिरजनहार ॥ काया मांहें ॐ कार
काया मांहें है आकास ॥ काया मांहें [illegible] ॥ काया मांहें पवन
परकास ॥ काया मांहें नीर निवास ॥ काया मांहें ससहर सूर ॥ काया
मांहें बाजैं तूर ॥ काया मांहें तान्हू रेट ॥ काया मांहें [illegible] ॥
काया मांहें च्यारि वेद ॥ काया मांहें पाया भेद ॥ काया मांहें च्यारे या
णी ॥ काया मांहें च्यारे बाणी ॥ काया मांहें उपजैं [illegible] ॥ काया मांहें म
रि मरि जाइ ॥ काया मांहें जामैं मरै ॥ काया मांहें चौरासी फिरै ॥ काया
मांहें [illegible] ताग ॥ काया मांहें बारंबार ॥ काया मांहें रानि दिन भेद
[illegible] कलार ॥ दास पाया प्रभ गुर कीया पेकं कार ॥ १ ॥ काया मांहें
[illegible] ॥ काया मांहें पाया [illegible] ॥ काया मांहें [illegible] हजारा

कायामांहै पायां बणाहारा॥ कायामांहैं सब बन राइ॥ कायामांहैं रद
घर म्हाइ॥ कायामांहैं कुंडर लिंबास॥ कायामांहैं है कवलास॥ कायामांहै
तरवर कायां॥ कायामांहैं पषि मोरो॥ कायामांहैं आदि अंनंत॥ कायामां
है है संगवंत॥ कायामांहैं तिरवेनि नदि नाइ॥ कायामांहैं रत्नास माइ॥ का
यामांहैं चंद दरसनं वंन॥ कायामांहैं आवागवन॥ कायामांहैं सब बरतोड
कायामांहै है नव ग्रह॥ कायामांहैं लोक सब बसाइ दीये दिसा सार॥ मनमी
बाचा करमना गुरु बलि मैं ध्यान जाइ॥ ३१॥ कायामांहैं सागर सात॥ कायां
है अष्टधातिनाथ॥ कायामांहैं नदियां नीर॥ कायामांहैं गहर गंभीर
कायामांहैं अग्ररपाणी॥ कायामांहैं ब्रह्मे विष्णु ग्यानी॥ कायामांहैं नीरंनि
वांरा॥ कायामांहैं दसमु जांरा॥ कायामांहैं गोमतां॥ कायामांहैं ज
मुनां संग॥ कायामांहैं गुरु ग्यानी॥ कायामांहैं ... ग्यानी॥ कायामांहैं का

मीथांन ॥ कायामांहैंकरैसनांन ॥ कायामांहैंपूजापाती ॥ कायामांहैंतीर्थ
जाती ॥ कायामांहैंमुनियरमेला ॥ कायामांहैंआपाआकेला ॥ कायामां
हैंजपियेजाप ॥ कायामांहैंआपैंआप ॥ कायालतनिशांजैहै मांहैकोति
गहोइ ॥ दाइसतगुरसमिले ॥ चलिपढै जिसकोइ ॥ ॥ कायामांहैंविष
मीबाट ॥ कायामांहैंओघटघाट ॥ कायामांहैंपटरांगांत ॥ कायामांहैंगति
मांत ॥ कायामांहैमकरपकाजे ॥ कायामांहैंआपबिराजे ॥ कायामांहैंम
हलआवास ॥ कायामांहैनिहचलबास ॥ कायामांहैंराजदुवार ॥ कायां
मांहैंबोलनहार ॥ कायामांहैंनेरनडार ॥ कायामांहैंबसतअपार ॥ का
यामांहैनवनिधहोइ ॥ कायामांहैंअठसिधसोइ ॥ कायामांहैंहीरामा
ल ॥ कायामांहैंनिपजैलाल ॥ कायामांहैमाणिकलरे ॥ कायामांहैलेले
धरे ॥ कायामांहैंरतनअमोल ॥ कायामांहैमोलनतोल ॥ कायामांहै

जे अछार॥ काया मांहै हैं रहै सम साह॥ काया मांहैं षुले कपाट॥ काया मांहै हैं नि
र्जन हाट॥ काया मांहै हैं दरबार॥ काया मांहै है षंणाहार॥ काया मांहै हैं सं
मरं गिरावै॥ काया मांहै हैं प्रेम रस मातै॥ काया मांहै हैं अबिचल अन पै
काया मांहै हैं निहचल रहै॥ काया मांहै हैं जीवैं जाव॥ काया मांहै हैं पाया
पीव॥ काया मांहै हैं सदा अनंद॥ काया मांहै है प्रेम अनंद॥ काया मांहै हैं कुस
लै है॥ सो ढंढ है सुख आछार॥ दादू गुरमुषि पाई ये साधक है सम फाड॥ ७
काया मांहै है ध्यान मर॥ काया मांहै हैं रहै नर पूर॥ काया मांहै है पाया तेज
काया मांहै है सुर रस सेज॥ काया मांहै हैं पुंज प्रकास॥ काया मांहै है सदा उजा
स॥ काया मांहै हैं झिलिमिलि सार॥ काया मांहै हैं सब पैं न्यारा॥ काया मां
हैं जोति अनंत॥ काया मांहै हैं सदा बसंत॥ काया मांहै हैं षेले फाग॥ का

यामांहैं मनबंनबाग ॥ कायामांहैं षेलैराम ॥ कायामांहैं त्रिबेणिबि
म ॥ कायामांहैं बाजै बाजे ॥ कायामांहैं नाद धुंनि मांजे ॥ कायामांहैं
जमुहाग ॥ कायामांहैं मोटे नागा ॥ कायामांहैं मनका चोर ॥ कायामां
जैजैकार कायां अगम अगम मांहैं ॥ मांहैं कूं जाइ ॥ दादू मन मट पीव
ल्यागुर मुषपर हैसमाइ ॥ ॥ इति कायाबेली ग्रंथ संपूर्ण ॥ यामा

[illegible] ॥ तिनि कवनां ऊंचनहीं पैसै जाइ ॥ जम के
ग बन मैं सोई फल षाइ ॥ देखा ॥ मन माया मोह मद मांते ॥ क्रम मकफिं न
ता मांहिं पंरे ॥ विषै बिकार मांनि मन मांहीं मकल मोर सूं सांद षरे
कां मन को थिये काल नकल्यांनां ॥ मै मेरी अंति अहंकार ॥ त्रिमनां मार
तिन मांनै कबहू ॥ मदा क मां गांधि चबिकार ॥ १२ अंमे कनो धरै है

फरखूकेनहीफेका।ओअरदबिमारदरवेमकूहोवै।मोकाफूरखै
हिजाव।८।मोकाफरकीफरकाजाद।ब्याजमखवहक्नहकेजो
कदलोलखरोमनजोमने [illegible] गरभमोने।१०।केजाने
जलगमहयदाकाफिरतिमकं [illegible] हियेनहि।११।फमन्याव
केडौइ।बकफिर [illegible] फूवेकीबेदह।१२।जूनकफ [illegible] नबाहा
केवलामहरिवे [illegible]।१३।नेकाफरसोपजीर [illegible]।१४।
सु।मोकाफूर [illegible] पेले।केसेमोकाफ।नोड [illegible]
लोइरनहीफुरे।मेकपुरिमकोनिंद्याकरै
नयावे।घरिवैवकूजाहिलमतोवे।१६।मोकाफ

गरी सोभयपा बोछे १८ बंगानी बोझा मंद [illegible]
[illegible] जावे १९ पीचायहस्थामहिवे [illegible]
मावे २० [illegible] विगाहि [illegible] काद [illegible] सो माहि [illegible]
२१ सोक [illegible] कोट [illegible] सरयारि सिरव [illegible]
[illegible] नावे [illegible] स्वस्थावफिर [illegible] मारे [illegible]
फर [illegible] हस्थामहहिवे [illegible] सो [illegible]
नाव [illegible] करहोइ २४

यी

तुरसयांनसूं [illegible] वराइ । तौ याही परवांणि ॥ २६ ॥ दादू जिनि मोहे नि
वा ॥ सो तुम पूछौ जाइ ॥ अनेक करे के थें कूं कीये ॥ साहिब कहि समझ
ए ॥ २७ ॥ घट परचै सब घट लषै ॥ प्रांण परचै प्रांण । ब्रह्म परचै पाईये दादू है
है रांन ॥ २८ ॥ चम दिष्टी देषै बहुत करि ॥ आतम दिष्टी एक । ब्रह्म दिष्टि परि
परचै नयां । तब दादू देषै एक ॥ २९ ॥ ये ई सै नां देह के ये ई आतम होइ
ये ई सै नां ब्रह्म के । दादू पलटे दोइ ॥ ३० ॥ इति हैरांन को अंग सं
पूर्णं अंग ॥ साषी ॥ ८३४ ॥ अथ लै को अंग ॥ दादू नमो नमो नि
रंजनं । नमसकार गुरदेवतः । बंदनं सर्व साधवा । प्रणामं पारंगतः ॥ १ ॥ दा
दू लै लागी तब जांणिये । जे कबहूं छूटि न जाइ ॥ जीवत यौं लागी रही
[illegible] कि मैं मा [illegible] ॥ २ ॥ दादू जे नर प्रांण [illegible] जाता । सो हरि तकै जाइ ॥ जे

...रता। सो मद जै रहै संभाइ ॥३॥ सबतजि गुरां श्रीकारके। नि
...लेमं नलियो लाइ। आतमे चेतनिय्रमरस। दाहूर है संभाइ ॥४॥ नन
...नपवनां पं चमाहिं ॥ निर्जैं नलियो लाइ ॥ जेहं आतमन हंप्र आतमा। दा
...हू मद जिसं भाइ ॥५॥ अरथ श्रें नपम आपहैं ॥ ओरम्के नरथ लाइ। स
...हू श्रेसौ जो शिंकरि ॥ नासं लियो नाइ ॥६॥ ज्ञान सगतिं मन मलगा हि
हजिप्रमलीया लाइ ॥ दाहू मब आरं नतजि ॥ जिं निकों फ्रं सं भिजाइ ।
७॥ दाहू जोगा संभाधिसु षमहंजसो ॥ सहजै म... जै आवै ॥ मुकता
रामहलका ॥ इहै जगतिक जाव ॥८॥ सहज सुखि मन ...षि ॥ ५ न
...नं के मांहि। लै संभाधिरस पीजि ये ॥ ...कौं काल ने मेनां हि ॥९॥ दाह
...नपाइ नकां पं छौ ॥ ...जे पांगा ॥ ...कटघ...

निंया सादव रि ॥ सांई सेती संग करि । सहज सुरति लै पूरब २
दादू येक सुरति सं सब रहै ॥ पंचूं उनमन लै लागा ॥ यक अंक्र न है
स यूक्र ॥ यूं कं प्रम जोग बैराग २६ दादू सहजै सुरति समाइ ले ।
र ब्रह्म के अंग ॥ अरस प्रम मिलि पेक है ॥ मन मुख रहि बां सं
७॥ सुरति सदा सनमुख रहै ॥ जहां तहां लै लीन । सहज रूप सु
मरण को रै निहकर्मी दादू दीन २८॥ सुरति सदा सांबति रहै
तिन के मोटे भाग । दादू पीवै रांमरस । रहै निरंजन लाग २९॥ दादू
सबा सुरति सह । पैहै परमातम सं लाप । जहां आप बिनां सो देव है ॥ तहां
सुरति बिनां को जाइ ३०॥ दादू जबै बुत मां नही टै । कहां घ
रणि कहां गम । सुरति अंगा थैं के दै । मो कत नीवै रांम ३१

सहज जोग सुष मैं रहै ॥ दादू निरगुंण जांणि ॥ गंगा उलटी फे
रि करि ॥ जमुंनां मांहैं आंणि ॥२२॥ पर आतम सौं आतमां । ज्यूं [illegible]
[illegible] संमांन । तन मन पांणी लूंण ज्यूं ॥ पावै पद निरबांण
॥२३॥ मन ही सूं मन सेविये ॥ ज्यूं जल जलहि समांइ ॥ आतम चेत
नि प्रेम रस ॥ दादू रहै ल्यौ लाइ ॥२४॥ जैसे सुरति सरीर कूं ते
[illegible] मैं आइ ॥ दादू प्रेम सैं मिलि रहै ॥ ज्यूं जल जलहि समा
इ ॥२५॥ यो मन तजै सरीर कूं ॥ ज्यूं जागत सोइ जाइ ॥ दादू बि
सरै देषतां । सहजि सदा ल्यौ लाइ ॥२६॥ जिहिं आसंणि पह
ली प्रांण था । तिहिं आसंणि ल्यौ लाइ ॥ जे कुछ था सोई भया
कछू न ब्याप्या आइ ॥२७॥ तन मन अपणां हाथि करि । तांहि

...रने मेल्हि मा ॥ येकलडो लेजायरे ॥ सपन सा ... का ... आइ सी
...जाणो कि मथाई रे ॥१॥ सतगुरु तमसा धो मांड्या ... ॥ कांई
...कै ... ली जे मांरा रे ॥ मारया बिधू सब मे चा निबो ॥ काई ... या
...रे ॥२॥ जिंमनी रनिवांसा मांहरे ॥ तिन मे साजी बांधै पाला र ॥ सम घामा
...मे रियि ॥ तोको या मन लागो कालोर ॥३॥ दादू मन थिर ... कियो ॥ ... मिंद सै
...ना थिर आयुरे ॥ प्राणी नै पूरो मिले ॥ तो को पांन में लीजा रे ॥४॥१७॥ करि
...मरिये परमेस्वर थै मन रिपे ॥ वे पाले वै जरि जरि दीजै ॥ तांथै अनुसर न के रि
...करिये ॥ टेक ॥ साचा नाली जी मांचा दीजी मांचा मे ताको जांरे ॥ मांचा
...गा मांधी ॥ बिषन पीजीरे ॥१॥ निर्मल गंगा हिपै ॥ निरमल नर हिपै ॥ नि
...हिपै रे ॥ निरमल लोजा निर्मल दीजी ॥ अनन बहिपैरे ॥२॥ सा

नैधरुप॥ [illegible] पवन अपार॥ चंद सूरदीपक रच्या॥ रैनि [illegible]

मं [illegible] धरै दैकाया॥ बिचि [illegible] अवतार॥ सु [illegible]

[illegible]॥ करि लेजी व बिचार॥ अ॥ आप निर्भै मधैर हो॥ [illegible]

दुमां [illegible] हीरै॥ सहु निरगुण गुण कहै॥ जाहूं लाहू बलि [illegible]

रि॥ थ॥ जीय राराम भजन करि लीजे॥ साहिब लेषा मांगे [illegible]

व कैसे दीजे॥ टेक॥ आगे जाइ पछितावो पावोगो॥ पलपल पकु

नि छीजे॥ तोथैं जो पूरसमझाइ कहू रे॥ सुकित अब थैं कीजे॥ १॥

रा भजं पतं जमकाल नलागै॥ मगिरहै जं न जीजे॥ स्वहू रंगभज नय

रि लीजे॥ हरि कीरा सिर मीजे॥ २॥ १६॥ काल काया गढ़ जे लि [illegible]

जे दमंड वारो रे॥ देषतदाते लूटियें॥ हैमी हाहाकारो रे॥

...हे ... मारे ॥ बलि... सरंगव... जानदाहरांय अव नपेव
४ ॥ ३ ॥ ज्ञागिरभो मनत्वं मसं ॥ अब अंन तैंन हीं जायेरे ॥ अब वत्ना
दृष्टिरहौ रसों ॥ संकेंन चीरमूर्मायेरे ॥ टेक ॥ जंमकुनि गंवेरवनि
रवै ॥ पूरि मलरहै हुजायेरे ॥ तूं मन मेरा रांम सं ॥ अन की बेर संघा
येरे ॥ १ ॥ मधुरंनबो मैबामकों ॥ कुंवलहिंरसों बंधायेरे ॥ तूं मन मेरा
रांमसं बधिरसों चितवत्नायेरे ॥ २ ॥ जंनविनमीनमजीवई ॥ बिछुरत
ही मरिजायेरे ॥ तूं मन मेरा रांमसं ॥ श्रीसों प्रीति बनायेरे ॥ नुं ॥ जपचा
त्रिमजंनकौं रटै ॥ पीवपी वकरत बिहायेरे ॥ तूं मन मेरा रांमसं ॥ चा
तकहू है वलगायेरे ॥ ४ ॥ २ ॥ मनमोहन ॥ हौं कहिं मबिरहकी ॥ ज
सुदरदरसदिखांईये ॥ टेक ॥ सुनकैं दीनदयाल ॥ संबमुघदेकपट
ईये ॥ कराग्रमेकि पालमकवसिरोवाति आईये ॥ १ ॥ ममजोदेसाका

प्राण अधार ॥ अब नां[...]रनाई ये ॥ ४ ॥ अब हरि [...]हू
[...]बताई ये ॥ कृष्ण ॥ अब ऋतु फिरि है हो बदेसि ॥ हरि नहीं आये हो ॥ जनम सिरा
नो जाइ ॥ पीव न हीं पाये हो ॥ देखी बिपति हमारी जोइ ॥ हरि मुख कौं कहै
हो ॥ ऊधव बिन नाथ अनाथ ॥ बिरहे दाधी फिरूं रहै हो ॥ ४ ॥ पीव कौ बिर
ह बियोग ॥ तन की सुधि न रही हो ॥ तलपि तलपि जीव जाइ ॥ मृतक
[...]रही हो ॥ ४ ॥ कुपित भई है मनारि ॥ कब घरि आवै हो ॥ ऊधव बिन प्रा
[...] अधार ॥ जौ वेहु यपावै हो ॥ अ ॥ प्रगट करी मरयाद ॥ बिलंब न
की [...]ये हो ॥ दरस दीजै नाथ ॥ दरसन नहीं जिहो ॥ ऊधव ॥ मोहन माधौ
करि मिले सफल न सि[...] ॥ बं नितराइ ॥ तन मन व्याकुल भैरो तहै ॥ हरस
दिया[...] मोइ ॥ टेक ॥ नैनन दे पंथ जोवता ॥ रोवत रैनि बिहाइ ॥ बौल
[...]लोक बनि[...] मोरै रटो बनाइ ॥ ४ ॥ छिन छिन अंगि अन

आ सिर

लट दै ॥ हरि जो कब मिलि हैं आइ ॥ अंत्र जो मो जो लिो कार ॥ मरा तन
वी नयत तिबू कृ... ॥ ५ ॥ तुम दाता सुष दै नहो ॥ हां हो तुलि दान दयाल
चकै मैं नम सा चकने ॥ हां हो करु ... घानो ॥ ३ ॥ चशी कवल कमदे षि
सन मुष गिरजं नेरा रसाई सठि सदा रहै ॥ हां हो तब ल्याग हंमार ॥ ४ ॥ जी
वनि मेरा जं बमिलै ॥ हां हे तब ही सुष होइ ॥ तन मन मैं तूं ही बसे ॥ हां हो
कान दे षो सोइ ॥ ५ ॥ तन मन को तूं ही लषे ॥ हां हो सुनि चतुर सुजान
तुम है दे षे बिन कर हूं ॥ हां हो मोहि लागे बान ॥ ६ ॥ बिन दे षे कछ पाई ए
हां हो इब बिल बन ल्याइ ॥ दाहु दरसन कार नै ॥ हां हो सुष दां जे आइ
॥ ७ ॥ ८ ॥ सुरिजन मेरा वे कोई हैं पारिख हां ते ॥ जैं सुरिजन म्हारि आवे ... दि
काक हां णाक हां ते ॥ टेक ॥ तो बाके मे को चैन न आवे ॥ ... की
कहां ते ॥ तो बाके मे को निन्दन आवे ॥ ... या नी रजरां ते ॥ स

रागमल्ह

रि केसुरजनडेवे ॥ सोहं सीरमहां ॥ पेजनवाहूजे सुरिजनभावे ॥ द

रिगाहि सेपूंकरांत्र ॥ ४ ॥ ६ ॥ पे सूहि परेमव ज्ञोगं बिलां [illegible] ॥ तेम [illegible]

छत्रसिंघासण ॥ टेक ॥ जनते [illegible] न जावे ॥ [illegible]

कीजे ॥ जाहि भोइं हिं मे जमुधासण ॥ मेको देषं ए कीजे ॥ [illegible]

कि अगकथा कीजे ॥ सकेलमवतन हीं जावे ॥ जगिपये सन ममपुछा

जे जोय घरि कंतन आवे ॥ ४ ॥ लोकं [illegible] न तजजे कथा कीजे ॥ मे बिर बीजे

न तेरा ॥ दाहूवर संमदे षणा दीजे पेंसुलिंसा हि बमेरा ॥ [illegible] रागकाफी ॥

अवला [illegible] सिकाई मोन ॥ जिलदे जग टीनक नियां ॥ चिकारे रहि मोन

[illegible] ॥ नीरभारी पीरपीरी ॥ फरे सतां पुरमांन ॥ [illegible]

सी [illegible] नी दीवान ॥ १ ॥ [illegible] न मपलक पानां ॥ मोमिनां [illegible]

[illegible] हाजी कंजा कासी ॥ पांन [illegible] सुल्यतान ॥ २ ॥ [illegible]

॥ दादूद

दादू नूरी दिल अरवाह का ॥ तहां देष्या करतार ॥ तहां सेवग सेवा क
रे ॥ अनंत कंवार विसार २१५ दादू नूरी दिल अरवाह का ॥ तहां निरंजन
वासं ॥ तहां जन तेरा पोकै पा ॥ तेज ... सं ॥ दादू तेज कवल दिल नूर
का ॥ तहां रांम रहिमांन ॥ तहां ... सेवा बंदगी ॥ जे दूसरा राम न २१६ तहां
हजरी ... ॥ नूर ... ॥ तहां दादू सिजदा करे ॥ जहां न देषै कोइ
२१७ दादू ... दिल ॥ इक ... कोइ कन ... वाकी दिल सू केन
ही ॥ ... २१८ दादू ... री दिल ... तहीं ॥ गुसल है मारा
सा ॥ ... जहं लहके मैराग ॥ तहां निमाज गु... २१९ दादू काया
साति कलि ... जमाती ॥ मन ... मान ॥ आप अलेष लाही आ
तहां सिजदा करे मन मांहि २२० दादू सब तन तसबी कहै करीम ॥ ऐस

रछेजापं॥ रोजा ऐकछ हरिकरिहृजा॥ कछमं॥ आपेआपं २२१ अवेपद

रअ स्रह केआगै॥ इकटंगंरहिबाधांनं॥ आपेआपं अंरसकेकपरि

जहांरहैरहिमांनं २२२ अवेपु [illegible] ती॥ जांवेएमरगानिबाहि॥ सा

हिबदरिसेवैखडा॥ दोहू छोकिनजाइ २२३ अवेपहरअरसमैं॥ जजो

ईआहे॥ दोइपसे [illegible] तिनके॥ अलागा [illegible] २२४ अवेपव [illegible] रसमैं॥

वेगापिरीपंसं [illegible]॥ दोइपसेति [illegible] के॥ जेदादारंत [illegible] २२५॥ अवेपद

रअरसमै॥ जि [illegible] हरहं [illegible]॥ दोइपसेतिंन [illegible] कारेरा [illegible] के

नि २२६ अवे [illegible] तमे॥ जुन्हाआहीनं॥ दोइपमैते [illegible] को॥ अ

सांघबरिहीन्ह २२७ अवेपहर [illegible] सके॥ वंजीजेगा [illegible]॥ दोहूपिसे

तिंनके॥ कितेंईआहीनं २२८ पेम [illegible] रको॥ आसिकज

[रि]दा या । दादू दरदवंदा दरदमे . लिवालो कीया ॥२२८॥ इसक महबूब का आसिक
दरगह ऐसें दीया । दरद मंद हद लि प्रेम मस म । या जान हिरी पीया ॥ दादू दिल दीदा
[illegible] आं पथां । आपना का रिली
रदे मूति ज्ञाता का कीया । अ[illegible] रसपीवं नि आपे पह रम्म
या ॥२२॰॥ दादू प्याला नूर दा [illegible] आसिक [illegible] रस पीवै नि [illegible]
लाह दा ॥ [illegible] ह दिवी [illegible] ॥२३०॥ आसिक [illegible] साधमन ॥ आल
मस्त रौ [illegible] ॥ सोहि बद रहा सूर [illegible] बमि लि [illegible] आप रातमाते
प्रेमरस [illegible] दके पु दादू ॥ म[illegible]मा लि[illegible] रि नीर ॥ दादू रे
हे [illegible] ॥२३२॥ दादू अगति निजै न राम [illegible] ॥ बिचल आविनो
सो ॥ मेदा म[illegible] म आतमा ॥ स [illegible] प्रकासी ॥२३३॥ दादू जे सारा मन पा
रहै ॥ तैसी [illegible] ॥ इन दो न की [illegible] तिन दी ॥ सकल पुकारे

२ रै
र
साध २३४ दादू जैसा अविगति राम है। तैसी भगति हि लेष। इन देषौं नै
की मिति नहीं। सहं सम्मुष कै देषै सब २३५ दादू जैसा निर्गुण राम है। तैसी
भगति निरंजन जांणि। इन देषौं न [illegible] की मिति नहीं॥ संतन कै हैं प्राण [illegible]
२३६ दादू जैसा पूरा राम है॥ तैसी पूरी [illegible] ति समान। इन देषौं न की
मिति नहीं॥ दादू [illegible] हीं अमान २३७ दादू जैसा बडा राम है। तैसा बडा [illegible] से
वा आह॥ अब बंधि लै सेवा को करै सब। दादू सेवग सांई २३८ [illegible] जैसा रां
म है॥ तैसी सेवा जांणि [illegible] पावै [illegible] कै रे गा दादू सो पूरा [illegible] २३९ दादू
सांई सरीषा सु [illegible] सांई सरीषा गावै। सांई सरीषी [illegible] जैसे ॥ न
बसै वगा सुष पावै २४० दादू सेवग सेवा करि फिरै। है [illegible] मह है
[illegible] है तैसी वंदगी॥ [illegible] न जांणै कोइ २४१ दादू जैसा [illegible] मांनै
॥ हूं है

... क ॥ आसमुराणि को ॥ अ
... कामहा मव
... हूजे
सुत अपराधी होइ ॥ कबहूं न छाडि जी यथे ॥ जिंन ड षपावे मोहु ॥ १ ॥ ...
... न द घाल है ॥ मेहा गास मा अचेत ॥ [illegible] गुणाह हरि नां गिरो ॥ अ ...
नासी है है ॥ [illegible] अपराधी सुत [illegible] ग ॥ [illegible] होदी न रपाव ॥ हम थे [illegible]
गाहे त हें ॥ [illegible] पूरण प्रतिपालन ॥ ३ ॥ जब मो हें न पांडी चेले ॥ तब दे दी
कि हिं कामा ॥ [illegible] न दाहू का कहै ॥ अब जिन छा मे राम ॥ ४ ॥ १२
[illegible] नाहरि अधार ॥ करनां ब [illegible] नामी ॥ [illegible] आई ॥
[illegible] नामी ॥ टेक ॥ अति अधार संतन सधार ॥ सुंदर सुषदाई का
[illegible] हरि आइ ॥ १ ॥ पूरण प्रतिपालक हिदो ॥ स
म क्रोध [illegible] रसत ॥ [illegible] हरि आइ ॥ [illegible] काहे न [illegible] ॥ २ ॥ दीन दयाल [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मोह लागे [illegible] ॥ [illegible] कहिये ॥ [illegible]
[illegible] हरि पाल ॥ अब [illegible] कहिये ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]षमहिये ॥ ३ ॥ पांवन पीव चैरैन मरन ॥ जुगि जुगि जैंता शेष्य कोयजा
दाइ कै हरिजी हमारे ॥ ध ॥ श्रु ॥ म्राज नियां ने हम तो [illegible] जे हम [illegible] तो
मनोरै मंहाञ्चा [illegible] राधी ॥ तौ नूं आरारै ॥ टेक ॥ प्रेम बिना [illegible] कोलागै
मौगा मधकरन होइरै ॥ सकल सिरोवृम मध बछै नो कौ ॥ कोड [illegible] लागै
सोई ॥ जब लग प्रीति प्रेम रस नांही ॥ त्रिया बिना जल [illegible] मा ॥ सब थैं
सुंदरि एक [illegible] रस ॥ होइ हत्या इहलें जैसा ॥ ४ ॥ सुंदरि सोई घर पिय [illegible]
ने हम नवांनित नहींवै ॥ दाइ मेरा नव मन मानें ॥ सेजं सदा सुषमोवै ॥ ४ ॥ २४
काइ मां की रति करौला ॥ नूं मोटो दाता [illegible] सब तैं सिरजो ड़ा साहिब जी
[illegible] मोटो करतार ॥ टेक ॥ चंवद हङ्क नव न मांनें घडे ॥ घड तें न लागी बा
[illegible] उपपेनं षणी ॥ धनि धनि सिरजनहार ॥ १ ॥ धरती अंबर

बिनिरहि[illegible]जाव १४५ [illegible]गुनतरागराबकरै। आतमसुगतिपेकों। आ
तम्आगेदेकारस। दाहूकों[illegible]मेक १४६ दाहू गाश्ुकेपु कांमंतासब
कोजानेंजाप। के आधअरवाहका। [illegible]पे आप १४७ दाहूज
बलाकेप्यनदेहका। तनकेंगासबेदपेपे। [illegible]से असथलआतमा
॥ आगेरबदस्सु १४८ जबलगीही सुरतिशरीरका। बिसरे सब संसार
आंतजाणेआपकं। तबरेकरह्यानिरधार १४९ तनसंसुमती
कीत्रिये। तबबलानतननीका। आतमसुनरीकूपडे। तबलागे।फीका
॥ आगेआपेआपहैं॥ तहांकयाजीवका १५० चेमरि श्रीदषे बजनक
रि॥ आतिकिश्रीपेक। बस्यकिछिपचें नयां। तबदाहूबैगादेष १५१
येईतेंनांदेहके॥ येईआतमहोइ। येईतेंनांबहाको। दाहूपलटेसोइ

१५२ घटघटचैसमबघटलेय। पालि[illegible]व॥ जग॥ [illegible] दैयौदादू

हैहेतैन १५३ दादू जंतनपांर्णीजंग॥ सैं[illegible]ब्रसंसार॥ सहूपांगी[illegible]

जूं॥ कोइ बिरला[illegible]णहा[illegible] १५४ [illegible]वषनेंचहं[illegible]तरिकै[illegible]॥ समघटि

हरिहरिहोइ॥ दादू[illegible]गी[illegible]जंगू॥ नांहं कदीं[illegible]सोइ १५५ [illegible]कि सुरति

सरीरकं॥ ते जगुजंमैं श्रा[illegible]॥ दादू[illegible] मिलिर है॥ [illegible]जंलं[illegible]

साह १५६ सुरति रूपसरीरका॥ पीवकेपरसैंहोइ॥ दादू तन मन[illegible]यैक

रस॥ सुमरंणकं द्वियैसोइ १५७ रामकहत तरांमहिंरह्या॥ श्रांपैबिस

रिजनहोइ॥ मनपवनांपंचं बिलै॥ दादूसुमरंणसोइ १५८ जंहां

आतमरांमसंभालियै॥ तहां दूजा[illegible] और॥ दादा श्रागै श्रांमसै[illegible]दा नां

हंमूबिंबछोर १५९ तेनमन बिलैयूंकीजिरे॥ जंपांणीमैंलंण॥ जी

वबद्यो[illegible]गया । तब दादू जाके हिये कवरा १६० तन मन बिलै पं को जिम्हा
जं घं तन लागे धाम । आतम कवल तहां बंदगी । जाहां दादू परगट राम ॥ १६१
को मन कंवल त[illegible]ये सिकरि ॥ जहां [illegible] बैठे केस ॥ मन थिर सुमरण की
जिये ॥ तब दादू दरसन होइ १६२ न्हाय सकल सुमरणा करै । ऐसा कहिये
जीव ॥ [illegible] आतमा । तब दादू परगटै आय १६३ अंतरि गति हरि हरि
रि करै । तब मुष कीं हाजति नाहिं । सहजैं धुनि लागी रहै । दादू मन ही मं
हिं १६४ सहजैं सुमरण होत है । रोम रोम रमि राम । चित चहूं टां चित सं
ईलीजै हरि नांऊं १६५ दादू सुमरण सहज का । दीन्हा आप अनंत ॥
अरस परस उस एक सं । खेलैं सदा बसंत १६६ दादू सबद अनाहद हं
हम सुरतां । नं स्वसकुद मरणा । सब घटि हरि हरि होत है । सहजैं ही म

५२ घ... १२ कूण दिखलावइ कसांईं। मैं कूं पैहल तानि। दादू कै मिंघु
हि... । जुगमी हैं रात १८ दादू मालां मसबै अंत्राकार रबी। कोस... धूसुम
राम। करसी गैरतें कस्प कीयां। अंत्रे सा तेरां मांम १६। समबघट मुष
रसनां करै। रटै रांम कूं नां म। दादू पाते रांम रस। अगम अगोचर
ठो ते १२० दादू मन चित अस्थिर कीज्यै। तौ न... होइ
॥ श्रवन नैन मुष नासिका पंचूं पूरे सोइ १२१ रांम जपै रुचि साध कूं
साध जपै रुचि रांम॥ दादू दोनूं ऐक टग। यहु आरंभ यहु कांम १२२
आतम आसंन रांम का। तहां बसै भगवांन॥ दादू दोनूं परसपर हरि
हरि आतम का थांन १२३ जहां रांम तहां संत जन॥ जहां साधू तहां रांम
दादू दोनूं ऐकठे अरस परस विश्रांम १२४ दादू हरि साधू यूं पाइये

सोई साध निरापिषि ॥ जहं देषै रहिमान १५० अलह आप इमान है । दा-
दू के दिल मांहि । सोई साध निरापिषि ॥ दूजा कोई नांहि १५१ प्राण प-
वन ज्यूं पतला । काया करै कमाइ ॥ दादू सब का सार मैं । क्यूं ही गह्या न
जाइ १५२ नूर तेज ज्यूं ज्योति है ॥ प्राण प्यंड यों होइ ॥ द्रिष्टि मुष्टि आवै न
ही । साहिब के बसि सोइ १५३ काया सैं पिंड मकौं मिलै ॥ ऐसा कोई
एक । [illegible] मिलै ऐसे बहुतेरे अनेक १५४ आपा मांहि आतम तन
धरै ॥ [illegible] मांहि । आप रमये है आपसं जीव ब्रह्म से तो नांहि १५-
५ दादू [illegible] आनंद नया ॥ पांच निरंजन नांम निहचल निरमल
निरबांण पद ॥ अगम अगोचर नाम १५६ दादू अनमै बांणी आग-
म की । ले गई संगि लगाइ ॥ अगह गहै अकह कहै ॥ अनभेद भेद लहा

ह १९७ जे कुछ वेद कुरांन थैं। अगम अगोचर बात॥ सो अंनभै सा-
चा कहै। यहु दादू अकह कहात १९८ दादू जब घटि अंनभै उपजे॥
तब कीया करम का नास। जे अनभै सागे सबै॥ पूरण ब्रह्म प्रकास १९९
दादू अंनभै काटै रोग कूं॥ अनहद उपजै आइ। सेझे का जल निर्म-
ला। पीवै रुचि ल्यौ लाइ २०० दादू बोलेसैं ब्रह्म का। अंनभै घटि परकास
। राम अकेला रहि गया। सबद उपनि मैं नपास २०१ जे कबहूं समझै आ-
तमा॥ तौ दिढ करि गहि मूल॥ दादू सेझा रामरस। अंमृत काया कूल
२०२ दादू मुझ हीं मांहै मैं रहूं॥ मैं मेरा घरबार। मुझ हीं मांहैं मैं रहूं॥ आ-
पकै करतार २०३ दादू मैं ही मेरा अरस में। मैं ही मेरा थांन। मैं ही मेरी
ठौर मैं॥ आप कहै रहिमान २०४ दादू मैं ही मेरे आसिरै। मैं मेरा आ-

आप मञ्जो चरवां म॥ पेकपेखककाटेघणा॥ जीघरा मनराका नाते २
४९ आंतममांहै रांमहे॥ पूजानाकाहोइ॥ सेवाबंदन आरती॥ साधक
रैसवकोइ २५० पूछेसवोआरती पूछे [illegible] गाइ। वाहूतसपूसमंदको
मिहमांकहीनजाइ २५१ मांहिनिरंजनदेवहै॥ मांहैसेवाहोइ॥ मां
हिंउतारैआरती। [illegible] सेवगसोइ २५२ [illegible] मांहैकीजेआरती। मां
हैपूजाहोइ॥ मांहैसतगुरसेविये॥ बूझैबिरलाकोइ [illegible] मनउता
रैआरती। तनमनमनसाचार॥ दोहू [illegible] बलिहारी [illegible] ति
रंजनहोरर २५४ [illegible] आबिचलनआंरती। जुगिजुगिदेवकेअनंत॥ स
दाअबंधसितगेकरस॥ स [illegible] उतारैसंत २५५ सतिरांमसके [illegible] सोबैछंगो
सुबधि तोमिसेवोधणी [illegible] मनमैं [illegible] ॥ [illegible] सतकै। संति स

नही। तकै नकोमैं सेव॥ इहि अवनेवा नींजा जिये॥ साहि बुझन लष
झै सेव॥२५२॥ आदि अंति अगोचर है॥ ऐक अनूपम देव। निरंकार नि
जो निरमला॥ कोइ न जाणै भेव॥ अविनासी अपरंपरा। वार पार नहीं
छेव॥ सो तूं दादू देषि ले॥ उर अंतरि करि सेव॥२५३॥ दादू जीत रिपै सिक
रि॥ घट कुं जे दै कृपा कै॥ सो [illegible] की सेवा करै॥ दादू [illegible] बिगति घाट॥२५४॥
घट प[illegible] करै॥ प्रव सि षेवै षै देव॥ अबिनासी वरसंन करै दादू पूरा
सेव॥२५५॥ जगत्र हारे प्यासि है॥ हरि हैं मोहि है देव॥ दादू [illegible] कुं छोनि करि बा
हरि [illegible] सेव॥२५६॥ दादू रे मिता राम सं। घटे [illegible] माहिं॥ उलटि संमा
नो आपमें॥ सो सुष कत कैं नांहि॥२५७॥ जे जन वेधे प्रीति सुं॥ ते जन सदा
सजीव॥ उलटि [illegible]॥ [illegible]॥२५८॥ [illegible] षेलै पीव सं

वे ॥ ३ ॥ मिहर वांन मिहरवांन ॥ आवबाद पाक ग्यान से आदम
[illegible]मान ॥ [illegible] ॥ [illegible]मपांनु हा पकीये ॥ नैरु की ये कांन ॥ मुश्क की या जी
की या ॥ [illegible]ष रहिमान ॥ [illegible] र पैदर परपोस ॥ सांई सुबहांन
सगरे हि मतगाहे ॥ साहिब सुलतांन ॥ पाक रीम या सही से ॥ दीनांदी
वांन ॥ पाक नूर है हजूर ॥ दाहू दीवांन ॥ अथ पद ॥ छत्रि राग ललित में पूर
बी रागा ॥ २५ ॥ पिव ढीवा ४० ॥ श्री [illegible] ॥ तेरे नांउ
[illegible] बलि जांउ जहां रहै तिस गांउ ॥ टेक ॥ तेरे बैनौं की बलिहारी
तेरे नैनंउ ऊपरे वारी ॥ तेरी मूरति की बलि कीती ॥ वारि बारि [illegible] दीती ॥ २ ॥
सोभित नूर तुम्हारा ॥ सुंदर जोति उजारा ॥ मीठा प्रांण पियारा ॥ तूं है पी
व हमारा ॥ तेज तुम्हारा कहिये ॥ निरमल काहे न लहिये ॥ [illegible] बलि
बलि तेरे ॥ आव पिया तुम मेरे ॥ [illegible] ॥ ३ ॥

कहै सब ग्वाल कहा कराइ ॥ टेक ॥ जल बिन जैसे मीन जाइ [illegible] फत
तुम बिन तैसैं हम बिहाइ ॥ तन मन [illegible] ॥ दरस पि
यासी प्राण जाइ ॥ १ ॥ जैसें चित चकोर चंद मन ॥ [illegible]
ज्याइ ॥ बिरह [illegible] को ॥ दरस [illegible] ॥ ३ ॥
॥ रागनी जैतश्री सपूर्ण ॥ राग ॥ २६ ॥ पद ॥ ५ ॥ श्री ॥ [illegible] ॥
रंगीला गोरे रंग म्रंगकों ॥ सो रंग कटे म जायरे ॥ हरि रंग मैं रो मन न रंग्यो ॥ जैसे
रंग न रंग सुहायरे ॥ टेक ॥ अब बिना सो रंग कपनो ॥ रचि मचि [illegible] वा
लोरे ॥ सो [illegible] ॥ अब सो रंग [illegible] लोरे ॥ १ ॥ हरि रंग [illegible] न
करै दिन दिन [illegible] सुरंगो रे ॥ नित नवो निरबांण है ॥ [illegible] ला
गो रे ॥ २ ॥ [illegible] मिल्यो ॥ सुंदर रंग [illegible] रे ॥ [illegible] बिना क
पाइये ॥ सब रंग [illegible] ॥ [illegible] ॥ सो रंग

मका । नहीं कोमी काजो व ॥ सांई सरिषा को गया दादू प्रेम पीव ॥ १२३ ॥ तीरा
कोमी नां लहै ॥ सूरिषू हा छिग वार ॥ पाया पार्ग रिष जो हरी ॥ दादू मीलिष
पार ॥ १२४ ॥ अमृहारा पर सिया ॥ कौया कोमी मोला ॥ दादू साधू जे तीरा
हीरे मोलं न तोल ॥ १२५ ॥ मीरां कप्या मिहरि सूं ॥ प्रेटें संजा पहु रा मिलं
या ही वार मैं ॥ दादू जे तूं जा टेर ट ॥ १२६ ॥ दादू मैं कु बिन दे सुबा ॥ आ बिन घ
छिबार ॥ रसं न छिन बो कि बा बहुं समेता ॥ अवं न बिन सुमिला ॥ चरण बि
न चालि का छि बिन चित बा ॥ सहज रोती ॥ १२७ ॥ दादू ये कमन
सो मन सब ही मांहि ॥ तिहि मन सौं मन मानिया ॥ दूजा ... नांहि ॥ १२८ ॥
दादू जिहि घटि दीपक राम का ॥ तिहि घटि तिमर न होइ ॥ उस उजियारे जो
ति कै ॥ सब जग देखै सोइ ॥ १२९ ॥ ... मो ... मान

कं वगति के आराधि । साधू संगति हरि मिलै ॥ हरि संगति थें साध १७५ दादू हरि
मन मसू मिलि रहै ॥ मन के छाडि विकार ॥ तौ विनु दही मंहि टेचि रे । दो
तंतस्वादाटार १७६ साधु समा गांरा मंमंहि । रामरच्या जरपूरि ॥ दादू दोनं
ऐकरस ॥ कछू करि की जै हरि १७७ दादू सेवग सांई को नण्या । तब बैंवे से
सकासब बेला ॥ सेवग सांई कं मिल्या ॥ तब सांई सेरी साहोइ १७८ मिल
रामांहै मेलि करि ॥ मों लिवि बिकांनां बिसरू दादू महंगा जण्यां ॥ पारब्रह्म
मिलि बस १७९ मीवे मा हेरा छिरे । सोका हे नमीव्यहिहा । दादू मीवा
हाथिते रसपी के सब को इ १८० मीठै सूं मीठा जण्या । षारे सूं षारा । दादू
मा जी संहै ॥ पकं रे गहे मारा १८१ मीठे मीठ करि लीये । मीठा मांहैं
दादू मीगाहै रवा ॥ मीठे मीठा हि संमाइ १८२ रांम बिना किसकौ

जम ह [illegible] लहु च्या ॥ ध्यां न धो वृती ॥ कैं । ता कं [illegible] स ॥ प्रेम जु ल ॥ मन न सो कदि
र ॥ निं रंजे न रे वू ॥ ज्ञा नं मो पा तो ॥ पुरु पैं [illegible] राति ॥ चेत्र नो चंदन ॥ भव धा नो
उ ॥ ज्ञा न वृ पूजा ॥ मति पा त्र ॥ स [illegible] सुम रं पं गा ॥ क बद घंटा ॥ ज्ञा न दच्छा
रती ॥ दया पुसाद ॥ ज्ञान नि [illegible] सका ॥ नीर थं सन सं ग ॥ दं न उपदेस ॥ त्र
त सुमरी ॥ [illegible] नं [illegible] न ॥ ज्ञ [illegible] जा प ॥ ज्ञा न नै [illegible] ज्ञा चार ॥ म्रजाद
राम ॥ फ [illegible] ॥ ज्ञ नि [illegible] तहि ॥ स [illegible] नं पं रंतहि ॥ स [illegible] नि सों जे दाह ह दे
ते ॥ ज्ञ [illegible] स ॥ ज्ञ [illegible] गा नि पूजा २५६ पीव सो [illegible] मनस ॥ तो
जाय रे [illegible] क होइ ॥ दां [illegible] पावे सै ज सुष ॥ पं [illegible] कोइ २५७ सेवग
विसरै ज्ञा न कौं ॥ सो वो [illegible] नि [illegible] न जाइ ॥ दाइ [illegible] रा म कों ॥ सो त न क
हिं स म [illegible] २५८ [illegible] धा र स पौ [illegible] तां ॥ [illegible] और ॥ पू दाइ र

हि॥ तांप्या पेकरस॥ पीवू तनअवत [illegible] रे २५९ अहो सेवग तू हो स [illegible] हि व
वे वा॥ सेवग मेवा मांहि॥ दाहू काई सब करै॥ कोई जो गो नांहि २६०
दाहू सेवग सांई बसि कीया॥ सौंप्या सब परिवार॥ तब साहिब सेवा
करै॥ सेवग के दरबार २६१ ते जपु [illegible] बिलम सरणां॥ [illegible] बिंबिधे चेंयु
करंते॥ नरि नरिं पीवे रांम रस॥ सेवग हु संकांनां ते २६२ अरस पु
सम मिलि बोलि यैं॥ तब मुष [illegible] दहोंइ॥ तन मन [illegible] सि
नपे॥ दाहू दे षे सो [illegible] २६३ मस्तु कि [illegible] पौं बधारि॥ [illegible] प्याव
सई यां सो वे सेज अपार॥ दाहू चेपे पाव २६४ [illegible] पद [illegible] के
सांई की सुष सेज॥ दाहू इन पारि [illegible] सकारि॥ सांई [illegible] हे ज २६५
प्रेम लहरि [illegible]॥ आतम [illegible]॥ [illegible]॥ पुक

सुषद [illegible] जाइ २६६ दादू देवा [illegible] सेन्य पूजिये [illegible] दादू
तन मन चंदन चरचिये सेवा सुरति लगाइ २६७ सांगति नाति सब
को कहै सांगति न जांणै कोइ दादू सांगति जांणत की देह निर
तरि होइ २६८ देही मांहै देव है सब गुण थैं न्यारा सकल निरंत
रि भरि रह्या दादू का पारा २६९॥ जीव पियारे राम को पाती पं
च चढाइ तन मन मनसा सौंपि सब दादू बिलंब न लाइ २७०॥
सब दस सुरति जे सा निर्विष [illegible] नमन मन मनसा मांहि मति बुधि पंच
आतमा दादू [illegible] जाइ २७१ दादू तन मन पवन पंच गहि
लै राखै निज ठौर जहां अकेला आप है दूजा नांही और २७२ दा
[illegible] निकट निर्जन
इय [illegible]

नागिरक॥ संगिसनेहैजोनारि २७३ ...मोचि नमन साक्षात्मो ... सुरति
नामोहिं॥ दोहा रूपनेनूपुररले॥ जैहलिधरत। कुंबरनांहि २७४ दोहा नैनिगोप्रेमर
स॥ मनपैचूंकासाथ॥ मोन नयेरसमेरहे॥ सबमनमुघक्षिनवैननेनथ २७
५ दोहा सबदेसबदसंमाहले॥ घक्षामसे [illegible]॥ एकमनमन॥ गौबंधिले॥ चि
त्रैचित्रसुजान २७६ दोहा सबदेसबूतेमाहले॥ जोनेबंधि [illegible] सुरेसुर
समाहले॥ धांनेबंधांधांन २७७ दोहा शिष्टैहिष्टि संमाहले॥ सुरतेसुरतिसं
माह॥ समके संमकि संमाहले॥ लैसंलैनेलोह २७८ दोहा नौवनावसमा
हले॥ नगतेनंकि संमान॥ प्रेमेप्रेमसमाहले॥ प्रीतैप्रीतिरसपंजे २७९॥
दोहा सुरतैसुरतिसमाहरजा॥ अरूबैनंनजै [illegible] बैन॥ मनैहां [illegible] मजाहर
जो॥ अरहैनेनजैसंनेनी २८० जहांमन [illegible]॥ मन [illegible] हांमैनांह

६ ज

२[illegible] नेवहिलमिलीहणालन [illegible] उटलेकनपडदाकोइ ॥ कोल

मूलाहि [illegible] न

जे [illegible] आसहिहाआतमां । आहू सहि [illegible] पमाइ २२१ पोग्गल नषेले पोग्गलसं

मन नषेले नन ॥ सबद नषेले सबदसूं ॥ कहूं रामरतन २२२ चित्तन

षेले चित्तनसं ॥ मैंन नषेलें मैंन ॥ मैंन नषेले मैंनसं ॥ दाहू पगट अैन

२२३ पावक नषेले पावकसं ॥ आर नषेले सार ॥ पवन नषेले पवनसं दाहू

आगआप [illegible] २२४ नूर नषेले नूरसूं ॥ तेज नषेले तेजसूं ॥ जोति नषेले

जोतिसूं दाहू [illegible] २२५ [illegible] पदारथ मनरता । पव नाम [illegible] कहा

इ ॥ [illegible] हीरा सुरति [illegible] ॥ [illegible] मोती पोइ २२६ [illegible] महा

रहे ॥ [illegible] सरीर [illegible] माग लि । जहां नदेषै कोइ २२७ ॥ [illegible]

हूप [illegible] पाकासा । आसण अमर [illegible] ॥ ति [illegible]

ता [illegible] सा ॥ [illegible] नके ॥ [illegible] निवासा । [illegible]

स॥ ... [illegible]

मदयां जन सं॥ सह जे सुषदास [illegible] पां गा पं न मन [illegible]

कुटी के संधि॥ पंचे इंद्री पावू सू॥ सो चढ़ि कबंधि २८९ [illegible] पीव

सू॥ यो लागा रहि ये॥ पुहप बास घृत [illegible] अब कासूं कहिये॥ [illegible]

लोह बिचि बासदेव॥ जैसैं मिलि रहिहै॥ दोहा दीन दयाल नसं॥ संग्राही

सुख लो हिये २९० दोहा जैसे [illegible] गाय है॥ सुधि मैं [illegible]॥ पुहप

बास थें पतला॥ सो सदा हमारे संघि २९१ दोहा जब दिल मिली दयाल सं

तब अंतर कछु नांहि॥ जैं पाला पांणी [illegible]॥ जो हरिजन हरि मां

हिं २९२ दोहा जब दिल मिली दयाल सूं॥ [illegible] हरि॥ जैसे मि

लि रहे के भया॥ ब कूटी पक पावक पूरि २९३ [illegible] मिली दया

ल सूं॥ तब अंतर [illegible]॥ [illegible] सो टीक

२९४ [illegible] सब तिन मिलि दयाल [illegible] के [illegible] एक न पड़दा कोइ ॥ काल
[illegible] जे मैं सब मिलि के होइ २९५ फिर पाछा बेला न जा ॥ छि
ट काया मूष माहिं ॥ [illegible] आगा फिर लीया ॥ सो फिरि कोंसै नाहिं २९६
दादू काया कटोरा दूध मन ॥ प्रेम प्रीति सूं पाइ हरि साहिब इहि बिधि
अचवै [illegible] लोइ २९७ ॥ [illegible] जीव रांम [illegible] ॥ [illegible] बैराग
होइ ॥ [illegible] जे [illegible] दादू बिरला कोइ २९८ ॥ दादू निर्गुण नांम
[illegible] होइ ॥ [illegible] दादू जब लग होइ २९९ ॥
[illegible] ॥ [illegible] माल ॥ [illegible] प्रेम रस ता न
गा [illegible] ॥ [illegible] ३०० दादू माता प्रेम का ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] जाइ ३०१ पीया ते [illegible]

[illegible]

बाकौ बकै बैराग ॥ ऐसे जन [illegible] नहीं ॥ दादू उनमन नट [illegible] ॥ २ ॥ म
कलि निरंजन लागि रहै ॥ ३ ॥ [illegible] अलख [illegible] ॥ [illegible] बैराम
रस ॥ निहकामी निज सेवग २०३ [illegible] जे नहीं ॥ हरि [illegible]
मताह ॥ बीचै नहीं [illegible] कै नहीं ॥ कलि [illegible] टिटि बलाई २०४ बा
इहरि रस पीवतां ॥ कबहूं [illegible] चि जे होइ ॥ पीवत [illegible] सा नित
नवा ॥ पीवण हारा सोइ २०५ दादू जैसे स्रवण [illegible] हैं ॥ ऐसे हो
हिं अपार ॥ राम कथा रस पीजिये ॥ [illegible] र बार २०६ जैसे नैनां
देषै हैं ॥ ऐसे होहिं अनंत ॥ दादू चं[illegible] चकोर [illegible] ॥ र सबहि [illegible]
मेत २०७ ॥ ज्यूं रसनां मुष एक है ॥ ऐसे होहिं [illegible] ॥ और सपी
वै सेस ज्यूं ॥ मुष मीठा एक २०८ [illegible] कहै ॥ ऐसे होहि

श्र... रसति राधे राम रस साहू ... कै श्री क ॥२०९॥ जु जु पावै राम रस
तं ... पिय रस ॥ श्री सा कोई रसिक है ॥ बिरला नाइ द्रास ॥२१०॥ ता ना मा
सा ... की ॥ निति राजा मैं मं... ॥ दास पावत ताकूं रहे ॥ जे जु ... हिं श्री नत
॥२११॥ दास ... जो तिजो ... ॥ बरिष बारह मास ॥ तिहिं रसिक ता प्रासि
यु ॥ माता ... पास ॥२१२॥ राम रा म ... जिये ॥ पीतौ रस नो होइ ॥ दास ...
प्रेम का ॥ पू बिन त्रि... ॥२१३॥ ननगरू ... ॥ जब रस
माना होइ ॥ ... धान ॥ कटे न ... कोइ ॥२१४॥ श्री मंगो...
क ... ॥ ... माहिं ॥ दास देषा ... हरि ॥ ताकै ... धां
नाहिं ॥२१५॥ ... ॥ नव ... श्री आइ ॥ जब माना...
इ ... ॥ नव ... ॥२१६॥ दास ... हरि श्री ... ॥ पीवै हरि जन
दास

नीर॥ सोजु समकु नलिन धरे॥ नि[illegible] दादू मरीव ॥२१७॥ दादू [illegible]
स॥ पोख घूटकरि जोउ॥ सुरसिंगि[illegible] पाके कंरहे॥ सबरिथ[illegible] [illegible]मा
॥२१८॥ चितडी [illegible]बि नरिलेगाई॥ नीर निधि [illegible] सहीं जाइ। [illegible] [illegible]गानी
कीया। सहसदरियामो हिं समाइ ॥२१९॥ दादू [illegible]मलीरां मकु। [illegible]सदिन
रह्या न जाइ पल करके [illegible] हों॥ तो न बही नलि[illegible] जाइ ॥२२०॥
दादू राता राम का। रस में रह्या समाइ॥ मदि[illegible] दारका। [illegible]मुक
ति बेला इ ॥२२१॥ उजल नवरा हरि क[illegible] [illegible]बाउह मास।पी
२. वै निमित बासनां। सो दादू निज दास[illegible] [illegible] [illegible]। स
इ सुरति सहेत॥ नमन मन मगन है तहै॥ [illegible]
वै पिलावै रांम रस॥ माता है कंपियारा [illegible] ॥२२२॥ पी
[illegible] कं

[illegible] २२४ नानाबिधिपी [illegible] रमर [illegible] ॥ केता नातिअनेक दी
[illegible] बोधक स्॥ आत्मअबतिरेक २२५ प्रचेकापै रमरस
॥ जेकाइ पीवै॥ मतिवा [illegible] मतारहै॥ यौं दाहू जीवै २२६ प्रचेकापै
प्रेमरस॥ [illegible] पीवै हितचित [illegible]॥ मनसाबाचाक्रमना॥ दाहूकालेनषा
इ २२७ [illegible] पीवै रांमरसअनुभि [illegible] थिर सोइ॥ दाहूआबैचव
[illegible]॥ कालिन [illegible] कोइ २२८ प्रचेपीवै रांमरस॥ सो अबिनासी
अंग॥ [illegible] चलानो [illegible]॥ दाहू साई संगि २२९ प्रचेपीवै रांम
रस॥ [illegible] सिर [illegible] हरि [illegible] दाहू [illegible] व्यापै नाहि नेकु देसंसार २३०
अमृत [illegible] नरहरि [illegible]॥ कौदेन बिलसैषाइ॥ कालबिचारा क्याकु
रै॥ [illegible] मिरा [illegible] २३१ [illegible] दाहू जीव [illegible] ज्यों बिषकाल है॥ छेनो
[illegible] दाहि

जाग्रौं सोइ ॥ जब कछू बसहि [illegible] का [illegible] का । तें षंपी नीका [illegible]

३२ मन नेरो रूके ठौं बैठे ॥ तन मन ते रहै अकास ॥ [illegible] हि यपि [illegible] के

॥ रे पिर रह्या हरि दास ॥ ३३३ ॥ तन मन बिलै [illegible] का । कांदै [illegible]

दादू मांहिं [illegible] गया कौं [illegible] कां [illegible] ३३४ ॥ दादू संषा सब [illegible] वहैं [illegible]

[illegible] है सं [illegible] मारि ॥ मन मीन [illegible] रियो ॥ संक्या पत्र पति [illegible] ३३५ ॥ दा

दू गौं की ज्ञान है ॥ [illegible] है सब लोक ॥ [illegible] ॥ अैसा

अमन पोष ३३६ ॥ दादू कछू वाजी वहै ॥ [illegible] ॥ मन सा

मनी पष सं ॥ सहज संरीषे नैन ३३७ ॥ सां [illegible] विषका

वारं न पार ॥ दादू पाया राम धन ॥ नाव [illegible] ॥ इति

परचा कौ अंग संपूर्ण ॥ अंग [illegible] [illegible] श्री

चौपाई ॥ मानो मोतिजिंगीने । नमस्कार सुंदर वत । बेदनं अब बसा
वा । ... सूधा रंग ... ॥१॥ कोसाधु धरे धीरं मधुन । गुरं बाइक कन चेनं
बिंबार ॥ ... दाइकं रहे । मकट ... बार २ दाइ मनहींमां
हे संब ... ॥ मनहीमांहे संमाइ ॥ मनहीमांहे राखिरे । ज्ञाहरिक
हि नजोंमि ३ दाइ संमकि संमाइ ... ॥ ... हरि कहि नजोंमि । द
इस्यंद ... बिया । तहांना कोआवैजाइ ४ कहिकहिकादि घला
इरा ॥ सोई ... ॥ दाइ प्रगटकाकहे ॥ ऊछ संमकि संधाते
५ लेछि [illegible] हे । दाइ जरता जाइ । कबहु पेटं नआफरै
॥ नावैते [illegible] इ ६ ... दाइ रां संधंन । रिदै राखि जिनिजा
इ । रतंन ... राखि ... ७ सोई सेवग

स बजरै ॥ जेता उपजै [illegible] ॥ कहिं न जणावे [illegible] सा
हिं से [illegible] ८ ॥ सोई सेवग सब जरै ॥ जेता रस [illegible] ॥ दादू [illegible] गी
र का प्रकास न कीया ९ ॥ सोई सेवग सब जरै ॥ जे अंतर [illegible]
दादू राखै [illegible] ॥ जेता कछु पावा १० ॥ सोई सेवग सब जरै ॥ प्रेम र
स [illegible] ॥ दादू सो सुष [illegible] ॥ जे हो आपन के [illegible] ११ ॥ सोई सेव
ग सब जरै ॥ जेता घटि प्रकास ॥ दादू सेवग सब [illegible] ॥ कहिं न जे
णावे दास १२ ॥ अजर जरै रस ना झरै ॥ घट मांहि [illegible] ॥ दादू सेवग
सो भला ॥ जे कहिं न जणावे १३ ॥ अजर जरै रस [illegible]
[illegible] ॥ दादू सेवग सो भला ॥ जरै जो [illegible] १४ ॥ [illegible] जरै रस
ना झरै ॥ जेता सब गावै ॥ दादू [illegible] १५ ॥ अजर

र जैसे [illegible] कैं ॥ [illegible] थीं के नाहि ॥ [illegible] सो मरवा ॥ जरि राषे
घटमांह १६ जरलां जोगी जुगि जुगि जीवैं ॥ फिर रांणां मरि मरि जाइ
दाह जोगी गुरमुषा ॥ सहजै रहै समाइ १७ जैरणां जोगी जागि रहे ॥ फ
र रणां ग्रुठे लोइ ॥ दाह जोगी गुरमुषी ॥ सहज सिंप मंनां सोइ १८ जरणां
जोगी गोरिष सौझै ॥ फिर रणां घट फटै ॥ दाह जोगी गुरमुषा ॥ काल थें छू
टे १९ ज्यूं रणां जोगी अमपती ॥ अविनासी अवधूतै ॥ दाह जोगी गुर
मुषा ॥ निकेवल का पूत २० जैरे सु नाथ निरंजन बाबा ॥ जैरे सु ज्ञान
घ [illegible] ॥ जैरै सु जोगी सब कौ जांणे नि ॥ जैरै सु जंगम सेव २१
जैरे सु [illegible] अपांन [illegible] ॥ जैरै सु जोगी पति सांई ॥ जैरै सु ज्ञान
ष ज्ञान प्रकासै ॥ जैरे सु [illegible] २२ जैरे सु अविचल राम मढै ॥ ज

३३॥ [illegible]

रैसु अकल अलेष ॥ जरैसु अगति व्यापक है ॥ जरैसु जगत [illegible] क २
३ जरैसु अगति व्यापक है ॥ जरैसु अपरपार ॥ जरैसु अगम अगाध
है ॥ जरैसु सिरजनहार २४ दादू जरैसु निरंजन निराकार है ॥ जरैसु नि
रंजन निरधार ॥ जरैसु निरंजन निर्गुण मई ॥ जरैसु निरंजन तत सार २५ ज
रैसु पूरण ब्रह्म है ॥ जरैसु पूरण [illegible] ॥ जरैसु पूरण परम गुर ॥ जरैसु प्राण है
मार २६ दादू जरैसु जोति सरूप है ॥ जरैसु तेज अनंत ॥ जरैसु झिलि
मिलिन रहै ॥ जरैसु पुंज रहंत २७ जरैसु परम पुरुष [illegible] ॥ जरैसु परम
[illegible] जाम ॥ जरैसु परम [illegible] दीन है ॥ जरैसु परम बिनोद [illegible] २८ [illegible] जरैसु पर
[illegible] रहै ॥ जरैसु परम [illegible] ॥ जरैसु [illegible] ॥ जरैसु पर
म निवास २९ दादू [illegible] ॥ सु [illegible] ॥

...काटियै। ...रहा
...ह॥ दोहा राम सं

नाम मेरे पेसिक हि। राम नाम तें लोना ह॥ पजे ह कं त ग्रेय लोका मै॥ ...नत
का हे कौ ज्ञा ह॥८॥ ...नाघर नले...ब न मे ला। जहां न दा लिज नाव॥ दोह
नम निम नरहै॥ मलो तसो इगव॥८३॥ निग्गुन नाम मम है॥ रिदै नावप्र
...रत तदे। नयम कररमं क निबि ब॥ मा यमोहके चित॥ कालं ज्ञा लेस
...चित त मपान कै जम किं कं॥ हरि मनु हि तस तगुरं॥ दाह अबिगतद
...मनं॥८४॥ ...सु ...नक॥ ले लि तराज्ञ बाहि॥ हरि स्म पक
...कै का॥ तास मिक ...नडाह॥८५॥ दोह राम नाम सब को कहै॥ कहि
...बकु त बै ब क॥ ...किरि मिले॥ ...समा ना एक॥८६॥ दोहा
...मि हु ...सब को जै बे नाव॥ जे लागे बे हे हम॥ तिन को
...जाव॥८८॥ को गापदे तहि दोजि॥ ...ज्ञानी ही को ह॥ राम सरी

धारां मह ॥ सुमरयां हां सुख होइ ७८ ॥ अपरंगी जांणीं आपु गति ॥ और न
जांणैं कोइ ॥ सुमरि सुमरि रसना जियूं ॥ ताहि अनंद होइ ७९ ॥ ताहि सब
हीं बेद पुरांन पढि ॥ नेति नेति ब्रह्म निरधार ॥ सब कहैं हम नहीं मांहि हम ॥ क्या
करिये बिस्तार ॥ पढि पढि हारे पंडित ना ॥ किन लह्यो न पारावार ॥ कहि थिक
थिया के मुनिजनां ॥ ताहि न लह्यो आधार ८० ॥ ताहि निगम हिरदै मैं बि
चारिय ॥ तऊ पार न आवै ॥ नांवे से रगावै कौं ॥ सुमर सुखदैन तांहि ८१ ॥
ताहि अलख अकल अलाह का ॥ जे पढि जांणैं कोइ ॥ कुरांनां कै नहिं बाह
लैं सब ॥ पढि करि पूरा होइ ॥ ८२ ॥ ताहि [illegible] तां कारा ॥ मोहै मन सू
वा ॥ पांके नांव अलख अलाह का ॥ पढि पढि फिर जऊ वां ८३ ॥ [illegible] नीयात
बजांणिये ॥ जे मन नमन रहै [illegible] होइ ॥ सादि अंति मधि [illegible] करता ॥ [illegible]

काटिये ॥
॥ दूहू राम
नबकी
मूलिन जाइ ॥ ४ ॥ दोहा एक टेकसा अनिनकी ॥ इजोइसानजोइ ॥ आ
पारखे अंग्रानमसु ॥ मु केरहे समाइ २४ ॥ दोहा परखिग करम ॥ बिसरि जा
इसब और ॥ अबिनतयकारनिकी जिये ॥ मन बाधी इहै भोर २५ ॥
आवन चे न नि की जि रघु मरनाप ॥ दोहा सुखे टेक सुन ॥ और सै जनजी
वे २६ ॥ के लिकु हि ने थु के दोहा ॥ सुमिसु मिकडक्यालेइ ॥ नूण
नि गु लि पं [illegible] ॥ ना सुनि सू चित देइ २७ ॥ दोहा हरि रसपीवना ॥ सं
बि [illegible] जाइ ॥ बोर बोरसे [illegible] ॥ मतिमै बीसरि जाइ २८ ॥ नाम
आवै तब हरी [illegible] सुख सुख ॥ दोहा से बगारं भकाइ ॥ हरि [illegible] मो
क [illegible] जा गति सुपिनांकि गाय ॥ चिंतामणि न बजाइ ॥ तब ही मा
ते है ॥ जब च्याहि [illegible] विनसि जाइ २९ ॥ मिले तहु बजु पाई ना ॥ बिछु

रंबऊं ... घहोइ ॥ दाहू सुख क परमका ॥ हजा नांही कोइ ॥३४॥ दाहू दरिका
नांव जल ॥ मैं मीं न ता मांहि ॥ संगि सदा आनंद करै ॥ बिछुरत ही मरि जां
हि ॥३५॥ दादू राम बिसारि करि ॥ जीव हि किहिं आधार ॥ जै चातग जल
बूंद कूं ॥ करै पुकार पुकार ॥३६॥ हम जीवैं इहिं आसिरै ॥ सुमिरण के आधा
र ॥ दादू छिटकै हाथ थै ॥ तौ हम कूं वार न पार ॥३७॥ दादू नांव निरंत
र हि ... जे ॥ नाति निमति न जिसोइ ॥ सदा [illegible] सि सांई ... ॥ महा म ...
व निर्हि होइ ॥३८॥ दादू रांम रसांइ मनि नितबूचै ... हीरा साधि ॥ सो ... मे
... या ॥ ... जी ना हाथि ॥३९॥ ... करस ... जा जं नके ॥ ता
कै करौ कौण कदै ॥ ... सिधिनै ... षिता कै आं ... रहे ॥
बदित ती नं ... लोक ... पुरा ॥ ... है ॥ ... न सकै ... ग

[illegible] टेये ॥ [illegible]

[illegible] कहैं कोइ ॥ [illegible] देवं

परि दादू देषतें हैं ॥ १८ ॥ दादू सब जग नीध नां ॥ [illegible] वैली [illegible] तमां ॥ कवि

ताजो [illegible] ॥ जाके नां [illegible] पदार थ हो है ॥ १९ ॥ दादू [illegible] पदार थ [illegible] ॥ २० ॥ दा

नासी के सा [illegible] ॥ [illegible] नाथ हिरदै बसै ॥ तो स [illegible] तास [illegible] हिरदै बसै ॥ तो म

इ संसारी [illegible] स ब [illegible] कि [illegible] को सा [illegible] इ ॥ साच ब [illegible] नाहो इ

कल [illegible] र थि हो थि ॥ २१ ॥ दादू [illegible] ॥ २२ ॥ दादू कहां था नारद मुनि

॥ [illegible] ॥ [illegible] लोक मैं ॥ सक [illegible] पु कारै साध ॥ २३ ॥ दादू

ज नैं ॥ कहां [illegible] मो कूं [illegible] दा [illegible]

दादू कहां [illegible] ॥ कहां पीपा रैदास ॥ दादू साचा [illegible] कूं

कै है गा [illegible] ॥ २ [illegible] हीथा गोरष [illegible] ॥ [illegible] नत

[illegible] ताहि ब जो कि [illegible] नीन [illegible]

[illegible] क [illegible]

[illegible] कल नाम [illegible]

सिधू[illegible]मिल॥ प्रगट[illegible] वहै॥ रतन कहै सब संत १०६॥ अगम अगोचर
राखिये॥ कहि कं [illegible]हि जरै तन॥ दादू छोनां कूं रहै॥ जिस घटि रांम
रतन[illegible] १०७॥ दादू अगम [illegible] से॥ साचा लेवै नांचूं॥ संक्त ले लोक सिरि
छिपै॥ प्रगट सब ही खोव १०८॥ [illegible] मिस[illegible] सं सां[illegible]या॥ पहिले ता[illegible]जं मांहि
दादू मीगारां मरस॥ सगला[illegible] नांहि॥ [illegible]॥ दादू जै सा मां वृथा [illegible] सा ली
[illegible] नांहि॥ है मरही यूकुं जीव रे[illegible] [illegible] सि मांहि [illegible] दादू सिरि क
रकोर वृतन वहै॥ बिसरे श्रांत मरांम [illegible] मांही हि थे॥ जीव नहीं
बिफाम ११०॥ दादू सिरि कर वृतन ब[illegible] हि कहै [illegible] मांहि कलेजा
कांटिये॥ कालन टमो टिं सिमाई ११[illegible] [illegible] अगपर
सनहीं लेह॥ [illegible] हि [illegible] जा कोलि[illegible] दादू सि[illegible] सोन सक[illegible] दादू सि
[illegible] विथा म जां णै कोई ११२

१८

रिकंरखतबदे॥ नैनहूं निरषै नांहि॥ मांहि कहै जाकौं हिये॥ सो .. रह्या
मनमांहि ११४ जेता पाप सब जग करै॥ तेता नांव हि मारे होइ॥ दादू रांम सं
भालिये॥ तौ गमा हुतारे सोइ ११५ दादू जब ही रांम बिसारिया॥ तब ही मोटी
मार॥ षंड षंड करि नाषिया॥ बीज पडै तिहि बार ११६॥ दादू जब ही रांम
बिसारिया॥ तब ही झंपै काल॥ सिर ऊपरि करवत बहै॥ आइ पडै जम
जाल ११७॥ दादू जब ही रांम बिसारिया॥ तब ही कंध बिनास॥ पग पग
परलै पिंड पडै॥ प्रांणी जाइ निरास ११८॥ दादू जब ही रांम बिसारिया॥ त
ब ही हांनां होइ॥ प्रांण पिंड सरबस गया॥ सुषी न देष्या कोइ ११९॥ साहिब
जीके नांवमैं॥ बिरह पीड पुकार॥ ताला बेली रोवणां॥ दादू है दीदा
र १२०॥ साहिबजी के नांवमैं॥ दादू जांणि ति बंसांस॥ तैसि ससा हि आ रहै

दादू [illegible] पास ॥२१॥ साहिब जी के नांव मैं । मति बुधि ग्यांन बिचार
प्रेम प्रीति सनेह सुख । दादू जोति अपार ॥२२॥ साहिब जी के नांव मैं
सब कुछ भरे भंडार । नूर तेज अनंत है । दादू सिरजनहार ॥२३॥ जि
स मैं सब कुछ सो लीया । निरंजन का नांव । दादू हिरदै राखिये । मैं ब
लिहारी जांव ॥२४॥२२॥ इति गुरु सिष्य को अंग संपूर्ण समाप्त
॥ अथ बिरह का अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्व साधवा । प्रणामं पारंगतः ॥१॥ रतिवंती आरति करै । रामस
नेही आव । दादू औसर अब मिले । इहु बिरहनि का भाव ॥२॥ पीव
पीव पुकारै बिरहनी । निसदिन रहै उदास । राम राम दादू कहै । तालाबे
ली प्यास ॥३॥ मन चित चातृग ज्यूं रटै । पीव पीव लागी प्यास । दादू द

रसनकारनै ॥ पुरवौ मेरी आस ४॥ बिरह निग्रथ का संनिवरैं ॥ जांन
तहै जगदीस ॥ दादू निसदिन बिरहौ है ॥ बिरह करत तसीस ५॥ बिरहं
निरो वैरागति दिंन फरे मन तही मांहि ॥ दादू औ सरंच वा निअरा ॥ प्रीतम
पारे नांहि ६॥ दादू बिरहं ति कररलै कंनजं ॥ निसदिंन तनफत
जाइ ॥ रांमसंनेही कारनै रोवत रैंनि बिहाइ ७॥ पासैं बैचा सब मुरौं ॥ है
मकै जाव नहै ॥ दादू तेरे सिरि चढै जी वह मारा नेह ९॥ सब कौं
सुखिया देखिये ॥ दुखिया नाहीं को ॥ दुखिया दादू दास है ॥ ऐन न प्रसंन
ही होइ १०॥ साहिब मुखि बोलै नही सेवग फिरै उदास ॥ यह बेदन
जाव मैं है ॥ दुखिया दादू दास ११॥ पीव बिन पल पल जुग भया ॥ कठिं
न दिवस क्यूं जाइ ॥ दादू दुखिया रांम बिन ॥ काल रूप सब खाइ १२॥

दादू इसा संसार मैं ॥ मुझ सा दुखी न कोइ ॥ पीव मिलन के कारनैं ॥ मैं जल
भरि या रोइ ॥ नां वह मिलै न मैं सुखी ॥ कहु क्यूं जीवन होइ ॥ जिनि मुझ
कौं घाइल कीया ॥ मेरी दारू सोइ ॥ १३ ॥ दरसन कारनि बिरहनी ॥ बैरा
गनि होवै ॥ दादू बिरह बियोगनी ॥ हरि मारग जोवै ॥ १४ ॥ अति गति
आतुर मिलन कूं ॥ जैसैं जल बिन मीन ॥ सो देखै दीदार कूं ॥ दादू आ
तम लीन ॥ १५ ॥ राम बिछोही बिरहनी ॥ फिरि मिलन न पावै ॥ दादू तल
फै मीन ज्यूं ॥ तुझ दया न आवै ॥ १६ ॥ दादू जब लग सुरति समटै नहीं ॥ म
न निहचल नहीं होइ ॥ तब लग पीव परसै नहीं ॥ बडी बिपति यहु
मोहि ॥ १७ ॥ ज्यूं अमली के चित अमल है ॥ सूरे के संग्राम ॥ निरधन के
चित धन बसै ॥ यूं दादू के राम ॥ १८ ॥ ज्यूं [illegible] के मन ज्यूं जल बसै

ज्यूं पांणी बिन मीन ॥ जैसें चंद चकोर है ॥ ऐसें दादू हरि सूं कीजे ॥१९॥ ज्यूं
कुंजर के मन बन बसै ॥ अनल पंखि आकास ॥ यूं दादू का मन राम सूं
॥ ज्यूं बैरागी बन खंड वास ॥२०॥ भवरा लुबधी बास का ॥ मोह्या नाद कुरंग
॥ यौं दादू का मन राम सूं ॥ ज्यूं दीपक जोति पतंग ॥२१॥ श्रवणां राते नाद
सूं ॥ नैनां राते रूप ॥ जिभ्या राती स्वाद सूं ॥ त्यूं दादू एक अनूप ॥२२॥ देह
पियारी जीव कूं ॥ निस दिन सेवा मांहि ॥ दादू जीव पियारा राम कूं ॥ कबहू
छिटकै नांहि ॥२३॥ देह पियारी जीव कूं ॥ जीव पियारा देह ॥ दादू हरि रस पाइये
॥ जे ऐसा होइ सनेह ॥२४॥ दादू हरदम मांहि दिवांन ॥ सेज हमारी पीव है
॥ देखूं सो सुबहांन ॥ ऐसे कहै हमारा जीव है ॥२५॥ दादू हरदम मांहि दिवांन ॥
देखूं सो सुबहांन ॥ दादू दरस के नैना चाहै ॥ जब देखूं दीदार कूं ॥२६॥ दादू दरस
कहूं दरस नैं दरस सूं ॥

नैंदरसहवेंस । फेक दिन दरसदन जाइ । हेसक छिपा दीदारैकैं ॥ मिहरको
नहि घरतोइ ७७ मुरीद पुकारतो । दिन मिलिया जाइ ॥ दादू छोडी
बातथी । जिंदु कर दरस दिखाइ ७८ । दादू मै मिहरकी मंगता । दरसन देहु
दयाल । तुम जिता । मेरी करकूसँजात ७९ ॥ क्या जी
वै मे जीवणा बिन दरसन बेहाल । दादू मोई ॥ दरसन ला
न ८० इहि जगि जीवन सो भला ॥ जब लग राम ॥ राम बिना जे जी
वणा ॥ सो दादू बेकाम ८१ दादू कछु दीदार को । सांई मेरी बात ॥ कबह
रि दरसन देहुगो ॥ सरचजि जाइस ८२ ॥ दरसको
मोहि दिन रात ॥ दरसन दीजै ८३ ॥ दा
दूसहिये ॥ जब मेराजा

ल तब रोमरोम सुख भयो है सी ॥३४॥ तू है तै सा प्रकास मकरंद प्रगट जो आपहि
माह ॥ ताकूं कंदी द्वार दे ॥ बलि जांगो जिं वं बन लोइ ॥३५॥ ता रूप पावे जीवे
षे मुकते ॥ फूं नी देष प्रगट ॥ फूं दे षं दे षत मिलें ॥ तो सुष पावे जीव ॥३६॥ दा
सू कहै तन मन ते भक्ति परिवार सौं ॥ करि दीजे केवार जे ते सी विधि पाइये
तौ लौ जे सिर तन महा ॥३७॥ दीनं ते नाम रस के करो ॥ तु कं सं पण दे दीर
तन मन ना बंधन छिन करो ॥ जित दी जग नावार ॥३८॥ दाहू हंम
कि पिया दी दार के ॥ तु छिन षो इह रिन हो इ ॥ जां वे हं मनकं जा लिदे ॥ कू
हां है सो हो इ ॥३९॥ दाहू कहै जे ते कं दी वा हं मनकं ॥ सो सब तन कहै हो ले
कू उक हिं न मन न मो लैं नही ॥ दरस आप णां दे कू ॥४०॥ दूज कछु मांगो
नही ॥ हंम कं दू दार ॥ तू है तब तां मे कट मा ॥ दाहू के देवन कर ॥४१॥

दोहरा कहै तूं है तैसी नेगा निदै ॥ तूं है तैसा प्रेम तूं है तैसी सुरुझि ॥ छि तूं है तैसा
प्रेम ५२ दोहरा कहूं कहै मन कै करों में सरीर कं ॥ बेर बेर बहु कुसंत ॥ आवू न
गति हित प्रेम लखो ॥ घेरों पियारा कंत ५३ दोहरा हरि सों मन काज रहो ॥ ह
मकुं बहु दुख पार ॥ कबा जां नें क बंधि मिले ॥ मेरो प्राण आधार ५
४ ॥ दोहरा औरे सों कंत के ॥ घरनि घावे हाल ॥ मेरा मेरा प्रिह हरि कै
रिदै दरसंन दरस हाल ५५ ॥ नाला बेलो [illegible] बिन ॥ कूरं सरपां याजा
ह ॥ बिरहा दरसन दरसंह ॥ हम कंदे कबु दाह ५६ नाला बेलापी
ड सहु ॥ बिरहा प्रेम पियास ॥ दरसंन सेतीं सौं जिये ॥ छिन सें दोहरा स
५७ दोहरा कहै हम कंप्र परगा आपदे ॥ हम कं मन हु [illegible] ति दरस [illegible] से जासु
हाग सुख प्रेम रस ॥ [illegible] ५८ प्रेम नगति मानारे है ॥ ना

वात्ताबेल ...ंगा। सदा सपी ...समअर है। रांमह मैं तें न सुंगा ४९ प्रेम मगन
रस पाई से। जगा निहि है तेरु चित्ताव। बिरह बिंसा सनि जनांतें सूं। द
दया करि आव ५० गई दसा सब बाकें टे जे ते कर पा टक आइ॥ दा
हु ते जड सब बसे। दरसं न है कह दियाह ५१ हंम कर लिये कर हो हमा॥
बिडु दतु कां यें जा हु॥ पी छे हीं पलि ता जो। ता थें पंगा ... ह ५२ मी
...मै न आवघा॥ वां तां कंता लोह। झुथै कै सुहं मेगये। मरां बिछो हे रो
ह ५३ हे सो लिखिन दी पाई ये। नहीं सुहे मर ही। दाइ मन न मां ने नहीं। ता
थें मरि रेकूरि ५४ जिसघ... कन्नो हका। तिस घट... तो दीन मा
स। दाह आयु रे तक नहीं। सस के सा सें साम ५५॥ रती रवंन नबा मरै॥ मरै
संनालि सिंसनालि। दाह सुहदा थीर है॥ आसि क सू लह नो लि ५६ दाह

न्नासिक रखवा। सिरं नीऊ वैंना हि। अला ह कारे णिन्ना यऊं। सोडे अ
दरि नाहि ॥५७॥ औरें नौं तन करैं ॥ वृंने करि कुर बांगा ॥ मिराक चूडा नो
लगी। ताहू तौं हूं सारी ॥५८॥ जबं बंगा सी सन नसीं उपिये। तव बूलगाङ्ग सकन
होइ। न्नासिक मरनें नाफरे ॥ पीया पियूजा नासाइ ॥५९॥ तैं मी नाई सनु
। जेनी येंदी गरकें। ते जेलहंडी अनु ॥ पसं इक्ड हूपणा कें ॥६०॥ बिचौं स
नो महरि करि। अदरि बियां न पाइ। दाहू रलं हैं कदां। मंन महबलि
लाइ ॥६१॥ इस मकृ महबलि मजमन ॥६२॥ नालि बदरदार। वोसल दिलद
रदं महजूरं ॥ पों दिमार कसिधांरं ॥६३॥ दाहू न्नासिक ओलक अन्ना ह कें। फा
रिकं नियां दीन। वासिकयम स्रो ऊदरसे। दाहू धौं क अ कीस ॥६४॥ न्ना
सिकां रहक कबजकंता। दिनें वे नार पानं दम। अलहूनालें नूरदीदम

दिलहदल संद ६५ दोहा हमकमआवाजसू ॥ मैं सें कहै न कोइ ॥
दरदमहबतियाइऐ ॥ साहिबहाँ मिलहीं होइ ६६ दोहा कदमआसिक
अलाहके ॥ मारेअबरौहाथि ॥ कहाँ आँले मजौजदसे ॥ कहैजबां
कीबात ८७ दोहा हमसकं अलाहका ॥ जेकबकुपरारेआइ ॥ तो
तनमनदिलंत्यांरवाहका ॥ सबपडेदाजंलिजाइ ८८ अररवाहसि
उत्पाकुनेदअौजूदराचिकारि ॥ रोहूबेरदाइनी ॥ आसिकारीदा
र ८९ बिरहअगनितनजालिये ॥ ज्ञानअनिदें नह ॥ दोहान
मसिमपुजलै ॥ तबरामबुकावै आइ ॥ बिरहअंगनिमेंजालिबा
दरहांवैतोनाही ॥ दोहा आतुररोहसूं ॥ हजा कुछ नाही ९० साहिब
सुकमबलनहां ॥ जिनमहत मागै कोइ ॥ दोहापीद पुकारियेरोन

तो है दू सुख होइ ७१ आंगणि ध्यान न सब ज्ञान छूटि॥ जप तप जप जाग थिंत न जो
ग॥ दादू बिरहा ले रहै॥ छाडि सकल रस भोग ७२ जहां बिरहा
तहां और क्या॥ सुधि बुधि नाठे ज्ञांन॥ लोक वेद मारग तजे॥ दादू
ऐके ध्यान ७३ बिरही जन जीवै नहीं॥ जे कोटि कहै समझाइ॥
दादू गहिलां है रहै॥ कै तलपि तलपि मरि जाइ ७४ दादू तन पेपी
ड सं॥ बिरही जन तेरा॥ सब कै सांई कारणै॥ मिलि साहिब मेरा ७५
दादू बिरही कुरडु सूं॥ पडवा पुकारै मीन॥ रांम बिना जीवै नहीं॥ पीव
मिलन की चींत ७६ पडवा पुकारै पीड सं॥ दादू बिरही जन रांम सं
नेहा चिति बसे॥ और न जानैं नैन ७७ जिस घट बिरहा रांम का
॥ उनमनी लागी रहै॥ दादू तन बिरहनी॥ उस घटि निद्रा नाहिं॥ सा रास

रानी रजनी रि। सब कोइ सोवै॥ दादू घाइल दरदवंद। जागै अरु रोवै
२ पीड पुरांणी नां पडै जे अंतरि वेध्या होइ॥ दादू जीवण मरण लौं। प
ड्या पुकारै सोइ १९ जे कबहूं विरहनि मरै। तो सुरति विरहणी
होइ। दादू पीव पीव जीवतां। मुवां भी टेरै सोइ २० दादू अपणी पी
ड पुकारियै। पीड पराई नांहि। पीड पुकारै सो भला। जाके क
रक कलेजे मांहि २१ जब जीवत मृतक कार नै। गहत करि नां
मै आप। तब दादू का गिणां मकै। विरही करै विलाप २२ दादू
तन पिंजर पिंजरि विरहनि मरै। करि करि बहुत विलाप। बि
रह अगनि मैं जलि गया। पीव न पूछै बात २३ दादू कहां जो अं
कवन पेम का रे। दादू बूझै नहीं। पीव बिन दीठैं नैन न ...ई।

कूं तरसै हिं जरणां ॥ ४५ दादू बिरह बिजोग न सहि सकूं ॥ मो
पै सह्या न जाइ ॥ कोई कहौ मेरे पीव कूं ॥ दरस दिखावै आइ
॥ ४६ दादू बिरह बिजोग न सहि सकूं ॥ निस दिन सालै मोहि
॥ कोई कहौ मेरे पीव कूं ॥ कब मुख देखौं तोहि ॥ ४७ दादू बि
रह बिजोग न सहि सकूं ॥ तन मन धरै न धीर ॥ कोई कहौ
मेरे पीव कूं ॥ मेटै मेरी पीर ॥ ४८ दादू कहै साध दुखी संसार मैं ॥
तुम्ह बिन रह्या न जाइ ॥ औरों के आनंद है ॥ सुख सौं रैनि
बिहाइ ॥ ४९ दादू लाइक हम नहीं ॥ हरि के दरसन जोगि
बिन देखे मरि जाहिंगे ॥ पीव के बिरह बियोग ॥ ५० ॥ दा
दू सुख साईं सौं ॥ और सबै ही दुख ॥ देखौं दरसन पीव का ॥ तिस

ही लागो सुख ॥५१॥ चंदन सीतल चंद्रमां जल सीतल सब कोइ ॥ दा
दू बिरही राम का इन सूं कदे न होइ ॥५२॥ दादू घाइल दरद बंद
॥ अंतरि करि वि पुकार ॥ सांई सुणैं सब लोक मैं ॥ दादू यहु अधिका
र ॥५३॥ दादू जागे जगत गुर ॥ जगत सबाला सोवै ॥ बिरही जागै पीड सूं
॥ जे घाइल होवै ॥५४॥ बिरह अगनि का दाग दे ॥ जीवत मृतक गोर ॥
दादू पहली घर कीया आदि हमारी ठौर ॥५५॥ दादू देखे का अचिर
ज नहीं ॥ अण देखे का होइ ॥ देखत ऊपरि दिल नहीं ॥ अण देखे कौं रो
इ ॥५६॥ पहली आगम बिरह का ॥ पीछै प्रीति प्रकास ॥ प्रेम मगन लै
लीन मन ॥ तहां मिलन की आस ॥५७॥ बिरह बियोगी मन न लागे
सांई का बैराग ॥ सहज सनेही आपनां … ॥ … ॥५८॥ दादू …

बिनां तौं नि प्रीति न ऊपजै मात लनि क छिज लधरियां॥ जन नम
लगौ जीव पुलिंगं नपावै॥ निस अन दहदसि जरियां॥ १०० दादू दु
ख्या बिनां लनि प्रीति न ऊपजै॥ वंकू विथा जोऊं अंजनेहा॥ अमृत ल
गै जी वूरती न चाखै॥ पंक पुरि व कुसेरा॥ १०१ दादू लंपंति बिनां त
नि प्रीति न ऊपजै॥ संगा ही दीरत लकाया॥ जन नम क्यौं जीव जीतौं
नाही॥ त्वरू रवि नैन नरायां॥ १०२ दादू चोट बिनां तन निप्रीति न ऊ
पजै॥ औषद अंग रहे तन॥ जन मन्यौ जीवू पेल कन प्रसे॥ बूटी
अमृत अंजन नल १०३ दादू चोट न लागी बिरह की॥ पीड न ऊपजी आ
इ॥ जागि न रोवै धाह दे॥ सोवत गई बिहाइ १०४ दादू पीड न ऊप
जी॥ नां हम करी पुकार॥ ताथै साहिब नां मिल्या दादू बीती बार

१०५ अंतरि पीड़ जे ऊपजै । बाहरि कैसे पुकार ॥ दादू सो क्यूं कहि
सकै सो हि न काढ़णहार १०६ मनहीं मांहैं झूरणां । रोवै मनहीं मांहिं
मनहीं मांहैं धाह दे दादू बाहरि नांहिं १०७ बिन ही नैनहुं रोवणां
बिन मुख पड़ै पुकार । बिन ही हाथों पीटणां दादू बारंबार १०८ प्रीति
न उपजै बिरह बिन । प्रेम भगति क्यूं होइ । सब झूठे दादू भाव
बिन । कोटि करै जे कोइ १०९ दादू बातों बिरह न ऊपजै । बातों प्री-
ति न होइ । बातों प्रेम न पाइये ॥ जिनि रु पतीजै कोइ ११० दादू तो
पीव पाइये । कसमल है सो जाइ ॥ निर्मल मन करि आरसी ॥ मूरति
मांहिं लखाइ १११ दादू तो पीव पाइये ॥ करि मंझे बिलाप । सुणि है
कबहूं चीति धरि । परगट होवै आप ११२ दादू तो पीव पाइये करि

साईं सीमेत्रू । काया मांहि समाइ सी । घट ही भीतरि रहि वू ॥ १९३ ॥ दादू तो पी
व पाइये । जो वैं प्रीति विलाइ । हे जैं सारी बूलोइ ये ॥ माहि न मंदर आव
॥ १९४ ॥ दादू जाके जे मी पीड है । सो ने सी करे पुकार । को सूषि मं का मद्ध उ
मे । को मतन कहि हि बार ॥ १९५ ॥ दरद हि बूझै दरदवंद । जाके दिल होय
वे । क्या जाणे दादू दरद की । नींद भरि सोवे । दादू अक्षिर प्रेम का । को
ई पढेगा एक । दादू पुस्तक प्रेम बिन । केते पढे अनेक ॥ १९६ ॥ दादू पाती
प्रेम की । बिरला बांचे कोइ । बेद पुरान पुस्तक पढे । प्रेम बिना
क्या होइ ॥ १९७ ॥ दादू कर बिन सर बिन कमान बिन । मारे खैंचि कसी
स । लागी चोट सरीर मैं । नख सिख सालै सीस ॥ १९८ ॥ दादू जे तन का मारे ने
ह सं । मासे मं कि परां णा । मारं न हारा जो णि से । के जिहि लागे बांण

११९ दादू सो सर हंम कूं मारिले जिहिं सरि मिलियै जाइ ॥ निस दिन मा
रग देखियै ॥ कबहूं लागै आइ १२० जिहि मारे बेधे मन ॥ बिधे साध सुजांण ॥ मा
रे तन हंम कूं लिये ॥ दादू बिरहा बांण १२१ जिहिं लागी सो जागि है ॥ बेध्या क
रे पुकार ॥ दादू पंजर पीड है ॥ सालै बारंबार १२२ बिरहा सबद के पीड
सूं ॥ जंलू घात न रियां माहिं ॥ प्रीतम मारे संग न रि ॥ दादू जीवै नांहिं १२३
दादू बिरह जगावै दरद कौं ॥ दरद जगावै जीव ॥ जीव जगावै सुरति
कूं ॥ पंच पुकारै पीव १२४ सहजैं मन मनसा सधे ॥ सहजैं पवनां सोइ ॥ सह
जैं पंचूं थिर भये ॥ जे चोट बिरह की होइ १२५ मारणहारा रहि गया ॥ जि
हिं लागी सो नांहिं ॥ कबहूं सो दिन होइगा ॥ यहु मेरे मन मांहिं १२६ प्रा
ण मारे प्रेम सौं ॥ तिन कौं क्या मारे दादू जारे बिरह के ॥ तिन कौं क्या जारे १२७

दरस पड देखण कूं ॥ ऐ तो अंतर होइ ॥ दादू बिरहनि रांम बिन ॥ कहु क
रि जीवै सोइ ॥ १२२ ॥ काया मांहै क्यूं रह्या ॥ बिन देखे पीव प्यार ॥ दादू बिरही बा
वरा ॥ मरै न निकसै तिंहि बार ॥ १२३ ॥ बिन देखें जीवै नहीं ॥ बिरह का सहनां
णा ॥ दादू जीवै जब लगैं ॥ तब लग बिरह न जांणा ॥ १२४ ॥ रांम मेरो अरस
प्या सहै ॥ दादू करहि मुकार ॥ रांम घणां दुख लगि मगि करि ॥ बैर मरू सिर
जे न दार ॥ १२५ ॥ प्रीति जु मेरे पीव की ॥ पैठी पिंजर मांहि । रांम मेरे अपीव
पीव करे ॥ दादू दूसर नांहि ॥ १२६ ॥ सब घट श्रवण सुरति सूं ॥ सब घ
ट रसनां बैन । सब घट नैनां ह्वै रहै ॥ दादू बिरहा अैन ॥ १२७ ॥ राति दि
वस का रोवणां । पहर पलक का नांहि । रोवत रोवत मिलि गया । दा
दू साहिब मांहि ॥ १२८ ॥ दादू नैनहुं मेरे बापुरे । रोवैं नहीं दिन रात

सोई संग न जागही । पीव का रे पूछै बात १३५ नैन [illegible] आदेया
का जोरो [illegible] हू । तैसे हांक रिरोङ्गी रै ॥ सा [illegible] नैन [illegible] जो [illegible] १३६ दा
हू नैन नेह मारे री वहै ॥ नांव लेनी रन जाहि । मूं के सरां [illegible] है तवे ॥ करंक
न [illegible] गालिं माहि १३७ ॥ दादू बिरह प्रेम की लहरि मै ॥ पिउ मन [illegible] गुल
होइ । राम नाम मैं ना लिगाया । तब [illegible] विरला कोइ १३८ दादू बिरह
अगनि मैं जलि गये । मन के मैं [illegible] विकार । दादू बिरही पावूं का
देषैगा दीदार १३९ बिरह अगनि मैं जलि गयौ मन के विषै विकार
र । ताथैं पंगुल है रह्या । दादू दरि दीदार १४० जब बिरहा आया दर
द सूं । तब मीठा लागा राम । काया लागी काल है । कडवे लागे काम
१४१ जब राम अकेला रहि गया । तन मन गया बिलाइ । दादू बि

रसी तन मु[illegible]न मेंदूर सपूरण मिलि जाइ १४२ सेहं मन्हा मैं राम कौं
मेरा मन[illegible]छा मैं ॥ दादू [illegible] म नी [illegible] म तूंथे । मन के सकरि कान्है १४
३ बिरहा पावक [illegible] मिलि ॥ तन बिरह लिं बिरहा होइ । दादू प्र
मे बिरहनी ॥ पान्ह पीवू टेरे सो १४४ प्यासि क मासंक कै गया ॥ इस क
कहां वे सोइ ॥ दादू इस मासू [illegible] ॥ [illegible] प्यासि कं होइ १४५ ॥ रो
म बिरयौ छै गह्या ॥ बिरहं [illegible] रोम ॥ दादू बिरहा आपुरा । के
से करि गया कौं म १४६ बिरह बिचारा ले गया ॥ दादू है म कं प्याइ
॥ जहं [illegible] चरण मथा ॥ तहां बिरह बिनां कोइ जाइ १४७
बिरहा व पुरा आइ करि ॥ सोवे तन जगावे जीव । दादू [illegible] लागइ
करि ॥ [illegible] चावे पीव १४८ बिरहा मेरा मीत है ॥ बिरहा बैरी नां

हिं। बिरहे के बैरी कहैं। मोताहू कि समां हिं १४९ सहज सकाम
लदकी जहु द्विहूं। सकल कलह कारंग॥ सकल कलह ... जु दहे
स हकी जा ... ॥ ... दोहा॥ प्रीतम का पग प्रेम ... सुकट घणा
। सकल कलह कारंग॥ १५० दोहा॥ ... जहं धरे थे पाव॥ १५१ दोहा॥ बाट बिर
का चाव। नहीं ... मन वाहि ये॥ ... के मारग जाहि ये॥ हमरण
हकी सोधि करि। पंथ प्रेम का लेहु। ... आपा ... थोड़े मा
रन देहु॥ १५२ बिरहा ... १५३ बिरहा ... मिले। ताला
हे ... दोहा॥ ... सकल सरीर १५४ आ
... बेलापार। ... हरे पट ... करि॥
गा आप ... की। ... प्रिथी ... पार।
धरती करे सिंगार। बसुधा ... फले फले।

गगन गाजै जिहिं ठां अनहद बाजै रे ॥ दादू जैजैकार ॥१५८॥ काल न आ मुंह करि
कालकी ॥ सांई सबसु बाहला ॥ मेष तेम्हारे घरि दिंरां ॥ अनुसज्यो नह
याव ॥१५९॥ इति बिरह का अंग संपूर्ण ॥ अंग ॥३॥ साषी ॥१४२॥ अथ
परचाकौ अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं ॥ नमसकार गुरदेव तः ब
दनं सर्व साधवा प्रणामं पारंगतः ॥१॥ दादू निरंतर पीव पाइया ॥ तहं
पंषी ने नमन बांछ ॥ पंच तें ... दिया ॥ अष्टेहं रत्यो संमाइ ॥२॥ दादू नि
रंतर पीव पाइया ॥ जहां निरंजन नपड़ै चेबेद ॥ तेज पुंज ... बसे ॥ को
ई बिरला जांणैं भेद ॥३॥ दादू निरंतर पीव पाइया ॥ तीनि लोक भरपू
रि ॥ सब सेजों सांई बसे ॥ लोक बतावैं दूरि ॥४॥ दा... निरंतर पीव पाइया
तहां अवंर बारह मास ॥ हंस सों परम हंस सबले ॥ तहां मेवा ग सांमी पास

बु

५ दादू हरि रसि मतिरहिसे वं पीवत संत ॥ महंतां जे वे नर मतवाल ॥ अकल अगाध परब्रेम
स्वांमी ॥ प्रेम पियाला सै लाल ६ दादू हरि रसि मतिरहिसे वं पीवत संत ॥ से तन दीन न दया
ल ॥ जिनि बौरे मुनि नहीं तन हां निसै ॥ मांन सरीर वर पालै ७ दादू हरि रसि मतिरहिसे वं
पीवत संत ॥ महंतां कौं हूं बूंह होइ बियोग ॥ आदि पुरष अविनासी मोरी लिल्या ॥ कुछ
पूरि बहे से अंजोग ८ दादू हरि रसि मतिरहिसे वं पीवत संत ॥ तहां बारह मास बसंत ॥
सेवग सदा अनंद है ॥ जुग जुग दिसै कंत ९ दादू काया अंतरि पाइया
त्रिकुटी के रे तीर । सहजैं आप लखाइया । व्याप्या सकल सरीर १० दादू
काया अंतरि पाइया ॥ निरंतरि निरधार । सहजैं आप लखाइया ॥ ऐसा
समरथ सार ११ दादू काया अंतरि पाइया । अनहद बेन बजाइ ॥ सहजैं
आप लखाइया । सुन्नि मंडल मैं जाइ १२ दादू काया अंतरि पाइया । सब दे

वनिंकादेवू। [illegible] जे आपतणाई या। जैसा अलष [illegible] देव १३ दादू
वरक वलेरसनै धिया। सुषसरवूररसपीवू। तहांहं स[illegible] ती चुगो। पी
वदेवेंसुषजीव। १४ दादू नवरकवलेरसधिया। ताहे चैरण करहे
त पीवूजापमहीं [illegible] या। रोमरोमसबैसत १५ दादू [illegible] करकवलरस
वेधिया। [illegible] तनन [illegible] तहां बासबिरविया। [illegible] नया
रसधाह १६ दादू [illegible] रसनेधिया। [illegible] पीवकी [illegible] ट। त
होद [illegible] वस्हैं। कवण करैसरचोट १७ दादू सोजितहांपीवपा
ईये। सब [illegible] पास। तहांये [illegible] कौतिहै। तहां जोति प्रकास
१८ दादू सोजितहांपीवपाईये। जहां चंद [illegible] सूर। [illegible] रंतसरिलि
रषारहै। तेजरह्या [illegible] पूरि १९ दादू सोजितहांपीवपाइये। जहांलि

गुण माहि रहै गोविंद नांहि ॥ राम सबन सौं मोह हरि जोग ॥ ३० ॥ दादू तुम्ह जी वैकै
ओगुंण गनै जे ॥ सुकारत को न आवै ॥ मेरी जरणा देखि करि ॥ मति को
साधै साध ॥ ३१ ॥ पवना पांणी सब पीया ॥ धरती अरु आकास ॥ चंद सूर
पावक मिले ॥ पंच्यौ एक गरास ॥ चौदह तीन्यौं लोक सब ॥ ठूंगे मां
मैं सास ॥ दादू साधू सब जरै ॥ सतगुर के वेसास ॥ ३२ ॥ इति जरणा को अंग
समपूरण ॥ अंग ॥ १२ ॥ साखी ॥ ८४ ॥ अथ हैरान को अंग लिख्यते ॥ दादू
नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेवतः बंदनं सर्व साधवा ॥ प्रणामं पा
रंगतः ॥ १ ॥ [illegible] पारिख्यू ॥ सब मिलि करैं बिचार ॥ गूंगे गहिले
बावरे ॥ दादू [illegible] न पाया ॥ २ ॥ केते पारिख जौंहरी ॥ पंडित ग्याता ध्यान ॥ जांण्यां
जाइ न जांणियें ॥ का कहि कथिये ग्यांन ॥ ३ ॥ केते पारिख पचि मुये ॥ की

मति की हीन जाइ ॥ दादू सब ही है राम है ॥ ३ ॥ कौ गुड षांड ॥४॥ सब ही
जानें पंडिता ॥ सुर नर देव रै काइ ॥ दादू गति गोविंद की ॥ क्यूं ही लषी न
जाइ ॥५॥ जैसा है तैसा नांव तुम्हारा ॥ ज्यूं है त्यूं कहि साई ॥ तूं आपै जा
णैं आपकूं ॥ तहां मेरी गमि नाहीं ॥६॥ केते पारिष अंत न पावैं ॥ अग
म अगोचर मांहीं ॥ दादू की मति कोई न जाणैं ॥ षीर नीर की नांई ॥
७॥ जीव ब्रह्म सेवा करै ॥ ब्रह्म बराबरि होइ ॥ दादू जाणैं ब्रह्म
कौं ॥ ब्रह्म सरीषा सोइ ॥८॥ वार पार कोई ना लहै ॥ कीमति लेषा
नांहिं ॥ दादू एकै नूर है ॥ तेज पुंज सब मांहिं ॥९॥ दादू ... वैन नहीं
सो सम्रथ ॥ अवरन वरन कहिके सो ॥ दादू सब देवै सुरा ॥ कहैगा
है है ऐसा ॥१०॥ पायापाया सब कहै ॥ केतक देहि दिषाइ ॥ को

मति बिवेक नहीं जो कहीं ॥ दोहा ॥ रकत लेयो न जाइ ११ आपणा मन जे नर
रिखा थ्रु ॥ उहां जंतां ही जांणि ॥ आपणी आपणी सब कहै ॥ दोहा ॥ बिड
दबत्र घा रीं १२ पार नदै वे आपणो ॥ गो पार कमन मां हि ॥ दोहा ॥ को
ई आव है केते आवैं जांहिं १३ गुरु गेका गुरु का कहै ॥ मन जांणत
है धर ॥ गुरु सार मां ई न पी वत ॥ सा मुख कहया न जाइ १४ दोहा ॥ ये क
जौ नके न ता कें ता कहै ॥ गुरु सा ब्रह्म साध ॥ बेद कतेबां मिं तिन
हैं ॥ पुण्य ति ते ये सब साध १५ दोहा ॥ मे राये क मुख ॥ कीरति ज्ञन तक्ष
पार [illegible] के [illegible] मिति न हीं ॥ रहे बिचारि बिचारि १६ सक [illegible]
सिरो [illegible] नां म से ॥ वे हैं नै मा नां हिं ॥ दोहा ॥ कोई नां लहै ॥ केते आ
वैं जांहिं १७ दोहा के ते कहिं गये ॥ [illegible] ॥ दे मस [illegible] कह

तेजातेहैं ॥ केतेक हिसीहार ॥१८॥ दादू मैं काजांनौं काकै संगि सम वृति
ये का बात ॥ काजांनौं क्यूं हीं रहै ॥ मोपै लष्या न जात ॥१९॥ दादू केते चं
लि गये ॥ थके बहुत सुजांण ॥ यौंतौं नांउं न निकसैं ॥ दादू सनमुख हैं राम ॥२०॥
नां कहीं दिष्या नां सुण्यां ॥ नां कोई आषणहार ॥ नां कोई उथौं थी किस्या
नां उरवार न पार ॥२१॥ नहीं मृतक नहीं जीवता ॥ नहीं आवै नहीं जा
इ ॥ नहीं सूतां नहीं जागता ॥ नहीं भूषा नहीं धाइ ॥२२॥ तंतहां चुप न बो
लणां ॥ मैं तैं नांहीं कोइ ॥ दादू आपा पर नहीं ॥ न तहां एक न दोइ ॥२३॥ ये
क कहूं तौ दोइ है ॥ दोइ कहूं तौ एक ॥ यूं दादू हैरान है ॥ ज्यूं है त्यूंही देष ॥२
४॥ देषि दिवाने हो गये ॥ दादू षरे सयांन ॥ यौं तौ नांउं न निकसैं ॥ दादू है
हैरांन ॥२५॥ दादू करनहार जे कुछ कीया ॥ सो बूझै करि जांणि ॥ जे रे च

...प्रेम्रा

घरे मांहि मिथ रह्म समांन । मन ताजी चेत्यं नच्यैहै ॥ ज्यौं कीक रेत्न मांम
॥ सवट गुरु का ताजणा ॥ को ई पक्के चे मांधमु जांण ॥१०॥ किं हिं मा
रग के आइया । किं हिं मार गके जाइ ॥ दादू कोई नां लहै ॥ केतेक रै
नु पाइ ॥११॥ सुंनहिं मारग पा आइया ॥ सुनहिं मारग जाइ ॥ चेत निपै
मा सहज का । दादू रक ज्यों जाइ ॥१२॥ दादू पार ब्रह्म पैं पाइया ॥
सहज सुरति लै सार ॥ मन का मारग मांहि घर संगी सिरजनहार ॥
१३॥ रांम संक है जिंस जांन सौं ॥ अमृत रस पीवै ॥ दादू इ जां छा नि सब ॥
लैं ला जीवै ॥१४॥ रांम रसां इं नपीवतां ॥ जीव ब्रह्म कै जाइ ॥ दादू आ
सरांम सौं ॥ संसार है ज्यों ॥१५॥ सुरत्ते सवारां संनमुष रहै ॥ जुगि जुगि
जन पूरा ॥ दादू प्यांसा प्रेम को रस पीवै संसूरा ॥१६॥ दादू जहां जगत गुर

रहै तूं है ॥ तब लग जे सुरति सिमटि आइ ॥ तौ इन नहीं मैं नकं उलटि करि ॥ कौं
तिग रै थै आइ १७॥ अषंड पसंसा के पिरी ॥ निरं उलंघं मंकि ॥ जितै बे
गे मंा पिरी ॥ निहारी दै हंफ १८॥ दादू उलटि अपूठा आप मैं ॥ अंत
रि साधि सुजांण ॥ सो ढिग तेरा बावरे ॥ तजि बाहर की बांणि ॥१९॥
सुरति अपूठी फेरि करि ॥ आतम मांहैं आंणि ॥ लागि रहै गुरदेव
सूं ॥ दादू सोई सुजांण ॥२०॥ जहां आतम तहां राम है ॥ सकल रह्या
भरपूर ॥ अंतरगति ल्यौ लाइ रहु ॥ दादू सेवग सूर ॥२१॥ अंतरगति
ल्यौ लाइ रहु ॥ सदा सुरति सौं गाइ ॥ यहु मन नाचै मगन ह्वै ॥ भावै
ताल बजाइ ॥२२॥ दादू गावै सुरति सौं ॥ बांणी बाजै ताल ॥ यहु मन
नाचै प्रेम सौं ॥ आगैं दीनदयाल ॥२३॥ दादू सब बातनि की एक है

...र मेरे तकिये मेरे रू । कहै सिरजनहार २०५ दादू मैं हीं मेरी जाति
मैं मैं हीं मेरा अंग मैं हीं मेरा जीव मैं आपंक है मेरा २०६ दादू सबै
दिसा सो सारिषा ॥ सबै दिसा मुष [illegible] दिसा [illegible] सुरौं । सबै दि
सा अंगे नैन । सबै दिसा पग सिर है ॥ सबै दिसा मन चैन ॥ सबै दिसा सं
न मुष रहै ॥ सबै दिसा अंग [illegible] २०७ छिंन मष्वै [illegible] तबै कछु सुरौं ॥
विनने [illegible] बदं [illegible] । विंमरस नो [illegible] कुबतो [illegible] । एक दादू [illegible] चि
रजा [illegible] अंग सब ही गोर सबै । [illegible] सांर को हे गहे [illegible]
सु [illegible] बंदी हांर २०८ कहै सब गोर [illegible] सब गोर । रहै सब गोर
जो [illegible] । नैन सब गोर बैन सब गोर । अंग सब गोर । सोई [illegible]
जो नै ॥ सा [illegible] सब गोर । [illegible] सब गोर । चरणि सब गोर । कोय एक माने

अंग सब गौर । अंग सब गौर ।। सबै सब गौर दादू भ्यौ मैं २१० तेज ही कह
णं । तेज ही गहणं । तेज ही रहणं सारे ।। तेज ही बैनां तेज ही नैनां ।।
तेज ही अंग नदं मां । तेज ही [illegible] तेज ही षेलां । तेज अंग केलां । तेज हि
तेज संवारे । तेज ही देवै । तेज ही देवै । तेज [illegible] षेवै । तेज ही दादू तारे २११
नूर ही का धर ।। नूर ही का घर । नूर ही [illegible] रूप मेरा । नूर [illegible] षेलां । नूर
ही षेलां । नूर अंग केलां । नूर संग [illegible] बसेरा । नूर ही ठौ कंत संगा । नूर ही
का संगा । नूर ही का [illegible] नेरा । नूर ही राता । नूर ही माता [illegible] माता
दादू तेरा २१२ दोहा नूर दील [illegible] अंग रवा ह का तहां वैसे [illegible] । तहां
बंदे की बंदगी । जहां रहे मौजूद २१३ दादू नूर दिल अंदर वा ह का
तहां षालिक नर पूर । आले नूर अजात का । पिजमति [illegible] दादू जेर २१४

वचछिनकहरिजाहीं ॥ [illegible] बिरहदशा गोपी बाधवक्षमा ।
निजोगी जरक हि बालकरांम षटदशा । बेकुंठांनी औ गुनध
र ॥ [illegible] ॥ मनचीटौ फिरिबो कर ॥ कायाकुम मधि [illegible] ॥ मा
[illegible] ॥ [illegible] करां [illegible] चित होंइ ॥ १ ॥ अउजाहि पंच
[illegible] हजे । पांसो ॥ तो किंजे सा प्रीति त्यागि निते सो
प्रकार जो [illegible] कौडी कौडी लागै ॥ घटि बंधद
प [illegible] पासी ॥ त्रवूरी बीछू छपन [illegible]
[illegible] रसनां जपि जागे ॥ मुनि को सुषेम को सहजमे को
मनका तिहि बार जा ॥ कहि बालकरांम कै सांट सांट षेटा दा सो
रज [illegible] ॥ ब्यापक [illegible] गानि ऋंधूकार को बिरोधी नांदि महातेजे
ताकौ क छू बाधक न न कहिये ॥ जैसे एक पृथी मांहि चिकट

तास्मृ क्रिकरूंजेमेयेकजलविषेसिवालकहइंये ॥ जेसेंप
कंदेमविषेभ्रोंमम्मांहैंबादरजभ्रोरसुगौरसुधलाहिसिधप्रल
हिहै ॥ ऐसेयेकचेतनभ्रजांमभ्रविरोधीनावकहतेबांलक
रांप्रसांची सुधग्रहिसे ॥ १० ॥ कैतो [illegible] नरगस्मानाना ॥ न
त्याग ॥ कुवरीकोपीनकें [illegible] मनलकोट बो ॥ कैतामनेनो
रांजसाजमेंनो चतरंगीसंगहाथीरथसुखपालदलजेवा
टको ॥ कैलोमनेनोदानादानकैतोमनेनोज्ञानवां [illegible] बा
लकरांमबचनविराटको ॥ मनधजनमपाइकेंदृमानजां
नंकरधोबाकेसोकूतोजेमेंघरकोनघाटको ॥ [illegible] चेतन
हींकरिचेतनिहैसबपिंडब्रह्मंडबिराटजहांलों ॥ चेतनि

हीकरि लोकत्रजै सरब सुरगा कुमत पतालन हांलौ । चेतनि
हीकरि श्यामसुरजंगामकीटपतंगाबुझांछि हांलौं ॥ चेतनि ब्याप
कं सरब भिरंतरमालकरंमक्कहैनुक हांलौं ॥ १७ ॥ छपय ॥ गी
ताहे मैनुष्मनन्तैं [illegible] नप्रतिगायो ॥ प बबिसेकोलाग प्रघ
लोगोजनगायो ॥ बर रांच्छा भोमस्त्रो जिसीनै हेस्वस्त्रं हैनावनको
नै ॥ [illegible] बिक्कारसंघालताहिंधिनजैगारंमांनै ॥ [illegible] नैनमम्रृतरो
पड़सम [illegible] मारै संतबित ॥ कहै बालकरांमजू लैनहीं पान
नक्रिबैय सबित ॥ १८ ॥ हिंदुतुरकनजूमितुरकहिंहमदीपांनी.
हिंहुतु [illegible] नजग्या निसमकिबिनकुयांत्र्यस्तानी ॥ हिंदुतुरकनप
तुमतुरकै हिंदुनजन्नकासा ॥ चंदसूरनपछिमतितिदिनकरैस
कासा ॥ [illegible] सासनमहिहिंदुतुरकनजांनियै ॥ कहैब.

लकरंमपायोमरमबरनस्राग्रमनरमनांमियै ॥ १९ ॥ पंकित
मोंनहिंप्यारस्क्रधिकम रपकोंस्रापूर ॥ पाषंडीसोंप्रीतिमंनमतके
रैनिरंतर ॥ बगलाकोबडंमोंमहंसहरिजनगुणमाथो ॥ केशईकम
न बटंगुनोकामनाधायुयत्नोमें ॥ [illegible] ॥ मुता
साहचोरसबसोंरषा ॥ कोंचि[illegible]वारांमकोमति ॥ बिनामहंतना
रीनहीपारैस्या ॥ २० ॥ चौदहलोकबषांनिबेदन्नागोतमुनाव
मपतेलोकस्राकासमपतपातालबनावै ॥ भूरलो[illegible]पुदमहंन
नमपमनलोकसुंचै ॥ अमतलबिलजमुतलरसातलमलातल
महातलपातालसुनोंचै ॥ अरूमेमनमगाबैकुंठवलो[illegible]रधवर
धरमकूदिमाचेमनकेस्राधारिमवकहिबालकरामनवापक
इमा ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]मगलातुलसीदि[illegible]ानाहूरा

हमीजी माहोसुत राग पचो धी बनमालौ है ॥ पंचमी फट कम
ल्लि जीया पो मक छोमु सिसात मीक्र पूरमैनी आगभीर मालौ है
बै लोंपुरंवक्रीन जगात जपत आप हन कें फिरांयें जम रूर तन
सां ॥ वसंसौ चासमौ ईसाप कहम बालकूरंम ॰ ना लोसोई आ
लौ ऽ कैसा चमील चालौ है ॥ इति श्री रागपंचमी ॥ अब तिमूलमि पंच
हसंकुर वसंत मधु माधी बकरी सूपं छां ॥ नितत्व मुनि निहंचे रा
षी ॥ कानि मरोतासु नकु चालनी उष्टर मांनों ॥ जैसा वृषनस
मान चीनलीन हुतानांनों ॥ आरु जैमै क्रुरंग सील मुष बकजा
ध्यंतन जीगुरहै ॥ एतेरह फोतांपण मैसु बालक रामश्रै सेंक
है ॥२२॥ पावरप समानउ ॥ इमसि बिदेला पादै धरमने

तान्क

मपुनिस्पानदेहधरिहोइनआवै ॥ विषईबंहेभागाकमकु
विखरागाहिंयांक ॥ मुमोक्षीनजिरांमनंतिकिहरिजागतामिटै
कं ॥ ऊकजीवनमुक्त मांनांकहोमननमैकहूरकांमनं ॥ कं
हिवालक्षोमनाकोनहीतोकहेंदमेंअंमना ॥ श्रु ॥ मे [illegible] मक
कहीये सास्त्रकेकरताजेमुनिरिषैमेसकसास्त्रकेकरताहि [illegible] कंचां
मानियें ॥ न्याइसास्त्रकेकरताकहियेंगोतमंकणादतेजसे
सास्त्रकेकर्तामसजीप्रवांनियें ॥ माषिसास्त्रकेकरताकहिये
कपिलमुनिवेदांतसास्त्रकेकरताव्यासदेवयामानीयें ॥ येइस
टसास्त्रकेकरताकहेमुनाइ [illegible] कहतबालकस्मृ [illegible] रचेता
दिक्ञानियें ॥ ७ ॥ ऐसेमैकांकंकंजरनाकेहलीवंधौंपरआ

हुस्यापनैं सूरूपनूली कुंजरपुकारै हौ वरणावाज्यो नैगटह्या
क्मारकौ हौ छिनतेभिलादेनारस्यापटल संज्ञारै है ॥ पूरबसह
क्मारकौ हौ छिनतेभिलादेनार क्मारस्टो मारिकैपद्छो रै है ॥ स
क्कार तै है स्यो वतू वत्याद हसकुक्मारस्टो मारिकैपद्छो रै है ॥ स
हांता रसम हरमेपहूलो वैरतवकै हतबालवकरामनबांध्यो राज
हो रह ॥ २६ ॥ सतमेनकनीकनमागि दूरिसवाष्यारो ॥ दूई जोगस
क जोगते हमाकै गूहनारी ॥ दरसजनम्यावै कोइगाहमूरणाकोदेवे
क्षांनदे थिरानिजुसै देरिकारणाकोम्यावे ॥ तबरोटी पूलो बसलेन्न घा
यो गै म्याथिर ॥ कहिबालकरां ममहापुर्ष कोजज्ञासी दरसनकरै ॥ २७
वैरहस्यौ ध्यानचोदहविषै म्यनूत ॥ चोदहदेवम्याधिदेवरपुटास्तार वि
हे ॥ पंचतत्त्वती निगुणाम्यविलबुद्धं मध्यमपंचकै सजीवनांमकी यो
ध्याहिचे ... ॥ ... ॥ बयालीसजोगतमें फुरै ... सुपनमें बिधिन्हति

२

सुषोपति अधकार है ॥ तुरीया चेतनि सो की कहत बालनंद राम ॥ व्यापक
अषंड येक सरब का आधार है ॥ २८ ॥ काहे कौं तूं जप करै काहे कौं तूं तप
करै काहे कौं तूं ब्रत नारि जम मरै बावरे ॥ काहे कौं तूं जोग करै काहे कौं तूं
जग्य करै काहे कौं पारायण करि थाथो बैनावरे ॥ काहे कौं दिहि [illegible] गारे गो
बिंद तैं हरि ये रचौ संसार मन फेरि देषै दिषावरे ॥ कहत बालनंद राम
भजि ये जग राम नाम काहे कौं करत ओर बाबधि उपावरे ॥ २९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ छपय [illegible] ॥ स्वामी दादू माधव आदि धरम हिर [illegible] ॥ [illegible]मी
तसे मो म [illegible] गो [illegible] चास्यो ॥ ग्यान षंड गगहि तुरत [illegible] पंचो [illegible]
मारे ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह दल सबै संघारे ॥ पुनि [illegible] सतो स
त [illegible] गो मनो र ॥ ग्यान ध्यान सुष देव जि [illegible] बालनंद क रा
मजि [illegible] स्यंव ॥ [illegible] ॥ आदि [illegible] गत औ नार [illegible] काहि [illegible]

नजि मायं गुण गाइ ॥ तहां आदि पुरिष अवलेष है । सह जैं स्यो संमाइ
२० दोहा ॥ षेत [illegible] हां बी नू पाई रे ॥ जहां जरा अरु [illegible] जुरा मरन
मडू जाडं सी । राषे आप पूं सह ॥ २१ दोहा ॥ साषि [illegible] तैं । मफेर ब
[illegible] ईकै बिचार ॥ २२ दोहा ॥ साषि [illegible]
[illegible] सार । [illegible] गा [illegible] सैं ॥ [illegible] ई साधु २३
तैं । आहे मफि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] तति
[illegible] साषि [illegible] तैं । [illegible] । [illegible] हमैं [illegible] ति
[illegible] २४ दोहा ॥ साषि [illegible] तैं ॥ [illegible] पसु ॥ [illegible]
रबानी [illegible] । [illegible] मुष २५ [illegible] तीनो [illegible] ॥ [illegible]
ता चि [illegible] जाइ । [illegible] मिल्या । [illegible] दोहा [illegible]
[illegible] ॥ जब [illegible] ॥ [illegible] दोहा [illegible]
माइ २६ [illegible]

त्सा तार्हि कैं पेषै २१ दाहू बिन नर सनौं जैहां बोलि लियै ॥ तहां अनंत
र नांभी कौल ॥ बिन तत्त्व वैनौं मांहे मूलौं ॥ जिन कौ छ की जै जाप २२
ज्ञान तत्त हरि जोलं पैं दैखै ॥ बोलौं तत्त पुरुष कौ मन ॥ अनंत जैहां बैठै सौ
पंडै धूं बैठै कीयौ ठिकांणां ॥ सो ग्रंथ दीप विचार ॥ तहां निर्गुण
वास ॥ तहां दादू ध्यान रहे ॥ पुरुष आप बैठे बास २३ तहां तत्त मन
का मूल है ॥ उपजै कै कैकार ॥ अनहद सै सेका धूनि कौ ॥ २४ ...
करै विचार ॥ मानुं नाहि जिनि कौ पूजे ॥ सो साहू हर निरंजन सार ॥ तहां
दादू निधि पाई रे ॥ निरंतर निरधार २५ रे कौ मैं रस कै सदा ॥
निरकार निरंतर तांसे ॥ तहां निरंजन पूजि लै ॥ अजरावर ति
हि मांहे ॥ साधू अंजन सीला करै ॥ निर्गुण पति हि मांहे ॥ दादू दास

कीहरितैजांनां ॥ आली बिकार लगान हिंनौ की अवसामीतुसा
मोक है चलरांनां ॥ फाल्गु की छोति नमांनैन को कुंजी न चदी
रोटी ॥ ३ ॥ सूहस्यंफरनी ॥ प्रभु दरदरस करै कहीजाइ कै संगलहोइ
नतुष्ठिकोहांनां ॥ ४ ॥ हिकलतहोरचानी ॥ जाउरूम हिकाद ॥
होरहांबा मदहाये ॥ हिकलोहोरचाहै बिरहीजन ॥ हि
लोहोरहे मेवकंजाये ॥ हिकलाहोरहे चां [illegible] सौठेवस ॥ हि
लाहोरहे मेवांसगाहै ॥ कोई कबात जलाजे [illegible] होरहोगो [illegible]
प्रभुदरदेहै [illegible] जाये ॥ ५ ॥ औरतदेसनले पूर्बदीह [illegible] भया
जगातम्यामी ॥ ६ ॥ अमह छोति मुवंती संमौ की नियै [illegible] बलाई
रकककमनाटते हांमी बिबेक बिचारैक छूनसीदासनमो

ललतकूपकजहांतहांरांमी ॥ सुंदरदासचलौनतहांअबकाकिये
ज्ञोअबरहोगेतोहोइगीजांमी ॥५॥ दृष्टिनमीरमेतनचौरसु
देसतमैंगनदेसहैमारु ॥ पांवनैमोघरजुं तुमैंअतिआबि
भैंआइपरेसुंअनिर्धीरु ॥ रावरवाछियपीवैमकोईजीनादी
नेघाजिरतिमुनारु ॥ सुंदरदासदरसोजिनिदै विकुंबानीक
विदकौंतिचारु ॥६॥ मालवादेसजनौजिनहीतिनामि
पोतैंसोग्याजेसगारगवतजासीहै ॥ वृष्टिजनतरुली
बैरसुंदरसतबिरंजेतहांहीनै ॥ मदामुकामजेकाल
सुमालदेसनलोभबहीनै ॥७॥ पूरबपांछिमदौजेनहै
देसविदेसमिलैतबमानै ॥ केतेकज्योंफिरेपरमांहि

मु चितै माया मन दादू ॥ परम पुरिष पुरातनं ॥ चिंतत सब कोइ लहै ॥४७॥
दादू सब जग बिष भरया ॥ निरबिष बिरला कोइ ॥ सोई निरबिष होइ
गा ॥ जा के नांव निरंजन होइ ॥४८॥ दादू निरबिष जीव [illegible] ॥ तन मन
नह कैसे होइ ॥ तन मन निरमल करैगा ॥ दूजा नांव न कोइ ॥४९॥ [illegible] ति जब
उपजै ॥ तब माया ममता तिरिषा जाइ ॥ दादू [illegible] मन गया ॥ [illegible] बिलिम
रन साइ ॥५०॥ दादू बिषै बिकार [illegible] ॥ जब लग मन राता ॥ तब लग चीति
नहिं आवै ॥ चिंता [illegible] ॥५१॥ दादू कांइ जांणों कब [illegible] ॥ हरि सु
सिरताज कै तार ॥ [illegible] ॥ [illegible] मन बिषै बिकार ॥५२॥
है सो सु सिरताज [illegible] ॥ [illegible] ॥ दादू एक तन [illegible] गया ॥ कंद
करि पईये राम ॥५३॥ दादू राम नाम [illegible] ॥ [illegible] कोटि बिकार

बिषै सब व्याधि हैं कैवरै ॥ काया कंचन सार ८४ ॥ दादू रंग संगि नांम निज मोह
नी ॥ जिनि मोहे करतार ॥ सुख संग संकर सुनि जनां ॥ ब्रह्म सासि हि बिचा
र ८५ निरबिकार रसे जनां वै ॥ जीव निहचै न पाइ ॥ दादू करत मकाल
है ॥ ताके निकट न जाइ ८६ ॥ मन पवन नां [illegible] सुरति सौं ॥ दादू पावै स्वा
द ॥ सुमरण मांहि सुख घणा ॥ छाडि देह नक बाद ८७ ॥ नांव सम कोई [illegible] जि
या ॥ सब जग निगुन गाइ ॥ दादू सुमिरण [illegible] ॥ हेत सहित [illegible] जाइ ८८ ॥
प्राण कंवल मुख रांम कहि ॥ मन पवन मुख रांम ॥ दादू सुरति मुख रांम क
हि ॥ ब्रह्म सुनि जव रांम ८९ ॥ दादू कहत [illegible] रांम कहि ॥ [illegible] तारांम
[illegible] रांम कहि ॥ आतम कंवल बिश्रांम ९० ॥ दादू [illegible] जनै [illegible]
मे ॥ [illegible] ॥ [illegible] रांम मसौं ॥ मन हैं साधे कोण ९१ ॥ [illegible] रांम

उस चोर की ॥ मैं बलिहारी जांउं ॥२२॥ दादू पसु पिरंनि के, पेहा मकि
कलूंब ॥ ज्यों साहिब बिच मैं पाया जो मंहबूब ॥२३॥ नैनां [illegible] वाला
निरखि करि ॥ दादू घाटे [illegible] तब ही पावैं राम सनेह ॥ निकटि नि
रंजन नाथ ॥२४॥ [illegible] बिन [illegible] के नांही ॥ [illegible] ताकत हूं जाइ ॥ दा
दू धन पावै नांही ॥ [illegible] ॥२४॥ जहां [illegible] तहां राम
हि ॥ [illegible] नरपूरि ॥ [illegible] ॥ दादू सेव ग
मए ॥२५॥ पहली [illegible] ॥ पीछे [illegible] दिखाइ ॥ दादू [illegible] के
मार सब ॥ सुख [illegible] रहे समाइ ॥२६॥ [illegible] ॥ नै [illegible]
सू के न [illegible] ॥ [illegible] ॥ दादू मोटे जाग ॥२७॥ [illegible] पिंडी
[illegible] ॥ तास [illegible] है ॥ मैं
म [illegible] बारी कहै ॥

बलिहारी जांउं ॥३८॥ दादू कत्या चांहे प्रेमरस ॥ आलै मक्कै गिर
नार ॥ हजे अर्क ता सरनहीं पूछ पैगंबर मसाइ ॥३९॥ भांडी के क
रिमां ते ले ॥ कउम कहीं कहा हरि ॥ माहिं बैराजका सेज परि दादू औ
हरे ॥४०॥ जहां राम तहां मैं नहीं ॥ मैं तहां नांही राम ॥ दादू महल बा
री कै है ॥ द्वै कौं नांही ठांम ॥४१॥ मैं नांही तहं मैं गया ॥ पर के कै हूं मरे मो
हि ॥ नांहीं कौं गहर है पीया ॥ दादू निज घर मांहि ॥४२॥ मैं नांहुं तहां
मैं गया ॥ आगे देख अजाउ ॥ दादू छे से बंदगी ॥ हजां नांहीं आत
४३ दादू आप जब लगै ॥ तब लग दूजा होइ ॥ जब यहु आपा मि
टि गया ॥ तब दूजा नांहीं कोइ ॥४४॥ दादू है कौं मै घणा ॥ नांहीं कूं कछु
नांहि ॥ दादू नांही होइ रहु ॥ आपण मैं साहिब मांहि ॥४५॥ दादू तीनि सुनि

आवीर की सोथा निरगुण नाम सहै उन तुनि में रमि रह्या । जहां न हो
सब वो रे ४६ यो चमत के पहे है । आव तन के आव । आवै तन को प
कहै । तहां निजि न हो ४७ जहां मन न मायौ ॥ गुरु ... डी
आकार । तहां ... चै ... निपै । रचि रह्यो निरंजन हरि ४८
का या सु निरंच को ॥ ... प्राण प्रकास । ... सु
... ४९ तहां ... सब ... पहे
... ॥ आ ... आप ... प्रकास ॥
... सुर आकास ॥ ... को । धरती ... प्रकास ।
... ॥ ... सु मन ... । तहां ... रहित तार ...
काल ... जीव ... सहज सुनि में सब ... हे । सब ... ...
रंम है । सहज सुनि में सब ... ५० सहज सुनि में सब ... ५१ दाद
... माहि । तहां निरंजन रमि रह्या । कोई गुरु ग्यानी ... ५१ दादू
वहां माहि । ...

तिस सरवर के सार ॥ मोहन सुमात ता चुगै ॥ पीवै नीझर नीर ॥ सो है हंस
मासा मु गो ५२ दोहा तिस सरवर के तीर ॥ जपतप संजम [illegible] ॥ त
हां मन मुख सिर [illegible] हार ॥ प्रेम [illegible] ५३ दोहा तिस सर
वर के तीर ॥ संगी संतै मुख हां [illegible] ॥ तहां बिन करि बाजे बेन ॥ जि
न्याही लै [illegible] ५४ दोहा तिस सरवर के तीर ॥ च रंगा [illegible]
चित्र लाईया ॥ तहां [illegible] तिन जिन पीव ॥ [illegible]
५५ दोहा सर जम सरोवर [illegible] ॥ [illegible] कै [illegible] ॥ सुष सागा
[illegible] ॥ मु कता हंस मन मोत्त ५६ दोहा हरि सरवर पू
रंगा सबै ॥ जिन तिन पाणी पाव ॥ जहां तहां जल [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ५७ [illegible] ॥ [illegible] नीर ॥

[illegible]

प्यास बिनां पीवै नहीं ॥ दादू हंसा तीर तीरैं ॥५८॥ सुभर सरोवर हंस मन । मो

ती आप अनंत ॥ दादू चुगि चुगि चंच भरि ॥ यों जन जीवैं संत ॥५९॥

सुभर सरोवर मानसर [illegible] नांव निरंजन देव ॥ दादू यहु रस बिलसियै

के साधु [illegible] ॥६०॥ सुभर सरोवर मन मगन [illegible] ॥ तहां काक बक क

[illegible] सिरजनहार ॥६१॥ सुभर सरो

तीर ॥ दादू पुरि मल [illegible] ॥ दादू चुगि चुगि [illegible] ॥

वर संत हं [illegible] ॥ नहां मन रजो [illegible] सरोवर बिमल [illegible] ॥ हंसा को

जौ संग हरि [illegible] ॥६२॥ दादू [illegible] सरोवर [illegible] हंस [illegible]

लिकै सहि [illegible] ॥ [illegible] चुगै ॥ [illegible] हंस [illegible]

बंक सरोवर [illegible] ॥ हंसा सरवर [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥६३॥ दादू दरिया प्रेम का ॥ [illegible]

प्रघर ॥ [illegible]

दोहा ॥ इक कन्या आतं पुत्र आल्मैं ॥ गोविंद मेक रस सदाइ ६४ दोहा हिंगा दरि
याव ॥ मो गोविंद कमं मर्फे इ ॥ तु बांके इ पांणा मे ॥ फिरि गोह फेरै ६५ सु आ
तम मैं आत्मा ॥ आहं ममग वूर मो ॥ दिंने मे हि जिंनि घले पीवु सं ॥ दोहा
इस वनो हि ६६ दोहा मर वूर मद्द जका ॥ ना मै मैं मत संगा ॥ तहां मन कूं
ले आतमा कू पांणी मांड मसि ६८ दोहा [illegible] निं मंपा वकं ॥ इ सर देखौं नां
हिं ॥ मवे दिसा सो सो धिक रि ॥ दा [illegible] घर ही मां हि ६९ दोहा देखो लिं ज
पीव कं ॥ और न देखौं कोइ पूरा देखे [illegible] तकूं [illegible] हरि [illegible] तरि सा इ ७०
दोहा देखौं निं [illegible] ॥ देख त [illegible] ॥ [illegible] पीव कं ॥ सब मे
र स्या लं मा इ ७१ दोहा देखौं निं जं पीव मैं ॥ सो [illegible] देख [illegible] देखौं
पीव मैं ॥ [illegible] ७२ दोहा [illegible] कूरस्या नर

तहां बसै रामराइ ॥ गंगा जमुन कै तीर ॥ त्रबेणी संगम मज्जहां ॥ निरमल
बिमल तहां ॥ निर्मिल निर्मल निज नीर ॥ ४ ॥ अगम अगोचर ब्रह्म टिकहां ॥ तेज पुंज
र [illegible] ॥ अगम [illegible] अनभै ति ॥ तहां बसै प्राणपति ॥ परसि परसि
निरंजन [illegible] ॥ [illegible] ॥ मिरि [illegible] अति जतन वारंवार संगुनि
सरोवर जहां ॥ [illegible] ॥ [illegible] सार है [illegible] बिलसि निज सार ॥ ५ ॥ ४४
गो [illegible] माया ॥ अगम [illegible] नदी ये ॥ छा
या न ही [illegible] या ॥ [illegible] ॥ अगम [illegible] मूर ॥ अगम [illegible] र ॥ का
लकाल [illegible] जीव न [illegible] काया ॥ आदि [illegible] ती कोइ ॥ राति दिवस न
ही होइ ॥ [illegible] मन [illegible] ॥ मन नदी [illegible] माया ॥ ६ ॥ अगम गुरु अगम [illegible]
न ॥ अगम पुरि [illegible] ध्यान ॥ अगम [illegible] ध्यान ॥ सहज सुनि [illegible] माया

अंम्रत नूर अंम्रत बास ॥ अंम्रत तेज सुख निवास ॥ अंम्रत जोति दि-
ह स्वास ॥ सकल जगन्नाथ नरायन ॥ २४५ ॥ राम की राती भई भांती ॥ लोक
देव बिधि धिनंग्रेद ॥ ज्ञान सबब्रह्म सिमेव ॥ अंम्रत नर ... [illegible] ॥ ... [illegible] ॥
सब काल काल छुटेस ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... बीदि ॥ हरि
की सुधि पाई ॥ प्रांन पद मनजे ... [illegible] ॥ अंम्रत ... [illegible] मिले ज्ञान ॥ प्रेम
मगन नर हंस मोह ॥ बिलसे बपु ... [illegible] ॥ प्रेम ... [illegible] ... प्रेम पुंज
पुंज सेज ॥ प्रेम जोति प्रेम हेज ॥ सुंदरि सुख पाई ... [illegible] ... पुरि ... [illegible] ... प्रेम राम
प्रेम लाल सुख बिलास ॥ प्रेम प्रेम ... [illegible] ... दास ॥ पाव ... [illegible] ... लिखि ... ले ॥ ...
इति श्री भारती ... [illegible] ... ॥ इंद्रजीत बिंद्रावन भारती राम की की
जे ॥ अंम्रत ... [illegible] ... नंनाली ... ॥ ... ॥ तन मन चंदन प्रेम की

माला ॥ अंजन हरद घंटारांनदयानां ॥ १ ॥ जांनकादीपक यवंनेकीवा

तीदेवनिर्जन पंचौंपाती ॥ १ ॥ आंदंगगनन्त्रावकीसेवामानसाम

[illegible] ॥ [illegible] ॥ जगतिनिरंतर सैवं हिविहारी ॥ काहनओ सेंसे न

[illegible] ॥ [illegible] तैसे चरनकवलप

रिवारीफारी ॥ [illegible] दीपक [illegible] नजोति

बिचारी ॥ १ ॥ घंटाबाजे [illegible] बाजे ॥ अंग [illegible] आरती गगन

मंजे ॥ १ ॥ [illegible] सिमेतीजै ॥ पजपप्रीतिहरि नावरिली जे

नु ॥ मेदमार आरतीसूजादेव निरंजन की और नहजा ॥ ४ ॥ नावस

गनिसू आरती [illegible] हिंनिधि [illegible] जुगिजुगिजीजै ॥ ५ ॥ १ ॥ ॐ

बिंमत आरतीदेव [illegible] ॥ जुगिजुगिजीवं नरांमहमारे

रैदा॥ सरं नमी चंवजमकालननलागो॥ आदांगंवेनमकरवनमिना
गो॥ १॥ आनीजाइवजननमननहीआवै॥ निरखेनागं अंमृपदपावै॥ २
क॥ तिबिषकुसमलंबुधनकाये॥ पारियडंचेपितिकंविप्रावे॥ ३
अंनेकउभरे तेडंनलो॥ [illegible] आर [illegible] हिवीवधु॥ निर
रतेरी आरतीअंननन [illegible] नकोगइ॥ टेक॥ [illegible] नोसबैसेवाकरे
बुसाविलंमहेस॥ देव [illegible] जंगी॥ पारन [illegible] सप्रे म॥ १॥
चंदनमेरआरती॥ करैं॥ मोनिंरंजनदेव॥ २॥ [illegible] का
सआराधेमवेदमा [illegible] सेवा॥ ३॥ मकंदजावनसेवाकरैं॥ मुनि
पुरसि [illegible] समापि [illegible] नलोजकैरहेमतडांत॥ अवगति [illegible] आ
राध जैकंकीवंनरामहमारी [illegible] किकरैलोलाहनिराकार

की आरती कीजे ॥ दादू बलि बलि जाइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ तेरी आरती ए जुगि जुगि जै
जैकार ॥ टेक ॥ जुगि जुगि आतम राम ॥ जुगि जुगि सेवा कीजिये ॥ १ ॥ जुगि
जुगि लंघे पार ॥ जुगि जुगि जगपति कौं मिलै ॥ २ ॥ जुगि जुगि तारनहार
जुगि [illegible] ॥ जुगि जुगि जो [illegible] चार ॥ जुगि जुगि दा- ३
दू गावै [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ जे ते गुण व्यापै ॥ ते ते तैं ते कोरे मन
मा [illegible] कारनै ॥ [illegible] ॥ दादू दीन दयालजी कपि या [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] के पावै [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ काल [illegible] रे मो [illegible]
[illegible] कीजे ॥ [illegible] ॥ काया [illegible]
[illegible] जानी ॥ [illegible] कारनै

प्रांनी ॥ ऐसी साधि विधि ज्ञान ज्ञांनि जीय सुमरन सुकृत कीजिये ॥ कहे
बालक रांम मंगल मंगल सि जिज न सुफल करि लीजिये ॥ १७ ॥ दोहा ॥
जैसे बांझ को मनोरथ पुरुष करम संग ॥ बालक [illegible]
पै [illegible] है ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ तैसे [illegible]
[illegible] ज्ञांन ॥ कहे बालक रांम [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ज्ञांन [illegible] को [illegible]
प्रांनी ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] को सुनि [illegible]
[illegible] बालक रांम [illegible] को ॥ २

मासा किल कंनन क्लिन क्लिन ही छापा टीये ॥ नइ नेषनें वी नक्लि
नक्लि रामा तन मंक्षी ये ॥ मृक्लिन हीपट कृ मन्न मन्न हे ऋद्धां गी ॥ नक्लि
न कुं श्रा श्री स्मार मृ तं बकु पांनी ॥ द्रौ नक्लिन हा कछू न नू कनन
धन्तु गमे ॥ कौप ब्रिनानक स्या कों हे म्नां ये म बिनां मृ ब्रस
कौ ॥ घं ॥ म हां दिवं हा नक्लि न गं तौ नि छे ॥ ऋ र ध र ग ॥ क्लस दि क
हा कि क्लि न क्लिं मनं का दिक श्र स्य गी ॥ मूल स्क ब दू चारि चा रिक्ला
धा पीले ॥ श्रो र स्व न न स क्ष पार न्मा तन मुं बिन पं मानें ॥ श्र ब श्रादि
श्रति मधि पं अस बकु जु नु जज नें की ये मद्य ॥ कहै आनन्द कारो मति नके
किं मां ये घं पं एण ए मृ मं पृ श्या ॥ प ॥ जो गी जंगम श्रा दे प्रथमि मि साधान दें
द्रगकें ॥ सं न्यासी श्री पान कहैं हो सा मा किन कनन के ॥ जो न श्र र मदें

मा मा

जतीके सस सिर लौ चक्र रावैं। औरा किते कलि माहि विकृत माया नर
पावैं। जे देहधारन सब देह परि आत्म अज्ञान रौ जागा पिता। कहै बाल
कज्ञ मैं बियो हार मैं बिना ज्ञान न मूलै कित। [illegible] ॥ [illegible]
कौ पिछ सुख सुख मई सम [illegible] है [illegible] कौ [illegible] तिनि [illegible] र
है। जीव कौ तो सिद्धि [illegible] मान कौ [illegible] तन मैं सोध न मन
मांक प्यारे है। जैसे एक बन विषै [illegible] किवाडि [illegible] तो
है कौ कहै मेरे प्यारे है। कहत [illegible] राम मन मै [illegible]
त कैछाम तें जीव मुक्ति मि प्यारे है। ॥ जैसे [illegible] बीजे वृद्धि [illegible] बिधि त
कहै तादि सुन [illegible] मन [illegible] रहे। जैसे बि [illegible] जा
रे [illegible] की नाथ पाप जीव बेल बप धारी बधे [illegible] रहै। ॥ जैसे

स्र

निग्रहरि गोषी बास नां अनेक नांनि पापपुनि बीज रूप बोध मांन
औरसहै॥ तैसे वेद अंजन रूप अष्ट बरन नांम मनि कसे बर्नन करांमस
तेंद्रुम्ह गामी रहै॥ दो॥ चौपै छंद॥ बेदरूप बिस्तार सघन [illegible] गुन
[illegible] ही॥ [illegible] कमल [illegible] नबर साक [illegible] नामसहि॥ क
मे [illegible] तांस [illegible] मैं ह॥ [illegible] पड पफल लभै [illegible] ग
ता [illegible] मिक [illegible] ही॥ अबक [illegible] पसु चरनकौं [illegible] पमें बर [illegible] बा
[illegible]॥ कहै [illegible] लकरांमन [illegible] फल [illegible] बिबिधि मुनां तिपासनां
ई॥ ऐसे [illegible] बिस्तार पग गट [illegible] जगातप सारा॥ पंच [illegible] पंच कांम
[illegible] रिषाल॥ अंध कूप [illegible] मां [illegible] पसु परे [illegible] रक
कर्म प्रधान बिषै [illegible] पांनी॥ अस रूप [illegible]
[illegible] कीत [illegible]॥ [illegible] कबहै [illegible]

प्राणी मिलै ॥ १० ॥ ब्रह्मा बिष्नु महेस में मगु घट देवां बिचारी ॥ कथन्त दे
वृत तंक पिलण्या धिमत के अधिकारी । सनकादिक सरबज्ञ ज्ञान ब
लबंतु सरूपा ॥ तेजोगेस्वर मुक्ति जिनि करें निरूपा ॥ ते नारद
धूपहलादे मैं मंत्र अनंत तजु भवनां ॥ कृ [illegible]
पतिजन की ये के धारे [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] बिष [illegible]
सुत्रपायं ॥ [illegible] हरि नाउरि [illegible] संताये ॥ [illegible]
त्रबद हनीं कें ये अधिकारी ॥ तांहां ते [illegible] निमान ज्ञान [illegible] ति
कारी ॥ परि ब्रह्म मिग्णसे वेगसाधक के सम जे नर ज्ञानी भगत ॥ [illegible]
रिज्यों बेलधी का कहि बाल करां मपूजे ज्ञान ॥ १२ ॥ चारि [illegible] की साषि
बे सर्वगीता न्याषी ॥ दादू नामकबीर साषि सुनि हरि दे [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ग्यानि पवे सब कत हिस्या बिनि मांही ॥ [illegible] नृदामजी

॥१६॥ [illegible]

[illegible] ति:

[illegible] मक [illegible] ॥ [illegible]

पूरि [illegible] रस्या । सु जिंन आ [illegible] ७२ दादू देषु दयाल नकं

बाहरि [illegible] । सब हि [illegible] पीव कं ॥ इस रम मांही कोइ ७४ दादू

देषु दयाल नकं [illegible] सार । जी धरि [illegible] ॥ ती धरि मि

र जे नें हार ७५ दादू [illegible] दयाल नकं । [illegible] रस्या सब कै गोर ॥ घटि घटि

मेरा सांई [illegible] । [illegible] ६ [illegible] नां दी [illegible] ही ॥ नहीं मा

या न [illegible] ॥ दादू [illegible] समेरा पाव ७७ दादू [illegible]

[illegible] करि । [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

बिचार ७८ [illegible] में । [illegible] ॥ दादू [illegible]

क कों [illegible] ७९ दादू जहां तहां साथी [illegible] है ॥ मेरे स [illegible]

[illegible] । [illegible] है ॥ पू [illegible] ८० [illegible]

ये पूरं गण प्रमान नट ॥ पेठि तनि ... पाछि लिसे ॥ ... बाकि ... ॥ २१ ॥ दूह हि
स टाण कं लेज के हिंस बाती चकै दिस मह रि नदे छिये ॥ ... हम्मद ... द
२२ ॥ सूरि कुं की ॥ चक्र कास है ॥ रो मं रे म की ... ॥ सह ज्योति ज गादी सकी
... तन म्रा वे धार २३ ... कं ... कास हे ॥ ... से वा ल ... न र गूरि
दह ते ज ... तरी ॥ ... ॥ ... जे न ही त हां सूरि जे द ष्या
॥ वट न हां त सं चं दा ॥ तारे न ... ति ... लिमि मि ... ॥ ... ति क्रा
स दा २४ ... न ही न हां ... ॥ ... गरि ज हा ॥ बी
ज न ... हां च ... क स दे ष्या ॥ ... प्र ... २६ ... ति ... के जि
व मि ले ॥ ते ज पु ज प्रकास ॥ ... म त क ... सु ... रे ॥ ... का
म २७ ... बिना सी ... न ते ज का ॥ ... ॥ सो ... मं ट ष्या नें

॥१७६॥ कोजं [illegible]

[illegible] तिस [illegible]

[illegible] मैन [illegible] नैन [illegible]

नम ॥ [illegible]

[illegible] नहीं [illegible] नहीं जाइ २२ निर [illegible] निज देखिये

इ ॥ [illegible] नहीं [illegible] नहीं जाइ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] २३ [illegible]

नैन [illegible] ॥ [illegible] मिलये कर

[illegible] ॥ सो निरखे [illegible] जाइ

स ॥ [illegible] नैन [illegible] २४ नैन [illegible] मारे नै

॥ को [illegible] ॥ निस [illegible]

रमो ॥ तहां [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] जमुना

जाय २५ नैन [illegible] आगे देखि [illegible] ॥ [illegible] २६ [illegible] नहद बाजे बाजि रे

[illegible] ॥ कि [illegible] होइ २७ [illegible]

[illegible] ॥ जो [illegible] २८ [illegible]

[illegible] को

संतनेत ... नगन

मनेजनतनमनर [illegible] हरे [illegible] प्रेम [illegible] आतमा

ले ॥ दादू [illegible] ॥५॥ जेरे सु जोति [illegible] है [illegible] तन [illegible] रत

जेरे सु किरि [illegible] नेन रैह ॥ जोतु पुंज रहे ते ॥६॥ [illegible] वोह

का ॥ कहु वै सा है नर ॥ [illegible] है [illegible] मे [illegible] ॥ [illegible]

७ वार पार [illegible] र का ॥ [illegible] ॥ [illegible] पूरि ५

[illegible] सा है [illegible] ॥८॥ [illegible] ॥ जोति [illegible] कर तार की

जोति [illegible] न [illegible] ॥ [illegible] पार है ॥ [illegible] ॥ दादू

[illegible] ॥९॥ [illegible] जे [illegible] ॥ [illegible] तेज [illegible] जोति [illegible]

तेज प्रकास है ॥ प्रम [illegible] र नि [illegible] ॥ प्रम जोति [illegible] ॥१००॥ प्रम

॥१०१॥ [illegible] सरी [illegible] है [illegible] सरी [illegible] ॥ जोति [illegible] जोति है ॥ दादू

[illegible] गति [illegible] ॥ के मन [illegible] कोगो
[illegible] को [illegible] तजपुन कै [illegible] ॥ [illegible] जे की मे
षेले मिल [illegible] ॥ [illegible] तु [illegible] को [illegible] ॥ [illegible] पुंह पप्रेम [illegible] मे [illegible] ॥ हरि जन षेले
जपरि ॥ [illegible] बंध्यौ बसंत [illegible] [illegible] ॥ १०६ [illegible] प्रेम न धारा देषि
फाग ॥ [illegible] सो [illegible] को [illegible] पिया [illegible] मो [illegible] ॥ को [illegible] नवे
पे ॥ पार [illegible] सत ॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible] त [illegible] निहं ते
ते १०७ रस [illegible] ॥ [illegible] री षि [illegible] ॥ [illegible] बिन बरि षिहे ॥ नी के
लगै [illegible] ॥ [illegible] बसंत १०८ [illegible] सांधु [illegible] न हार १०९ [illegible] सा
रषि [illegible] धार ॥ [illegible] ॥ [illegible] को सांधु [illegible] त हो चित चाहि गहे र
[illegible] पिया ॥ बिन बात [illegible] बरि षि मे ह ॥ [illegible] ॥ [illegible] बिगति [illegible]
सा ॥ [illegible] कस नेह ११० महार सभी गापा जिये [illegible]
लगे [illegible] न त ॥ [illegible] निमि [illegible] बि [illegible] ॥ [illegible] रत १११ [illegible]

[illegible]ंननेट [illegible] नग:

निंद हि[illegible] जि यं॥ [illegible] अन [illegible] मयेकं [illegible] हि [illegible]॥ [illegible] नक्ष
रक्तनेक ११० [illegible] मयं निंद हिपा जि[illegible] कों [illegible] नेकाइ॥ दोहा [illegible]
वैण्णसस॥ [illegible] हार [illegible] मागे [illegible] १११ कामयें निंद हि[illegible] जि[illegible] नक्ष [illegible]
पक्षनेट॥ दोहा [illegible] वि [illegible]॥ [illegible] नाग [illegible] ११२ [illegible]
पाजिये [illegible] चर [illegible]॥ [illegible] प्रीति [illegible]॥ [illegible] निंद हि
११३ कामयें निंकरनारहै॥ [illegible] मरवे मोइ॥ दोहा [illegible] मकीमाइ
[illegible] सुखहोइ ११४ [illegible] है॥ [illegible] मा [illegible] कं
इमारेसंगहै॥ दोहा [illegible] पासे ११५ [illegible] सा [illegible] मस[illegible]
पोहाइ [illegible] नों ही॥ [illegible] बिच [illegible] नफल [illegible] ही ११६ [illegible]॥ [illegible] रती
[illegible] बिंन॥ [illegible] वर [illegible]॥ [illegible] नरफल॥ दोहा काया

॥४॥६८॥

[illegible]

रा ११७ [illegible] निकेवल [illegible] हिता [illegible]
मुक्ती तफ [illegible] सो दाइ [illegible] हिता ११८ नरे [illegible] बिन
ज्ञान [illegible] रले [illegible] हिं। रहे हितारे [illegible] नकी मा
हिं ११९ [illegible] रहि जड़ । ब्रे [illegible] हिं। सपाये फले
फले । [illegible] मांहि १२० [illegible] रहे । आमके अस्था
नि [illegible] हिं। काबेस । [illegible] कहै सु ज्ञान १२१ काया के अ
स [illegible] रहे । [illegible] पंच [illegible] । [illegible] अपरकी रलितीन निर्गुण
[illegible] ज्ञान १२२ [illegible] नि है । ज्ञान ध्यान बिसवा
स । [illegible] संतोष [illegible] । जाव जगति निश्चिपास १२३ ब्रह्मस [illegible]
तहां ब्रह्म है । निरंजन निराकार । [illegible] जोति है । [illegible]

निनेट

रिं १२४ बोलनूं दक्ष जे [illegible] मनु कीमे
चिचीजहरि॥ [illegible] मंजेह १२५ श्रो [illegible] रमुंके मे [illegible] ॥ न्हेसमा
लिबकिहर [illegible] ॥ [illegible] ॥ डहै दरोगा [illegible] सिरमक [illegible] ॥ [illegible]
नेकीनेम १२६ [illegible] मि ॥ [illegible] ॥ ह
गानां हखलास ॥ [illegible] रहूबा ॥ [illegible] १२७ मा
कूरकुकें में [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ची
जपुर [illegible] १२८ [illegible] ॥ [illegible]
वलिसरियेनांपर ॥ [illegible] मनेकी [illegible] ॥ [illegible]
१२९ कुलिफातिक [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
हिकां [illegible] सिक [illegible] नेफिरियार ॥ १३० [illegible]

[illegible] ॥१११॥ का [illegible] सुनि [illegible] भोरु [illegible]

क [illegible] नाम निस्त्र [illegible] ॥ [illegible] को [illegible] मोरे

स्त्र [illegible] सुर मां सा ॥ सुमन [illegible] ॥ सगरी न [illegible] र ट [illegible] ॥ मारु [illegible]

मुकाम ॥११९॥ [illegible] हा [illegible] रही [illegible] ॥ करारी [illegible] ॥११२ चहार

सजनु [illegible] ॥ दस [illegible] ॥ [illegible] रेक र [illegible]

देमा [illegible] ॥१२२ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] संसार ॥ नीति

स्त्र नीति [illegible] ॥ सुन [illegible] ॥१२३ [illegible] जि दे षि षि चा

र का [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] न [illegible] ॥ [illegible] तिरत हो र

॥१२४ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ जसु [illegible] र [illegible] कर

सा [illegible] ॥ [illegible] ॥१२६ [illegible] ॥ [illegible] त्या [illegible]

॥ सु [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥१२७ [illegible] चारि [illegible]

स्यां न का ॥ [illegible] रसि षक [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

नैनै

के तोजाह १४८ सुरसी [illegible] किउदीवे कुमंच ॥ [illegible] चे [illegible] ॥ [illegible] दूर
द्रादनी ॥ श्री पि[illegible] धार १४९ श्रासिकं रहकावेजमरदा [illegible] लवं
जारफतं [illegible] ॥ [illegible] दीहूंम ॥ दिलहवा [illegible] दं १५० श्रासि-
कामसतांन श्रा [illegible] सुरसे [illegible] दीद्वार ॥ दरदव [illegible] विकार [illegible] ॥ यारमां
दिलदार १५१ द [illegible] ॥ सो [illegible] न [illegible] कमन
कतरहैसरद्रा मुहाग ॥ भिसोइ १५२ सांइ बिनासि बिनां बिदर संनदहे ॥
पुलदि पुल किरसपु [illegible] ॥ गोनिं लिलितानमामु [illegible] है ॥ ऋरसर [illegible] मि
लिफ्रान १५३ सांइ देषिदे बिमु मरं नकरे ॥ देषिदे बिलि [illegible] ॥ देषि
देषितं नमनन बिलै ॥ देषिदे षि चित्तदी: स १५४ सांइ [illegible] षिनि र
जनां थे ॥ निषि षि षिरसपाव ॥ निषि निर षिपावकं निसे ॥ निर

दोपौसेस्वाहै॥ उमहमरकाग्रतिष्माहरदै ॥४॥६८॥ काजांभौरंसमको
मारिपुरी॥ मेत्रिषई मनहमानहीफेरी ॥१६८॥ जेमनमांगेसोपदं थिन्हा
जानाहै धथुकिविनहीलीन्हो ॥१॥ दैवांहूदरस्त्र थिकयसारे॥ पन्धोंग
रिपटकिनहीमारे ॥२॥ हंनबांतनिघटनरेंबिकारा॥ त्रिलांतेजम
हनहीवारा ॥३॥ हंनहिंत्वागिमेंसेमानजांणी॥ कहिदासहसुणिंकम
हांणी ॥४॥१७॥ मरियेंरमरिमरिये॥ ताछेंरामनामचिंतधरिये ॥१६९॥
जेजिनियेंपचपमारेंरे॥ मारेंतेमारेरे ॥१॥ जिनियेंपचसमभेटेरे॥ तेटेरे
मेनेटेरे ॥२॥ कछिबंदूकरिलायेंरे॥ जांमेरेतेजांयेरे ॥३॥ हंगाकी
वसमांनारे॥ धंजांरेयक्रुधांनारे ॥४॥ ऋआगायंपइंपरहियेरे॥ दा
हृदरसनलहियेरे ॥५॥१२॥ नहांमुकंभनकीकोनचलावे॥ जा

कौं अजहै मुनिजन महल न पावैं ॥ टेक ॥ सिव बिरंचि सनकादिक जाकौं पा
वै ॥ कौं अजाति करि निकट बुलावै ॥ १ ॥ देवां कन्त नासोंकरि
द्रोपदी द्वारिगा टेरजोर ॥ २ ॥ सिष [illegible] धिकेर है सौतें [illegible] ॥ अजे [illegible] ट
कर
महलन पाइ ॥ ३ ॥ सब थैं नीच मैं नाउँ न जानौं ॥ कहि हिदास क्यौं मिले
सयानौं ॥ ४ ॥ २ ॥ श्री ॥ तुम्ह बिन कहिं कूँ जाऊँ जमेरा ॥ अजंकं नदेषा
दरस न तेरा ॥ टेक ॥ हो हरद्याल दरीन केदाता ॥ तुम्ह परिपूरण राम ब
बिषमाचा ॥ १ ॥ जो तुम्ह करौ सोई तुम्ह छाजे ॥ अपणों जन कौं काहे
न निवाजे ॥ २ ॥ अंकरन कै [illegible] नै अै सैं अब कीजे ॥ आपनो जानि कै क
रि दरसन दीजे ॥ ३ ॥ [illegible] कहै सुनौं हरि साँई ॥ दरसन दीजै मिलो
गुसाँई ॥ ४ ॥ १० ॥ कागा [illegible] कर कपरि बोलै ॥ थाइ मास [illegible] हो को

[illegible] हिम [illegible] नहीं कदी दूया

का

सुलकमात्रुम ॥ हाजतेदेरान ॥ अजबयारांघबबदारा ॥ सूरतेसुब [illegible]

ते ॥ ॥ अबुलि [illegible] आहरिरोकंनूंही ॥ जिंदेहैं करबांण ॥ आमिकोदादार

दाहूं ॥ [illegible] नी सांणा ॥ ४ ॥ च ॥ [illegible] तेरांजिमारफिकरकरतेहैं ॥ [illegible]

कामुक्त [illegible] तेरे ॥ तेरासितेरासिमरतेहैं ॥ टेक ॥ धनकपेसदिगारनेमं ॥ बे

रोदिन जरतेहैं ॥ दादूमुदरबारितेरे ॥ गौरमहरूंकरतेहैं ॥ १ ॥ ततनमहोदम

[illegible] हीदराति दिवसलंरतेहैं ॥ गांनतेरा ध्यांनतेरा ॥ इसकइसामिजर

तेहैं ॥ २ ॥ जोनतेरा जंपंदतेरा ॥ पांवेसिरधरतेहैं ॥ दादूदीवांनतेरा ॥ जर

घरीदघरकेहैं ॥ [illegible] ॥ मुधिबोलिस्वांमी ॥ इस्क [illegible] सी

तेरासबदमुहादेरामजा ॥ टेकं ॥ धनिचरांवनबेनिबजाबंन ॥ [illegible]

दिषांवंनकांमंनी ॥ १ ॥ बिरहबंपांवेणतां मिलुकांबंन ॥ कूं [illegible] गा

…सि ब्रजदै ॥ मुनिजन…
तै ॥ कोई … ॥ २ ॥ संगिबिलंबन रामबमावंन ॥ गोपी जांवंन … ण ॥ ३ ॥ द्वा
र … रंग रितनिवारन ॥ संत सुधारन रांमजी ॥ ध० १० ॥ कृष्णदेदोर … ॥ ३
… कंज्यां ॥ … रमि … ॥ टेक ॥ अंध धकै … मुखमैं पर्‌यो
मेरा कारज संभाल ॥ तुम्ह बिनु जाकौं नहीं ॥ मेरे ठौर नाना … पाल ॥ १ ॥
मारगको सूझै नहीं दह दिसि माया जाल ॥ कांम पापि क्रम बिधियौ ॥ मे
रे कोई न बूझनहार ॥ २ ॥ रांम बिना … नहीं कोई जे बरतंत …
कोटि कीया मुंज … नहीं ॥ … ॥ ३ ॥ दीनदूजी तुम्ह
देखंतां … रांम ॥ … देखि … ॥ तुम्ह … रगा
… ध० ११ ॥ जिन छाड़ै रांम जिन छाड़ै ॥ हम हिं बिसारि जिन छाड़ै
… जिन छाड़ै … माया … बालक …

छेकपटकोंराम ॥ हिरदैजपिपियेंरामनाम ॥ टेक ॥ हरिपाछेंनहींकंदी
गंगें ॥ पावेंबिनसहुनंदगांवेंगंगकं ॥ अनहदषोजीयेंराम्रपांणींमांम
अनंततजिमजाहरहैबिष्राम ॥ १ ॥ कपटकेंमननहींकोंछेहांम ॥ र
सुचेंनकवलकजरांमनांमं ॥ २ ॥ जबअंभअजांमींरहेंजांम ॥ तब
अषेपदअंजनदाहेंग्रांम ॥ ३ ॥ ४ ॥ तहांषेलोंपीवसींनितनहींफाग ॥ छे
बिसबीरामेरेनाग ॥ टेक ॥ तहांहिंनदिनअंत्रतिअंगांनटहोइ ॥ प्रेम
पिलावेंअपारमोइ ॥ संगियूंनमेलीरमेंराम ॥ तहांपूजाअस्रस्नानच
रनपार ॥ १ ॥ तहांबंचनअंम्रमोलिकमबहींसार ॥ तहांबरते
लीलाअंतिअंपार ॥ २ ॥ उमगिदिहतबमैंनाग ॥ तिहिंसबद
फलअमरलाग ॥ ३ ॥ अनषैंदेवकोईजांणींनेव ॥ तहांअलष

घटे वृक्षकी कीजै सेव ॥ दादू बलि बलि बार बार ॥ जहां आप निरंजन
निराधार ॥ ३ ॥ ६ ॥ मोहन माली सहजि समांनां ॥ कोई जानैं साध
सुजांनां ॥ टेक ॥ काया बाडी मांहैं माली तहां रास बनाया ॥ सेवग स्
वामी खेलन कौं आप दया करि आया ॥ १ ॥ बाहरि भी
तरि सकल निरंतरि सब मैं रह्या समाई ॥ परगट गुपत गुपत पुनि
परगट ॥ अवगति लख्या न जाई ॥ २ ॥ ता माली की अकथ कहांणी ॥ क
हत कही नहीं आवै ॥ अगम अगोचर करै अनंदा दादू ये जस गावै ॥ ७ ॥
॥ मन मोहन मेरे मन ही मांहि ॥ कीजै सेवा अति तहां ॥ टेक ॥ तहां
पायौ देव निरंजनां ॥ दूजा टेव रहे हिरदै तन मांनैं न नहीं निरखौं अघाइ
परगट्यो है हरि मेरे माइ ॥ १ ॥ मोहि करि नैंन कौ सैंन न देइ ॥ प्रांण मूसि हरि

जाइ ॥ हरि हरि देइ झिनवी मरिजाइ ॥ टेका ॥ छिन छिन मात पुजा लेइ पूत
बेटा ऐसे जो प्रेम अखूत ॥ १४ ॥ त्रियाकरन पकड़ पकौं रहै नटनी नित ध्यान मध
रत चवै ॥ १५ ॥ कछि बाजि पै धये धंज ॥ चातिग नीर प्रेम की बानि ॥
ऊंसी कवि लिसं जाके सोइ ॥ गोध्यान की कोई होइ ॥ १६ ॥ श्रवनौं नाद नू
सुनै कुरंग ॥ १७ ॥ जोति पतंग नन मोरै अंग ॥ जल बिन मीन न लषि जुं मरै ॥ दा
दू सेव गाफ्ने से कैसैं करै ॥ १८ ॥ निरगुण राम रहै ल्यौ लाइ ॥ सहज जैसे सहज मिलै हरि
जाइ ॥ टेका ॥ मन जल बिन ब्यापि लिपै नहीं कबहूं ॥ काम न कोई लागै आइ
तौ लों तन ताप जरै रैन हीं जो प्रेम ॥ सो पद प्रेम सहज जन माइ ॥ १९ ॥ तन मन जुरा
जो निज न हीं आवै माया मोहन लागै ताहि ॥ पांचौ पीड प्रेम न ही व्यापै
सकल सो पिव मन हरि है न पाइ ॥ २० ॥ संकट समान कन नैंनन कौं ॥ ताकौ

साईं कूं कोई धन षाइ ॥ एकन काहू से न्नमस्यो ॥ सब बिधि धिक्र स्यौ रे कत नाग
र ॥ १ ॥ ११ ॥ सहज समाधि राहे हौं उदिट कृरि ॥ जो पीछें ज्ञा गोपी क्रं आहि ॥ इंहगा हो
आ मीटकी नांई ॥ हरि जन दादू रोकौं रहि स्यूं ॥ ४४ ॥ धनि धनि धनि रे धनि धनि धुं णी
तुम्ह सूं मेरी आइ बनी ॥ टेक ॥ धनि धनि धनि तूं तौ रे जग राम ॥ सुर नर मुनि जे
न सेवैं ईस ॥ १ ॥ धनि धनि धनि तूं केकेवल राम ॥ सेस सहंस मुष ले हरि नांउं ॥ धं
नि धनि धनि तूं सिरजनहार तेरा कोई न पावै पार ॥ २ ॥ धनि धनि धनि तूं निरंजन दे
व दादू तेरा लषै न भेव ॥ ३ ॥ ५ ॥ का जांनौं मो हि का ले करि मी ॥ तन नहिं ता
प मो हिं छिन न बिसरि सी ॥ टेक ॥ आग मं मो पें जांणा न जाइ ॥ इहै हि बिमा
संतोंजी परे मांहि ॥ १ ॥ मैं न ही जांनौं कांसि र होइ ॥ तो षें जांय राम रषे
रोइ ॥ २ ॥ काहू थैं ले कहू करै ॥ ता रो मइ या ली आवै ॥ ३ ॥ दादू जा

प्रगटहोई

षोलोचनसारवे॥ दषोलोचंनसारिसोइं॥ पेहम्र चाज्ञा पेषिये॥ द्या
वंतदर्षां निश्चे सो॥ बरंणात्र तिवसे षिये॥ ४॥ श्रकलंसरूपंपावेका
प्राणाजीवका॥ सोईजनजे पावई॥ द्यावंतदया [illegible]॥ सा
पत्नषावई॥ लषै मु[illegible]रवे॥ लषै [illegible]॥ [illegible]गमहै॥ नसु
नावही॥ सब[illegible]॥ काहेनम[illegible]नावही॥ [illegible]॥ श्रकल
मंसरूपपीवंकी॥ [illegible]रिकैसंकरिजाणिये॥ निरंतरि निरंजनआपे॥ दा
तरिसोईजांणिये॥ जाणांकुमनबिचारावे॥ [illegible]बिचं[illegible]सोईसा
रा॥ सबरिसोईवपाविये॥ आरंरामेतीरगाला॥ दाइलोसुषमांगिये॥
ध॥ २३॥ रामनतहांप्रगटिरे सबरपरि॥ आत्मांकंवलंजेहा॥ प्रमपु
वंतदा॥ जि[illegible]तिनिमलिवेर॥ टेक॥ चंदसूरमधिजाइ॥

मनरेङ्गऋघाई ॥ टेक ॥ नाना बेनाननफे माही ॥ उपक बिनरंगसजीयरे
जमंनाही ॥ १ ॥ तिसंबामुरिमनरहेउदासा ॥ मैंजनब्याकुंलभासनसा
सा ॥ २ ॥ भेसऊँनरमहेहनमाधे ॥ नाघेत्राणाबजतइयपावे ॥ न्नूऋं
गानाआमिलिईकृषकोरे ॥ शहुरामरेमतोदिंजपरे ॥ ५ ॥ २२ ॥ तिसघ
रिजानावें ॥ जानेवेऋकलसमय ॥ सोईऋबधाईयेरे ॥ सबदेवं
निकाजय ॥ देखो ॥ ऋकलसमकपपीवकोना ॥ नतरंननपाईये ॥
ऋघमंकंनमाफिरहे ॥ सोइपामनाईये ॥ गोवड्ंमनबिचारावे
मनबिचारासोईसारा ॥ घ्रारपीवतेपाईये ॥ सांईमेतोसंगासा
चा ॥ जीवततिसघरिजाईये ॥ १ ॥ ऋकंनमंकपपीवका ॥ कैसेंको
रिऋलेषिये ॥ सुनिमनकमाहिपाचा ॥ नैंनचरिमोदषिये ॥ देरे

समसूषीनुषोपनकेजोगेस्वरन्यारा॥ ऋषभदेवदत्तकपिलबामनपरी
छतजडराजा॥ ध्रुवप्रहलादअंबरीषगजमोहरिभावकिहजा॥ मोऋषभवि
कासनसूसनिसनकनारदहनुमतोबलनक॥ कहिवालकरामप्रेबहि
षमनसंचकमनवकेसिलधा॥२१॥ ऋषभदेवदेवऋषबतावतनामसुतनो
जोगेस्वर॥ यथानदतमहामुकतेजतनुतयोदिवेस्वर॥ कबिहरिअंतरि
षप्रबुधजंनाथंचमसप्पलांइन॥ श्रावहोमडरमलचमसकरंरना
जेस्तनदवांइम॥ पुनियरमहाकहरिपारिषदजनककविदेहप्रेसेहरन
कहिबालकनंराघजेसेपुरिषजोपायारमारतनतिरना॥२२॥ बुधजासिवस
नकादिकसनकुमारहसनारद॥ ऋषभदेवदत्तकपिलबामदेवव्यासबि
सारद॥ ध्रुवप्रहलादकबीरनामदेववंकाबेकामोक्षपायाप्रभुनामेसेनद
[illegible]

[illegible]

लोचन सब निर्के सुबालक करा मन बंदन करत ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ब्रह्मादि
क गुरु कौन कौन गुरु श्रादि महेस्वर ॥ सनकादिक गुरु कौन कौन गुरु
नोजोगेस्वर ॥ कच्छदेव गुरु कौन कौन गुरु जनक [illegible] देहा ॥ कौरव
के गुरु कौन [illegible] गुरु [illegible] नेही ॥ [illegible] परथ [illegible] रखवा [illegible] हिबाल
करा मन बंमे कौर ॥ कृष्ण [illegible] परथ के कौन मन [illegible] गुरु ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ब्रह्मादिक गुरु ब्रह्म सब ब्रह्म गुरु श्रादि महेस्वर ॥ सनकादिक
गुरु ब्रह्म सब ब्रह्म गुरु नोजोगेस्वर ॥ कच्छदेव गुरु ब्रह्म सब ब्रह्म गुरु जनक
कब देहा ॥ कौरव के गुरु ब्रह्म [illegible] गुरु [illegible] नेही ॥ [illegible] परथ
परु रखवा क हिबाल करा मन बंमे कौर [illegible] मन बनि कै [illegible] निये ॥ ब्रह्म
[illegible] गुरु [illegible] गुरु ॥ [illegible] ॥ [illegible] मन हि मां जा निं [illegible] रिका [illegible] नि [illegible]
का बाक [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] करत [illegible]

हो बाम्फणि भगौं ॥ रस्वांके कै स्टक ब्बा पलै तां फ़ल तां गौं ॥ पुनिका
गमाया मे घणोंणि बधाबिघन डयमाई ये ॥ कहि बालकृ करा म रि राछो
म कोष्ट लि रूरमनपाई ये ॥ [illegible] ॥ रचनौर चा सुकोंनको
नप कै तु गा सिबनां ई ॥ क्रचन्दीबारेते ई यिमनवारेकचाई ॥ मांगो हरि
पता सिनु रापो मां छं मे घारे ॥ फोगा सरकं मां जवा नुरट नौ जसवारे ॥ ग्र को
सुमरू सिच्छा या डुलै नकाल पप्यां डावैकही ॥ कबबाल कं करा मंजन
कै मे के है बा गाड मे सहिये नदी ॥ [illegible] ॥ मासयुत सुयदेव ब्र
मबिज स्वग्रसंगी ॥ जटा जबे को धूत सबकहे स्ववंयगी ॥ बगासम न
धमेंजने स्वजटा भमाला ॥ मदं मका रन हिकौं इजनमंजोगेश्वरचांला
यकुजो वमुक्ति कैसो दसाय्यानन गगाति बेरागा बल ॥ कहि बाल कंकरा
[illegible] मतनचनसुतु नुषश्रो जागानपाल ॥ नकिविसैनटिकेन

वैरयोवोलैवानीअतिजब्राम्हणाअदिजोतिजगोवोसरूपोनी॥ कहि
कवारवकलिअखरसमदिकुलिपुगटेशह॥ नगांतवजोपनमये अ
खरकलिबलिपुविलाह॥ पुनिमनिकाकविज्ञानीजनीपोवोदि
ठअमोमारनिगुढे॥ कहिबाजवरीमहरिजनमबिनअपिमोनोन्या
रेरहे [illegible] मोयाअजनेरहतनिरंजेनकहियेवाको॥ नबिकार [illegible]
अजनमोजोजनताको॥ अमोमूरअपमप्रबव्यापकअबिनासी
ल सतचितआनंदसलमकोघटिजोतिप्रकासी॥ आदिअविमपु
पं. करस्यगुणपंचनहेनामनो॥ कहिबाजकरांमनतसुकोबे
रलाकरेरूपामनो॥५०॥ तेज्ञोमयपनगवंजोतिमेअरजामी
अखिलधांमगोलोकब्रह्मईस्वरघनमोमी॥ गाईस्वरकोअमदे
नानीनिमुकहिये॥ [illegible] नितमायाकोकहिये॥

बरजनगुनमकरिबहुरसचेतनमगुनसहइमेहारही ॥ कहिबालककरामम
हहबिहसजीसतगुनकरिपवनपारही ॥४१॥ बिहसलोकमेकंवचन
गुनसकलंतरिंगज ॥ सेवगसेबिराजे ॥ सेवगसेबिनजेटमुक्तिसारूपनिवा
ता ॥ निछमांसनगकानबप्रभुनबूपधरिकेरिस्मावे ॥ हमसेहीसनमंत्रत
जिकेहोतारकहावे ॥ सबककतामसपूरणाकहैमैसेनेनबुहसमे ॥ यह
ताल…मकहियेकहातेसबमायाजंरमेमे ॥ १ ॥ मूरतिसेवनंकरहि
स…सुगटनसूझे ॥ मूरतिदेहनजानबसंतनबकोबूझे ॥ मूरतिमा
हनपीवपुकरिस्मानिदिपावे ॥ संतनलगावेजोगम्रापपमेखरपावे ॥
यहमूरतिजडपाषानतजिसंतमुचेतनीगाईये ॥ कहिबालककरामहरि
नामनजिमनबलीनफलपाईये ॥ ४२ ॥ देहबुहकेबिषैनेपधीकोबा
सा ॥ फलनमुकामसोयकेथेकतानितनैननामा ॥ बढईकालककररमा…

पं म

बकारतनत्यागो ॥ येकपसोतासंग्यायेकप्रदेसैतेउलिंगोगो ॥ प्रहलीवाक्यो
बधतहैसबमांनैधर्मिभ्रनात्मां ॥ कहिवालनकरां ... मुक्तहै ... जम
कास्वआत्मां ॥ धध ॥ व्यापकब्रह्मअंस ... ब्रह्म ... सममांनां ॥ ...
पजीउद्वी ... केनांमां ॥ निराकार ... ओंकार ... गुणातीत ... सतार ...
रणाकारजिजआपनांमगुणा ... रूपपसारा ॥ हैसत्तचित्तआनंदएकहीअंसि
जोतिरूपयम्बआत्मां ॥ ... तत्त्व ... सिपदब्रह्म है बालंकरांमप्र ... तमां धध
... ॥ एकअंसअंसनिरंतरव्यापकब्रह्म ...
ईस्वरजीवउपाधिलीयेनिराकारणाकारजदेतविचारो ॥ ईस्वरहै ... बिरा
टअव्याकृतहिरण्यग्रभमसुतीनिप्रकारो ॥ ओंतंकरांमस्थूलनरसूक्षम
जीवकेकारणदेहसहारो ॥ धध ॥ ब्रह्मबिराजतसर्वनिरंतरचेतनसुधनि
... न्यारा ॥ येकअंसअंसव्यापकप्रणव ... बिराटपसारा ॥ ज

बिसतारा॥ ज्यौं मरस्यौ अरि बाहरि भीतरि अंतन पारा॥ त्यूं सब ठौर रज
हांत है आगम च्यु त ब्राजक रांम लहै को बिचारा॥ ५७॥ सम द्रष्टि अंग॥ स
र्वत्र समान ब्रह्म बिषै ब्रह्मा स्तंब पर्यंत तन बिषै॥ ब्रह्मा स्तंब कीट लगाये क
हेत हैं तन जानवरे॥ पृथ्वी अपु तेज बायु त्यौं मध्य चलन तत्र से ब्यापक सर्वत्र
पूरन ताप्र जानवरे॥ जल चर थल चर ज्यौं नभ चर जीव जाति स्थावर जंगम
सबही चेतन नित सुजानवरे॥ ऐसे सो जन कहत रांम सु ज्ञान गावत सो वे ता हि कह
[illegible] कहें जगत की नाव है॥ ५८॥ प्रथम उत्पति मद कहत हुति
ये मद श्री ति माया को हुति ये कुल मद होइ चतुर मद बल काया को॥ पं
चम बिद्या मद षष्ट्रम तप मद जारी॥ सप्तम नाम मद सातवैं ज्ञाव वेदों
पक्विकारी॥ ये कप ये कम मद होइ जो बालक रांम प्रब्योफिरै॥ ये आवो

हौवैं जासकैं सो सोजोकललकैसेतितैं ॥४९॥ पंडित कहै ये समत्वबुद्धि युक्त मुक्ति
व पावैं ॥ कर्मजनसमझेऋरथभेदजन्तांनें ॥ येकन्हे छूट परि ज्ञानहवसे नर बौ
दूरभैला ॥ छायाप्रकरामयघटैविक्रुतफलतिकोपैला ॥ सबकर्म बंध कर्यौ रूप बौ
पस्यौ दूर कैसेयौं कालके गालहैं ॥ याहि बालनकरां ग्यवी चारकैं विमति विधि
चैयौ मनकी रहीं ॥५०॥ द सत्वबुद्धिन संयुक्ति सौन प्रापति हैं जो कीं ॥ ज्यों
ज्ञन मुक्तिस रूप विमल हि बदन ताकौ ॥ इहा मुनवै या गबैं पूरन तो
गनकोईछिमादयाननैजनकोधपुनित्यागैसोई ॥ ज्ञान ... कीं
नलोक इह प्रताता गुन गतिसजरां ॥ का हि बालनकरां मनहिंसो चैत
छिज्ञांनज्ञानमोजहा ॥५१॥ ज्ञांन भक्तिबैरागजोगज्ञगनायिबीचा
ता ॥ ज्ञानकैसमकिसरूप जेषपंथनिमारावरणांग्रमतकुजकभैजा

तिकौ नेह न कोई ॥ भक्ति करै सो मुक्ति जांन जाकै उर हरि होइ ॥ अरु
जो गांऊं जस से बड़ा बोध मन्या पा सें पहै ॥ कहि बालक करां म हरि
[illegible] लेन ... कपंट कै ने पहै ॥ ५९ ॥ इति बालककरां मजा को कही
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ग्राह मिलै [illegible] कै जे
कौ ते [illegible] न जां [illegible] ति कीने ॥ पाप [illegible] हम सबै [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] तो पेकु सौं मेरे कालि बाजि कीये जगमें [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] छी तरनां चतें कन्च को पे जाये ॥ [illegible] यालवे जेरगनी
ने ॥ १ ॥ [illegible] बे सरू मुझ संग ति बैठि तिन्हों गति पाई ॥ [illegible]
तो ष [illegible] ग [illegible] हां तिन ॥ [illegible] न रध्यां न पबे चतुराई ॥ जो गपु गतिक्र
ग मनि गम मैं ॥ [illegible] गाध न जे हरि गाई हो छी [illegible] याल है पू ॥

रसरूपाकुं ॥ ताहिपरसिमिलेंमुनिजाई ॥ ४ ॥ केतनिकोंसुधिबु
धिहरीजन ॥ केतनिकोंमघपलायेंजुक्याह ॥ केतनिकोंगहिपारिलं
घांजु ॥ कृतनवेंबिधिपारसकाह ॥ केतनिकोंनिजमनमेंजकीजुकेंजु
मैलकुकनलखेदेंजुगाह ॥ केतनतनरकतेंअचेतनकोंगायेंजुनोंमे
मैं ॥ दीनदयालस्यालखेदोह ॥ अेसीजुमेंजकरीगुराइंछोवोंबे ॥ ध्या
नरध्यानजपेंमनहरा ॥ विधिहसिधिरजावनरंगमेमे ॥ नंदसोहा
गिमेंयेसिधसरा ॥ प्रेमरूपतिसबेंसुखरामिजु ॥ अधेकपंस्थंप
हपहरा ॥ हेतोनरहाहकधारकीयासबसिध्यानि । संमममपरथ
जुहहरा ॥ ४ ॥ अपनधारकीयानजिमाहिब ॥ अोरनहरिनाव
लगाया ॥ आपपीयारसअमृतस्वामीजी ॥ अोरनकरसअमृत

... नागी ॥ सू

पाया ॥ आपा उलट्या आ बिगति निरंजन ॥ औरन कूं निज नाम प्रभु ना
या ॥ सो कौं तिरं कै ती वी आत्मा तारी जु ॥ दीनदयाल दादू गुरराया ॥ प
रब्रह्म [illegible] मीलि ब्रह्म मे ॥ वार न पार न हा ल्यो लाई ॥ नूर स्वरूप
म [illegible] की या [illegible] न ॥ देवाँ निरंजन कूं मिलि [illegible] ई ॥ जोति सरूप कूं लागि ज
स्यो [illegible] ॥ नाम सुधारस पिया रे भाई ॥ सो दादू की गति [illegible] गोच
र ॥ [illegible] ही जाई ॥ ६ ॥ हूं बलिहारी जी जमसुरत के ॥ आसु
[illegible] या ॥ हूं सति कै नैनन निकसे ॥ पूरणब्रह्म के न
[illegible] ॥ [illegible] करबानन की या [illegible] न चरननि ॥ जो सच्चं रन्या अगम कौं
ध्याया ॥ हो त्यौं तिरं [illegible] ह कौ प्रीति कै वारणौ ॥ जो सही प्रीति सौं राम राका
या ॥ ७ ॥ प्रभु गुरु विषकै पंथ चल्या जन ॥ हिंदु तुरक का पंथ तु त्यागा ॥
गोरषदत्त की चाल न लई उरि ॥ सेव निरंजन की हित लागा ॥ नाम क [illegible]

रजंपूखालिकरी हरिसौं ऋति ॥ जैसें जु ध्यान ऋलखकें जागपा ॥ हो कौ
तरदाहु दासबसपाजु तहंजन ॥ जहां जो लिकिलिमिलिनूरं कथागपा
८ ॥ ब्रह्म ऋपारनजपानिमबासुरि ॥ चालखरेकी जी हरि बिहारी ॥ नृ
त्यु राधा ध्यानृधस्याउरिकं ऋलहरि ॥ रूपु राधा कैसें प्रीतिनध्यानु ॥ जहां ...
तरजहां ... समलासुधं ॥ तहंजं नजारजु नूर निहारी ॥ हो छौ तर ...
है जसु कौरति ॥ जैसें नयें गुरदाहू बिहारी ॥ ९ ॥ ... जहां ध्यान ... बस दी
ध्यान र ॥ बूलरी ... तिकरी दिजरांती ॥ ब्रह्म जहां रात ... र
ब्रह्म हीगाहनेयें ब्रह्म जाती ॥ ब्रह्म ही मेवार ब्रह्म ही पूजा ॥ ब्रह्म
ही पंचे चवाई जु पाती ॥ हो छौ तर दाहु जन ध्यानि जे ब्रह्म बनाया जु
जोरत जी सब हरि जनरांती ॥ १० ॥ बेद कुरान मन्नजादत जो दाहु ॥ कैसे
नयें जनमं नसयानें ॥ जो गीरजं गामसे घसन्यासीं जु ॥ बोध न्यातकौ

मतनमांहे ॥ श्रीआदित्र लेषके ध्यांन तप्या मन ॥ श्रीनेमो तारसौंतां
हिमवंतने ॥ हे छोतरदाडूंनयानि जंबुरिषबिधांजु ॥ जाडबिराजेता
श्रीगमहैमाने ॥ ३ ॥ श्रीगमहीचाल श्रीगमहीध्याल ॥ श्रीगमहीतां
तरस्यारंसकेरा ॥ श्रीगमहीयपान श्रीगमहीक्षांत ॥ श्रीगमश्रीमोर्वन
गातिहिचारा ॥ श्रीगमहीप्रैस श्रीगमहीप्रीति ॥ श्रीगमहीमौलेसंतोष
तुसंगा ॥ [illegible] श्रीगमहीहडूजी ॥ श्रीगमहीजांवहजंष्याहक
ता[illegible] श्रीधरधरासौरंगा ॥ श्रीधरधरासौंसंगा ॥ श्रीधरधरासौंजनकी
[illegible] प्यारजु ॥ श्रीधरधरासूलिन ॥ श्रीधरधरासूदीन ॥ श्रीधरधराहेसो
[illegible] पाहकनारजु ॥ श्रीधरधरा[illegible] ॥ श्रीधरधरासौंमत ॥ श्रीध
रधरासौरसपीयाइकनारजु ॥ हेछोतरश्रीधरधरासंजोगि ॥ श्री

धरधरासोंलागि ॥ अधरधरासोंजनदाइल्लपेपारजु ॥ भ ॥ त्रमन
मूलामहानिजमतजु ॥ सोधिलीयाघरंआधिजुगाइ ॥ येकहींणक
जप्यादिठचितजु ॥ त्यागिदीयाजुरावादबिबाहू ॥ रिषि [illegible] सचा
नंकवायदिग ॥ मूलमस्यादहरिकंतकेपांई ॥ होछीतर [illegible] सरोवर
काहंस ॥ दीनदयालसतगुरदाइ ॥ १४ ॥ देवक्ष्मलेपारासेवकैलिति
कैरतहांकांकूदेखकोंमांनां ॥ नीरपक्षतनटें [illegible] देरा ॥ सूतागि
रजनमोतरिगांना जेकरतोघटधारीकरायेंजु ॥ ना [illegible]
क्षतरखांनां ॥ होछीतरदाइ मिल्याअंमनांइनिरंजनं ॥ [illegible]
धरैजिसुध्यानं ॥ १५ ॥ जोईक्ष्मलेषजप्यादवगोरष ॥ सोईक्ष्मलेमुनया
लविचारे ॥ नांमकबीरगायेजिमारगो ॥ नाहिजुमारगिसांमी

[illegible] गनी गनेनप्रकी गोपा॥ [illegible]

सिधारे॥ दुष्टिन सिधिम सबै बिधि पूरन॥ नाव जनागति के पास न धारे।
तो छीनर पार न पैरे जिरांम को॥ दादू दयाल सबै गुण सारे॥ १५॥ के
ई तु सेवत … निहन के॥ के ई तु सेवत सिन हि देवा॥ के ई तु से
वे गणेश रवि साम का को॥ के ई तु नाम का … याको लेवा॥ के ई तु
सेवत भूत … हाकी के॥ के ई तु अरहंत नाथ मनै वा॥ दादू बीन दया
… षका॥ सारन पार नहीं … वा॥ १६॥ कांया … मां
… या॥ हो संत सया नां … के … हीं॥ पीव के प्रेम न या
मनि … जुं॥ दादि मिल्या संजिराम सरमाहीं॥ बुधि श्रधारजनी नि
ते जमै॥ बुधिसमाधि श्रमाधले गाहीं॥ दादू जो पड़ को कोरता॥ छी
नरसाभेर बेद न जु गिनु गिमाई ये॥ १७॥ देसम रूप के माना चुगणाद

रि॥ नवरसरूपकेकौवलनुजाया॥ मीनमकरूपपीयांरसकंमत
कैसरिजीवाजुमंधमंजाया॥ चारुगरूपरटयानिसंवांसुम॥ हैइ
चकोररनुचितलगाया॥ हैछीतरजांतिग्रेकरवंजाहरि॥ राहु
जीपदविधिपारैसोप्रेमबनाया॥ १९॥ तुकंदीधीनुधरंदीजननिहच
ल॥ मांजसमसलैलेयेकटांकींनहा॥ मनपवनरचितसुरत्रिकों॥ ना
हलगाइपांयांरगनजीनां॥ नैनरबैनरफरवया॥ सोमनकेतेयांबडा
इकोयेहरिलीना॥ हैछीतरलाइहरयालटपा॥ ...जेजोर॥ सा
तांसमनिरतरिसीनंहा॥ २०॥ मोजिलीयावरिकलजाकंजांत
रि॥ श्रारिश्रनादिसोयकमनलाया॥ सुरतकेधीरेपीयारसकंमत
जांमरणमरणानुइरिविनाया॥ कांवमपासुइरिकाहिसांतनीहे॥ जो

धरमां करत है कृरियां ॥ हो ज्ञानी नरदाहू ह्दयानकी है मतिमोटी तुं ॥ तु
लि मैं सुतनि कै सुलिसमाया ॥ २१ ॥ हरि छेनि काहू धयियां निज बछे
ताहि क[illegible]ति क्ता कांपि [illegible] ष्या ॥ संगं नत्यां सुधि नांहि सरीरकी ॥
होइ बिलै [illegible] बाहि जु बाध्य ॥ धुनि धरी [illegible] न रपावू सों ध्या
न [illegible] गो[illegible] की ध्या ॥ हो छीनरदाहू संसारकै मूला निडा न
र को ॥ [illegible] जन लान जुलीधा ॥ २२ ॥ जा इ बिराजे जो बृह्म
[illegible] रि ॥ [illegible] नरक मगायेड नासी ॥ जा की [illegible] छाया सब जगा क
परि ॥ [illegible] सबल सबसुषरासी ॥ ज्ञा सार मं [illegible] न नरहतत रो
वर ॥ [illegible] तिसर [illegible] बिनासी ॥ हो छीनरसाधार मूल नंदी
धरनपरि ॥ दाहू नयाउ सब छ कानासी ॥ २३ ॥ ज्ञा [illegible] मु कां

मनकसकीयाबसि॥ डुईदरोगमबैहरिकीन्हो॥ न्हरखाहमुको
मन्नयाग्रुसीयारत॥ षेरमीहरदयादिखदीन्हो॥ माबैदमुकोमम
न्हदसोषेल्याऊं॥ तेजरफुजमबैसुमसीकन्यं॥ हे॥ हफ्ना
निःसजातिन्हलहकी॥ ष्यालमलकषेप्यारिनमी॥ नो॥ ३४॥ हेदा
नबैल्यागिरंगनम्यलागाऊं॥ फारिकहेइसोईनितमामु॥ राति
रोसरष्यादिलहकमें॥ साबाहिनरदरमनपायु रखि॥ दाखि
फतकरीजन॥ पेकहापकन्नजोहसराहो॥ होकन्नारदाहव
ल्यानिःशहमाबूदके॥ श्रोरनक्षंजबयांमगुमोया॥ ३५॥ पद॥ नी
पलटिनयापगुतेनर॥ मेटीन्मन्यतिरनां॥ तिमिजांनो॥ ३६॥ च
न्यायकीयाजुगमटेका॥ न्यादिरक्षंतिसंगीहरिनांमा॥ फिराघ

टकौंदे चित्रधरकौ पाचेन ॥ पूरण ब्रह्म सुमति पिछांन्या ॥ हो
तो नरदादू मिल्या निज जोति सरूप मैं ॥ औरन ज्ञानी हरि माया ब
धांन्यूं ॥ २६ ॥ [illegible] हिरदा माया भ्रमंत न ये सब ॥ सोयंथ दादू बिचा
रि गहौ देहीं ॥ ब्यांन नये बनाईन धा अफ ॥ न्याव नग तिल्हीसैं निर्वे
सो है ॥ सरीरकौ आसन संकसंसारकी ॥ औसै हीरा संपूर्ण गुरु के
सैली [illegible] निबादि मुई तिनकी ॥ जिनि दादू कौ ने स्वस्र
जौ नलेनसू [illegible] ॥ २७ ॥ गरीबदासजीकी भेट ॥ दादूकौ ब्रांस मन ब्र
[illegible] ॥ मापरि बाम गरीब बीरा जे ॥ संतिन मैं मुपदादूक
लाइक [illegible] ॥ [illegible] जुग तिन्हीं पैनि लगाइ जै ॥ मांनर धांन मबे बिधि
पूरन ॥ बीराजां न रमहांम निकाजे ॥ होही नर अपमांनां र र की

छवि ॥ दासगरीबसबै सिरिनाजे ॥ १ ॥ २६ ॥ अनघ [illegible]

दासजी के पंथ मैं मगन मन माया जित ॥ बाबै अंग नारी धन सर्व

हीको त्याग कीनौ ॥ परमोधौ सतरदे सब परम की [illegible] ॥ निरंजन ने

राकै रजीको ज समा कीनौ ॥ सिधि निधि सिधाये ला [illegible] जन कूदै दैकार

दरसन कहै मैं मो गुर [illegible] कीनौ ॥ राघौ रिधि सिधि हित वे मैं मिलि [illegible]

गुरपाट ॥ छोजन मैं जन सबै मैं सौ कौं चलावतो ॥ [illegible] दा ॥ दा

सुगुर दिगपाल ले [illegible] लो कंजा [illegible] ॥ मिष चडी [illegible] चिराक

जन सु मिरराकै साधार ॥ तिन मैं बरनो देम ॥ जगि गुर तन राज

जरता ॥ सब दिन [illegible] सबरा तिर है ॥ हरि समुझि [illegible] ॥ राघौ

[illegible] ॥ [illegible] लाजो ॥ ताबोब

तबारी हरि [illegible] सधनि ॥ जिनि गुर धारे फ्रव सदा ये ॥२॥ साखी दूजी
जी भेट ॥ दूहरू जी दीन दयाल के पंथ में ॥ साधू जी साधसि रोम
णी सारे ॥ [illegible] नी कच्च गति को पूज ॥ हो ग्यानी महा कर
नृति कर [illegible] ॥ अब नहीं गहिलितां नमैं तो गह्यो ॥ धरम की है फुनि
बो [illegible] हारे ॥ सी सफ्रव विदीयो जगत सहि ॥ हो र धीर सौं ज्ञा
मन [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] लिषते ॥ चौपई ॥ पूरन ब्रह्म निरंजन राया
जिन मुक्ति [illegible] बनाया ॥ ताकं म [illegible] ये विसनचारी ॥ श्र
इयात [illegible] करी ॥१॥ गज न मांहि कीनी प्रतिपाला ॥ नहा व
ऊन [illegible] ता ॥ नत मत दी [illegible] विसारी ॥ फूल ई या मन

घो बूझि तु म्हारी ॥१॥ बाल्हा पानमें चूये अंच बेला ॥ माता पिता सूं बा
धौ हेला ॥ पूथ महि चूके संभन समारी ॥ अइया मन धोखे बूझि तु म्हा
री ॥२॥ बकरि तु म्हारत्ते अंक्ष सदा थांभ्याई ॥ ताहूं मोहि हित [illegible] धिकाम
गाइ [illegible] गुमारी ॥ अइया मन धोखे बूझि तु म्हारी ॥३॥ ज
यो किसो रंक [illegible] बजा पापू तारा [illegible] पेले ॥ [illegible]
नाकी मन मैं धारी ॥ अइया मन धोखे बूझि तु म्हारी ॥४॥ [illegible] गा
स्यो मन बंधा ॥ केकह आंप हिकी यो धंधा ॥ लेक [illegible] रमा हि
मारी ॥ अइया मन धोखे बूझि तु म्हारी ॥५॥ जयो [illegible] तमु षष्ठा
यां पंच समषी मिलि निम गालेगाया ॥ कर सेजे आंगा बंध [illegible] कमारी ॥ अ
इया मन धोखे बूझि तु म्हारी ॥६॥ नाली के ओबन मद माता [illegible] तिग

लिके बिषिया सू संता ॥ आपनी गानै न प्रकी नारी ॥ अइ
या मन न षो बू फि तु कारी ॥ च निलज कों मकसन कनषों ने
नाक मन कुकाबि ममांने ॥ लोकवेद कुजा टाटारी ॥ अइ पा
मनषो ब फि तु कारी ॥ ९ ॥ गर बकरै पुंनि षोठे गोबिलै ॥ छबहेसो
चो फिरि बोले ॥ लाउं कं सबपटं कि तु कारी ॥ अइ या मन षो
बु फिरि तु कारी ॥ १० ॥ सुबेमरेरे पार संचारे ॥ रूप न लेके रिबट
ने बिहारी ॥ कुमो है हे अति महा बिकारी ॥ अइ या मन षो बु फि
तु कारी ॥ ११ ॥ आरो पहरबिधि रस नीनाः ॥ तन मन नयं नंडो ती
कटी ना ॥ आपो बिषिए लागपटारीः ॥ अइ या मन षो बु फि तु का
री ॥ १२ ॥ सुनत न मनमें लेआवे ॥ बिषबिषि के चुपनघ हगे

अति आधीन लेहु बलिहारी ॥ अइ या मन धोबू कितु कारी ॥ १६ ॥
कोमल निसंग रहे लपटाई ॥ मानं हु नेहै मो [illegible] पाई ॥ क
बहु नेक होइ जिन न्यारी ॥ अइ या मन [illegible] कितु कारी ॥ जि
जो नियंक कै सोम्न लिपि [illegible] ॥ नित दिन [illegible]
गै मारक [illegible] पुनि गारी ॥ अइ या म[illegible] कितु कारी ॥ २५ ॥
मैह प्रेत के रचै मनज कल्यो वै ॥ चारु होइ हिरदै हि सिधावै ॥ [illegible] ग आ
निधरे नरि प्यारी ॥ अइ या मन धोबू कितु कारी ॥ २६ ॥ नकारी धा
स पोट पुनि छोडै ॥ [illegible] अजब माइ अपनी धोबू ला [illegible] आइ मगु
हारी ॥ अइ या मन धोबू कितु कारी ॥ २७ ॥ औरन के मन के बक
नेरा ॥ जा जन के आगे चेरा ॥ चारि के करै [illegible] ॥ अइ या

मनषो वूकि फिरे म्हारी ॥ १९ ॥ जंगमं करिक वूघर मैं आने ॥ बन
ता भ्रम गये नोहि बूझे ॥ फते रोनित भ्रांज्ञाकारी ॥ ऐसे ई पापम
नषो वूकि फिरत भ्मारी ॥ २० ॥ मान तें मोटम्ब ज्ञ कनसुम पार्ड ॥ सोसुम
फेके वेगों टुंचि फिल्ताड्री ॥ चुट को दैं वेजा वेलारा ॥ ऐसे ई पापमनषो
वूकि फिरे म्हारी ॥ २१ ॥ एक जा च्या रपांच हो इ आंदें तिन कें सुरे
सुहे घर करवाये ॥ मालवो बूझ म है ले नम्र टारी ॥ ऐसे ई पाम नषो
वूकि फिरे भ्मारी ॥ २२ ॥ पूत्र बधो पुवारा ॥ मेरे मेरे करि है गंवारा ॥ के
तबमाईं मिला मंकारी ॥ ऐसे ई पापमनषो वूकि फिरे भ्मारी ॥ २३ ॥ उ
दम करि कीउजो रिंमाया केकं हू नाहि लिष्यो सो पाया ॥ ऐसे
कुविल्ला अधिक यसारी ॥ ऐसे ई पापमनषो वूकि फिरे भ्मारी ॥ २४ ॥

ऊब दस ही मन पचास चाले ॥ सो सब हम लेषके संग आदे ॥ अवधू ऐ
सा बतो हम अविचारी ॥ अवधू ऐसा ग्यान न सोचो बूझि तुम्हारी ॥ २५ ॥ ऐसा
बिला ईहत दा थाई सिर ॥ ऊंट जपै बांधे ताता तर थांरा ... करि ... तोषना
ह्मारी ॥ अवधू ऐसा ग्यान न सोचो बूझि तुम्हारी ॥ २६ ॥ अवधू ... कलम बूटा प
ह्माया ॥ तब कीं भीके रिप करी माया ॥ वे ... धरन चलत रामसे ... नारी
अवधू ऐसा ग्यान न सोचो बूझि तुम्हारी ॥ २७ ॥ मेरे वे देपो तंषे हैं मेरी संचली को
कन लैहै ॥ इस्वर की गति कहूं न बीचारी ॥ अवधू ऐसा ग्यान न सोचो बूझि
तुम्हारी ॥ २८ ॥ निपंट बरषं जपाजे बसरी से ॥ मैं तो बिन्या वैं न
लागे नीरा ॥ पोला पत्रो कं ररपवारी ॥ अवधू ऐसा ग्यान न सोचो बूझि तु
म्हारी ॥ २९ ॥ कंठ ... विर ... करहै ... वै बूझि

अबतो जई नकुंल बिछिमारी ॥ कहै याम मनमोहन बृजिकुमारी
॥ ०॥ बटाव ऊं [illegible] ड़ी कनन्या वे ॥ तो मति चलै कहै समकावे
[illegible] क दे [illegible] नारी ॥ कहै याम मनमोहन बृजिकुमारी ॥ ७४ ॥ व
[illegible] की मो है [illegible] नही भोरै ॥ मरहुं नजाइ घाट की तोरै ॥ तै मधारि
मब गोरि बृ [illegible] री ॥ [illegible] याम मनमोहन बृजिकुमारी ॥ ७५ ॥ खिजकारित
गै सुने जनके [illegible] सी गारी दे मुख मोंड़ै तसी ॥ कहै गोरी [illegible] रस का सारी ॥ कहै
याम मनमोहन बृजिकुमारी ॥ ७६ ॥ उ गिन सकै रूप कै चुना इ
सजी व [illegible] मरना [illegible] ला ॥ तोकुं मनमे [illegible] रूकारी ॥ कहै
याम मनमोहन बृजिकुमारी ॥ ७७ ॥ ताको क [illegible] कर [illegible] दी को इ
पब मनमोयी पुकारै [illegible] मारी [illegible] हारी ॥ कहै या

मनषोवॄ कितु म्हारी ॥ २५ ॥ तामुकछु होइ न जानै ॥ मनौ मुख
उतजातिपछितावै ॥ सोसबुधै नेस्रुतिहे हृदै म्हारी ॥ अईया मन गो
वॄ कितु म्हारी ॥ २६ ॥ अबतो निकटि मौ तिन वेसिक्षाई ॥ रोग जे
कउपिनकाफिराई ॥ जमतनिपासिबिसजुरी ॥ अईया मन ये वॄ
कितु म्हारी ॥ २७ ॥ निकमत प्राणा संनुक्लेफावे सांगाय ग्रणी को ता
मनजावै ॥ दृषि सबनिकं ज्ञासॄटारी ॥ अईया मनषोवॄ कितु म्हा
री ॥ २९ ॥ हसबल सकुकी या पपानो ॥ म्रतकदेषिकरिसबफरा
नां ॥ घरमाहितिलेजाहिजीम्हारी ॥ अईया मन षो वॄ कितु म्हारी
॥ ४० ॥ वेष्णव नोवतैनेनामुषमांसा ॥ पेकनहीजोचलीलीस्वामा ॥ भ्र
वकांयासें प्रीतिनिवांरी ॥ अईया मन षोवॄ कितु म्हारी ॥ ४१ ॥ निमदि

सबरबागकौंलिलौ ॥ पजकपलकमपांणीदेवा ॥ मालीआयौंजुमी
बतक्यारो ॥ ऋइंयामनषोवूकिंजुम्हारी ॥ ४१ ॥ लोगकुटंबसब
मेलिम्हारो [illegible] जरोयेक्वोरूवदाये ॥ वेकसीचालेधादेचारी
ऋईयामनषोवूकिंजुम्हारी ॥ ४२ ॥ वेमसांभिमेच्छायेजबहीं ॥ वं
येकावयेकं [illegible] बबहीं ॥ [illegible] निजगाइंचीयोनहेआरी ॥ ऋइंया
मनषोवूकिंजुम्हारी ॥ ४४ ॥ हटकारीपेवूहिगाडेकिंपाकेजेन
ढकाने ॥ बेटीगोकमनकूयारी ॥ ऋइंयामनषोवूकिंजुम्हारी
धर्म ॥ [illegible] येजुबदीयोदामा ॥ प्रेतप्रेतक्वारिसबकेधाम ॥
[illegible] रिखौनिजम्हारी ॥ ऋइंयामनषोवूकिंजुम्हारी ॥ ४६
म्हाइंदबेरिखौ [illegible] सबघरकक्वाये ॥ बेटाकुसबबेसमछाये
[illegible] जारिरिव ॥

अवझिमिरोढ़ो संहहं मारी ॥ अईस्याम न देषो कहूं फिरतु कहा री
४७ ॥ संचि संचि करि रोषी माया ॥ औरही दीयं न आपन षाय
हाथ झारि कैं जंत्र लेनुहारी ॥ अईस्याम न देषो कहूं फिरतु कहा री
४८ ॥ मुकुरतनु की पै जो रामम सजो सो ॥ चौ सो जन [illegible] म मो हि
ह सो ॥ कौ पुकति की पोरि उघारी ॥ अईस्याम न देषो कहुं फिरतु
कहा री ॥ ४९ ॥ कं हं न की पो माधु को गा ॥ जिनके मैले लगाइ
रिस हा ॥ कहा छूटत [illegible] जी पारी ॥ अईस्याम न देषो कहूं फिरतु
कहा री ॥ ५० ॥ [illegible] न मुष कवहं न [illegible] पे ॥ [illegible] पांच पाच
मूर्ते ॥ [illegible] न विसं [illegible] वनवारी ॥ अईस्याम न देषो कहूं फिरतु कहा री
५१ ॥ की [illegible] करत [illegible] गत न लागा ॥ जन म [illegible] म स द व

संगारां मं बिना जन लेउ बारी ॥ ऐसें ईया मन षोय कूं कित तुम्हारा ॥ ५२ ॥
सुक स्वांन काग जे होई ॥ कीट पतंग गंन कहां को हे ॥ ऐसा रे जो
जे नर मोहे तृष्णा [illegible] ऐसे ईया मन निठुर कित तुम्हारा ॥ ५३ ॥ जन तापि साचा नि
[illegible] साच रजे नेहो ॥ [illegible] पुरुष देह नष्या न कके हे ॥ सो पुं निरोह इस्त्री है ॥
मारी ॥ ऐसे ईया मन षोइ कूं कित तुम्हारी ॥ ५४ ॥ नर मनुं नर मत दुष्टा दे
म्रती ॥ नर तन नर देह नर गयो ती ॥ आप मिले नव [illegible] सवारी ॥ ऐसे
ईया मन षोइ कूं कित तुम्हारा ॥ ५५ ॥ सकल सरीर मंहि देव नर देवा ॥ मा
रांइ गाको [illegible] घर ऐहा ॥ जो मेघ पुरपे देव मूरारी ॥ ऐसे ईया मन षोय
कित तुम्हा ॥ ५६ ॥ चौतिस के मो चेतिक आई ॥ जिनि [illegible] कावारा
मडुसाई ॥ [illegible] हेजु पुकारा ॥ ऐसे ईया मन षोइ कूं कित तुम

री ५७ ॥ [illegible] ॥ कीन्हे नाना बाणी संग्रह ॥ अथ [illegible] लिख्यते ॥
[illegible] दै हेत ॥ पूरब देस न संत पधारे तन जोग भक्ति ज्ञान धरै चर की [illegible]
पा करि हीन न लेजी न संग्रारतं ॥ सुप्यन गुनी है [illegible] सूं ज्या स्यों है । ताहि
चरनन के संग्रह संग ग्रंथ ॥ कारो रंग सिंह स्यों भोग सुरि स्यने री [illegible]
सुर रंग रागफा रखे ॥ ताही ते जाँ कही जन सुंदर पुर [illegible] हि सब संत ता [illegible]
सन ॥ १ ॥ संत श्री [illegible] करै कहा दर कवित ॥ दर्पन ही लै सर ली [illegible] के बे मु [illegible]
नेज [illegible] के सन [illegible] भक्त कुल लछन ॥ राधि [illegible] व्याड़ बिगारे तन ता जन [illegible]
बन ला [illegible] न करै सब [illegible] कवित ॥ बेग्रिये पे सबै [illegible] [illegible]
सत को [illegible] तन [illegible] ॥ [illegible] क गोरा फिरै ज्ञै सेठौ रमु [illegible] रिं कै
कहा रहित ॥ २ ॥ बान तहां की सुनी [illegible] ॥ [illegible] रीति पछोर [illegible]

दे[illegible]ज[illegible]नकौरचित्रिम्र पिकासंचारा ॥ सोननलेमांटी मैंनारा: । ज[illegible]लद्दर्द ८
[illegible]मपलि । कौनसेंकाम निचिलियौरेंनूले ॥ १ ॥ ज्ञाननबढे[illegible]मनैसे
गबानु ॥ पूछिगपुमांटी नंजिम्ह्रजिमांनां ॥ ७ ॥ कहूननकी इहा[illegible]
माई ॥ निमषमांढिंमांही मिलिजाई ॥ ४ ॥ ११ ॥ जंपिगोमंटबिसरेजायन
आई ॥ जैनमसुफलकरियेलोलाह ॥ ८ ॥ हरिसुमरनसोहेतलगा
ह ॥ जजनप्रेमम[illegible]सगोबधवगाह मनिमाटेहमुक्तिफेहारा । रामसुम
रिजगसिरजनहारा ॥ १ ॥ जबलगबिषमबंधिनहींआई ॥ जबल
गबंतो[illegible] कायानहींपाई ॥ जबलगमबल्पबं[illegible]पहीजाई ॥ नबलग
सेवाकरि[illegible]मनाई ॥ ९ ॥ श्रोसरिरंसधं[illegible]नहींनौसे ॥ जंनमगाया
नबा[illegible]सैनकोई ॥ जबलगमन[illegible]तबलगीसोई ॥ पीछेफिरियछिता

[illegible] होई ॥ ३ ॥ सांई सेवा सेवग लागो ॥ सांई पावै जे कोई [illegible]
म[illegible] मन सब लागो ॥ बहुरि निरंजन [illegible] ॥ [illegible] मन
[illegible] मेरा ॥ देषि बिचारि मन माहि मन मेरा ॥ [illegible] जाय
माया ॥ ४ ॥ बहुत भांति कहि कहि समझाया ॥ पं ॥ १४ ॥ राम नाम मन ते का
हे न बोलै ॥ रमता मन मृतक [illegible] जिन छोडै ॥ टेक ॥ [illegible] मन
गमावै ॥ पंच [illegible] काहे न गावै ॥ १ ॥ [illegible] जांचै
बांणी बिमल हरि का [illegible] लै ॥ २ ॥ राम बिसारि जन न [illegible] बै
जा पिवे [illegible] बै ॥ ३ ॥ सार सुख सदा [illegible] ॥ [illegible] तन
धरि [illegible] ॥ [illegible] सेवा मन नहीं सुधोइ ॥ [illegible] मन लागो
निर्मल है ॥ ५ ॥ टेक ॥ मन नहीं [illegible] बिषै बिकार ॥ मन नहीं निर्मल

[illegible] ॥ ४ ॥ मन हीं उद्दिष्ट नांनां भेद ॥ मन ही समर्थे खेला खं के
द ॥ [illegible] च च [illegible] दि मज्जाइ ॥ मन ही निर्हं च लरां ज्ञो सम्मा,
इ ॥ [illegible] मनसु [illegible] उपजै आगिनि मसार ॥ मन ही मांत तजन निरमल [illegible] ॥ ३ ॥
मन उपटै सम मन हिं सिमकांइ ॥ दादू यंजन मम्प्रंन मनि लाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥
रक्षे [illegible] मन मारोंगा ॥ रत्ती रत्ती करि मारोंगा ॥ टेक ॥ खंड खंड करि ना
खोंगा ॥ जहां रांम तहां राखोंगा ॥ १ ॥ कहा न मांनै मेरा ॥ सिर भानोंगा
तेरा ॥ २ ॥ घर में कंटै न आवै ॥ बाहर कों उठि धावै ॥ ३ ॥ आतम रांम न
जांनै ॥ मेरा कहा न मांनै ॥ दादू गुर मुखि सूरा ॥ [illegible] मोकूं मेसूरा ॥ ४ ॥
१४ ॥ आप आपण में सोजे रे जाई ॥ बलतें [illegible] संग गुर [illegible] ई ॥ टेक ॥

जग [illegible] बिलोये मांखण आवै ॥ [illegible] ॥ [illegible] लावै ॥ १ ॥ का

परकै [illegible] नर होइ समाइ ॥ तुम मनमांहि [illegible] नराइ ॥ १ ॥ [illegible]
नोरसै मांनां ॥ तुम मनमांहै सा चूमप्यांनां ॥ [illegible] अमर
[illegible] लाइ ॥ सो मूरति मांहै निरषिलै षोजि ॥ ४ ॥ सहज मन मधि [illegible] तनस्या
[illegible] निती आपलषावा ॥ ५ ॥ १६ ॥ निरंजै नांउ मेरजन जोमे ॥ छंन
जोगमि कांजै नदी कीजै ॥ टेक ॥ सेवग मसेकन हीमानै [illegible] नांरा
वूरककरि जोंलै ॥ १ ॥ नांउ निसंक मगन मति वाला ॥ रांम रसाइन पी
वै पियाला ॥ २ ॥ सहजै [illegible] रांम रंग राता ॥ पूरंण ब्रह्म प्रेम रस माता ॥
३ ॥ हरि बलि [illegible] सिर गाजै ॥ दादू सेवग कैसै लाजै ॥ ४ ॥ १७ ॥ ऐसो
मो [illegible] जाको बिसनारा ॥ टेक ॥ निमित्त
[illegible] धरि रहै ॥ [illegible] कोई लहै ॥ निरगुंण निकटि

[illegible] ॥ नि(र)त च[illegible]न अस्रावै जाइ ॥ १ ॥ अविनासी दैत्य प्रहं
[illegible] अविकार ॥ पंडे न मङ्गा निरंजन आप ॥ कर्ता [illegible]
[illegible] पाप ॥ ३ ॥ सम थ सो [illegible] मकल अमर पूर ॥ हा हरि भ्रातार [illegible]
न हरि ॥ अब कल अपक सेन दी कोई ॥ सब घटि रमे निर्जन होई ॥ अ
स व [illegible] आपे अजर जेम ॥ अगम अगाध रूप न ही रेष ॥ अब गति
कां गातल पान जाइ ॥ हाहू दीन ता हि चित लाइ ॥ ५ ॥ १४ ॥ अब सो राजा
सेवे ता हि ॥ और अनेक सब लागे जाहिं ॥ देव ता तीनि लोक [illegible] हध
र जाइ ॥ चंद सूर दोइ दीपक जाइ ॥ पवन [illegible] हारे [illegible] अंगना ॥ छ
पन कोटि [illegible] ज्ञा के घर ॥ १ ॥ रा मे से [illegible] कर देव ॥ ब्रह्मा कुल [illegible] न जा
ते सेव ॥ कारति क जो चारयो वेद ॥ नेति नेति न विज्ञो से [illegible] द ॥ २ ॥ सकल
देव पति से वा करैं ॥ मुनि अनेक [illegible] ॥ [illegible] बेद र

[illegible]रि ॥ ६ ॥ राराजगादेगुणसार ॥ श्रृ ॥ शिषिशिषिदासीश्रीगो[illegible]
रणजी[illegible]कहै ॥ सकलसिधिदेनोलाह ॥ स[illegible]पुरंगाम्र[illegible]
षलकदंजीनां[illegible]मार ॥ नाघरिके[illegible]देसषसंसेरि ॥ पूरहि[illegible]
वदे ॥ सदानिरंजननेश्रेसौहि ॥ ५ ॥ नांदगोइगागुणगोविंद ॥ सोरदा[illegible]म
कछेद ॥ नटवरनांचेकछांश्रेनेक ॥ श्रापपणरैसैचित्रश्रलेष[illegible] ॥ सक
लसाधवाजेनोसंग ॥ जैजेकारनमेटैश्राण ॥ भांलनिपकूपश्रगेरह
भार ॥ श्रापणदानासिरजनहार ॥ ७ ॥ श्रेसोराजासोइश्राहि चवंद
इभवननेमेरहेसोसंमाइ ॥ साइलाकोसेवाकरै ॥ जिंनियकरचिंहेनेंध
रधरै ॥ ८ ॥ १ ॥ जनबयक मैमेमेरीजाइ ॥ तबदेषतवोगिमिलेरोमराइ ॥
टेक ॥ मैमैमे[illegible]बलनाइ तिमैमैमेटिमिलेजरपूरि ॥ मैमैमेरीतबलगा
नाहि ॥ मैमैमेटिमिलेहरिमांहि ॥ १ ॥ मैमैमेरीनपावेकोइ ॥ मैमैमेटि

[illegible] दू॥ ताह मैंमै सुं[illegible]मटि॥ नवबंद्रं जो गिरं म सूत्रे टि[illegible]॥२०॥
नोह[illegible] नाहीं रे॥ सु[illegible]म सब जीव भ मांहीं रे टेक। नांहीं धूर पि[illegible] श्रवणं सा
रे॥ नांहीं पवन[illegible]क्रूआसा रे। नांहीं रवि ससि तारा रे। नांहीं [illegible]वक प्रजारा रे। नां
हीं [illegible]चाम मारा रे। नांहीं सब संसारा रे॥१॥ नांहीं काया जीव न मारा रे। नांहीं
बाड[illegible]ते गढ्य हारा रे॥२॥ नांहीं ब्रह्म वरछा या रे। नांहीं पषा नन ही माया र[illegible]
नांहीं गिर वर वासा रे॥ नांहीं समद निवासा रे॥४॥ नांहीं जल थल षम्हा रे
नांहीं सब ब्रह्मंड मांहीं रे॥ नांहीं आदि अंत न ता रे॥ दादू [illegible] मरहंता रे॥५॥१२॥
आले हरि कैसे आवैरा म कहै॥ मा [illegible] जो मब [illegible]गाहै॥ टेका॥ आल
हरांम कहिं क मरदो॥ [illegible] मारय पक सावदो॥१॥ सांध[illegible] गति तो निवदो
आप रै सा सी [illegible]॥ [illegible] हरंवै॥ [illegible] नाहीं

९॥८

सूरहै ॥२१॥ सतगुरकीसुणिसीष ...यो ॥ दादूपकै [illegible]

॥२२॥ हिंदूतुरकंनजांनोंदोइ ॥ सांईसबनिकाहै [illegible] ८

दोकोइ ॥ टेक ॥ कीटपतंगसबैजोंनिनमें ॥ जलथल [illegible] मा

सोइ ॥ पीरपैकंबररहेवांहांनव ॥ मारमलिकमुनिजनकीमोहि ॥२॥

करतारहैरेसोईचांन्हों ॥ जिनवैकोधकरैरेकोइ ॥ जैसैंआरसी [illegible] जन

कीजे रांमरहीमएकैहीनमधोइ ॥२॥ सांईकेरीसेवाकीजे ॥ पांयोधन

कांहेकोघोइ ॥ दादूरे [illegible] नहरिजपिलीजे ॥ जनमजनमजेसुर

नहोइ ॥३॥२४॥ कोस्वांमींकोमेषकहै ॥ इसधंनियेंकांमरसैनको

ईलहै ॥ टेक ॥ कोईरांमकोईअलहसुणावै ॥ पुनिअलहरांमका

भेदनपावै ॥१॥ कोईहिंदूकोईतुरककरिमांनै ॥ पुनिहिंदूतुरककी

नै ॥ २ ॥ पूरण ब्रह्म करता ने लोन्यूं वेद ॥ समाधि पड्या लह
॥ दादू देखै आतम एक ॥ कहिबा सुणिबा मन न आने क
॥ मी दृढ़ है सब लोग का बिचारा ॥ हम कै आदे राम पियो
॥ निरसंसै निरदोष सब गावै ॥ साथे सोई कौं आन चिजे आवै
ड बिश्व है परम हरता जे ॥ ता सनि कहत मयं रेयू ॥ ३ ॥ निरवैरा नि
हकामी साध ॥ ता सिर देत न कुछ तन अपराध ॥ ३ ॥ ओहा कंचन पे
ख समान ॥ ता सनि कहत करत अभिमान ॥ ४ ॥ निंद्या अस
तुति ऐकै तोले ॥ तासौं कहै है अपवाद हिं बोले ॥ ५ ॥ दादू निंद्या ता
कौं भावै ॥ जाकै हिरदै राम न आवै ॥ १२५ ॥ हरि सूं जे कहु आ
पो ॥ ता हरि कौ छै नूं नै थापो ॥ फेब जा वही ने बदा तार ॥ ते सिर जा

सैंवूधतिपाल ॥३॥ ततमनताकौंदेद्वीभौं ॥ कूताई:
सजवैलाकोमाचोयमैनैसाकोकवोते ॥ ...कु... [illegible]
...काताने...गुजावे ॥४॥ रहे ॥ ...अवधूरामपिय...॥ [illegible]
पैरहैनियारा ॥टेक॥ जबलगकायातेबलगीमाया ॥ रहै...निर...
अवधूराया ॥१॥ अवगमिधिजाईनवनिधिआई ॥ निकहिं...कांइयां
मठहाई ॥२॥ ...मरअजैपदबैकुंठवास ॥ छायामायारहै...दास
॥३॥ साईसेवगसबदिषजावे ॥ दाहूहूंजाहिंदिषिआवे ॥४॥
...साहिबमैंसेवगतेरा ॥ जावेसिरदेसकलोमेरा ॥टेक॥ जावेकवलैसिर
परिमारि ॥ जावेकरिगिरहनमारि ॥१॥ जावेचकैंटिसअंगनिलगाइ
जावेकाल...मोहिदिपिधाइ ॥२॥ जावेगिरवरगगनगिराइ ॥ जावेदरि

॥३॥ अबै कं नकक मेली टेक ॥ दादू सेवग कैसि कैसि
॥१८॥ कामक्रोध मदमछ आवै मेरे ॥ ताथैं गोबिंद पायो मेरै ॥ टेक
भरम करम जारि सब दीन्हा ॥ राम नाम सब बनि मैं चीन्हा ॥ डबिधाड
रमीते हरि गावाई ॥ राम रमत मन साची मनि निश्चाई ॥१॥ नीच ऊंच मधिम
को नाही ॥ देषो राम सबनि के माही ॥२॥ दादू साच सबनि मे सोई ॥ पे
सहज रूप करि जन निरमै होई ॥३॥१४॥ हाजिरां हजूर तिसांई ॥ वेहर नेडाइ
लियाहां ॥ टेक ॥ मनां मेटि महल मैं पावै ॥ काहे षोजन हरि जावै ॥१॥ दि
रसनं दाइ गुण सब षाइ ॥ ताथैं सहज या हरि निज जाइ ॥२॥ कुदां हूं हरि दरा
होइ ॥ मालिक मन मैं देषै सोई ॥३॥ अरि पंच सोधि बन मारै ॥ तब दादू
देषै निकटि बिचारे ॥४॥१५॥ [illegible] कोई ॥ ओ देषै मोपा

सैंमूं अतिपाल ॥१४॥ तन मन धन ताको दैं ... श्री ॥ कूं ताइ सैं

सकै वैसा को माचो यु मैं मैं साको फ वै ते ॥ ॥ कूं ... मैं ...

स्का तानै मूं ... गुसांई ॥४॥ ... सूं आसा अवधू राम पियारो ॥ ...

पैरस्वै नियारा ॥टेक॥ जब लग काया तब लग माया ॥ ... निरं ...

अवधू राया ॥१॥ अगम निधि ना ईन वनि धि साई ॥ निकट ...

मक्ताई ॥२॥ ... छाया माया ... दास

साई सेवग सब दिस भावै ॥ दादू ... भावै ॥३॥

मूंसा दिन मैं सेवग तेरा ॥ भावै सिरि टेसु ... मेरा ॥टेक॥ भावै करवत सिर

परि सारि ॥ भावै ... करि गिरर तन मारि ॥१॥ भावै चकडि समुंद ... नि लगाइ

भावै काल हर सौं दिसि पाइ ॥२॥ भावै गिरवर गगन गिराइ ॥ भावै दरि

...कै कनक कमोती टेक ॥ दादू सेवग ... कै सिर कै सि
...मेयो ॥ ३ ॥ ... ताथैं गोबिंद पाप मेरे ॥ देक
...॥ ४ ॥ काम क्रोध धन क्याहि मेरे ... राम नाम सब बनि मैं दीन्हा ॥ उ बिधाउ
...कर मंजारि सब दीन्हा ॥ ... मनसा ची मनि क्याई ॥ ५ ॥ नीच कंच मधिम
रमो ति हरि गावाई ॥ राम राम मनसा ची मनि ... सब बने मैं सोई ॥ पे
को ना ही ॥ दे षो राम सकल बनिं के माही ॥ ७ ॥ दादू साचु सब बने मैं सोई ॥
...पकरि जन निरमै होई ॥ ३ ॥ २१ ॥ हाजिर हजूरि सांई ॥ हे हरने डाइ
...॥ मन मैं मेटि मद सब मैं पावै ॥ कांदे षो जन हरि जावै ॥ १ ॥ दि
...न्याही ॥ टेक ॥ ताथैं मन ... हरि न जाइ ॥ २ ॥ कहाँ हरि दूरि ...
रसन देहि ... सब घाइ ॥ ... घरि घरि हरि ... मारे ॥ तन हरि दाइ
होइ ॥ माटि कनक मैं दे षै सोई ॥ ३ ॥ करि पंच सो ... बसमारे ॥ ...
दे षै निकट बिचारे ॥ ४ ॥ ... कोई ॥ औ दे षै सो पा

वैन होइ ॥ टेक ॥ बाहरि भीतरि निकट नहीं दूरि ॥ स्वामी [illegible] ॥ पू[illegible]
रि ॥ जहां देषौं तहां हूं भरनां हिं ॥ मनवा टिरां [illegible] नां मो हिं ॥ न[illegible]
ज्ञान कंत तहां मोरे साथि ॥ पूरि रह्या हरि त्रिभुवन नाथ ॥ [illegible] सुष
होइ ॥ निस दिन निरषु रांम जी मो हि ॥ ५ ॥ ३४ ॥ मन न पवन न [illegible] मन
रहै ॥ आतम निश्चल सो लहै ॥ टेक ॥ पंच बाइ जे सहज समावै ॥ ससि
हर के घरि आंणैं सूर ॥ १ ॥ सीतल सदा मिलै सुष दाई ॥ अंनत हम बंक
जावै सूर ॥ १ ॥ बंक नालि मैं [illegible] रस पीवै ॥ तब यहु मन वांका कहीं न जाइ ॥ २
बिषै कवल [illegible] मन [illegible] ॥ ब्रह्म जीव की करै सहाइ ॥ ३ ॥ बैसि
गुफा मैं जोति बिचारै ॥ तब नाहिं सूझै त्रिभुवन राई ॥ अंतरि आप
मिलै [illegible] नी सी ॥ परम [illegible] नरकाल न हां या इ ॥ ४ ॥ जांम [illegible]

[illegible] ताके चरन के परि करना मनाइ ॥ दाइ जाइ मिले सं गकरी
न [illegible] पाये गुन बिलाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ श्री बनमूरी मेरे श्रीरत्नाकर ॥ श्रा
ग सं नैन दिगंजग मन ॥ टेक ॥ तृषित अनंत हदत तप जे जन ही ॥ सुष मन रंग व
गावे [illegible] ॥ तेहां रंग लगो गंभिर मन सोइ ॥ ये तब तप जे गुन गावे सोइ ॥ १ ॥ सव
ब व न नदी हंस रहै ॥ करि सब ना नम बिनु सुष नहै ॥ सुष दाई को मैं नकु जोइ
तं तं मंगल कृति अनंद होइ ॥ २ ॥ सो हंस काम गति जाइ ॥ सुंदर तहां
पाये पाइ ॥ पीवै अमृत नीकर नीर ॥ बेद न तहां जात सुरपार ॥ ३ ॥ त
हां ना प्रेम की पूजा होइ ॥ जा परि कृपा जाने सोइ ॥ कृपा करी हरि देइ
तन मना ॥ ता जन निपाये निरंजे सना ॥ ४ ॥ तब दरसा मानि आनंद होइ ॥ बल
श्रीगोचर पैरे सोइ ॥ जाको दरस न पावे आप ॥ ता हि न [illegible]
पाप ॥ ५ ॥ तहां [illegible]

ल ॥ श्री प्रभ जोति तिनहां जयो प्रकास ॥ प्रगटानंद मैं तनजु ब[illegible] ॥ चीक्र
मथें न भिर तिमिर धार ॥ नंदलापजु बेवे सम भ्रम थार ॥ [illegible] तो
तो गुन बहाइ ॥ ताहि पुरिषको स्यामन क्राइ ॥ ७ ॥ श्री सादे हरि [illegible] दा
ल ॥ सेवकगको आनै प्रतिपाल ॥ चतुरहं समान हां चरन न समान ॥ तहां सा
हू पङ्कै चै परिवांन ॥ च ॥ २२ ॥ घटि घटि गोपी घटिकांन्ह ॥ घटि घटि रा
म श्र मग्र मथ्यान ॥ टेक ॥ गंगा जमुना श्र हरि बेद ॥ सुरसती नीर बहै प्र
मेद ॥ १ ॥ कुंज के लित हां प्रम बिलास ॥ सब मगी मिलि लिषै नै दास ॥ २ ॥ नै
हां बन्य बेलां बने नूर ॥ बिगसै कवल चंद श्र सूर ॥ ३ ॥ पूर्णब्रह्म प्र
नप्रकास ॥ तहां दिन्न हे षैदा हृदास ॥ ४ ॥ श्र ॥ इति [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ सं० [illegible] लिखितं ॥ रांमकृं मेरा कृनोरा ॥ पांइन
प्रतनि दौस्या ॥ टेक ॥ ग्रेहें मगै बासा ॥ तुम्ह गकंर भैं दासा ॥ १ ॥ नन

पा

[illegible] केसा ॥ तेज पुंज हंस लेखा ॥ २ ॥ रस मां है समहो इबा ॥ जोति
[illegible] ॥ ३ ॥ ब्रंजजीव का मेला ॥ कहत कबीर केला ॥ ४ ॥ १ ॥ मेरे त्रि
[illegible] गुरु मेरा ॥ मैं बालक [illegible] मेरा ॥ टेक ॥ मात पिता अंत्र कृपा चा सो
मी ॥ टेक ॥ है कारे अंत्र भजो मी ॥ १ ॥ अंत्र कृपा सज मंत्र कृपा बंधु ॥ प्राण हं
सो रे अंत्र कृपा नपह ॥ २ ॥ अंत्र कृपा प्रीतम अंत्र कृपा मेला ॥ अंत्र कृपा जी
वनि आप अंत्र केसा ॥ ३ ॥ अंत्र कैसा थी सगा सनेही ॥ रामा बिना दूसर हा
[illegible]ही ॥ ४ ॥ २ ॥ बाल्हा आभक्ता प्रेम भक्ति रस पीजिये ॥ रमिये रमिता रांम
मांझी बाल्हा ॥ दिरदा कंवल में राम थिये ॥ अति मयोद नुंठ में मांका बा
लारे ॥ टेक ॥ मांझ वांल्हा सत गुर मर गौं अंत्र गांसै ॥ सो धं समा मा मथा
ह मांझा बाल्हा रे ॥ वांणी ब्रह्म बंधां लिये ॥ अंत्र नट मां रिदै [illegible] हमा
का वाल्हा रे ॥ २ ॥ [illegible] ॥ [illegible] मै [illegible] गिये

नमाइकावाल्हारे॥ सुषसागरमांझ लिये॥ माचौपै [illegible] नमाइकावाल्हा
रे॥ ३॥ वाल्हाम्हाल्हाज्ञवबंधनसबछूटिये॥ कमनैं [illegible] कोइमाइका
वाल्हारे॥ जीवनमुक्ति फलपौंमिलै॥ सुजैज्ञमप्रपट्टहै [illegible] माइकावा
ल्हारे॥ ४॥ वाल्हा माइकाज्ञसिधिनवनिधिअंगणौं॥ प्रस्यदासथ
चारमाइकावाल्हारे॥ दंभजनहैषेनहीं॥ रमोमिलैंमहारेमाइकावा
ल्हारे॥ ५॥ ३॥ हम्हारैमननमाईरामसंमरेगरातौ॥ पापीवकरै [illegible]
वकंजांनै॥ मगंनरहैरसिमातौ॥ टेक॥ सदासीलसंतोषसुभाव [illegible]
चरनकवलछयनबाधौ॥ हिरदामाहिंडतनंकशिराषौं॥ मानौंरंक
धनलाधौ॥ १॥ प्रेमभक्तिंप्रीतिहरिजांनै॥ हरिसेसासुषदाई॥ ज्ञान
ध्यान [illegible] नकोमेरे॥ कंचनलागोकाई॥ २॥ संगमदाहेतहरिलागो
[illegible] औरनहींआवै॥ दादूदीनदयाल [illegible] मोटर॥ सारसुधारसमा
॥ [illegible]

[illegible]
प्रतनिदैरा॥ टेक॥ [illegible]